KERAL JYOTI 1968 G.K.V.

Foundation Chennai and eGangotri

Tamil Nadu Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110383
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110383
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

FREE 2-5-83

विख्यात विद्वान एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै अपने संस्कृत महाकाव्य विश्वभानु पर केन्द्र साहित्य अकादमी द्वारा प्रदत्त पुरस्कार अकादमी के अध्यक्ष डा० गोकाक से प्राप्त कर रहे हैं।

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता :
मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार:-"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

पुष्प: १८

दल : १

अप्रैल १९८३

संपादकीय

ये अपस्वर क्यों ?

श्रुतिमधुर संगीत का सारा आनन्द किसी एक तंत्री के अपस्वर से नष्ट हो जाता है ।

भारत के सांस्कृतिक समन्वय के उद्यम में कभी कभी कहीं कहीं से ऐसे कुछ अपस्वर सुनायी देने लगते हैं ।

कभी तमिलनाड से उठनेवाले 'हिन्दि वेण्टा' (हिन्दी नहीं चाहिए) वाले हिन्दी विरोधी आन्दोलन कभी उत्तर भारत से उठनेवाली 'अंग्रेज़ी हटाओ' की लहरों में यही अपस्वर सुनायी पडता है ।

यही अपस्वर हमें उस तथा कथित शिक्षाविदों के 'अंग्रेज़ी को बचाओ' अभिमान में भी मिलता है । इन धुरंधरों का तर्क है कि चूँकि अंग्रेज़ी विश्व भाषा है और ज्ञान विज्ञान का भंडार है इसलिए अंग्रेज़ी को शासन में ही नहीं शिक्षा में भी अत्युच्च स्थान देना है । ये महाशय यहाँ तक कह डालते हैं कि अंग्रेज़ी ज्ञान ने ही महात्मा गाँधीजी, कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ जैसी प्रतिभाओं का विकास किया !!! ये मानते हैं कि त्रिभाषा सूत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को तोडकर द्विभाषा सूत्र को अपनायें जिस में प्रान्तीय भाषा का स्थान गौण और अंग्रेजी का स्थान प्रमुख रहे। अंग्रेजी भाषा और साहित्य को शिक्षा में उच्च स्थान दें, इतना ही नहीं सभी विषयों का अध्ययन अंग्रेजी में हो।

देश की एकता चाहने वाले मनीषी सभी विषयों के अध्ययन को वे अंग्रेजी शिक्षण का माध्यम बनाना चाहते हैं। अब इन वितण्डा वादों के समक्ष चुप्पी साध कर नहीं रह सकते। इन अर्थहीन दलीलों का जोरदार खण्डन करने लगे हैं। उनका आग्रह है कि जिस प्रकार जापान, रूस आदि देशों ने देशी भाषाओं के माध्यम से जनता को शिक्षित किया और तद्वारा जनता में मौलिक चिन्तन का और मौलिक प्रतिभा का विकास किया वैसे ही भारत भी भारतीय भाषाओं के माध्यम से इस देश की जनता में मौलिक चिन्तन और मौलिक प्रतिभा का विकास करे जिससे देश की प्रगति में शीघ्रता आ जाये।

हाल ही में केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित सम्मेलनों में विद्वानों ने यही आह्वान किया कि भाषा समस्या को सुलझाने के लिए इसी प्रकार की स्वस्थ दृष्टि की आवश्यकता है। उनके विचारों का संक्षेप इस अंक में दिया गया है जो प्रेरणाप्रद है।

हमें त्रिभाषा सूत्र का ऐसा समंजस संगीत आलापना है जिस में प्रान्तीय भाषा का स्वर उच्च हो, हिन्दी का स्वर मध्य हो और अंग्रेजी का स्वर निम्न हो।

★

इस अंक में

आधुनिक हिन्दी कविता 3
डॉ० इंदरराज वैद

बिल्ली है आज मेरा दुःख 8
मूलः कटम्मनिट्टा रामकृष्णन
अनुवादः डॉ० एन. जी. देवकी

दो कवितायें—
१. वसुधा ने श्रतुराज वरा है
२. गीत 11
शकुन्तला सिरोठिया

युवक 12
कल्लियूर राधाकृष्णन

दैवदशकम 13
अनुवादः जी. कमलम्मा

हिन्दी—भारत की एकता की प्रमुख कड़ी 14
सी. वी. पद्मराजन

बधाई 30

स्व० के. आर. इलंकत्तु 33

समान धर्मा 34
डॉ० वी गोविन्द शेनाय

पाठकों के पत्र 36

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक हिन्दी कविता

डा० इंदरराज वैद

कविता के मूल्यांकन के जितने भी मानदंड हैं, वे वर्तमान युग की कविता के लिए अपनी प्रासंगिकता खो बैठे हैं। बँधी बँधायी परिभाषाओं नियमों और प्रभावों की सीमा को समकालीन कविता लाँघ चुकी है। रस, अलंकार, ध्वनि आदि तत्त्वों का आज की कविता के लिए कोई विशेष महत्व नहीं है। पुरानी मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में आज की कविता को देखने-परखने का श्रम उठाना व्यर्थ ही है।

वर्तमान युग की कविता को वर्तमान संदर्भों में ही देखना होगा। उस में रसों और अलंकारों को ढूँढ़ने के बजाय यह देखना अधिक उचित होगा कि उस में कितनी ईमानदारी है। रमणीयता की अपेक्षा करने के बजाय उसमें निहित वैचारिकता से साक्षात्कार करना होगा। हमें यह देखने का प्रयास करना होगा कि समकालीन रचनाकारों ने मानव-गरिमा, मानव मूल्यों और मानवता की प्राण प्रतिष्ठा करने में अपने कर्तव्य व दायित्व का निर्वाह कहाँ तक किया है और यह भी देखना होगा कि उसकी धड़कनों में युग की चेतना गुँजरित हो रही है या नहीं!

हिन्दी-कविता का स्वरूप बहुत कुछ बदल गया है। आज वह अपेक्षाकृत अधिक मानव-केंद्रित और युग-चैतन्य से अनुप्राणित हो गई है। जीवन और जगत के प्रति उसमें एक सर्वथा नवीन और स्वस्थ दृष्टि का विकास देखने में आता है। आज का रचनाकार बृहत्तर मानवता के साथ यदि प्रतिबद्ध होता है तो व्यक्ति मानव की संवेदनाओं के साथ अपना हृदय भी मिलाता है। उसके लिए व्यक्ति की एकमात्र इकाई भी अनुभूति और काव्य-प्रेरणा का जीवंत आधार है। वह सिंधु में बिंदु की महत्ता आँकना अधिक महत्वपूर्ण और उपयोगी मानता है। इसीलिए तो समकालीन कविता में छोटे-से-छोटे आदमी के सुख दुःख को वाणी दी गई है। आज का कवि जानता है कि मनुष्य अपनी लघुता में भी महान है। वह यह स्वीकार करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकालीन कविता में छोटे-से-छोटे आदमी के सुख-दुःख को वाणी दी गई है।

है कि मनुष्य अपने चारों ओर विवशताओं से हारकर रेशमी जाल बुनता चलता है और उसकी चकाचौंध में भरमाया रहता है। लेकिन जब आँख खुलती है तो मुक्त होने की छटपटाहट से व्यग्र हो उठता है। पर मुक्ति को पाने के लिए वह किसी बाहरी तीसरी आमर की प्रतीक्षा नहीं करता, प्रत्युत उलझे हुए धागों को सुलझाने का स्वयं ही यत्न करने लगता है। वास्तव में जाल बुनना और उसमें फँसना आदमी की लाचारी है, उसकी लघुता है; परंतु सचेत होकर उसे तोड़ने का यत्न करना उसकी महत्ता है, लघुता में निहित मानव की महत्ता का दर्शन प्रयागनारायण त्रिपाठी की इन पंक्तियों में देखें—

"कभी मुक्ति की तृष्णा जागे।
तो चुन-चुन कर एक-एक उलझे धागे
अपने में ही सुलझाने होंगे,

× × × ×

एक मात्र बाहर के झंझावातों से
नहीं कभी भी ये ताने-बाने टूटेंगे।"

(मकड़ी जाल, तीसरा सप्तक पृ० १६)

लघु मानव की इस आत्मदृढ़ता को अभिव्यक्त करके आज का कवि लघुता में निहित महत्ता का दर्शन करता है। व्यक्ति मानव की शक्ति और कर्मठता में इसका अगाध विश्वास है। यथा—

"एक नया बीज हूँ मैं नवयुग का
आह, कितना-कुछ, सभी कुछ—
न जाने क्या क्या
समूचा विश्व हो जाना चाहता हूँ।"

(केदारनाथ सिंह, तीसरा सप्तक पृ० १४४)

आज का कवि अपने व्यक्तित्व की अखंडता का झूठा दंभ नहीं भरता, वरन् यह स्वीकार करता है कि वह खंडित है, टूटा हुआ है। लेकिन अपनी इस खंडित स्थिति पर या इस टूटन पर वह पश्चात्ताप या शोक के आँसू कभी नहीं बहाता, वरन् आशा और विश्वास के सहारे संघर्षमय जीवन को जीता है। यथा—

"मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ।
लेकिन मुझे फेंको मत,
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने
सच्चाई टूटे हुए पहियों का
आश्रय ले।"

(धर्मवीर भारती, सात गीत वर्ष, पृ० ९३)

जब कवि व्यक्ति-मानव की बात करने लगता है तो कभी-कभी जीवन के उन पहलुओं को भी उद्घाटित कर बैठता है जो घोर निराशा अनास्था, घुटन, कुंठा, सैक्स आदि विकारों से ग्रस्त हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में कभी-कभी वह इतना खुल जाता है कि अभद्रता की बू आने लगती है और कहीं-कहीं इतना अस्पष्ट रह जाता है कि दुरूह लगने लगता है। ऐसी रचनाओं को कविता की संज्ञा देने में आज का समीक्षक भी संकोच करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगता है पर ऐसे चित्र बहुत अधिक नहीं हैं। यदि हैं भी तो उन पर एक नजर डालकर आगे बढ़ा जा सकता है।

आज का रचनाकार समग्र जीवन की अनुभूतियों को गूँथने की रचना-प्रक्रिया में क्षणिक इकाई की भी उपेक्षा नहीं करता। समस्त जीवन को चित्रित करने में वह जितने आनंद का अनुभव करता है उतना ही आत्मरमण वह क्षण की अनुभूति के चित्रांकन में भी करता है। उसके लिए क्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण और मूल्यवान् है जितना कि समूचा वर्तमान। 'अंधा युग' में कवि कहता है—

आज का रचनाकार समग्र जीवन की अनुभूतियों को गूँथने की रचना-प्रक्रिया में क्षणिक इकाई की भी उपेक्षा नहीं करता।

"अब जाकर उसको बतलाऊँगा
वर्तमान से स्वतंत्र कोई भविष्य नहीं
अब भी समय है दुर्योधन
समय अब भी है
हर क्षण इतिहास बदलने का
क्षण होता है।"

(धर्मवीर भारती, अंधा युग, पृ० ४२)

समकालीन कविता में युग-चैतन्य का स्वर अनेक प्रकार से प्रकट हुआ है। पुरातन यानी मध्ययुगीन मान्यताओं के विरोध में, नवीनता के अभिनन्दन में, विज्ञान के समर्थन में, धर्म-संबंधी नयी मान्यताओं की स्थापना में, आधुनिकता की अभिव्यक्ति में और सामयिक दायित्व निर्वाह की सजगता में हमें मुख्यतः यही स्वर सुनाई पड़ता है। पुरातनता के बोध को आधुनिक मानव अब अधिक नहीं ढो सकता। उन्नति के नये सोपान उसके आगे हैं प्रगति की पगडंडियाँ उसके सामने बिखरी पड़ी हैं और संभावनाओं के नये क्षितिज उसके विकास बोध का आह्वान कर रहे हैं। ऐसी दशा में उसकी प्रगतिशील और नवताप्रिय चेतना को अवरुद्ध नहीं किया जा सकता। यदि आज का कवि विरोध करता है तो उसे बिल्कुल अनुचित नहीं कह सकते। आज की पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी से किस प्रकार का विरोध प्रकट कर रही है इसे बच्चन जी के शब्दों में देखें—

"ओ पिताजी!
आप को मेरा नमस्कार बारंबार
जहाँ तक आप जनक हैं,
पालक, पोषक, शिक्षक, प्रगति के
प्रेरक हैं।
(बड़ा खेद है कि आप कुछ और भी हैं)
जहाँ आप सड़ी-गली रूढ़ियों के
प्रतिनिधि हैं
प्रतिगामी पोंगापंथियों के ठेकेदार,
(और, कुछ और भी, जो मुझसे न
कहलाइए)
वहाँ आपको मेरी ठोकरें—
एक-दो-तीन-चार!

(कहती प्रतिमाओं की आवाज, पृ० २४)

युग चेतना का महत्त्वपूर्ण पहलू है आधुनिकता। दरअसल, समकालीन कविता की परीक्षा प्रायः इसी के संदर्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल्यों को वर्तमान के संदर्भ में देखना और स्वीकारना आधुनिकता है।

में की जाती है। आधुनिकता एक दृष्टि है, नवीन दृष्टि। जो कवि मानवीय मूल्यों को देशकाल के नवीन संदर्भ में देखने के अभ्यस्त नहीं होते, वे आधुनिक वातावरण में साँस लेते हुए भी आधुनिक होने का दावा नहीं कर सकते, लेकिन जो कवि मूल्यों का बदले हुए परिवेश में देखते हैं और ग्रहण भी करना जानते हैं, वे ही वास्तव में आधुनिक हो सकते हैं। मूल्यों को वर्तमान के संदर्भ में देखना और स्वीकारना आधुनिकता है। समसामयिकता के इस बोध ने कवियों को अधिक मानवीय या मानववादी बना दिया है। आधुनिकवादी कवि का विश्वास है कि प्राचीन मान्यताएँ, रूढ़ियाँ, अन्धविश्वासग्रस्त परंपराएँ धीरे-धीरे समाप्त हो रही है, उनका अवसान निकट है और प्राचीनता के घटाटोप को चीरती हुई नूतनता की किरण उदित हो रही है

"जल रही प्राचीनताएँ
बाँध छाता पर मरण का एकपक्ष
इस अँधेरे की पुरानी ओढ़नी को
वेधकर
आ रही ऊपर नये युग की किरण
(हरिनारायण व्यास, दूसरा सप्तक पृ० ६३)

आधुनिकता की दृष्टि के विकसित हो जाने पर रचनाकार मानवीय मूल्यों के प्रति अधिक सजग और समर्पित हो जाता है। वस्तुतः आज की कविता मानववादी कविता है जो ऐसे तत्त्वों का स्वागत-समर्थन प्रतिपादन करती है, जो मानव गरिमा में सहायक हो, मानवता की स्थापना के प्रेरक हों, मानवीय मूल्यों के सृजन में सहकारी हों तथा जीवन की सार्थकता के प्रति सचेष्ट हों। मानव की गरिमा को व्यक्त करने वाली ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :—

"उसके चलने में लोहा है
कौन रोक सकता है मानव को
चलने से
जिसके संग-संग आदि काल से
इंद्र चल रहा,
मनुज चल सके इसीलिए तो
अंधकार में सूर्य चल रहा,
जहाँ गया मनु-पुत्र, नदी ने जल
पहुँचाया
रत्नभरा धरा ने मानव को शत-
शत हीरों से लादा
मनुज चला तो सृष्टि चली
अन्यथा पूर्व थी मात्र प्रकृति !"

(नरेश कुमार मेहता,
दूसरा सप्तक, समय देवता, पृ० १३४)

मानव अपनी नियति का स्वयं नियमन करता है। वह अपनी नियति स्वयं बनता भी है। यथा :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समकालीन कविता ने अपने कवि को विश्व-मानवता के दर्शन कराए हैं ।

हममें यह क्षमता है
कि अपनी व्यथा और अपने संघर्ष में
अपने को अनुक्षण जनते चलें,
अपने संसार को अनुक्षण बदलते चलें,
अनुक्षण अपने को परिक्रांत करते हुए,
अपनी नयी नियति बनते चलें ।

(अज्ञेय, कितनी नावों में कितनी बार
पक्षधर, पृ० ३१)

समकालीन कविता ने अपने कवि को विश्व-मानवता के दर्शन कराए है । आज का कवि अपनी राष्ट्रीय दृष्टि का विकसित-विस्तृत कर चुका है । वह संसार के सारे देशों की जनता को अपना आत्मीय मानता है :—

हम तो कहते पाकिस्तानी
रूसी चीनी और जापानी
जर्मन अमरीकी औ' बरतानी
अफरीकन अरबी, यूनानी
जितने भी श्रम करनेवाले,
सब अपने हैं
मिलजुल कर धरती की थाती आओ
बाँटें ।

(कैलाश कल्पित, इंद्रबेल और नागफनी
नवयुग का आह्वान पृ० ९४–९५)

विश्व-मानवता का हित, चिंतन आज की कविता में फूट रहा है । युद्ध की आशंका से विश्व की रक्षा करना और विघटनकारी प्रवृत्तियों कुंठाओं, दुराग्रहों विडंबनाओं आदि से मानव-संस्कृति का बचाव करना काव्य-धर्म बन चुका है । अणु-शक्ति के दुस्परिणामी प्रयोगों के प्रति चिंता प्रकट करते हुए कवि भारती कहते हैं :—

"ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस
ब्रह्मास्त्र की
यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ
न-शु !
तो आगे आने वाली सदियों तक
पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे विकलांग और कुंठाग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी ।

(अंधायुग, चौथा अंक, पृ० १२)

इस प्रकार हम देखते हैं कि समकालीन कविता काफी विकसित हो चुकी है । उसकी युग-चैतन्य भावना को आधुनिकता और वैज्ञानिकता ने परिपुष्ट किया है । उसका स्वर मानववादी हो चुका है और वह सार्वभौमिकता के आदर्श को ग्रहण कर चुकी है । यह संतोष की बात है कि आज की कविता का मूल्यांकन इन्हीं धरातलों पर हो रहा है ।

कार्यक्रम अधिकारी
आकाशवाणी, मद्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता

बिल्ली है आज मेरा दुःख

कटम्मनिट्टा रामकृष्णन

बिल्ली है आज मेरा दुःख,
अलग होकर जोडी से, बिना किये आवाज़,
फँसकर मेरे कमरे में
नन्हे पैरों से रेंगतो मेरी ओर देखनेवाली
बिल्ली हैं आज मेरा दुःख ।

कमरा जूठन-रहित
सुरंगें पुती हुई सफेद दीवार पर
न चित्र,
डगडोलती है मकडी की जालों में
मच्छर और रोशनी ।

'म्याऊ म्याऊ' कर हाथ उठाकर रोकनेवाली
चिपटकर काटनेवाली, नाखून फैलाकर खरोंचनेवाली
बीच में सामने से दौडकर छिप जानेवाली
सरकती धूप खाकर पलक लगाकर थोडी झपकी लेनेवाली
बीच-बीच में दूध की याद में
फिर जगकर रोनेवाली
बिल्ली है आज मेरा दुःख ।

न दूध है, न मधुर सपने,
फटती गूदड़ जैसे मेरे जीवन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ने को न लता है
व्यर्थ सपने जमकर दाग होकर
जमीन पर बनते काले ।

काहे को आ, मेरे अपने सुखों में
खरोंचती है, नोचती है प्रतिध्वनि-हीन मौन
देने को कुछ न होने पर भी
मेरी प्यारी होना चाहनेवाली
यह नन्ही बिल्ली है आज मेरा दुःख ।

शेरे कमरे के उस पार, सडक के भी उस पार,
नाली के भी उस पार, गीले मेडों पर चलनेवाले
पदचिह्नों के उस पार से
मुझे बुलाता है कौन-
उस परछाई में, क्यों धुआँती है
झुकी हुई झोपड़ियाँ
उठती है भाप, इकट्ठे है लोग रास्तों में,
श्रेणी बनकर घडे चिल्लाते हैं पानी के वास्ते ।

नहीं, मैं हिल नहीं सकती,
घेरकर मुझे परेशान करनेवाली यह बिल्ली,
फंसनेवाली रस्सी पैरों में,
तडप गई मैं, जालों में मछली जैसी-मछुवारा कौन ?
न चूहा भी सहारा मेरा,
सीख चुकी है, पाठ पहले से ही चूहा,
'पंचतंत्र' की प्रयोगशाला में
पंचशील का परीक्षण करता है वह ।

चटाई बिछाकर लेटने पर, "थोडा" और,
चलने पर पीछे, बैठकर थोडा आश्वस्त.....
चढ़ी गोद पर, यह कैसा बन्धन !
पैरों पकडकर फेंक दी नाली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर न आएगी ठानकर
सोचा कुछ न कुछ दबकर
अंत्येष्टि में यादें चरने से पहले ही !
कीचड छिटककर, सिहरकर,
नन्हे पैरों से रेंगकर,
चिल्लाकर मेरी ओर फिर तैरकर आनेवाली
वह बिल्ली है आज मेरा दुःख ।

दोपहर को एक दिन सोचा मैंने—
छोटी बिल्ली को खा लें, गुण है असंख्य
भूख मिटेगी, होगा बदला,
हटेगा दिवास्वप्न को छेदनेवाला दुःख ।

हाय ! कैसा विडंबना ! सतर्क
मुझे काट खाती है वह बिल्ली,
रोक नहीं सकती मुझे
पीछे खिंचते हैं मेरे हाथ

तो भी है आश्वास,
खा चुकने पर
खेद न काटेगा मुझे ।

❀

अनुवाद: डा० एन. जी. देवकी
श्री शंकर विद्यापीठ कालेज, वलयनचिरंगरा,
पेरुम्पावूर, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुधा ने ऋतुराज वरा है

स्वर्णिम किरणें उतरीं छम-छम,
नयी कोपलें झाँक रही हैं,
भ्रमरों की टोली, जीवन के
चित्र अनूठ आँक रही है ।।

उपवन के घर ठनकी ढोलक
द्वार बजी मीठी शहनाई,
तोते ने बनरा, कोयलिया ने
मधुस्वर में बनरी गाया ।

माँग रही रचनी, नीले नभम के
आँगन में चौक पुराई,
चंदा का ले कलश हठाली
नाउनियाँ कर रही ढिठाई ।।

चहक उठी बारात, सजीला
ऋतुपति मौर बाँधकर आया,
श्वेत सुमन के अक्षत और
चंदन से दम-दम भाल सुहाया ।।

सरसों की पियरी में दुलहन
जल-दर्पण में झाँक लजाती ।
भर टेसू सिंदूर, माँग, सौभाग्य-
कांक्षिणी, वसुधा आती ।।

पंथ बुहारे हवा चंदनी
गमक उठीं उपवन की गलियाँ,
वसुधा ने ऋतुराज वरा है
हँस हँस करें ढिठोली कलियाँ ।।

गीत

शकुन्तला सिरोठिया

आसमान से आँख मिला कर
सोचा ऊँची उठ जाऊँगी,
पर मालूम नहीं क्यों मेरी
आँखे, नम, नीची झुक आयीं ।।

जब सूरज से प्यार किया तब
सुबह सुनहरी ही लगती थी,
लेकिन प्रिय हरजाई निकला
छोड़ गया तम के गह्वर में ।।

खिल खिल हँसा गुलमुहर मुझ पर
व्यंग-वाण बेला ने फेंके,
पारिजात ऐसा शरमाया
बिखर पड़ा धरती पर आकर ।।

दिल में टीस उठी कुछ ऐसी
आँखों में अंधियारा छाया,
मन के द्वार खोलकर जैसे
रेतीला अंधड़ घुस आया ।।

१०९ बाई का बाग, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम लघु कथा

युवक

कल्लियूर राधाकृष्णन

जमाना तो ऐसा था कि नौकरी मिलना कठिन था। इसलिए वह युवक हमेशा दुःखी दीख पडा। आसपडोसी और रिश्तेदार उससे नफरत करने लगे। कुछ एक तो निन्दापूर्वक बर्ताव करने भी लगे। इसका भविष्य कैसा होगा? कुछ कर सकने की संभावना भी नहीं? कुछ तो मन ही मन हँसी उडाते थे। वह युवक दिन व दिन हताश दीख पडा। जीने की चिन्ता तक न रही। ...क्या करूँ?

हताश होकर उसने सोचा—मंदिर तक जाऊँ! वहाँ जो पत्थर की मूर्ति है उसके सामने अपनी शोक कथा गाऊँ तो थोडा आश्वास मिले।...

जी सोचा वह कर डाला। अजब की बात! रोता सिसकता वह अपनी गाथा गाता रहा।... सच। उसे लगा कि वह पत्थर पिघलेगा, आदमी से ज्यादा जब उसकी तप्त कथा सुने..... वहाँ का शान्त वातावरण मन मोहक था। वहाँ से जाने को किसी ने न कहा था वही उसको दिलासा देनेवाला स्थान निकला। कुछ दिन यों ही बीत गये। उसका दुख कम होता गया। उसको सुख व शान्ति मिली। उसका आनन्द ऐसा था जो विज्ञान आदि न दे पाता। वह 'आनन्द' आत्मा का आनन्द था जो वास्तविक आनन्द है।

क्रमशः उसके जीवन में उन्नति होने लगी। दिन व दिन उसकी प्रगति होती रही।

अनुवाद : एम. प्रभा
कानफेड, साक्षरता भवन,
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैवदशकम

[भारत ने अति प्राचीन काल से ही प्रपंच और जीवन के परम सत्य दर्शन किया है। ऐसे सत्य का स्वरूप और उस सत्य को प्राप्त करने का पथ वेदों और उपनिषदों में बताया गया है। इस प्रकार सच्चा पथ बताकर जीव जाल का उद्धार करने केलिए एकाध सत्य दर्शी समय समय पर जन्म लेते हैं। केरल के संत श्री नारायण गुरुदेव ने भी परम सत्य को सूर्य समान प्रोज्वलित करके दिखाने का सफल प्रयत्न किया है।

प्रस्तुत है श्रीनारायण गुरु से विरचित 'दैवदशकम्' का हिन्दी अनुवाद।]

देव, तू ही रखवाली कर,
छोड न दे हमको इधर,
भव-सागर के नाविक तू ही,
गुरु नौका ही तावक पाद।
एक-एक गिन, गिन सब हो जाय,
लग जाय दृग निश्चल तुझ पर
लग जाय एकतान हो हृदय हमारा
निश्चल, केवल महिमा तुझ पर
अन्न वस्त्र दे बिना रोक के
रखवाली की है रोज हमारी
धन्य बनाते, आप ही
रक्षक प्रभु हम जन के
सागर-लहरें, आंधी, औ
गहराई, जैसे हम भी,
माया तेरी महिमा और,
तू भी, हृद में हो जाय
तू ही सृष्टि, और सृष्टा
तू ही है सृष्टिजाल।
तू ही देव, सृष्टि की
आवश्यक सामग्री।
तू ही माया, मायावी भी
तू ही विनोदी माया के
तू ही हटात माया को
आर्य दे रहा सायुज्य।
तू ही सत्य, ज्ञान, आनन्द
तू ही है वर्तमान
तू ही भूत और भविष्य
तू ही नाद विचारें तो।
अंतर बाहर निर्भर हो
तेरे चरण महान
गाते हम तो यशोगान
जय हो तेरा भगवान।
जय हो देवों के देव
जय हो दीनों के बन्धु
जय हो देव चिदानंद
जय हो, दया सागर तेरा।
ज्योति तुम्हारी सागर गहरे
डूब रहे, हम पूरा डूबे,
वास करे नित, वास करे नित
शेष रहे आनन्द अनश्वर।

अनुवाद: जी. कमलम्मा
वर्कला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी—भारत की एकता की प्रमुख कड़ी

सी. वी. पद्मराजन
सामुदायिक विकास मंत्री, केरल

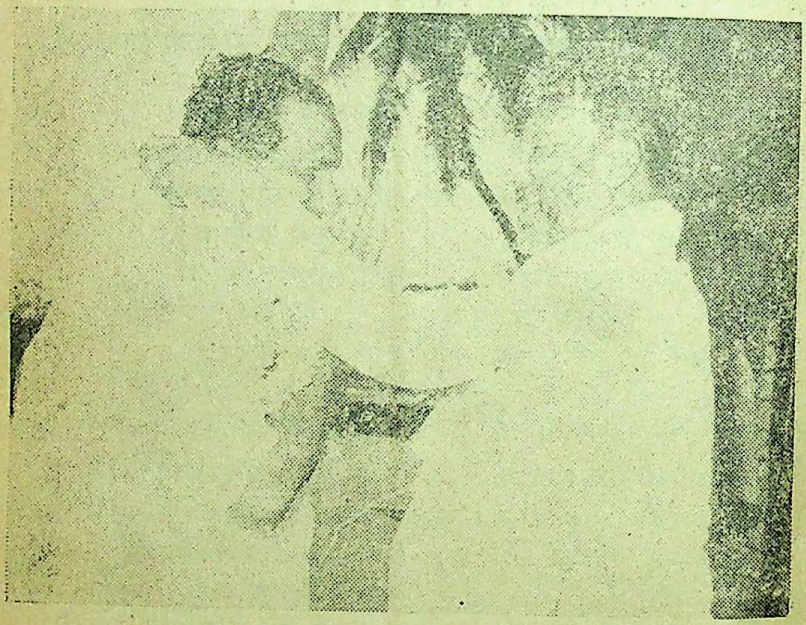

केरल के सामुदायिक विकास मंत्री श्री० सी वी. पद्मराजन का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिक्कुंजु ।

केरल के सामुदायिक विकास मंत्री श्री० सी. वी. पद्मराजन ने बताया कि भारत की एकता की प्रमुख कड़ी हिन्दी है ।

केन्द्र सरकार के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा सभा भवन में आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन कर रहे थे श्री पद्मराजन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

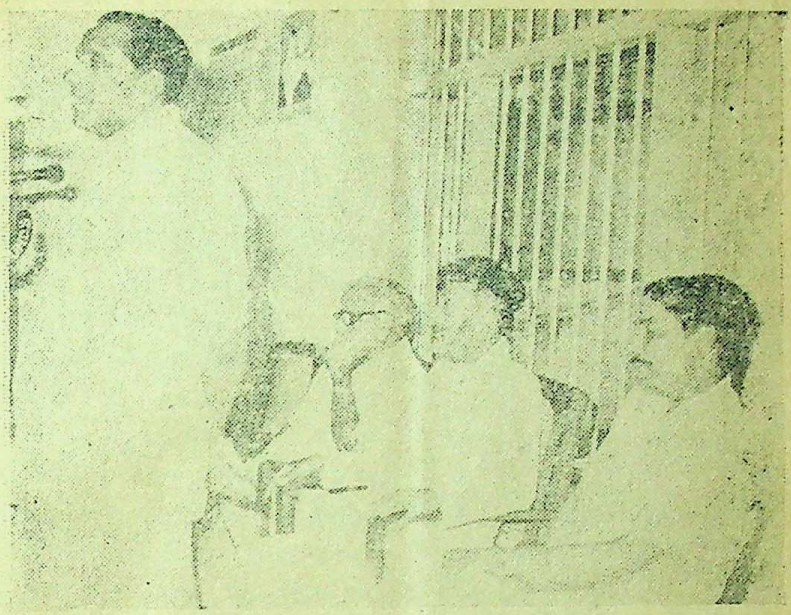

सामुदायिक विकास मंत्री श्री० सी. वी. पद्मराजन उद्घाटन भाषण दे रहे हैं ।

श्री० सी. वी. पद्मराजन ने कहा—स्वतंत्रता संग्राम के समय हम जाति, धर्म और भाषा की सीमाओं को लाँघ कर देश की एकता को सुशक्त बना पाये । लेकिन दुर्भाग्यवश आज विघटनवादी तत्व सिर उठा रहे हैं । इन तत्वों के विरुद्ध लड़ना और भावात्मक एकता को सुदृढ़ करने का यत्न करना हर भारतीय का कर्तव्य है । इस यज्ञ में हिन्दी को महान भूमिका निभानी है । हिन्दीतर प्रान्तों की जनता और जनजीवन से हिन्दी के जुड़ जाना होगा ।

श्री पद्मराजन ने केरल हिन्दी प्रचार सभा की सेवाओं की मुक्तकंठ प्रशंसा की ।

सम्मेलन की अध्यक्षता केरल के यशस्वी पत्रकार श्री० पी. गोविन्द पिल्लै ने की । आपने अपने विचारोत्तेजक अध्यक्षीय भाषण में इस बात पर जोर दिया कि मौलिक प्रतिभा का विकास स्वभाषाओं द्वारा ही हो सकता है, विदेशी भाषाओं द्वारा नहीं ।

श्री पिल्लैजी ने कहा—स्वतंत्रता प्राप्ति के पैंतीस वर्ष बाद भी देश की प्रान्तीय भाषाओं को उचित सम्मान नहीं मिल रहा है । यह बड़े खेद की बात है । कई कोनों से यह आवाज़ आ रही है कि प्रान्तीय भाषाओं की अपेक्षा अंग्रेज़ी को और अन्य विदेशी भाषाओं को प्रश्रय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

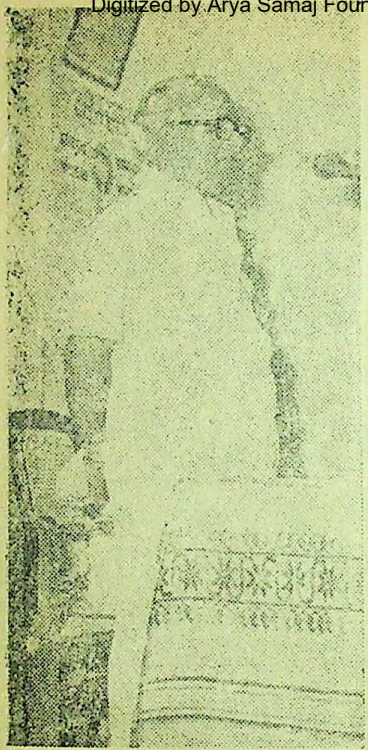

श्री० पी. गोविन्द पिल्लै

दिया जाये। शिक्षा के क्षेत्र में उच्चस्थान पर विराजनेवाले कुछ विद्वान यहाँ तक कह डालते हैं कि यदि अंग्रेजी के माध्यम से सभी विषयों का अध्यापन न हो तो बडा खतरा होगा। ऐसे तर्क वास्तव में हास्यास्पद है। अंग्रेजी की उपेक्षा कोई नहीं करता। अंग्रेजी विश्वभाषाओं में एक है। अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, फ्रेंच जैसी भाषाओं को हमारी उच्च शिक्षा पद्धति में स्थान देना अच्छा है।

अंग्रेजी को छोडने की कोई ज़रूरत नहीं। अंग्रेजी को उचित स्थान पर, उचित मात्रा में, उचित स्तर पर, उचित ढंग से जारी रखना है। लेकिन यदि कोई कहे कि भारतीय भाषाओं की उपेक्षा कर के अंग्रेजी को बढावा दें तो इस तर्क को हम स्वीकार नहीं कर सकते। पिछली शताब्दी में जापान ने आधुनिकीकरण में विजय पायी। यह उपलब्धि विदेशी भाषाओं के सहारे नहीं, स्वभाषा के द्वारा जापान को मिली। चूंकि जापान की मौलिक प्रगति जन-सामान्य की प्रगति-मौलिक चिन्तन की प्रगति—स्वभाषा द्वारा हुई इसीलिए पश्चिम के किसी भी देश का चुनौती देने की क्षमता उसमें आ गयी। भारतीय भाषायें किसी भी दृष्टि से जापानी भाषा की तुलना में पिछडी नहीं है। शताब्दियाँ पूर्व भारतीय भाषाओं ने महाकाव्यों और वैज्ञानिक ग्रंथों का सृजन किया है। इस शताब्दी के प्रमुख वैज्ञानिक सत्येन्द्र बसु ने भौतिक विज्ञान के अपने अतिगहन सिद्धान्तों का अध्यापन ललित बंगला में ही किया था। जो अपने विषय में निष्णात हैं उन केलिए भाषा कोई सवाल ही नहीं है।

हम यह मानते है कि अंग्रेजी पढनी है। पर जो लोग यह मान कर चलते हैं कि भौतिक विज्ञान, इतिहास आदि सभी विषयों का अध्यापन अंग्रेजी के माध्यम से ही होना चाहिए उनका लक्ष्य महज़ अंग्रेजी भाषा का प्रचार है। वैज्ञानिक और मानविक विषयों का अध्यापन नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

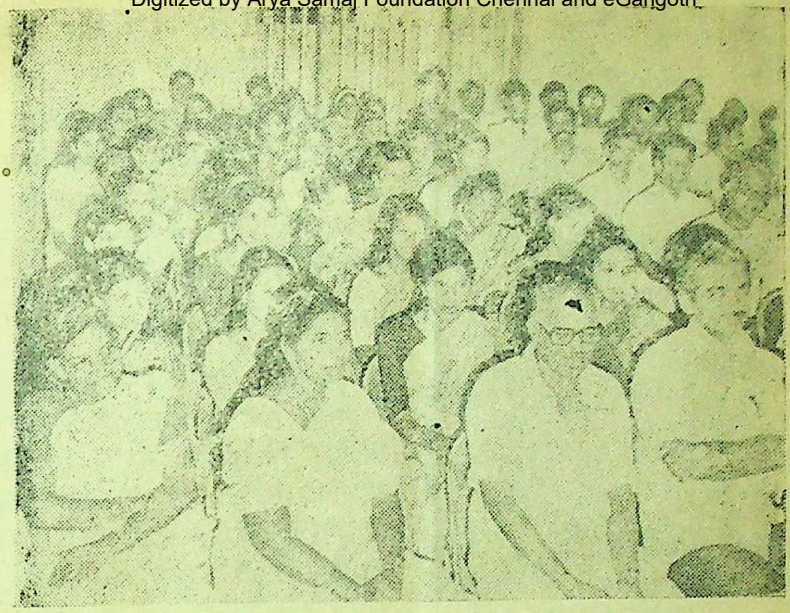

उद्घाटन सम्मेलन—श्रोताओं का एक दृश्य

श्री पिल्लैजी ने राधाकृष्णन आयोग, मुदलियार आयोग और कोठारी आयोग की सिफारिशों का समर्थन करते हुए बताया कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। आपने यह भी बताया कि इधर अधर सुनायी देनेवाले अपस्वरों के बावजूद अंग्रेजी, रूसी जर्मन फ्रेंच और अरबी के समान हिन्दी भी विश्व-भाषा का स्थान पा चुकी है।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के प्राध्यापक डा० टी. के. नारायण पिल्लै और केरल की हिन्दी शिक्षा अधिकारी एवं विख्यात कवयित्री श्रीमती टी. एन. पोन्नम्मा ने अशीर्वाद भाषण दिया।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिक्कुजु ने स्वागत भाषण दिया और कोषाध्यक्ष प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकट की।

डा० टी. के. नारायण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

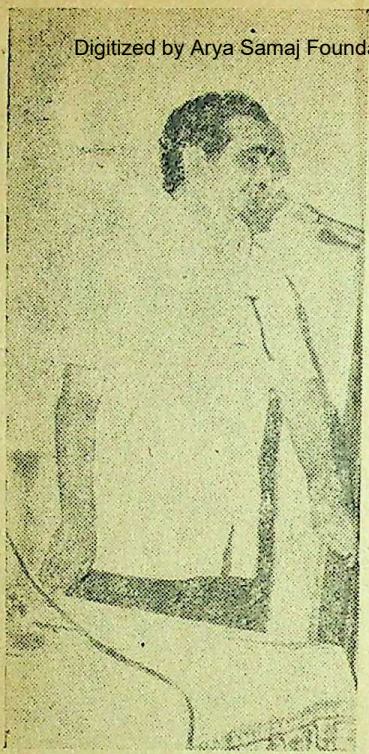

प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै

नवीकरण पाठ्यक्रम में केरल के विविध जिलों के करीब तीस हिन्दी प्रचारकों ने प्रशिक्षण पाया ।

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के प्राध्यापक डा० टी. के. नारायण पिल्लै और डा० रविप्रकाश के अलावा केरल के कई अनुभवी विद्वानों ने पाठ्यक्रम में चर्चाओं का मार्ग दर्शन किया ।

समापन सम्मेलन

२६-३-१९८३ को सभा के प्रांगन में आयोजित समापन सम्मेलन का उद्घाटन विख्यात विद्वान एवं लेखक डा० के. राघवन पिल्लै ने किया । आपने कहा कि हमें जो अंग्रेज़ी का ज्ञान मिला है उस का पोषण करते जाना है और साथ ही साथ भारतीय भाषाओं को विकसित करते जाना है । हमें त्रिभाषा सूत्र को सुचारु रूप से कार्यान्वित करना है । प्रथम स्थान मातृभाषा या प्रान्तीय भाषा

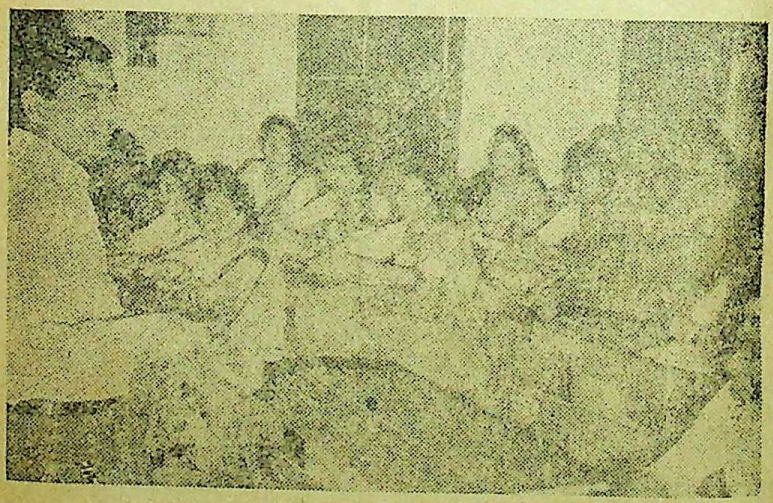

डा० रविप्रकाश नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रशिक्षुओं के साथ चर्चा करते हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमस्थान मातृभाषा या प्रान्तीय भाषा को दें, द्वितीय स्थान राष्ट्रभाषा हिन्दी को दें और तृतीय स्थान अंग्रेज़ी को दें।

को दें, द्वितीय स्थान राष्ट्रभाषा हिन्दी को दें और तृतीय स्थान अंग्रेजी को दें।

सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के यशस्वी कवि श्री० विष्णुनारायण नंपूतिरी ने बताया कि यदि विविध विघटनकारी तत्वों के प्रयत्न से दुर्भाग्यवश भारत का कभी विघटन हो भी जाये तो भी भारतीय संस्कृति एक बनी रहेगी और हिन्दी उसकी वाणी बन कर रहेगी। आपने हिन्दी की उत्पत्ति और विकास का अनुशीलन करते हुए स्पष्ट दिखा दिया कि कैसे संस्कृत ने धीरे धीरे हिन्दी का रूप धारण कर लिया। आपने बताया कि भारतीय हृदय में जो झंकार जयशंकर प्रसाद और जी. शंकर कुरुप जैसे भारतीय कवियों की लेखनी उत्पन्न कर पाती है वह अंग्रेजी के शेकस्पियर या शेली की लेखनी उत्पन्न नहीं कर पाती। आपने कहा कि हिन्दी भारत की एकमात्र संपर्क भाषा बन चुकी है।

प्रा० विष्णुनारायणन नंपूतिरि

केरल विश्व विद्यालय के शिक्षा संकाय की प्रोफेसर डा० पुष्पिता जोण ने केरल की शिक्षा पद्धति में हिन्दी को उचित स्थान देने की अपील की और बताया कि त्रिभाषा सूत्र ही भारत की भाषा समस्या को सुलझाने का सर्वोत्तम उपाय है। आप ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि

भारतीय हृदय में जो झंकार जयशंकर प्रसाद और जी. शकर कुरुप जैसे भारतीय कवियों की लेखनी उत्पन्न कर पाती है वह अंग्रेज़ी के शेकस्पियर या शेली की लेखनी उत्पन्न नहीं कर पाती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

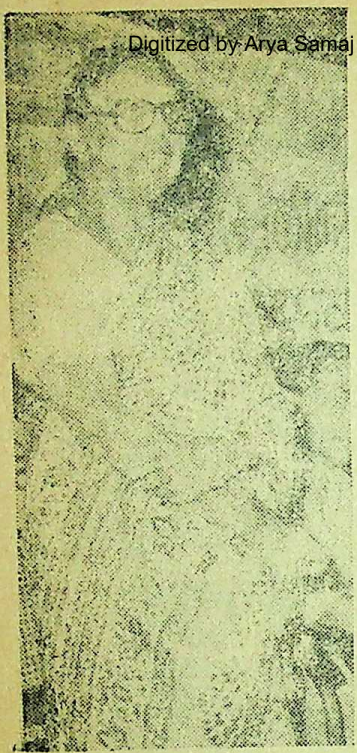

डा० पुष्पिता जोण

हर भारतीय भाषा की अपनी विशेषतायें हैं। इन विशेषताओं के सहारे हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में उन्नत स्थान पा सकती है।

वर्तमान परीक्षा प्रणाली में केरल के छात्र हिन्दी में शून्य अंक पाकर भी मैट्रिक में उत्तीर्ण हो जाते हैं। आप ने हिन्दी प्रचारकों से आग्रह किया कि निम्न वर्ग के जिन छात्रों को हिन्दी भली भांति सीखने की वांछित सुविधा नहीं मिल पाती उन्हें निस्वार्थ भाव से हिन्दी सिखाने की दिशा में भी आवश्यक कदम उठायें।

श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

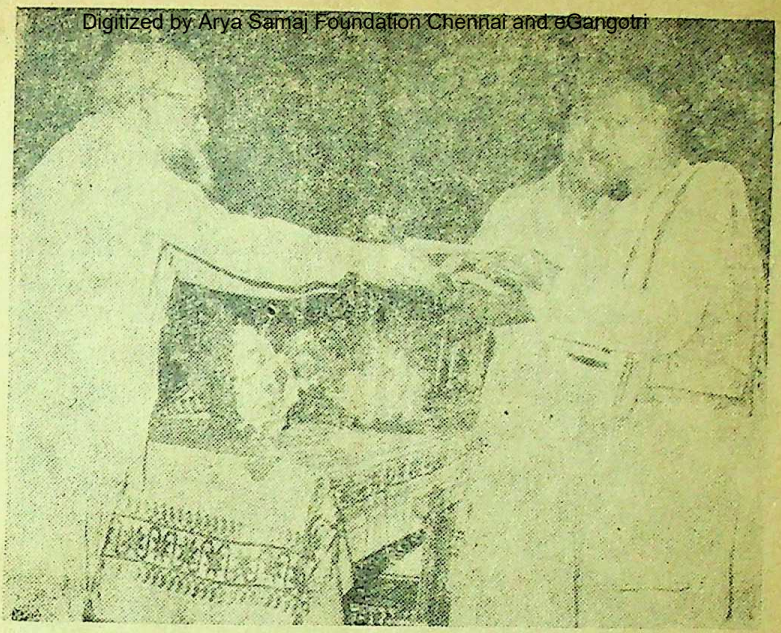

नवीकरण पाठ्यक्रम के एक प्रशिक्षु श्री० एम. सुकुमारन डा० के. राघवन पिल्लै से प्रमाण-पत्र ग्रहण कर रहे हैं ।

विख्यात हिन्दी कवि डा० धर्मवीर, आइ. ए एस. ने अपने भाषण में उन सभी तर्कों का युक्ति युक्त खण्डन किया जो अंग्रेज़ी के पक्ष में और भारतीय भाषाओं के विपक्ष में प्रस्तुत किये जा रहे हैं। आपने कहा कि भारतीय भाषायें किसी भी विदेशी भाषा की तुलना में शक्ति हीन नहीं है। हर भारतीय भाषा की अपनी विशेषतायें हैं। इन विशेषताओं के सहारे हिन्दी विश्व की प्रमुख भाषाओं में उन्नत स्थान पा सकती है।

डा० राघवन पिल्लै ने नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किये।

केन्द्र सरकार की सहायता से केरल हिन्दी प्रचार सभा ने जो हिन्दी निबंध, कविता, कहानी, भाषण और नाटक प्रतियोगिता चलायी उसके विजेताओं को तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के. प्रभाकरन नायर ने पुरस्कार वितरित किये। केरल ज्योति के संपादक श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने स्वागत भाषण दिया और केरल हिन्दी प्रचार सभा के कोषाध्यक्ष श्री० एम. जनार्दनन पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकट की।

सम्मेलन के उपरान्त पुरस्कृत नाटक कुलटा का मंचन केन्द्रीय विद्यालय पट्टम ने किया। विविध रंगारंग कार्यक्रम

पुस्तकालय
110383
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

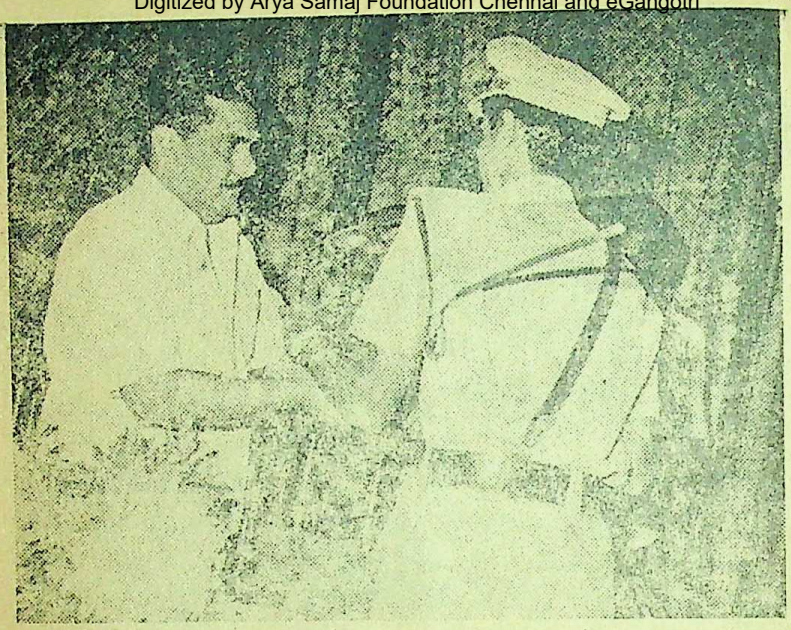

प्रस्तुतीकरण प्रथम पुरस्कार केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

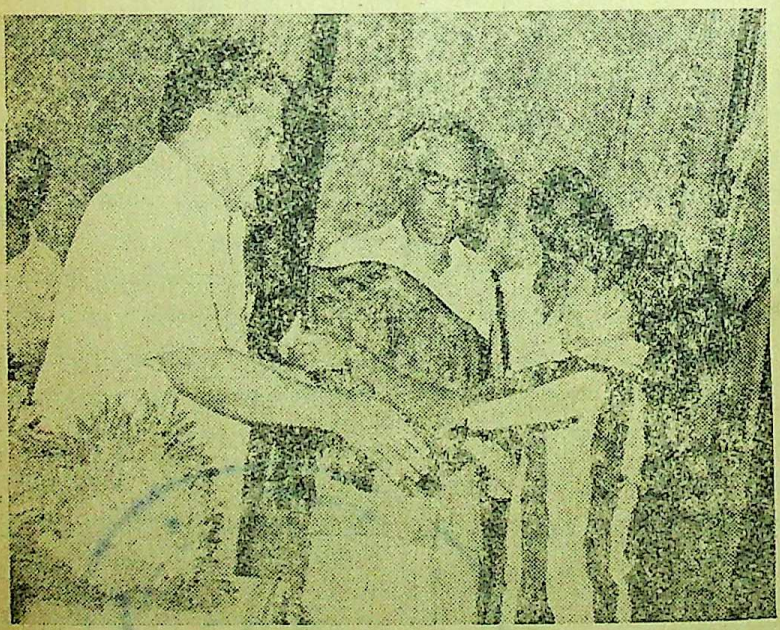

नाटक प्रस्तुतीकरण द्वितीय पुरस्कार केन्द्रीय विद्यालय, पांगोड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

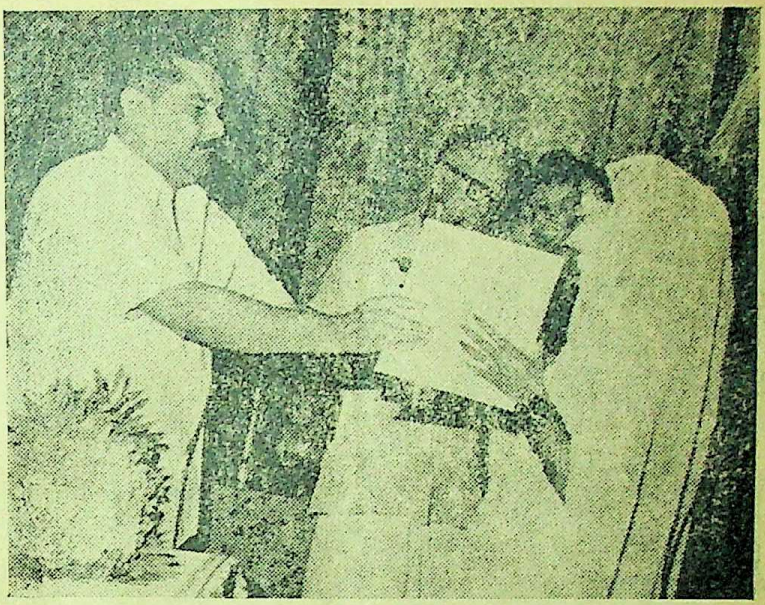

अभिनेत्री प्रथम पुरस्कार कुमारी श्रीकुमारी केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

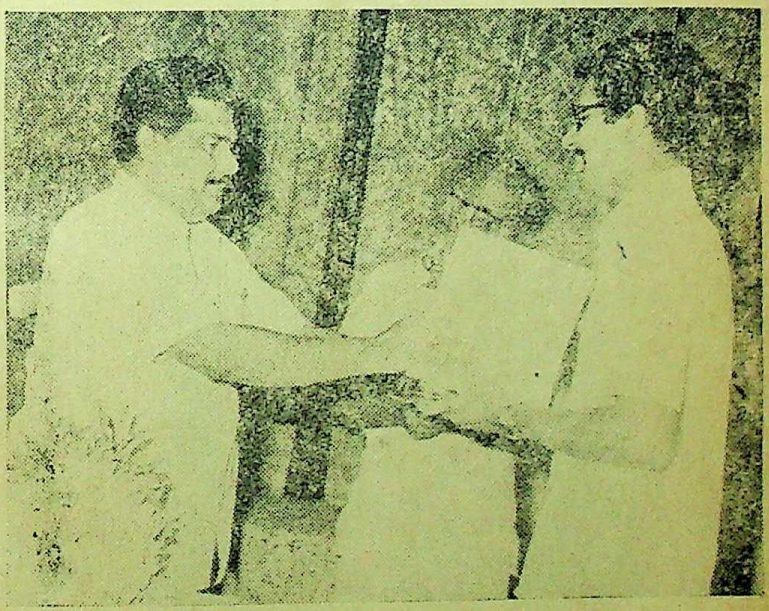

श्री० बालगोपाल मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

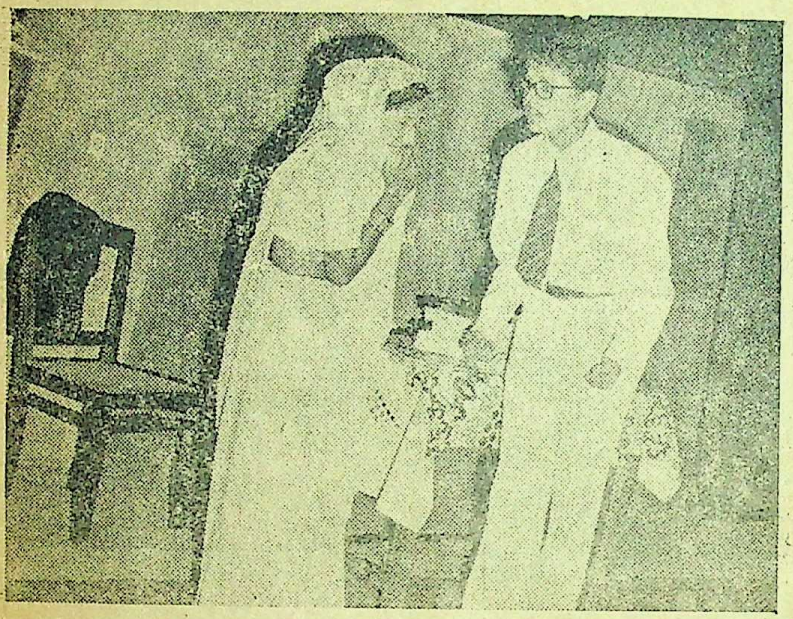

प्रस्तुतीकरण में प्रथम स्थान प्राप्त नाटक 'बदला' का एक दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लोक नृत्य । कु. कुक्कु परमेश्वरन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघ नृत्य । दीप नायर के नेनृत्व में ...

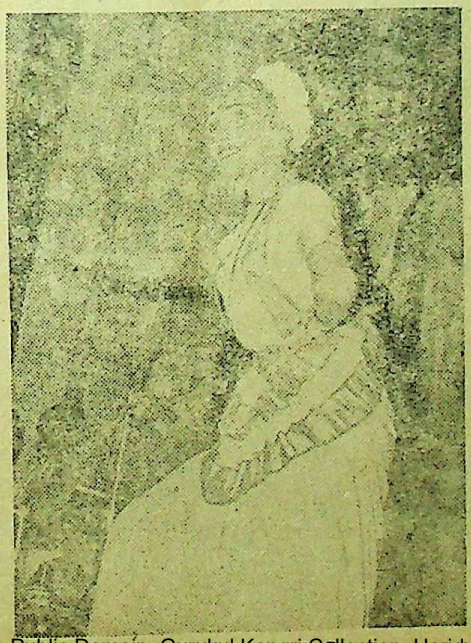

मोहिनीअट्टम—कु. गिरजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुच्चीपुडी शैली "पुष्पाजली"—कु. गीताशंकर

कुच्चीपुडी—कु. गीताशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

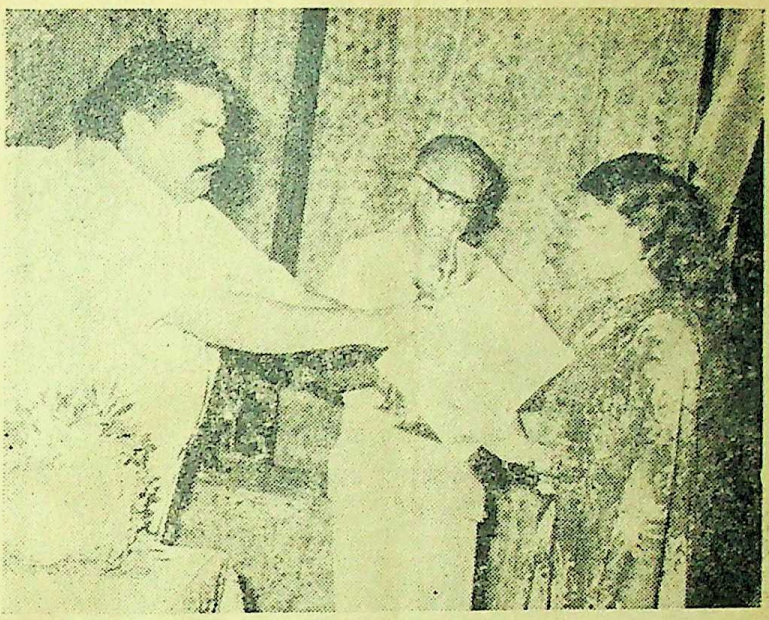

अभिनेता द्वितीय पुरस्कार कुमारी जमुनासेना, केन्द्रीय हिन्दी महा विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

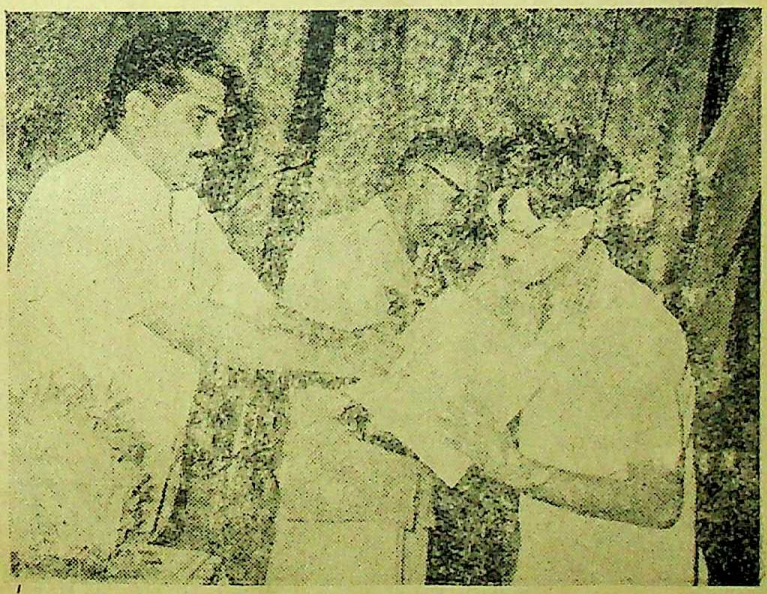

अभिनेता प्रथम पुरस्कार [illegible] केन्द्रीय हिन्दी विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

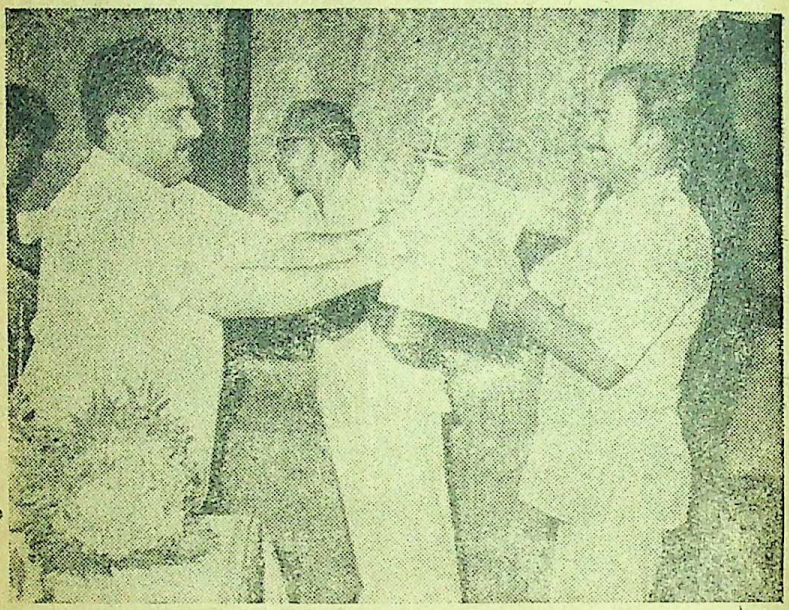

नाटक रचना में आश्वासन पुरस्कार केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम के हिन्दी अध्यापक श्री० पी. रघुनाथन नायर

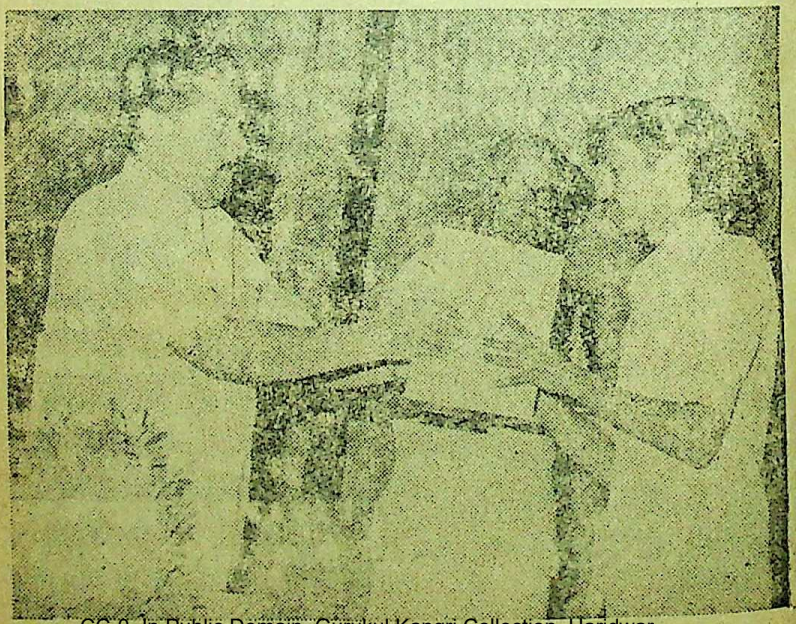

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री० एन. शेखर—प्रथम पुरस्कार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयोजित हुए । कुमारी चद्रकुमारी के ललित संगीत के बाद श्रीमती उषा आर. चडगा ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पेश किया । विक्रम साराभाई स्पेस सेंटर के इंजिनीयर ने तबला वादन किया ।

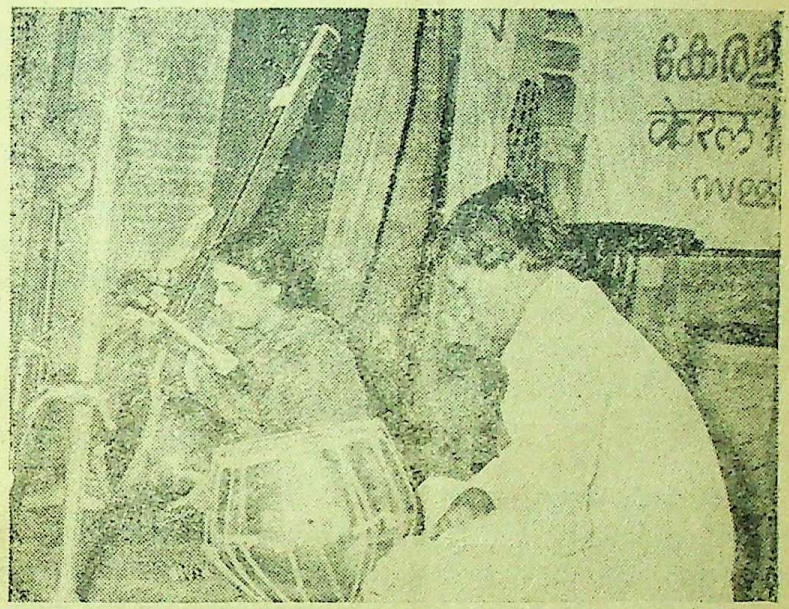

श्रीमती उषा आर. चडगा हिन्दुस्तानी संगीत प्रस्तुत कर रही हैं ।

श्रीमती गिरिजा चन्द्रन के निर्देशन में रिगाटा नाट्य समिति, तिरुवनन्तपुरम ने भरत नाट्यम, मोहीनीआट्टम कुच्चुप्पुडी आदि शास्त्रीय नृत्य और लोक नृत्य प्रस्तुत किये । इन सभी मनोरंजक कार्यक्रमों ने दर्शकों की वाहवाही लूटी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई

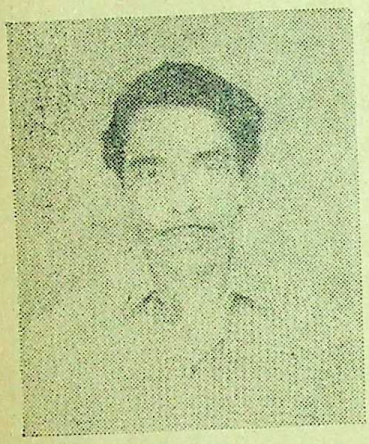

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्राध्यापक (भाषाविज्ञान तथा भाषा शिक्षण विधि) श्री० टी. के. नारायण पिल्लै को हिन्दी और मलयालम में आगत संस्कृत शब्दों के अर्थ परक एवं वाक्य विन्यास परक अध्ययन पर आगरा विश्व विद्यालय ने भाषा विज्ञान में पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है।

डा० नारायण पिल्लै को एम. ए. भाषा विज्ञान (आगरा वि० वि०) और हिन्दी शिक्षण निष्णात (केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) में प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था।

मणिपूर के शिक्षा विभाग में और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान में आप ने शिक्षण का दीर्घकालीन अनुभव प्राप्त किया है।

केरल सरकार के शिक्षा विभाग द्वा गठित हिन्दी पाठ्यपुस्तक सुधार समि के आप सदस्य हैं।

डा० पिल्लै अपना शोधकार्य केन्द्री हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रोफेसर तथ लिंग्विस्टिक्स सोसाइटी ऑफ़ इन्डिया भूतपूर्व सचिव डा० अमर बहादुर सि के मार्ग दर्शन में संपन्न किया।

वास्तव में इस शोध प्रबन्ध का मु उद्देश्य मलयालम भाषियों के लिए हिन्द शिक्षण हेतु आवश्यक शिक्षा निर्देश करन तथा शिक्षणोपयोगी सामग्री के निर्मा में आवश्यक सहायता प्रदान करना है परीक्षकों ने इस शोध प्रबंध को शिक्ष कार्य की सामग्री केलिए नितान्त उपयो एवं उपादेय माना है।

हिन्दी आर्य परिवार की भाषा है औ मलयालम द्रविड़ परिवार की। लेकि दोनों भाषाएँ संस्कृत से पर्याप्त मात्रा प्रभावित है। यह प्रभाव शब्दावली स्तर पर सबसे अधिक दिखाई देता है जहाँ एक ओर संस्कृत शब्दावली समानता के कारण दोनों भाषाओं शिक्षण में सहायता देती हैं वहाँ दूस ओर वर्तनीगत एवं अर्थगत अन्तर कारण पर्याप्त व्याघात भी उपस्थि करती है। दोनों भाषाओं ने कुछ संस्कृ शब्दों के रूपों तथा अर्थों में काफ़ी अन्त भी आए हैं। दोनों भाषाओं ने अप अपनी प्रकृति के अनुसार संस्कृत शब्द को स्वीकार किया है। दोनों भाषा में कुछ ऐसे भी संस्कृत शब्द प्राप्त होते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो इन में से केवल एक ही भाषा में प्रयुक्त हैं। दोनों भाषाओं की प्रकृति की भिन्नता के कारण इन शब्दों के वाक्य गत प्रयोग में भी अंतर दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध कार्य में इस प्रकार का शब्दावली का अर्थ परक एवं वाक्य विन्यास परक अध्ययन किया गया है।

इस शोध प्रबंध के नौ अध्यायों में, मलयालम और हिन्दी भाषाओं की शब्दावली पर अब तक हुए शोध कार्यों का समीक्षात्मक अध्ययन, दोनों भाषाओं का भाषा वैज्ञानिक परिचय, भाषाओं द्वारा शब्द स्वीकरण, शब्द और अर्थ का संबंध, दोनों भाषाओं में स्वीकृत संस्कृत शब्दों की वर्तनी एवं अर्थ में आए परिवर्तन, वाक्य संरचना के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक और आधुनिक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन प्रणालियों के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। संस्कृत शब्दों की वर्तनी एवं अर्थ से संबंधित अध्याय मलयालम और हिन्दी भाषाओं के अध्यापकों के अत्यन्त उपयोगी हैं।

❀

हिप्पालोस

ई. ४५ में हिप्पालोस नामक यूनानी यात्री समुद्रयात्रा करके चेर राज्य की राजधानी मुसिरिस (कोटुंगल्लूर) पहुँचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा

पुरस्कृत

मलयालम की प्रमुख कवयित्री श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा को उनके राजहंस नामक काव्य संकलन पर अध्यापक-कला साहित्य समिति, कोट्टयम. ने 'मुरली अवार्ड' प्रदान करके सम्मानित किया है ।

श्रीमती पोन्नम्मा केरल सरकार की हिन्दी शिक्षा अधिकारी है ।

हृदमांजलि, दीपरेखा, इरुळिल अलिञ्ञ सन्ध्यकळ, संकल्प मेखला ये श्रीमती पोन्नम्मा के अन्य काव्य संकलन हैं ।

हिन्दी में भी श्रीमती पोन्नम्मा सुन्दर कवितायें लिखती हैं ।

केरल में आर्यों का प्रवेश

अनुमान किया जाता है ई. पू० तीसरी शताब्दी में आर्यों ने केरल में प्रवेश किया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

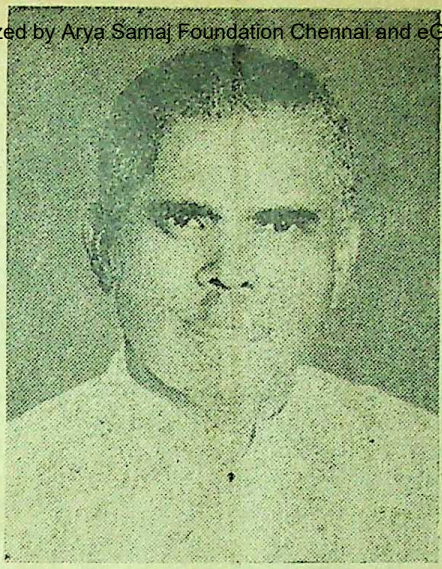

स्व० के. आर. इलंकत्तु

प्रमुख राजनीतिज्ञ एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री० के. आर. इलंकत्तु अब नहीं रहे। २३-३-१९८३ को उन का निधन हो गया। उनके निधन से केरल के सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्रों को अपूरणीय क्षति पहुँची है।

श्री इलंकत्तु का जन्म १९०० में नेय्यूर में हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के अपराध में तिरुवनन्तपुरम के महाराजास कालेज (वर्तमान आर्ट्स कालेज) से निकाले गये। १९४७ से १९५२ तक तिरुवितांकूर की विधान सभा के सदस्य रहे। इस बीच वे तिरुवितांकूर के परिवहन मंत्री भी रहे।

आठ वर्ष तक आप भारत सेवक समाज की केरल शाखा के अध्यक्ष रहे। केरल फ्रीडम फ़ाइटेर्स असोसियशन के अध्यक्ष के रूप में भी आपने बहुमूल्य सेवायें की।

सहकारिता में उन की विशेष रुचि थी। खादी प्रचार, हिन्दी प्रचार आदि कार्यों से भी आप जुड़े रहे।

आप केरल हिन्दी प्रचार सभा के बड़े हितैषी थे। सभा के प्रायः सभी समारोहों में आप भाग लिया करते थे।

२३-११-८२ को सभा भवन में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में भी आपने आशीर्वाद भाषण दिया था।

आप की दिवंगत आत्मा को हिन्दी परिवार की श्रद्धांजलियाँ। ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानधर्मा

डा० वी. गोविन्द शेनाय

रुग्ण वृद्धा ने बाहर पीपे की ओर देखा, और देखती ही रही। वह कूडे का था—सुडौल, कद्दे आदम विलायती। नया और विचित्र इतना कि फैशन ही मानों उस में सांस ले रहा हो। अफसर पुत्र ने खाने की मेज से थाली उठा कर इतने ज़ोर से बाहर फेंक दी थी कि वह पीपे से टकरा कर झन-झनाती हुई उसी में जागिरी थी मानों सही स्थान उसे अंत में मिल गया हो। थाली बुढिया की थी और थी उसी की भांति रुग्ण, बेडौल और बूढी। पुत्र का अफसर मित्र अपना अमरीकी पत्नी और अन्य उपयोगी व्यक्तियों के साथ शाम को प्रीतिभोज में निमन्त्रित था। खाने की मेज़ पर यह थाली व्यंग्य सी लग रही थी; मानों साकार सौष्ठ पर गोबर पाथ दिया गया हो। परन्तु उसके साथ बुढिया की गृहस्थी की अनेकानेक सुखद स्मृतियां जुडी हुई थीं और ऐसी जुडी हुई थी कि विस्मृति संभव ही नहीं थी। काश! उस का पति जीवित होता!

पुत्र का अफसर मित्र अपनी अमरीकी पत्नी और अन्य उपयोगी व्यक्तियों के साथ शाम को प्रीति भोज में निमंत्रित था।

वह वैधव्य झेलता जिये जा रही थी और उस में पैंतीस वर्ष गुजर गये थे। इस बीच में पुत्र, पुत्र वधू, बच्चे नौकर चाकर सब बदल गये थे सिवाय बुढिया के जो बदल ही नहीं पा रही थी। वह थाली से कहां भिन्न है! दोनों समान धर्मा, त्रस्त, दुःखी, दीन! उसे लगा, उस का अंतर ही झनझनकर कूडे पर बिखर गया है। काश! कोई उसे समझ पाता! रसोई घर के बाहर बरामदे में जा बैठी और रो रही। प्रीति भोज में व्यस्त परिवार साकार व्यर्थता की ओर क्या ध्यान देता। प्रातः काल पीपे से माथा टेके बैठी बुढिया दिखाई दी-निष्प्राण।

★

प्रिंसिपल, सरकारी कालेज
कोषिक्कोड, केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समापन सम्मेलन के श्रोताओं का एक दृश्य

कुच्चीपुडी का बालगोपालतरंग । कु. गीताशंकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'केरल ज्योति' मासिक पत्रिका का भविष्य अति उज्ज्वल रहे ।

डा० रामलाल वर्मा
व्याख्याता
के० हि० संस्थान
गणेशगुड़ी-गुवाहाटी-६
असम राज्य

'केरल ज्योति' का मार्च ८३ का अंक प्राप्त । डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर का लेख—'हिन्दी की रागात्मक भूमिका बहुत सुन्दर लगा । श्रीमान अय्यर साहब ने हिन्दी साहित्य के इतिहास की पूरी ललित यात्रा ही करवा दी । उनकी भाषाशैली का अपना ही आनंद है । इतनी ही सुन्दर लगी श्री देव केरलीय की कविता 'जय हिन्दी जय भारतवाणी । आप केरल के साधु हिन्दी प्रचारकों के मन में हिन्दी के प्रति कितनी सात्विक ममता है, यह देखकर नतमस्तक हो पाता हूँ । वह मलयालम भाषा भूमि भी धन्य है, जिनके बेटों में इतनी उदार लहता है । केरल किसको मुग्ध नहीं करेगा ? राजेंद्र शर्मा की कविता में ठीक ही कहा गया है —यहाँ प्रकृति का मुक्त हृदय है बिन साँकल का द्वार और केरल का शृंगार सत्य ही भारत माँ की धाती । हार्दिक बधाई स्वीकारें ।

आपका,
डा० इन्दर राज वैद
आकाशवाणी, मद्रास

'केरल ज्योति' के नियमित एवं स्तरीय प्रकाशन हेतु बधाई ।

डा० आशा कपूर
नीतिनगर, रुडकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नयी दिल्ली की ओर से हिन्दी विद्यापीठ, देवघर के तत्वावधान में फरवरी-मार्च १९८३ में देवघर में आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी कार्यकर्ता शिविर। बीच में बैठे हैं संस्था संघ के अध्यक्ष डा० गंगाशरण सिंह। केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि श्री० पी. पुष्पांगदन तीसरी पंक्ति में चौथे (बायें से दायें)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

KERAL JYOTI

Vol. XVIII-N

April 1983

Price : Re. 1

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

हिन्दी प्रचारकों के लिए १७-३-१९८३ से २६-३-८३ तक केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन सम्मेलन। डा० के. राघवन पिल्लै उद्घाटन भाषण दे रहे हैं। बैठे हैं—(बायें से) डा० पुष्पिता जोरण, डा० धर्मवीर आइ. ए. एस. और प्रो० विष्णु नारायण नंपूतिरि।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित

मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

15-6-83
FREE

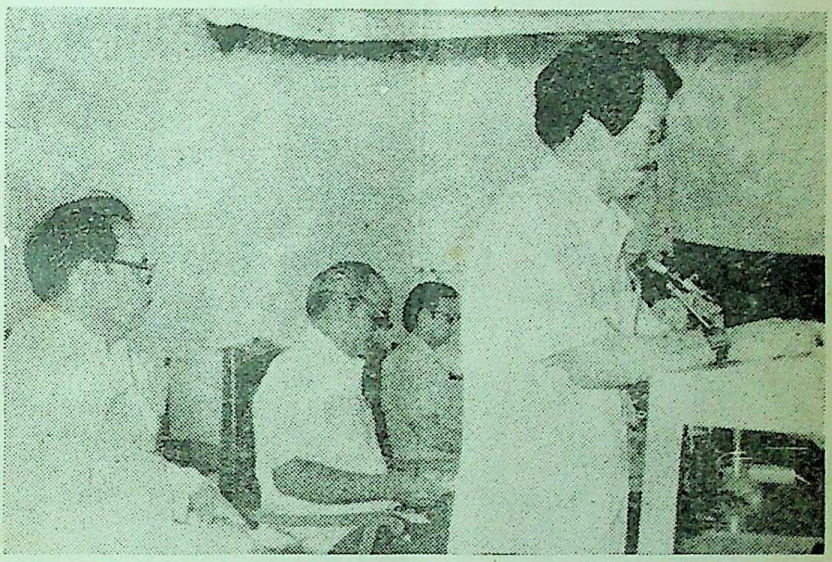

केंन्द्रीय हिन्दी संस्थान के बीसवें दीक्षाँत समारोह में केंद्रीय शिक्षा उपमंत्री श्री० पी. के. थुंगन दीक्षान्त भाषण देते हुए । मंच पर बैठे हैं केंद्रीय हिन्दी संस्थान के कुल सचिव श्री० करुणा शंकर दीक्षित, निदेशक डा० बाल गोविन्द मिश्र और भारत सरकार के संयुक्त शिक्षा सलाहकार श्री० वी. के. पंडित ।

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार:-"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १८
दल : २
मई १९८३

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपर्क भाषा हिन्दी या अंग्रेज़ी?

सन् १९१८ में इन्दौर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आठवें अधिवेशन के अध्यक्षीय भाषण में गांधीजी ने भारत को भाषा संबन्धी सही दृष्टि प्रदान की थी । आप ने कहा था—"इसलिए उचित और संभव तो यही है कि प्रत्येक प्रान्त में उस प्रांत की भाषा सारे देश के पारस्परिक व्यवहार केलिए हिन्दी और अंतर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए अंग्रेज़ी का व्यवहार हो ।"

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व हमारे प्रान्तीय और केन्द्रीय स्तर के नेता इसी दृष्टि को अपनाते हुए आगे बढे । संविधान में भाषा संबन्धी धारायें भी तदनुरूप बनीं ।

पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भाषा संबन्धी कई भ्रामक धारणायें फैलायी जाने लगीं । जनता पर ऐसी धारणायें थोपी जाने लगीं कि भारतीय भाषाओं में प्रशासन, शिक्षण, व्यापार-वाणिज्य का माध्यम बनने की क्षमता नहीं है, अंग्रेज़ी ही विश्व की सर्वोत्तम और सर्वव्यापी भाषा है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

हिन्दी प्रचार में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भूमिका 3
पी. के. थुंगन

सद्भाव 8
डॉ० तेजनारायण लाल

अंग्रेज़ी और हिन्दी—
एक हिन्दी भाषी की दृष्टि में 9
डॉ० धर्मवीर

स्मृति 30
मूल: के. वी पुट्टप्पा
अनुवाद: पी. जी. कामत

पराजय 31
यूसफलि केच्चेरी
अनुवाद: विजयकुमार

पूर्ण विराम 32
क. त. अ. कलैवाणन

विपंची 32
वी. के. एस. नंपूतिरी

भाषा समस्या को
प्रयोगवाद से हल करें 33
डॉ० के. राघवन पिल्लै

झरोखा 40

हिन्दी की प्रभुता स्वीकार करने पर प्रान्तीय भाषाओं का विकास अवरुद्ध हो जायेगा इत्यादि इत्यादि। आज स्थिति यहाँ तक आ गयी है कि विश्व प्रेम का मुखौटा धारण किये हुए कुछ अंग्रेज़ी प्रेमी विशेषज्ञ अंग्रेज़ी को भारत की संपर्क भाषा का पद दिलाने के षड्यंत्र रचने लगे हैं। वे यह प्रचार कर रहे हैं कि चूँकि विद्वानों विशेषज्ञों और नेताओं का अखिल भारतीय संपर्क अंग्रेज़ी के माध्यम से हो रहा है इसलिए अंग्रेज़ी ही भारत की संपर्क भाषा है. आम भाषा है।

इस में तटस्थता की नीति शायद राष्ट्र की एकता के लिए हानिकारक हो सकती है। जैसे केन्द्र शिक्षा एवं संस्कृति विभाग के उपमंत्री श्री० पी. के. थुंगन ने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के बीसवें दीक्षान्त समारोह में सुझाया हिन्दी को देश की संपर्क भाषा बनाने के लिए सभी स्तरों पर सभी प्रकार के प्रयास करने होंगे ★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रचार में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की भूमिका

श्री० पी. के. थुंगन

उप मंत्री, शिक्षा संस्कृति और समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

संस्थान के निदेशक डॉ० मिश्र, मण्डल के विद्वान सदस्यो, अध्यापको, छात्रो, सज्जनो और देवियो,

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के बीसवें दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आप लोगों के सामने मुझे अपने विचार प्रकट करते हुए बड़ी प्रसन्नता और संतोष हो रहा है। भारत सरकार भारतीय भाषाओं के विकास के साथ-साथ हिन्दी के प्रचार और प्रसार के लिए सभी संभव उपाय कर रही है। यह कार्य वैसे तो बहुत सी स्वैच्छिक संस्थाओं के द्वारा अलग-अलग प्रदेशों में किया जा रहा है, परन्तु भारत सरकार ने अपनी भाषा नीति को अमल में लाने के लिए जो योजनाएँ बनायी हैं, उन्हें बनाने और चलाने के लिए कई प्रकार के शोध करना, आधारभूत आँकड़े इकट्ठा करना और उनका विश्लेषण करना आदि का काम आवश्यक है। हिन्दी से संबंधित इस प्रकार के मूलभूत तथा ऊँचे स्तर के शैक्षिक और अनुसंधान का कार्य करने के लिए ही भारत सरकार ने केन्द्रीय संस्थान की स्थापना की है। जैसा कि आपको मालूम है, भारत सरकार अपनी भाषायी शिक्षा की नीति को अमल में

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के बीसवें दीक्षान्त समारोह में दिया गया अभिभाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने के लिए कई भाषा संस्थान चला रही है, जिनके द्वारा इस प्रकार के उच्च स्तर के शोध प्रशिक्षण और समन्वय का कार्य किया जाता है। सारे देश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार और हिन्दी की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान में हिन्दी को केन्द्र की राजभाषा का स्थान दिया गया हैं और इसलिए हिन्दी को देश की संपर्क भाषा बनाने के लिए सभी स्तरों पर सभी प्रकार के प्रयास करना केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी है। मुझे इस बात से संतोष है कि इस उत्तरदायित्व को पूरा करने के लिए हिन्दी के शिक्षण, प्रशिक्षण और अनुसंधान से संबंध रखनेवाले विभिन्न मौलिक, आधारभूत और शोधपरक कार्यक्रमों को संस्थान आयोजित करता है।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी के प्रशिक्षित अध्यापकों की एक बहुत बड़ी संख्या में जरूरत तो है ही, उन्हें द्वितीय भाषा शिक्षण प्रविधियों में प्रशिक्षित किया जाना भी बड़ा जरूरी है। हिन्दी के प्रशिक्षित और अच्छे अध्यापक तैयार करने के लिए केन्द्र सरकार विभिन्न राज्यों को अनुदान देकर हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय/संस्थान खोलने को सुविधा प्रदान कर रही है। ये संस्थाएँ उन राज्यों में हिन्दी अध्यापकों की तैयार करने का काम करती हैं। इन महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम, शिक्षण और परीक्षा के काम का स्तर समान और ऊँचा बना रहे, इसे देखना भी हमारी

मैं तो यह चाहूँगा कि देश के अन्य राज्यों में स्थित हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भी केन्द्रीय सरकार की इस नीति के अनुसार संस्थान से संबद्ध होकर संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ उठायें।

जिम्मेदारी हो जाती है। इसीलिए केन्द्रीय सरकार ने यह नीति अपनायी है कि पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण और परीक्षा जैसे शैक्षिक कार्यों के लिए ये महाविद्यालय/संस्थान केन्द्रीय हिन्दी संस्थान से संबद्ध रहें। उत्तर-पूर्व के कई महाविद्यालय/संस्थान इस रूप में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के साथ संबद्ध हैं भी। मैं तो यह चाहूँगा कि देश के अन्य राज्यों में स्थित हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय भी केन्द्रीय सरकार की इस नीति के अनुसार संस्थान से सबद्ध होकर संस्थान की विशेषज्ञता का लाभ उठायें।

हिन्दी का कार्य केवल देशव्यापी ही नहीं है, वरन् अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का भी है। बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिन्दी इस समय संसार की तीसरे नम्बर की भाषा है। इसीलिए हिन्दी इस समय संसार के बहुत से देशों में सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में भाषा के रूप में पढ़ायी जाती है। इसीलिए विभिन्न देशों से बराबर कल्चरल ऐक्सचेन्ज प्रोग्राम के द्वारा या केन्द्रीय सरकार की "विदेशों में हिन्दी प्रचार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना" के अंतर्गत हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की सुविधाएँ प्रदान करने की माँग भारत सरकार से की जाती रही है। इसके लिए सरकार विदेशी छात्रों को छात्रवृत्ति देकर भारत में हिन्दी पढ़ने की सुविधाएँ देती है और सांस्कृतिक समझौतों के अंतर्गत अध्यापकों के आदान प्रदान की व्यवस्था भी करती है। इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अन्तर्गत हमारे देश से हिन्दी भाषा का अध्यापन करने वाले अध्यापक आई०सी०सी० आर० के द्वारा विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी का कार्य करने के लिए प्रतिनियुक्त किए जाते हैं। मुझे

यह कार्य तो वास्तव में भारत में ही किया जाना है और यह कार्य सरकार के द्वारा, और हिन्दी के विद्वानों के द्वारा किया जाना अपेक्षित है।

यह जानकर प्रसन्नता है कि संस्थान के कई अध्यापकों ने इस योजना के अंतर्गत मारीशस, जार्ज टाऊन विश्वविद्यालय, गुयाना, हवाना विश्वविद्यालय, क्यूबा और बुखारेस्ट विश्वविद्यालय, रोमानिया में हिन्दी विभागों की स्थापना का कार्य किया है और वहाँ हिन्दी के अध्यापन के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्य-सामग्री आदि का भी निर्माण किया है। हिन्दी के अन्तर-राष्ट्रीय विकास के लिए यह एक महत्व-पूर्ण कार्य है। इस कार्य को और आगे बढ़ाने के लिए और उसे गति देने के लिए संबद्ध शोध का कार्य बहुत जरूरी है। यह कार्य तो वास्तव में भारत में ही किया जाना है और यह कार्य सरकार के द्वारा, और हिन्दी के विद्वानों के द्वारा किया जाना अपेक्षित है।

मैं देश के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम, सभी क्षेत्रों में गया हूँ। मैंने अपनी इन यात्राओं के दौरान यह बराबर पाया है कि शहरों और कस्बों में, तीर्थ स्थानों और औद्योगिक केन्द्रों में, और उन सभी स्थानों में जहाँ विभिन्न भाषाओं के सामान्य लोग मिलते हैं वे हिन्दी में ही संपर्क करते हैं। इसमें उन्हें न कोई कठिनाई होती है और न हिचकिचाहट। हमें हिन्दी के साहित्यिक और शुद्ध मानक रूप पर ही बल नहीं देना चाहिए बल्कि संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी के जिस स्वरूप को जनता ने स्वीकार किया हुआ है और जिसका आप से आप जीवन के बहुत से प्रयोगों के दौरान विकास हो रहा है, उसको पुष्ट होने दिया जाय जिससे हिन्दी का संपर्क भाषा वाला रूप और अधिक निखर सके। इस संबंध में आवश्य शोध और प्रशिक्षण का कार्य करने के लिए हिन्दी संस्थान जैसी संस्थाओं को आगे आना चाहिए।

भारत में हिन्दी का उपयोग अलग-अलग प्रयोजनों के लिए किया जाता है। सरकारी दफ्तरों में, बैंकों में, वाणिज्य व्यापार के सभी क्षेत्रों में हिन्दी का उपयोग हो रहा है। भाषा के इस प्रयोजनमूलक स्वरूप के विकास के लिए और उसके लिए आवश्यक पाठ्य-सामग्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और प्रशिक्षण का कार्य हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का स्वरूप दिलाने में बहुत महत्व-पूर्ण योग देगा। इस प्रकार के कार्य को और अधिक बढ़ाये जाने की आवश्यकता है और इस दिशा में जो काम संस्थान ने अभी तक किया है, वह सरकारी दफ्तरों, बैंकों की हिन्दी तक ही सीमित रहा है। इस काम को आवश्यक सर्वेक्षण और शोध के आधार पर और अधिक प्रयोजनों के लिए बढ़ाये जाने की जरूरत है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि वैज्ञानिक हिन्दी के स्वरूप और विशेषताओं का अध्ययन करने की दिशा में संस्थान में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही इस संबंध में आवश्यक उपयोगी परिणाम निकलेंगे।

मैं यह मानता हूँ कि हिन्दी के विकास का सवाल सभी भारतीय भाषाओं के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। हिन्दी तभी आगे बढ़ सकती हैं और पनप सकती है, जब अन्य सभी भारतीय भाषाओं का भी विकास हो। इतना ही नहीं हिन्दी के सही अखिल भारतीय स्वरूप के विकास में सभी भारतीय भाषाओं का योगदान अपेक्षित है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान की धारा ३५१ में हिन्दी के सामाजिक रूप की बात कही गई है। इस स्थिति में हिन्दी को किसी पर थोपने का सवाल ही नहीं उठता। मैंने तो यह पाया है कि देश के विभिन्न भागों में हिन्दी की उपयोगिता को देखते हुए हिन्दी को

हिन्दी तभी आगे बढ़ सकती है और पनप सकती है, जब अन्य सभी भारतीय भाषाओं का भी विकास हो।

स्वीकार करने के लिए पर्याप्त इच्छा और वातावरण मौजूद है। राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए इसको और अधिक बढ़ाने की जरूरत है।

देश के विभिन्न भागों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य काफी समय से किया जा रहा है लेकिन उत्तरपूर्व में यह कार्य अभी पर्याप्त गति के साथ नहीं हो पाया है। इसके लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराने और इस कार्य को गति देने की अत्यधिक आवश्यकता है। हिन्दी के लिए इस क्षेत्र में पर्याप्त अनुकूल वातावरण मौजूद है। मुझे इस बात से संतोष है कि सरकार की नीति के अनुसार केन्द्रीय हिन्दी संस्थान उत्तर-पूर्व के विभिन्न राज्यों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन के लिए कार्य कर रहा हैं। मैं यहाँ अपने सामने नागालैण्ड, मिजोरम मणिपुर आदि राज्यों से आए हुए हिन्दी अध्यापकों को जब देखता हूँ तो मुझे इस बात की प्रसन्नता होती है कि इन राज्यों में हिन्दी के काम को अब काफी बढ़ावा मिल सकेगा। ये ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर इस संस्थान को और अधिक ध्यान देना चाहिए। इसके द्वारा देश की शैक्षिक और भावात्मक एकता को बढ़ावा मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का काम एक राष्ट्रहित का काम है। यह काम सभी के सामूहिक प्रयत्नों के द्वारा ही पूरा हो सकता है। ऐसे कार्य में व्यक्तिगत कठिनाइयों और असुविधाओं को नजरअन्दाज करते हुए मिशनरी भावना से काम करने की जरूरत होती है। संस्थान एक अखिल भारतीय संस्था है और मुझे आशा है कि संस्थान के कार्यकर्ता देश के किसी भी भाग में अपना कर्त्तव्य निभाने के लिए सहर्ष तैयार रहेंगे। ऐसी भावना किसी भी शैक्षिक संस्था के स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक भी है।

आज जिन छात्रों को उपाधियाँ या प्रमाणपत्र दिए गए हैं उनसे हमारी बहुत अधिक आशाएँ हैं। वे अपने-अपने क्षेत्रों में हिन्दी का काम आगे ले जाने के लिए पूरी-पूरी कोशिश करेंगे, हिन्दी के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करेंगे और हिन्दी के राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय विकास में मदद करेंगे, इसका मुझे पूरा भरोसा है। मैं यह भी चाहूँगा कि आप लोग अपने व्यावहारिक अनुभवों और कठिनाइयों से संस्थान को बराबर अवगत करते रहें जिससे आपके क्षेत्रों से आने वाले छात्रों और छात्राध्यापकों को भविष्य में शिक्षण प्रशिक्षण देते समय उनका ध्यान रखा जा सके। मैं आप सभी उपाधि और प्रमाणपत्र प्राप्त करने वाले छात्रों को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक

तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन -१०-१९८३ से -१०-१९८३ तक दिल्ली में आयोजित हो रहा है। केरल ज्योति का 'तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक' भी अक्तूबर १९८३ में प्रकाशित होगा।

लेखक बन्धुओं से निवेदन है कि अपनी बहुमूल्य रचनायें भेज कर विशेषांक का महत्व बढ़ायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्भाव

डा० तेज नारायण लाल

जगत होवे मेरा परिवार !
सतोगुण का निशि–दिन संचार !
मधुरिमा में जीवन का खेल,
स्नेह सुख से होवे उर–मेल,
भरूँ नयनों में भावोद्गार !
जगत होवे मेरा परिवार !
मधुर रजनी के चंचल प्रात,
सदा करते रश्मित जलजात,
करे मेरा तितली–मन प्यार !
जगत होवे मेरा परिवार !
विहग सा हो स्वतन्त्र निज देश,
नील नभ के ये रवि–राकेश-
उच्च हिमगिरि पर हों साकार !
जगत होवे मेरा परिवार !
मिलें लघु लघु कण से प्रिय प्राण,
सुखद शुक ! उर–पिंजर के गान,-
ससीम में कर असीम विस्तार !
जगत होवे मेरा परिवार !

५६, नार्थ विजय नगर कॉलोनी
आगरा-२८२००४ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी और हिन्दी— एक हिन्दीभाषी की दृष्टि में

डॉ० धर्मवीर, आई. ए. एस.,
पी एच. डी.

हिन्दी पर एक राष्ट्रभाषा के रूप में बोलने के कई रूप हो सकते हैं। एक रूप तो यही है जो अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के लोग इसके पक्ष में या विपक्ष में बोल सकते हैं। इसमें किसी को भी कुछ कहने की कोई मनाही नहीं है। जो जिसके जी में आए, जैसा जिसे अच्छा लगे, वह अपने विचार प्रकट कर सकता है। यही विचार-स्वातन्त्र्य इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी भाषा किसी पर थोपी नहीं जा रही है। यह स्वेच्छा से आगे बढ़ रही है, और लोगों का हृदय जीत रही है।

आपने, तथा अन्य वक्ताओं ने इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किए, वे मनभावन थे, और मैंने ध्यान से सुने। मुझे आपकी भावनाओं में हिन्दी के लिए उमड़ता हुआ प्यार दृष्टिगोचर हुआ। इस बात की मुझे विशेष प्रसन्नता है कि केरल में हिन्दी प्रचार का यह कार्य बड़ी सद्भावनाओं के साथ तथा एक अच्छे वातावरण के बीच सम्पन्न होता जा रहा है। इस मंच के सिवा भी मैंने केरलवासियों की हिन्दी भाषा के राष्ट्रीय रूप पर प्रशंसाएँ सुनी हैं। पर, यत्र-तत्र कुछ टीका-टिप्पणियाँ भी मेरे कानों में पड़ गई हैं। वे बातें केवल मेरे समझने के लिए हैं। मैं वास्तव में, केरल में राष्ट्रीय एकता का एक छात्र बन कर ही आया हूँ।

दक्षिण भारत के एक राजनैतिक भाग से हिन्दी के विरोध में कुछ बातें कही जाती हैं। हिन्दी-विरोध की ये बातें आपके कानों तक भी आती हैं,

२६-३-८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रांगण में आयोजित सम्मेलन में दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण भारत को भी उत्तर भारत के हृदय की इस महावेदना को सद्भावनाओं समेत समझना है कि हिन्दी भाषी लोग अंग्रेज़ी के इतने कट्टर विरोध में क्यों हैं? केवल इसी प्रकार, आपस में एक-दूसरे की समझ से ही एक सम्यक हल पर पहुँचा जा सकता है।

क्योंकि आप उनके बहुत समीपवर्त्ती क्षेत्र में हैं। साथ ही, दक्षिण भारत के कुछ लोगों के हृदय में यह बात भी आ सकती है कि वे हिन्दी भी चाहें और अंग्रेज़ी भी चाहें। लेकिन, मैं पहले ही कह चुका हूँ कि ये सारी बातें आप जानते हैं, क्योंकि ये आपके निकटतम पड़ोसियों के मुख से ही निकलती हैं और उत्तर भारत का होने के नाते ये मेरे समझने के लिए हैं।

अंग्रेज़ी से चिढ क्यों?

मुझे यहाँ आमंत्रण का अवसर दे कर शायद मुझसे आप यह अधिक जानना चाहते हैं कि एक हिन्दी भाषी क्षेत्र का वासी होने के नाते मेरे हिन्दी के राष्ट्रभाषा रूप पर क्या विचार हैं? लेकिन, इसका उत्तर देने से पहले तो मुझे यह बताना पड़ जाएगा कि हम हिन्दी भाषियों को अंग्रेज़ी से इतनी चिढ़ क्यों है। हमारे लिए यह बात तो बाद में आती है कि हमें हिन्दी से प्यार है, सबसे पहली बात तो अंग्रेज़ी को इस देश के बच्चों के कन्धों पर जुआ बनने से हटाने की है। अपने सामने इस बड़े काम को देख कर अब हमें लग रहा है कि अंग्रेज़ों को भगा कर हमने केवल आधी स्वतन्त्रता ही प्राप्त की है। हमारी पूरी स्वतन्त्रता वास्तविक तभी प्राप्त होगी जब हम अंग्रेज़ी को इस देश से वहीं सात समुन्दर पार उतार देंगे।

अपनी ओर से मैं, राष्ट्रीय एकता का एक छात्र होने के नाते, दक्षिण भारत की समस्याओं को अधिक से अधिक समझने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मुझे दक्षिण भारत की शिकायतों में कुछ सच्ची जड़ें दिखाई दी हैं। लेकिन, जब भारतीय संविधान के तत्सम्बन्धित प्रावधानों को पढ़ता हूँ तो पता चलता है कि ये शिकायतें नई नहीं हैं, बल्कि इन समस्याओं का मूल हमारे संविधान में पहले से ही है। उत्तर भारत को दक्षिण भारत की यह बात समझनी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वह संविधान के निर्माता के हित को ही समझता जा रहा है। लेकिन, दक्षिण भारत को भी उत्तर भारत के हृदय की इस महावेदना को सद्भावनाओं समेत समझना है कि हिन्दी भाषी लोग अंग्रेजी के इतने कट्टर विरोध में क्यों है? केवल इसी प्रकार, आपस में एक-दूसरे की समझ से ही एक सम्यक हल पर पहुँचा जा सकता है।

प्रश्न उठता है कि अंग्रेजी भाषा में ऐसी क्या विशेष बुराई है जो हिन्दी भाषी लोगों को यह फूटी आँखों नहीं सुहाती? लेकिन, मैं इसका उत्तर यह कह कर नहीं दूँगा कि अंग्रेजी भाषा में अपने आप में कोई बुराई है। मैं यहाँ यह नहीं कहना चाहूँगा कि इसमें "बी यू टी—बट" और "पी यू टी—पुट" का अन्तर है। मैं भाषा-वैज्ञानिकों की इन व्यर्थ की बातों में अपना मस्तिष्क ही नहीं खपाना चाहता। मैं यहाँ एक राष्ट्र की दृष्टि से बोल रहा हूँ, और सभी राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का सम्मान करते हुए यह मानता हूँ कि संसार की कोई भी भाषा बुरी नहीं है। हम सबको अपनी-अपनी भाषाएँ प्रिय हैं। इस सम्बन्ध में, हमारे सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश-प्राप्त न्यायाधीश श्री० वी. आर. कृष्णन अय्यर जी ने भाषाओं के भारतीय संदर्भ में अपनी विद्वान कलम से यह लिखकर एक महत्त्वपूर्ण निर्णय भी दिया है कि यह प्रश्न कितना भावात्मक और लोगों के जीवन से सीधा जुड़ा हुआ है। गलती तो तब उभरती है जब लोगों से उनकी प्रिय भाषाएँ छीनी जाती हैं। और यहीं से किसी दूसरी भाषा का थोपा जाना आरम्भ हो जाता है। यहीं से राष्ट्रीय स्तर पर भाषा-नीति-सम्बन्धी बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती है।

साथ ही, मेरे इस भाषण की भी कुछ सीमाएँ हैं। इसलिए यहाँ मैं केवल समस्याओं को छूते हुए जाऊँगा, उनके पूरे और विस्तृत समाधान प्रस्तुत करना इस सांस्कृतिक वातावरण की सन्ध्या में संभव नहीं है, क्योंकि स्वयं मैं भी विभिन्न संस्कृतियों के सांस्कृतिक आदान-प्रदानों से सम्बन्ध रखने के कारण आपके भरतनाट्यम, मोहिनियाट्टम, कुच्चुप्पुडी तथा लोक नृत्य आदि देखने की बहुत ही उतावली में हूँ। इसलिए, मेरी मानसिक चाहत यही है कि अपने साथ-साथ आपका भी अधिक समय न लिया जाए। लेकिन, मुझे आपकी इस भावना का आभास अवश्य हो रहा है कि आप मेरे मुख से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनना चाहते हैं कि एक चिन्तक के न ते मैं इस विषय पर कुछ कहूँ-बोलूँ। यदि मैं विषय की दृष्टि से कुछ न भी कहूँ, तो भी कम से कम आप मुझसे यह अपेक्षा तो रख ही रहे हैं कि यह देखा जाए कि हिन्दी भाषी लोग अपनी मौलिकताओं में बोलते कैसे हैं।

मैं अपने मूल विषय पर आऊँ। मैंने केरल के कुछ बुजुर्ग पढ़े-लिखे लोगों से व्यक्तिगत रूपों में कभी चुप-चुप और कभी खुल-खुल कर बातें की हैं। या तो वे लोग अब तक अपनी सरकारी सेवाओं से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं, या उनमें से अधिकांश अगले एक-दो वर्षों में ही सेवा निवृत्त हो जाएँगे। उनके सिर के, और दाढ़ी-मूँछ के बाल सफेद हो गए हैं या शीघ्र होने को हैं। मेरा तात्पर्य उनके इन चित्रों के द्वारा यही है कि मैं आपको स्वतंत्रता-पूर्व के समय की ओर ले जाना चाह रहा हूँ। और, साथ ही, यहाँ यह ध्यान रहे कि मैं उन लोगों की बात कतई नहीं कर रहा हूँ जिन भारतीय लोगों ने पूर्व से ले कर पश्चिम तक अंग्रेज़ों को यहाँ राज्य करने में कम या अधिक सहायता पहुँचाई थी। यह अपने देश के इतिहास को लिखने की हमारी थोड़ी विवश परम्परा रही कि हमने 'जयचन्दों" को भी भारतीय कहा है, तथा संस्कृति की धरोहर को बेच खाने वाले "सामाजिक तस्करों" को भी मुआवजे दिए हैं। हमने उन ज़मींदारों को उनकी सारी कृषि और बागान भूमि उन्हीं के परिवारों में बाँट लिए जाने के भूमि-सुधार सम्बन्धी कानून पारित कर दिए थे जिन्होंने इस देश से भागते हुए अंग्रेज़ों को अपनी बड़ी-बड़ी हवेलियों में छिपाया था। लेकिन, प्रसन्नता की बात है कि समय-समय पर हमने अपनी गलतियों पर पश्चात्ताप किया है।

तो, मेरा अपना मन्तव्य उन केरलवासियों से है जिन्होंने स्वतन्त्रता-संग्राम में बढ़ कर भाग लिया था। उनके हृदयों से पूछो कि स्वतन्त्रता-पूर्व के समय में हिन्दी के प्रति लोगों का कितना अगाध प्यार था। उनमें से कई ने मुझे रो-रो कर बताया है कि हिन्दी उन दिनों हम सब भारतवासियों की अंग्रेज़ों से लड़ाई का एक अंग था। बिना हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि को सीखे उन लोगों का मन उन्हें स्वयं कचोटता था कि जैसे वे अंग्रेज़ों से न लड़ रहे हों। लेकिन आज उन्हीं बेचारों का कहना है कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह गाँधी की मौत क्या थी, हिन्दी की मौत थी, हमारी राष्ट्रभाषा की मौत थी।

के पश्चात ही सब कुछ हिन्दी के विषय में उलटा हो गया। कुछ स्वार्थी लोगों ने सामान्य जनता का हिन्दी सीखने का उत्साह नष्ट कर दिया। हिन्दी के विषय में नई-नई भ्रामक बातें खड़ी कर दी गईं। इस दुर्विचार को देख कर मैं तो यही दोहराना चाहूँगा कि एक रूप में हमें स्वतन्त्रता अवश्य मिली, पर दूसरे रूप में मेरे द्वारा पहले गिनाए गए वे "जयचन्द", "सांस्कृतिक तस्कर" और बड़े-बड़े "मुआवजे" पाने वाले तथा सारी राष्ट्रीय सम्पत्ति को अपने कुत्तों तक के नामों में बाँटने वाले लोग हमारी स्वतन्त्रता पर हावी हो गए होंगे। ऐसे ही दुष्काल में एक सिर फरे साम्प्रदायिक मनुष्य ने दिल्ली में गाँधी को गोलियाँ मार दी थीं। गाँधी जी की मौत से हुई राष्ट्रीय हानियों को कई-कई रूपों में गिनाया गया है, पर मुझे तो सबसे बढ़ कर लगता है कि वह गाँधी की मौत क्या थी, हिन्दी की मौत थी, हमारी राष्ट्रभाषा की मौत थी। ऐसे ही समय के लिए मुझे यहाँ उर्दू की कवियित्री और हिन्दी चलचित्रों की महान अभिनेत्री दिवंगता मीनाकुमारी जी के शेर की एक पंक्ति याद आ रही है—

अचानक आ गई हो मौत वक्त को जैसे !

राष्ट्रभाषा हिन्दी के इस पक्ष को देख कर मेरा तो यह विश्वास दृढ़ होता जा रहा है कि यदि नाथूराम गोडसे को यह ज्ञान हो जाता कि गाँधी की मौत से हिन्दी को इतना बड़ा धक्का लगेगा तो निश्चित रूप से वह अपने हिन्दू-साम्प्रदायिकता के सामने हिन्दी की रक्षा को प्रश्रय दे जाता, और कई महत्त्व-पूर्ण कार्यों के लिए हमारे गाँधी बच जाते। शायद उसे यह बात समझाने वाला कोई मिला ही न होगा, नहीं तो मराठी भाषियों के लिए हिन्दी अपनी कितनी है, यह इसी बात से उजागर हो जाता है कि मराठी की लिपि तक देवनागरी है। मैं तो कहना चाहूँगा कि गाँधी जी के बाद हमारे देश में और सब कुछ बचा रहा हो लेकिन हिन्दी-राष्ट्रीयता मिट गई थी, जो हमारी वृहत और सम्पूर्ण राष्ट्रीयता का एक बहुत बड़ा अंग थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकता का ठोस आधार

साथ ही, यदि भारत को सच में संविधान के लिखित अनुच्छेदों की सहायता लिए बिना भी अपनी एकता को एक सच्चा और ठोस आधार देना तो हिन्दी उस कार्य के लिए फिर सक्षम है, फिर उत्सुक है, फिर अनिवार्य है फिर अपरिहार्य है। वास्तव में आज भी हमारा भारत नीचे से जितना ए है वह इसी हिन्दी के कारण है। हमारे देश की विभिन्न खानों में काम करने वाले मज़दूर परस्पर हिन्दी में बातचीत करते हैं। हमारे राष्ट्र की सुरक्षा आज भी हिन्दी से सुरक्षित है क्योंकि हमारे तमिलनाडु तक का भूतपूर्व और वर्तमान सैनिक हिन्दी में ही बोलना पसन्द करता है। और हिन्दी में कुछ ऐसी पकड़ है कि जो इसे एक बार सीख लेता है, फिर उसका जी इसे छोड़

> सेना से निवृत्त हुए अपने इसी केरल के विभिन्न कार्यालयों में ड्राइवरों और गार्डों से पूछो कि जब उन्हें कोई हिन्दी भाषी मिल जाता है, तो लम्बे समय तक अभ्यास छूट जाने के बाद भी वे हिन्दी में कितनी आत्मीयता से बात करते हैं।

को नहीं चाहता। सेना से निवृत्त हुए अपने इसी केरल के विभिन्न कार्यालयों में ड्राइवरों और गार्डों से पूछो कि जब उन्हें कोई हिन्दी भाषी मिल जाता है तो लम्बे समय तक अभ्यास छूट जाने के बाद भी वे हिन्दी में कितनी आत्मीयता से बात करते हैं। मेरी इस बात का आप विश्वास कीजिए कि लोग तरस जाते हैं।

मैंने गोवा की खानों में लोगों को काम करते देखा है। शायद उन खानों का नाम "चोल माइन्स" है। खनिक मज़दूर एक सी डांगरियाँ पहने हुए आपस में हिन्दी में बातें कर रहे थे। जब मैं उनके पास गया तो मुझसे भी उन्होंने हिन्दी में बातें की। मैंने अपने मन में सोचा कि ये पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूर लोग होंगे, या घर से बाहर आए हुए गरीब बिहारी होंगे। लेकिन पूछने पर मेरे आश्चर्य और सन्तोष का ठिकाना न रहा जब उनमें से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह एकता उन्हीं लोगों की है जो यह भी कह सकते हैं कि यदि अंग्रेजी चली गई तो हम इस भारत देश से अलग हो जाएँगे ।

मुझे बताया कि वह केरल के त्रिचूर से है, और दूसरे ने मुझे अपना परिचय यह कह कर दिया कि वह तमिलनाडु के मदुराई जिले से है। उनमें से किसी ने अपने आप को उड़ीसा का बताया, और किसी ने मध्य प्रदेश का। तभी मैं गदगद हो कर बोल उठा था कि सच में भारत यहाँ एक है। मैं अपने भारत की भावी एकता को उसी संभावना से ले कर आगे बढ़ता हूँ। इसीलिए मुझे यह निष्कर्ष निकालना पड़ जाता है, कि यह जो हमें अंग्रेज़ी के माध्यम से ऊपर की एकता दीखती है, यह सच्ची एकता नहीं है, यह इस देश के गरीब मजदूरों और किसानों की एकता नहीं है। यह लुटेरों की एकता हो सकती है, यह शोषकों की एकता हो सकती है, यह वातानुकूलित कारों में घूमने वालों की एकता हो सकती है, यह रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बों में बैठने वालों की एकता हो सकती है, यह हवाई जहाजों में घूमने-फिरने वालों की एकता हो हो सकती है, यह जलयानों में बैठ कर विदेशों में सैर-सपाटे करने वालों की एकता हो सकती है, यह सागर के तटों पर और हिमालय की पहाड़ियों पर 'हनीमून' मनाने वालों की एकता हो सकती है। किसी भी दृष्टि में यह सागर में जाल ले कर मछली पकड़ने वाले मछेरों की एकता नहीं है, और न ही यह मसूरी के पहाड़ों पर भग-भग कर हाथ से रिक्शा खींचने वालों की एकता है। यह एकता उन्हीं लोगों की है जो यह भी कह सकते हैं कि यदि अंग्रेजी चली गई तो हम इस भारत देश से अलग हो जाएँगे। लेकिन, क्या कभी एक हिन्दी भाषी अपने स्वप्नों में भी यह सोच सकता है कि वह इस देश से अलग हो जाएगा? हिन्दी तो इसी देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ी थी, इस देश को छोड़ कर यह कहाँ जाएगी? कोई कुछ भी कहे, पर इस बेचारी गरीबनी को तो यहीं रहना है। अभी तो इस देश की निचली एकता ने, जिन्हें अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जन जातियाँ, पिछड़ी जातियाँ और पिछड़े भौगोलिक क्षेत्र कहा जाता है, कहीं-कहीं रेल तक नहीं देखी है, फिर उनके प्रथम श्रेणी के वातानुकूलित डिब्बों में यात्रा करने की बात तो कितनी दूर है? आपको ज्ञात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

> जब हिन्दी की बात की जाती है तो इन निर्धन लोगों के भविष्य सुधारने की बात बर्बस याद आ जाती है। यही तो इस देश की राष्ट्रभाषा का अर्थ है।

होना चाहिए कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश का विवश मजदूर दार्जिलिंग में हवा अड्डे के निर्माण-कार्य पर भूत-सा हो कर सीमेन्ट की बोरियों पर बोरियां पटक-खोलने के लिए ट्रकों में भेड़-बकरियों की तरह ठूंस कर ढोया गया था उन्हें अपने शौच भी रात-रात भर रोकने पड़े थे। कोई पूछ सकता है कि राष्ट्रभाषा से इन सब बातों का क्या सम्बन्ध है? लेकिन, यही तो मैं कहना चाहता हूँ कि जब हिन्दी की बात की जाती है तो इन निर्धन लोगों के भविष्य सुधारने की बात बर्बस याद आ जाती है। यही तो इस देश की राष्ट्रभाषा का अर्थ है। यही अर्थ तो अंग्रेजी इसे प्रदान नहीं कर पा रही है। इसी एक सबसे बड़ी बात की तो हमें चिन्ता है।

इतिहास के पन्ने

बात राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की चल रही है। संयोग से मैं भारत के उस क्षेत्र का हूँ जिसको इतिहास में आपने सन् १८५७ के "सिपाही-विद्रोह" के नाम से पढ़ा होगा। पर उस घटना को यह 'सिपाही-विद्रोह' नाम तो हमें ब्रिटिश इतिहासकारों का दिया हुआ है। सच में तो यह शब्द इससे बहुत गहरे अर्थ वाला है। मैं ही नहीं, इस बात को स्वयं अंग्रेज समझते थे। उन्होंने सन् १८५७ के युद्ध का अध्ययन करने के लिए कुछ उच्च सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति करके एक उच्च आयोग बैठाया था। उस प्रतिवेदन को तैयार करने में उस आयोग को बहुत समय लग गया था। कारण यही था कि उस युद्ध का विस्तार बहुत बड़ा था। वह सैनिकों से ले कर मजदूर और किसानों के घरों तक का था। उस प्रतिवेदन की कुछ ही सीमित प्रतियां छपी थीं। प्रत्येक प्रति पर एक निश्चित संख्या दी हुई थी जिससे पता चल सके कि वह पुस्तक किसी हिन्दुस्तानी के हाथ में तो नहीं आ गई है। वह पुस्तक केवल विश्वासपात्र उच्च अंग्रेज सैनिक अधिकारियों को ही दी जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरठ में उसकी प्रति का रहना सदा आवश्यक था, क्योंकि सबसे अधिक भय वहीं से था। लेकिन, अब कुछ वर्ष पहले उसकी एक प्रति किसी प्रकार से मेरे हाथ लग गई है। वह प्रति मेरे पास मेरे पुस्तकालय में सुरक्षित है। मैंने उसका अध्ययन किया है, और अध्ययन करने के पश्चात मुझे पता चला कि वह तो एक महायुद्ध था जिसे अंग्रेज़ों ने केवल "सिपाही-विद्रोह" जैसा हल्का शब्द करके हमें इतिहास में पढ़ाया था। उस प्रतिवेदन से ज्ञात होता है कि यह बात स्वयं अंग्रेज़ जानते थे कि उन दिनों उनके दाँत किस प्रकार खट्टे हुए थे। सच जानो, एक बार तो भारत से अंग्रेजों के पैर उखड़ ही गए थे लेकिन, फिर मुझे कुछ "जयचन्दों" की बात याद आ कर रह जाती है।

मैंने बताया कि मैं मेरठ से हूँ। मेरा घर उसी काली पलटन के पास है जहाँ से मंगल पांडे ने उस स्वतन्त्रता-संग्राम के पहले महान युद्ध का बिगुल बजा दिया था। आज वहाँ मेरठवासियों ने उस युद्ध की स्मृति में एक बहुत ऊँचा और भव्य श्री औघड़नाथ जी का मन्दिर बनाया है; उसके ऊपर सारे नगर में घुमा कर एक बहुत ऊँचा सोने का कलश चढ़ाया है। पर अभी भी मेरठवासियों को संतुष्टि नहीं है, इसलिए इस मन्दिर को वे अभी और बढ़ाने में लगे हैं। अभी भी यह मन्दिर अपने चारों ओर निर्माणाधीन है। शायद, इस मन्दिर का निर्माण तभी पूरा होगा जब अंग्रेजी इस देश से भारतीय संविधान के नियमों का पालन करती हुई विदा ले जाएगी। मेरा तो मन्दिरों में ऐसा ही लिया-दिया विश्वास है, लेकिन मेरी छोटी-सी बेटी भी वहाँ दर्शनों को जाती है। एक दूसरे चिन्तन का व्यक्ति होते हुए भी मैं उसे रोकता नहीं हूँ, क्योंकि मुझे ज्ञात है कि एक दिन मेरी बेटी को यह स्वतः ज्ञात हो जाएगा कि भगवान तो जो हो, पर, यह मन्दिर तो हमारा अंग्रेजों से विद्रोह का प्रतीक है। हाँ, विश्वासी और धार्मिक जनता अपने पवित्र युद्धों को भगवान के रूप-माध्यम में ही अभिव्यक्त किया करती है। लेकिन, उस पवित्र युद्ध से जुड़ा जो हमारा महान नारा है, वह बूढ़े हो गए अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर का यह शेर है:

हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की;
तब तो लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दोस्तान की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ, यह शेर मैंने आपके सामने इसीलिए उद्धृत किया है जिससे कि आप हमारी उस चिलचिलाती आग को समझ सकें जिसको हम हिन्दी भाषी अपने हृदयों में सदा भड़काते रहे हैं।

अंग्रेजों के अत्याचार

और भी कहूँ, मेरे मेरठ में एक भैसाली का मैदान है। यह मुख्य नगर के बिलकुल बीच में है। यहाँ अशोक की लाट वाला बहुत बड़े चमकदार चौकोने स्तम्भ पर एक शहीद-स्मारक खड़ा किया गया है जिसका अनावरण हमारे स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री दिवंगत श्री जवाहरलाल नेहरू जी ने किया था। इस भैसाली के मैदान की यह कहानी है कि पहले यह एक गहरा तालाब था। जब हम अंग्रेज़ों से लड़ रहे थे तो उन्हें तलवारों से काट कर उस तालाब में डाल देते थे। अंग्रेज़ों के रक्त से हम हिन्दू और मुसलमान भाई मिल कर उस तालाब का पानी रोज लाल करते थे। लेकिन, उसी भैसाली के मैदान के किनारे पर उस समय का आज भी एक बहुत बड़ा वृक्ष खड़ा है। उसकी एकदम दूसरी कहानी है। जब अंग्रेज़ों की जीत हुई जिसमें मुझे फिर जयचन्दों, सांस्कृतिक तस्करों, जमींदारों, राजाओं और महाराजाओं की याद उभर जाती है, जिनकी इस देश में कभी कमी नहीं पाई गई, तो हिन्दुस्तानियों को पकड़-पकड़ कर अंग्रेज़ लोग उस पेड़ पर रस्सियों से लटका कर सबके सामने फाँसी दिया करते थे। बाद में शवों को सड़ने के लिए उसी तालाब में फेंक दिया करते थे। वहाँ बसे हुए मुसलमानों के घरों में अंग्रेज़ लोग बलपूर्वक घुसते थे, और युवती मुसलमानियों को अपनी इज्जत बचानी कठिन हो गई थी। वे नारियाँ अपने सोने और चाँदी, हीरे और मोतियों के गहने उतार कर अंग्रेज़ों के सामने पर्दे से फेंक देती थीं, लेकिन उन सती-साध्वी सुन्दर गृहणियों की इज्जत उन बलात्कारी अंग्रेज़ों से तब भी बच नहीं पाती थी।

और, आज दक्षिण भारत का एक भाग मुझसे कहे कि मैं अंग्रेज़ी को सीखूँ, तो मैं अपने हृदय में रोता हुआ यही समझता हूँ कि शायद वह मेरा भाई मेरी पवित्र भावनाओं का सम्मान नहीं कर रहा है। मुझे लगता है कि वह मेरे अंग्रेज़ों से हुए युद्धों को मिटा देना चाहता है, कि वह मेरे इतिहास के बलिदानों को मुझसे भुलवा देना चाहता है। एक मेरठवासी होने के नाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका मुझे बहुत पश्चात्ताप होता है। तभी तो मैं कहता हूँ कि मेरे भाई, मुझे जितना चाहे रुला लो, लेकिन अंग्रेज़ी को इस देश की राजभाषा के रूप में मुझसे दूर रखो। हमने अपने उस अतीत के साथ कोई मजाक नहीं की है, बल्कि हम सच में इस स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए लड़े, कटे, और मरे हैं।

हो सकता है कि मेरे इस भाई के साथ अंग्रेज़ों ने बुरा व्यवहार न किया हो, हो सकता है कि वह मेरा भाई अंग्रेज और अंग्रेज़ी में अन्तर करना सीख गया हो, हो सकता है कि मेरे उस भाई को भाषा की दृष्टि से अल्पमत में पड़ जाने का भय बना रहता हो, पर वह मेरी भी तो बात सुने कि राष्ट्र क्या है? मेरे देश का मूल्यवान कोहिनूर हीरा आधा ब्रिटेन की महारानी के मुकुट में, और आधा वहाँ के राष्ट्रीय अजायबघर में चमकता रहे, और मेरा मन विचलित न हो, इसे मैं राष्ट्र और राष्ट्रवाद नहीं कहता। यह लड़ाई देशों के प्रतीकों की है, राष्ट्रों के सम्मानों की है। नहीं तो हमारे राष्ट्रीय झण्डे के तीन रंगीन टुकड़ों के बीच में छपे हुए चक्र में रखा क्या है? यदि हम अपने राष्ट्रीय पक्षी 'मोर' को छुरी ले कर काटने लगें तो उसमें थोड़े से हाड़-मांस और लम्बे-लम्बे पंखों के सिवा मिलेगा क्या? फिर, मैं तो कहता हूँ कि चाहे कोहिनूर हीरा दो पैसे का है, बात केवल इतनी सी है कि वह हमारे देश में क्यों नहीं है? इसलिए, कोहिनूर, जो कभी धर्मराज युधिष्ठिर के मुकुट तक में लगा बताया गया है, जिस दिन मेरे देश में वापस आ जाएगा, वह व्यक्तिगत रूप से मुझे तो नहीं मिल जाएगा, लेकिन उस पुनर्प्राप्ति से मेरा सिर ऊँचा उठ जाएगा।

पर क्या किया जाए, यह भी इस देश के इतिहास का कई बार दुर्भाग्य रहा है कि गलत अर्थ वाले अन्तर्राष्ट्रवाद का प्रभाव हमारी भाषा-सम्बन्धी नीतियों तक पर पड़ता है। एक सच्चे राष्ट्रवाद के लिए तमिलनाडु को इस

हम भारतीयों के मस्तिष्कों में यह बात बहुत स्पष्ट हो जानी चाहिए कि हमें पहले आपस में प्रेम और सद्भाव बढ़ाना है कि विदेशों के राजनैतिक पर्यटकों की आवभगत में अधिक समय गँवाना है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात की अधिक चिन्ता नहीं होनी चाहिए कि यदि अंग्रेजी चली गई तो उसका अमेरिका से सम्पर्क टूट जाएगा, बल्कि, उसके विपरीत तो उसे इस बात की अधिक सोचनी चाहिए कि हिन्दी के बिना उसका अपने ही देश के प्रान्तों— पंजाब व हरियाणा, उत्तर प्रदेश आदि से सम्पर्क पहले ही टूटा पड़ा है। हम भारतीयों के मस्तिष्कों में यह बात बहुत स्पष्ट हो जानी चाहिए कि हमें पहले आपस में प्रेम और सद्भाव बढ़ाना है कि विदेशों के राजनैतिक पर्यटकों की आवभगत में अधिक समय गँवाना है? लगता है कि हमने अपनी प्राथमिकताएं गलत चुन ली हैं। बिना किसी रोकटोक के अरुणाचल प्रदेश से लेकर गुजरात तक यात्रा करने की सुविधा प्राप्त होने के पश्चात भी कुछ लोगों को पासपोर्ट और वीसा बनवा कर अभी भी लंदन में अंग्रेज़ों के साथ डिनर करने अच्छे लगते हैं। ऐसे लोग बिना राष्ट्रीय बने ही अन्तर्राष्ट्रीय बनने का उपक्रम रच बैठे हैं। इन्हें इतना भी ज्ञात नहीं कि कोई भी भावी अन्तर्राष्ट्रवाद राष्ट्रों को मिटा कर नहीं, राष्ट्रों को जोड़ कर ही पनप सकता है। इस प्रकार, इन्हें विशेष रूप से यह समझाया जाना परम आवश्यक हो गया है कि किसी भी अन्तर्राष्ट्रवाद में सभी राष्ट्र अपने पृथक सांस्कृतिक और सामाजिक अस्तित्व रखते हुए केवल राजनैतिक रूप में परस्पर जुड़ जाएँगे। वह समय सेनाओं की समाप्ति का हो सकता है, लेकिन राष्ट्रों की अमान्यताओं का नहीं। ऐसे समय के लिए भी तो हमें अपने आपको तैयार करना है कि हमने अपनी राष्ट्रभाषा के लिए सेवा के रूप में क्या किया है।

सो, इस रूप में मैं अपने उस जिद्दी भाई को समझा कर कह रहा हूँ कि तू अपनी सारी मांग देश के सामने रख, पर कम से कम हिन्दी, जो हमारी राष्ट्रभाषा है, जो विश्व में हमारे राष्ट्र के सम्मान का एक प्रतीक है, उसका निरादर तो न कर। साथ ही, मैं तो यहाँ तक भी कह सकता हूँ कि तुझे हिन्दी नहीं सीखनी है तो तू इसे मत ही सीख, क्योंकि यह तो तुझे बाद में पता चलेगा कि आज के इस हठ के कारण तू भविष्य में राष्ट्र की मुख्य धारा से कितना कट और पिछड़ जाएगा, और तेरी भावी सन्तान भाषा की दृष्टि से विकलांग सी बनी तुझे कितना कोसा करेगी, पर हिन्दी का एक भारतीय भाषा के नाते आदर तो कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को तो दुःख इस बात का है कि सबकी छाती पर बैठी हुई इस विदेशी अंग्रेज़ी भाषा से लड़ने में उसकी सगी माँ-जाई बहनें उसका साथ क्यों नहीं दे रही हैं ?

हिन्दी का विरोध भारतीय भाषाओं से नहीं

साथ ही, मैं यह बात जोर दे कर कहना चाहता हूँ कि हिन्दी का विरोध किसी भारतीय भाषा से नहीं है। हिन्दी की लड़ाई केवल अंग्रेज़ी से है, और सच्ची है और संविधान के अनुच्छेदों के पूर्णतया अनुरूप है। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ तो आपस में जुड़वा और तिहुवा सगी बहनें हैं। हिन्दी को तो दुःख इस बात का है कि सबकी छाती पर बैठी हुई इस विदेशी अंग्रेजी भाषा से लड़ने में उसकी सगी माँ-जाई बहनें उसका साथ क्यों नहीं दे रही हैं ? राष्ट्र की इस शेष लड़ाई को हिन्दी को ही अकेली पड़ कर क्यों लड़ना पड़ रहा है ? इतना ही नहीं, कुछ लोग इस पवित्र लड़ाई में पड़ी हुई हिन्दी भाषा को बदनाम तक करते हैं। तनिक इस परिप्रेक्ष्य में, जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मैंने आपके सामने अभी रखी है, सोचो तो कि जिस मेरठ क्षेत्र ने क्रोध में ब्रिटिश काल में अंग्रेज़ी नहीं सीखी, उसे आज स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी क्यों अनिवार्य रूप से सिखाए जाने की अपेक्षा की जाती है ? जिस मेरठ-क्षेत्र ने अंग्रेज़ों के अतिवादी दमन काल में अपनी हिन्दी नहीं छिनने दी, उससे आज उसकी हिन्दी कैसे छीनी जा सकती है ? इसलिए, मेरा कहना है कि वह मेरा भयभीत भाई अपने लिए संविधान सम्मत सभी विशेष आरक्षण और संरक्षण मांगे, वह अपने उचित दावे और सच्चे हित सबके सामने रखे, लेकिन इस सम्बन्ध में कोई अविचारपूर्ण उद्दण्डता तो न दिखाए, नहीं तो क्या उसके पास मेरे किसी भी प्रश्न का सच में कोई सम्यक उत्तर है, जो मैंने यहाँ एक हिन्दी भाषी के नाते उठाए हैं ? फिर, वह कुछ भी करे, हिन्दी का रास्ता तो न रोके। फिर, यह प्रश्न तो राष्ट्रभाषा के सम्मान तक का है।

हिन्दी के विषय में एक भ्रम फैलाया हुआ है। कहा जाता है कि हिन्दी भारतीय भाषाओं को खा जाएगी। इस भ्रामक विचार का निवारण भी समूल किया जाना है। सच बात तो यह है कि हिन्दी केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों में रानी बनेगी, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में तो यह केवल आपकी दासी बन कर आना चाहती है।

मैं रानी बनेगी, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में तो यह केवल आपकी दासी बन कर आना चाहती है। मेरा आशय हिन्दी के सम्पर्क भाषा के स्वरूप से है। अहिन्दी भाषी प्रान्तों के लिए हिन्दी केवल सम्पर्क भाषा बनना चाहती है, और इससे बड़ा इसका कोई मन्तव्य नहीं है। यह मलयालम को मिटाना नहीं चाहती, लेकिन मलयालम के ऊपर जो अंग्रजी हावी हुई बैठी है, उसे हटाने में मलयालम की सहायता अवश्य करना चाहती है। यदि मलयालम अंग्रेजी से लड़ने में अशक्त हो, और अपने आपको अकेली पड़ी समझती हो तो हिन्दी इसकी सहायता के लिए उत्तर भारत से यहाँ भागी चली आएगी। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अपने हिन्दी भाषी क्षेत्रों से अंग्रेजी को बाहर खदेड़ने का यह कार्य हिन्दी ने सफल कर दिखाया है। उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे बड़े-बड़े प्रान्तों के प्रशासन में अंग्रेजी का नाम तक नहीं है। इसलिए यह पूर्णरूपेण सिद्ध है कि हिन्दी अपने क्षेत्रों में अंग्रेजी से लड़ने में दक्ष रही है, और इसको इस दक्षता का लाभ अन्य भारतीय भाषाएँ पूरा-पूरा उठा सकती हैं। केरल राज्य सरकार का सभी काम मलयालम में हो, और केन्द्र सरकार से तथा अन्य राज्य-सरकारों से पत्र-व्यवहार हिन्दी में हो, बस इतना सा हमारा काम है जिसे कुछ अंग्रेजी से स्वार्थ और बड़प्पन का भाव रखने वाले लोगों ने हिन्दी को थोपने का हव्वा बना कर खड़ा करके दिखा रखा है। सच तो इसके विपरीत ही है कि केन्द्र सरकार तथा अन्य राज्य सरकारों से पत्र-व्यवहारों के साथ अंग्रेजी ने आपकी मलयालम को भी आपके घर में घुस कर दबा रखा है। क्या सच में आपको ऐसा आभास नहीं होता कि अंग्रेजी ने आपकी मलयालम भाषा का गला आप के प्रान्तीय प्रशासन में पूरे जोरों से घोंट रखा है?

केरल राज्य सरकार का सभी काम मलयालम में हो, और केन्द्र सरकार से तथा अन्य राज्य-सरकारों से पत्र-व्यवहार हिन्दी में हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कहना फिर गलत है कि कोई भाषा पिछड़ी हुई है। लोग अपनी-अपनी भाषाओं को बोलते हैं। इसमें पिछड़ापन कैसा? लोकतन्त्र में तो उलटे प्रशासन की दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि जनभाषाओं में ही कामकाज किया जाए। इससे कुछ इतर करना तो जनता का अपमान है। इसे कौन जागरूक मनुष्य सहेगा? इससे कौन न सच्चा पुरुष विद्रोह कर उठेगा? फिर यदि कोई भाषा किसी अन्य दृष्टि से पिछड़ी हुई है तो उसे विकसित करने का भार किस पर है? क्या आप यह अपेक्षा किए बैठे हैं कि मलयालम भाषा को सकलित विकसित और समृद्ध करने के लिए अभी जर्मनी से और गुंडर्ट आने चाहिए? फिर मलयाली लोग क्या करेंगे? क्या ये हाथ पर हाथ धरे मौज-मस्ती मारते रहेंगे?

तो, राष्ट्रभाषा की दृष्टि से मैं बोलूँ कि पहले तो यही कहना गलत है कि हिन्दी एक समृद्ध भाषा नहीं है। इस बात का हम किसी विदेशी को मुँहतोड़ उत्तर दे सकते हैं। लेकिन अपने स्वदेशी भाइयों से तो यही कहना है कि यदि तुम्हें हिन्दी भाषा किसी क्षेत्र में कमजोर दिखाई पड़ रही है तो इसे बलवान बनाने में हमारी सहायता करो। कोई कमी दिखा कर रुक जाने में तो हमें हिन्दी-विरोध का आभास होने लगता है, जबकि इसके बाद का हमारा काम यह होना है कि हमें उस कमी को दूर करना है। और पुनः, इस कार्य को सम्पन्न करने का उत्तरदायित्व हम सारे भारतीय लोगों का ही है, क्योंकि इसके लिए अभारतीय विदेशियों की प्रतीक्षा करके बैठना तो एक राष्ट्र की दृष्टि से बहुत ही हेय बात है। नहीं तो फिर मुझे यही कहना पड़ेगा कि आप कोई धोखे वाली बात कर रहे हैं। फिर तो मुझे सोचना पड़ जाएगा कि आप अपने संवैधानिक संरक्षण की बात नहीं रख रहे हैं, बल्कि भाषा के नाम पर अपने कुछ गलत-सलत निहित स्वार्थ उजागर कर रहे हैं। फिर तो मुझे "जयचन्दों, सांस्कृतिक तस्करों, जमींदारों, राजाओं और महाराजाओं" की याद उभरने लगती है जो अंग्रेजों को यहाँ टिका कर गुरु गोविन्द सिंह की तलवार इंग्लैंड तक पहुँचाने में सहायता कर सकते थे।

हम अंग्रेजों से लड़े क्यों थे? क्या हम यह तर्क करते रहने के लिए लड़े थे कि अंग्रेजी अच्छी है और भारतीय भाषाएँ बुरी? क्या हम यह सिद्ध करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए लड़े थे कि अंग्रेज जाति ऊँची है और भारतीयों की जाति नीची? क्या हम यही प्रमाणित करने के लिए जूझे थे कि हम अंग्रेजी के सदा शिष्य और दास बने रहेंगे? विज्ञान और तकनीक के विकास का नाम ले-लेकर हमने सच में मान क्या लिया है? क्या यह तर्क सर्वथा उचित है कि संसार की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा एकमात्र अंग्रेजी ही रहेगी? क्या बिना अंग्रेजी वाले एशिया और अफ्रीका के देशों से हमारे भावी सम्बन्ध अधिक नहीं बढ़ते रहेंगे? क्या इस बात में कोई सच्चाई है कि जिन्होंने अंग्रेजी भाषा को अपने राजकार्य की भाषा नहीं बना रखा है वे राष्ट्र पिछड़ रहे हैं? क्या बिना अंग्रेजी भाषा के भी चीन के पास अपार परमाणु शक्ति इकट्ठी नहीं हो गई है? क्या बिना अंग्रेजी को अपने देश के बच्चों पर थोपे रूस अमरीका से अन्तरिक्ष की होड़ में तनिक भी कम ठहरता है?

यह बात मैंने इसलिए कही कि हिन्दी के विरोध में और अंग्रेजी के पक्ष में लोग तरह-तरह के तर्क देते हैं। यदि इन तर्कों का भी अध्ययन किया जाए तो इनके बीच एक ऐतिहासिक क्रम प्रतीत होता है कि किस समय कौन-सा तर्क और क्यों उठा है।

हिन्दी सारे देश की भाषा नहीं

पहला तर्क तो यही था कि हिन्दी सारे देश की भाषा नहीं है। ठीक है, यदि हिन्दी सारे देश की भाषा नहीं है तो यह देश के अधिकांश भाग की तो भाषा है। तो क्या अल्पमत की थोड़ी असुविधा के लिए इतने बड़े बहुमत की भावनाओं का अधिक देर तक गला घोंटा जाना समीचीन जान पड़ता है? अल्पमत के उचित दावों और सच्चे हितों की रक्षा अवश्य हो, पर लोकतन्त्र में बहुमत की आशाओं और आकांक्षाओं पर, जो उसके सच्चे दावे और उचित हित भी हैं, लगातार कुठाराघात तो असहनीय हो जाता है। फिर, यदि यह सारे कार्यों के लिए सारे देश की भाषा नहीं है, तो केवल कुछ विशेष कार्यों के लिए, मेरा सीधा अर्थ सम्पर्क भाषा के रूप से है, यह सारे देश की भाषा बनाई तो जा सकती है।

हिन्दी समृद्ध भाषा नहीं?

दूसरी बात यह उठाई गई कि हिन्दी एक समृद्ध भाषा नहीं है। मैं नहीं कहता कि लोकतन्त्र में विश्वास रखते हुए यह बात कहने का साहस लोगों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आता कैसे है? [illegible] यह कहता है कि समृद्ध हो या असमृद्ध, इससे क्या, जैसी भी हमारी भाषा है, हमारी भाषा है। सच तो यह है कि लोकतन्त्र में प्रशासन की दृष्टि से जनभाषा ही समृद्ध हुआ करती है। इस जनभाषा के बिना तो पुलिस राज्य की सक्रियता बलवती होने लगती है। फिर, हिन्दी समृद्ध भाषा किनके लिए नहीं है? मेरे कहने का अर्थ है कि जिन्होंने अभी हिन्दी पढ़नी भी आरम्भ नहीं की है, उन्हें ऐसी बात कहने का अधिकार कैसे प्राप्त हो जाता है? यह विषय तो संसार की भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने वाले भाषा-वैज्ञानिकों का है, जो पन्द्रह-पन्द्रह और बीस-बीस भाषाएँ जानते हैं। लेकिन कुछ लोग केवल छात्रावास में पढ़ी एक लंगड़ी अंग्रेजी की पूँछ पकड़ कर बिना कुछ तोले-माने जो कुछ जी में आ रहा है, उल्टा-सीधा कहे जा रहे हैं। वास्तव में, जिन्होंने चिढ़ के कारण हिन्दी भाषा के 'अ' और 'आ' भी नहीं पढ़े हैं, मुझे तो डर यह लगता है कि कहीं वे यह न कह उठें कि हिन्दी भाषा नाम की कोई चीज ही इस दुनिया में नहीं है। यह इसलिए क्योंकि घृणा का एक बार जन्म लेने पर कोई अन्त नहीं दीख पड़ता है।

हिन्दी विज्ञान की भाषा नहीं?

तीसरे तर्क में विज्ञान और तकनीक का नाम बड़ी शीघ्रता से ले लिया जाता है। पहली बात तो यही है कि हिन्दी विज्ञान और तकनीक में किसी से कम नहीं है। बहुत दिनों से उत्तर भारत में विज्ञान विश्वविद्यालयों में हिन्दी के माध्यम से पढ़ाया जा रहा है। फिर अगली बात यह है कि अपने आप में महत्त्वपूर्ण होते हुए भी, विज्ञान और तकनीक ही तो किसी समाज के जीवन का सभी कुछ नहीं है। मेरा पूछना है कि जिन बच्चों को अपने जीवन में वैज्ञानिक बनना है उनके बस्ते आप केवल अंग्रेजी की पुस्तकों से ही क्यों भरते हो, रूसी और जर्मन भाषाएँ क्यों नहीं सिखाते? उनके ज्ञान को अधूरा और सीमित क्यों रहने दिया जा रहा है? मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि जिन बच्चों को कभी उच्च वैज्ञानिक तकनीकों से अपने जीवन में कोई सरोकार नहीं रहेगा, उनके बस्तों को अंग्रेजी की पुस्तकों के भार से मन-मन भर के क्यों बनाया जा रहा है? जिस बच्चे को बड़ा हो कर किसी बैंक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण शाखा में शाखा-प्रबन्धक बनना है, उसे अंग्रेजी सिखा कर वास्तव में कार्य के निपटारे की दृष्टि से विकलांग बनाया जा रहा है। जिस बच्चे को किसी सरकारी या निजी कार्यालय में जा कर लिपिक या अधिकारी का पद संभालना है, उससे अंग्रेज़ी के अक्षरों में माथापच्ची क्यों करवाई जा रही है? क्या जितने बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाई जा रही है, वे सभी वैज्ञानिक बन कर उच्च अध्ययन करने के लिए ब्रिटेन और कनाडा जाएँगे? अंग्रेजी की परीक्षा ले कर बच्चों को असफल घोषित क्यों किया जा रहा है? जिन बच्चों के माता-पिता अंग्रेज़ी नहीं जानते, और वनों में लकड़ियाँ काटते फिरते हैं, उन भील-बच्चों को अंग्रेज़ी का नाम ले कर हीन क्यों बनाया जा रहा है? पुनरपि, क्या आपको ज्ञात है कि जर्मन देश में विज्ञान और तकनीकी का अध्ययन करने के लिए आपको पहले साल- छह महीने के लिए जर्मनी पढ़ कर उसमें उत्तीर्ण घोषित होना अनिवार्य है? तभी आपको विज्ञान के विषय पढ़ाए जाएंगे। आपने अपना अंग्रेजों से दासता के रूप में सम्बन्ध रखने के कारण और अंग्रेजी से शेष संसार का अध्ययन किए बिना विश्व में अंग्रेजी की सर्वोपरिता मान कैसे ली है?

हिन्दी थोपी जा रही है?

जब पहले, दूसरे, और तीसरे तर्क फीके पड़ जाते हैं तो चौथी बात यह उठाई जाने लगती है कि हिन्दी भाषा उन पर थोपी जा रही है। कितने अचरज की बात है कि जो भाषा स्वतन्त्रता-संग्राम के समय हमारी राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ आधार दे रही थी, उसे अब नये मानसिक दिग्गजों द्वारा थोपना कहा जा रहा है! पर, तनिक ध्यान से देखा जाए तो थोपना इसका उलटा हुआ है। जो लोग एक भारतीय भाषा हिन्दी को अपने ऊपर थोपना कहते हैं, क्या उन्होंने तनिक भी सोचा है कि अंग्रेजी उन पर थोपी नहीं गई थी? अंग्रेजी का मूल तो यूरोप के भी परले किनारे पर था। क्या यह एक जहर के समान उनके मस्तिष्कों में बन्दूक और लोभ के बल पर जबरन ठूँसी नहीं गई थी? यदि उन्हें अपने ऊपर हिन्दी थोपे जाने का इतना अधिक दुःख है, तो क्या वे अंग्रेजी के विष को जो उनके शरीरों से ले कर उनके मनों तक में पूरी तरह रम गया है अपनी आत्मा और मातृभाषा की याद कर, जान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूझ कर किसी जनजार से निकाला जाएगा ? मेरे कहने का आशय इतना-सा ही है कि जितनी चिढ़ उन्हें हिन्दी से है उससे सौ गुना अधिक घृणा तो उन्हें अंग्रेजी से होनी चाहिए थी। पर, क्या ऐसा तनिक भी है ? क्या सच में उन्हें अपनी मातृभाषा से प्यार है ? हिन्दी तो केवल यही चाहती है कि सब लोग अपनी-अपनी मातृभाषाओं की गोदियों में लाड़-प्यार से खेलें। इस प्रकार तो हिन्दी किसी के रास्ते में आड़े नहीं आती है। यही तो हिन्दी का गौरव और इसकी महानता है कि हिन्दी का विरोध अंग्रेजी से है, और किसी भारतीय भाषा से नहीं।

अखिल भारतीय सेवाएँ

जब हिन्दी-विरोध अपने सारे तर्कों से हार जाता है तो फिर कहने लगता है कि सिद्धान्तों की बात नहीं, यथार्थ की बात करो। इसका तर्क होता है कि अंग्रेजों ने अखिल भारतीय सेवाओं के कारण भारतीय प्रशासन को एक कर रखा है। इस विषय में मैं कहूँ कि मैं स्वयं सर्वोच्च कही जाने वाली इस भारतीय प्रशासनिक सेवा का एक अधिकारी हूँ। इसमें रह कर मुझे इस बात का अनुभव हो गया है कि मैं यह कह सकूँ कि यह एक दम झूठ है, झूठ है,

लोकतन्त्र में बिना जनभाषा में काम किए कोई भी
प्रशासन कभी उच्च स्तर का नहीं हो सकता।

बिलकुल झूठ है। सच बात तो यह है कि ऐसा कहने वाले लोगों ने कुछ सोचा ही नहीं है, और अनाप-सनाप मुँह को रोके बिना कुछ भी कहे जा रहे हैं। उन्हें यह ज्ञात होना चाहिए कि लोकतन्त्र में बिना जनभाषा में काम किए कोई भी प्रशासन कभी उच्च स्तर का नहीं हो सकता। ऐसा विदेशी भाषाओं में चलाए जाने वाला प्रशासन तो निम्न से निम्न स्तर का होता है। मेरी प्रार्थना है कि लोकतन्त्र की सेवा और भारतीय एकता की रक्षा के लिए यह झूठी रट बन्द होनी चाहिए।

अहिन्दी भाषी पिछड़ जाएंगे ?

बिना छल-कपट के सच्ची बात सामने आनी चाहिए। अहिन्दी भाषियों की बात में समझने लायक सच्चा बल यह है कि यदि परीक्षाएँ केवल हिन्दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी हमारे मस्तिष्क को पूरा खुलने नहीं दे रही है, और हमार विश्व-ज्ञान को अपने तक सीमित रखना चाहती है ।

में ली जाएँगी तो अहिन्दी भाषी लोग पिछड़ जाएँगे। इसलिए, और इधर-उधर के घुमा-फिराए हुए तर्क तो छोड़िए, केवल इसी बात को सबके सामने रखना है कि प्रशासन में अहिन्दी भाषियों का प्रतिनिधित्व उचित होना चाहिए। लेकिन, इसके लिए तो अब भारत सरकार ने आपके सामने एक अच्छा समाधान प्रस्तुत कर दिया है। यह समाधान यह है कि अहिन्दी भाषी लोग भी अखिल भारतीय तथा केन्द्र सरकार की सब लोक सेवा आयोग द्वारा ली जानेवाली अन्य उच्च सेवाओं के लिए अपने-अपने भाषा माध्यमों में परीक्षाएँ दे सकते हैं। यदि उन्हें अपनी मातृभाषाओं से सच में प्यार है तो उनके माध्यमों से इन परीक्षाओं में क्यों नहीं बैठते? उन्हें स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात से लेकर भाषाई-प्रान्त तक बना कर अब तक कुल मिलाकर तीस-पैंतीस वर्षों का समय मिला है, तो इस लम्बे समय के बीच वे अपनी मातृभाषाओं के भविष्य के साथ कौन-सी खिलवाड़ करते रहे थे? क्यों वे अभी भी अंग्रेज़ी की बैसाखियों के सहारे लंगड़ाते चल रहे हैं? हिन्दी की बात छोड़ो, उन्हें अपनी मातृभाषाओं तक में विश्वास क्यों नहीं है?

साथ ही, अपनी इस बात को मैं कितनी बार दोहराऊँ कि साहित्य के नाते मैं अंग्रेज़ी के विरोध में नहीं हूँ। प्रसन्नता से आप शेक्सपीयर से ले कर इलियट तक को पढ़ें, इससे मुझे क्या आपत्ति हो सकती है? मेरा प्रश्न तो यह है कि केवल मात्र इन्हें ही क्यों पढ़ें? विश्व-साहित्य में तो और भी महान कवि हुए हैं। उसमें तो होमर भी है, विर्जील भी है दाँते भी है, फिरदौसी भी है, गेटे भी है, गालिब भी है। आप केवल अंग्रेज़ो के कारण उन सबसे वंचित क्यों रहे जा रहे हो? आपके मन में पुश्किन को मूल रूसी भाषा में पढ़ने की ललक क्यों नहीं जगती? मैं तो आरोप लगाना चाहूँगा कि इस दृष्टि से अंग्रेज़ी हमारे मस्तिष्क को पूरा खुलने नहीं दे रही है, और हमारे विश्व-ज्ञान को अपने तक सीमित रखना चाहती है। मेरी तो चाह है कि मेरे देश में सभी विश्व-भाषाएँ मूल रूप में पढ़ाई जाएँ। देश बहुत बड़ा है, यह कार्य हो भी सकता है। साहित्य के क्षेत्र में यह अकेली अंग्रेज़ी का राज्य तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब जानो, बुलेटिन छपता है। पैसों पर खर्च होने वाली बजट का सारा धन अंग्रेज़ी पर ही क्यों खर्च होता है ?

अन्त में, अपनी इन्हीं कुछ बातों के साथ केरल हिन्दी प्रचार सभा को, जो राष्ट्र के एक बहुत ही परम पुनीत कार्य में उत्साहपूर्वक लगी हुई है, साधुवाद देता हुआ , तथा आप सबसे, जिन्होंने मेरी बातों को शान्ति और धैर्य से सुना, हाथ जोड़ता हुआ, उत्तर भारत से आया मैं आपका एक नया केरलवासी हिन्दी के जायसी, कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, रसखान, रहीम, भूषण, बिहारी, केशव, देव, घनानन्द, रत्नाकर, पन्त, प्रसाद, महादेवी, निराला, दिनकर, अज्ञेय और मुक्तिबोध आदि के नामों का स्मरण करता-कराता हुआ यह कह कर अब इस मंच से हटने की अनुमति चाह रहा हूँ :

अन्य भाषा भाषियो, मिलेगा मन माना सुख
हिन्दी के हिंडोले में जरा तो झूल जाइए।

धन्यवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्मृति

मूल:
कु० वें० पु०
के० वी० पुट्टप्पा

अनुवाद:
पी० जी० कामत
दयानन्दम
चेरुमुक्कु
तृश्शूर-२०

स्मृति चाहे जो कहे,
उससे क्या ?
पवित्र नहीं वह मानव मन की
तुलना में ।
जो लिखा मनु ने
उससे तुझे क्या ?
तेरा दिल तेरा ऋषि है,
तू ही अपना मनु ॥
एक भाई आया द्वारे पर बरबस
प्यासा,
उसे पानी पिलाने
मनु का आदेश चाहिए ?
रोतों के आँसू पोंछने
उनको तसल्ली देने
स्मृति का वचन चाहिए ?
एक भील का बच्चा
गिरा गहरे तालाब में,
भीत पर खड़ा मैं
अजान-सा रहा करूँ ?
मैं 'बामन' उसे छूने से
अपना ब्राह्मण्य कहीं खो न जाए,
यह सोचकर ॥

नहीं, नहीं, मनु ने ऐसा न कहा होगा।
अगर वैसा कहा हो
तो कफ़न में बाँधो मनुको, उठा लो।
स्वर्ग दूर जाए, भले ही जाए ;
नरक पास आए, भले ही आए ;
मनु को दूर फेंकने का निश्चय
हो जाए ॥
स्वर्ग न जाए दूर
नरक न आए पास
बन्द नहीं स्वर्ग-नरक स्मृतिग्रन्थों
के भीतर।
न किसी रिसि का वचन
है प्रमाण तुझे ;
जो अपना दिल कहता
वही प्रमाण तुझे ।
संभाल लो उसकी नीत को ॥
पुराने रिसि-मुनि भी आदमी थे
उनकी स्मृति थी उनके युग के योग्य
लागू उस मिट्टी पर
उस युग के आदमी पर ।
आज ?
तेरा दिल ही तेरी स्मृति है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का दीक्षांत समारोह

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान अगरा का बीसवां दीक्षान्त समारोह १०-४-८३ को संपन्न हुआ।

केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति उप मंत्री श्री० पी. के थुंगन ने दीक्षान्त भाषण दिया। (भाषण अन्यत्र)

इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित 'कोश निर्माण सिद्धान्त और परम्परा' 'देवनागरी लेखन तथा हिन्दी वर्तनी व्यवस्था' 'व्याकरण सिद्धान्त और व्यवहार' 'प्रयोजन मूलक व्याकरण', 'अन्य भाषा शिक्षण के कुछ पक्ष' और 'आन्ध्र प्रदेश में हिन्दी शिक्षण की समस्यायें' नामक पुस्तिकाओं का विमोचन भी किया गया।

संस्थान के निदेशक डा० बालगोविन्द मिश्र ने संस्थान की वार्षिक गतिविधियों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया और संस्थान के रजिस्ट्रार श्री० करुण शंकर दीक्षित ने धन्यवाद भाषण दिया। ❀

मलयालम कविता

पराजय

यूसफलि केच्चेरी

परिणाम देखने के बाद
लौटा मेरा मुन्ना जो
शायद पराजित होने के कारण
रोता सिसकता रहा।
"पराजय वियज की"
पहली सीढी है न ?"
आश्वास दिलाया मैं ने,
प्यारे लाल ने कहा—
"दर्जे में प्रथम होकर
दूसरे दर्जे में पहुँचा मैं
आज पहली बार नये दर्जे में
प्रथम स्थान पर बैठा मैं
पराजय मेरी नहीं"
गद् गद् हो बोला वह
"प्रथम दर्जे में ही रह गयी, बेचारी
अन्नम्मा टीचर पराजित।" ❀

अनुः विजयकुमार सी. पी. वी.
पय्यनूर कॉलेज
केरल-६७०३२१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्ण विराम

क. त. अ. कलैवाणन्

ऐ अन्धेरे के आराधक
शोषण के कुलभूषण
होशियार
क्यों तुम्हारा उर थबराता है उजाले से?
वह सुबह, सुनहरी
अब स्वप्निल नहीं
पर होगी जरूर.....
नहीं चलेगी
नादिरशाही तुम्हारी
खुल गई आँखें
उन बेबस इनसानों की
जिनकी पीठ पर
तुम बनाकर बैठे हो
भव्य भवन
इन्हीं की भुखमरी से भर गया पेट
तुम्हारा
और बढ़ती रही तोंद
उनकी समझ में
आ गई बात
कि
प्रश्नचिह्न का नमूना
सदियों से रही अपनी पीठ
अब वह दिन दूर नहीं
जब ये प्रश्नचिह्न तनकर
पूर्ण विराम बन जाए। ❀

शकुग्रावि बैंक
पोस्ट बैग नं ८, आश्रममार्ग
अहमदाबाद-३८०००१

विपंची

वी. के. एस. नम्पूतिरी

धन्य हूँ मैं
दुःख-दर्दों, विषादों की धड़कनों में
रागिनी की अमृत-भीनीजान फूंक कर
चेतना की मुग्ध-लय में
मोह माया-रंग भरके तान छेड़ूँ
विपंची का जनम पाया।
घन-घटा की तरंगें ही
भँवर बन जिन कुटीरों में घूमती हैं,
चपल होकर निरन्तर
जिन कुटीरों में गूँजती हैं
सिसकियों की करुण-गाथा,
उन्हीं को मैं
सोख लूँगी मृदु-करों से!
नित भरूँगी रग-रगों में तन्त्रियों की
छेड दूँगी मस्त तानें इन्द्रजाल सी!
बच गयी यों शढ़ाये मुलम्मा
देवत्व का,
आड़ में उसी की,
छिपाये खोह को—
शैतानियत की
रंग बदलू प्राणी बनकर
वर्ण-गन्ध-स्पर्श-राग—
विहीन होकर डूबने से
जड़ता की गहराइयों में!
धन्य हूँ मैं! ❀

केन्द्रीय विद्यालय
तिरुवनन्तपुरम-१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा समस्या को प्रयोगवाद से हल करें

डा० के० राघवन पिल्लै

यह बड़े हर्ष की बात है कि केरल हिन्दी प्रचार सभा के इस विशेष समारोह में भाग लेने और यहाँ पुरस्कार स्वरूप वितरणार्थ सजाकर रखे हुए इन दीपों को देखने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ। आजकल बच्चों को जो पुरस्कार दिये जाते हैं वे इतने सस्ते हैं कि बच्चे जब घर पहुँचकर पुरस्कार की पोटली खोल कर देखते हैं तो निराशा ही हाथ आती है। इस संस्था के कार्यकर्ताओं ने दीपों की एक आवली ही पुरस्कार स्वरूप देने केलिए सजायी है, इस औचित्य का मैं अभिनन्दन करता हूँ।

संस्कृत का एक विख्यात मंत्र है

असदो मा सद गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतम गमय

तम से ज्योति की ओर ले चलने के उत्तम प्रतीक हैं जगमगाते ये दीप। जो बालक ये पुरस्कार पाने आये हैं उनका मैं अभिनन्दन करता हूँ।

आज का यह सम्मेलन एक शैक्षिक संदर्भ है और एक सामाजिक सन्दर्भ भी है। ऐसे सम्मेलनों में भाषायी राजनीति का जिक्र करना मैं उचित नहीं मानता। आज दुनियाँ भर में, भारत में भी, भाषायी राजनीति सिर उठा रही है।

केरल भाषा के प्रति एक प्रकार का प्रयोजनवादी दृष्टिकोण अपनाता आया है। मातृभाषा के प्रति एक विशेष गौरव का भी अनुभव किया जाता है। हर भाषा भाषी जनता में मातृभाषा संबन्धी यह गौरव पाया जाता है। हम भारतीयों को भारत की अधिकांश जनता की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा हिन्दी के संबन्ध में भी गौरव अनुभूत होता है। इसके बावजूद मेरी मान्यता है कि भाषा के संबंध में प्रयोजनवाद की अपेक्षा प्रयोगवाद ही अभिलषणीय है। प्रयोजनवाद और प्रयोगवाद में अन्तर है। यह देखना कि किस भाषा के बोलने से अधिक भौतिक लाभ होगा, प्रयोजन-वाद है। लेकिन यह देखना कि किस भाषा के बोलने से जीवन, संस्कृति, चिन्तन इत्यादि में अधिक गुणात्मक वृद्धि होगी प्रयोगवाद है। इन सब दृष्टियों से देखें तो स्पष्ट है कि भाषा प्रयोगवाद के पक्ष में है। यह दृष्टि अपनायें तो आज की अधिकांश हठ धर्मिताएँ दूर हो सकती हैं।

हिन्दी प्रचारकों और हिन्दी भाषी विद्वानों से भरे इस सम्मेलन में मैं स्पष्ट शब्दों में यह कहना चाहता हूँ कि एक व्यक्ति या एक समूह के हृदय को स्पष्ट करने की क्षमता उसी भाषा में है जिस भाषा के वातावरण में वह व्यक्ति या वह समूह जन्म लेता है। यदि कोई पूछे कि किस भाषा के माध्यम से सिखाने से सिखाई गई बातें शिक्षार्थी के हृदय में पैठ जायेंगी तो मैं कहूँगा कि उसके लिए भी वही भाषा उत्तम है जो उसके घर में बोली जाती है, जिस भाषा के वातावरण में उसका जन्म हुआ।

भाषा के सबंध में दुनिया में कई प्रकार के हेर-फेर हुए है। कुछ वर्षों तक इंग्लैंड में लैटीन भाषा में ही लिखा पढी होती रही। इंग्लैंड की राजभाषा लैटीन रही। आखिर अंग्रेज़ों ने लैटीन भाषा की इस प्रभुता से मुक्ति पायी। फिर वे अंग्रेज़ी में अपने काम-काज करने लगे। ऐसी ही स्थिति सब कहीं पायी जती है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शिक्षा का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा ही है जिससे बच्चे की प्रतिभा क्रियाशील हो जाती है, सुनी हुई बातें समझ में आ जाती हैं और समझी हुई बातें चिन्तन को जगा देती हैं। जिस भाषासंबंधी प्रयोगवाद की बात मैं करता हूँ उसमें मातृभाषा का स्थान प्रमुख होगा। लेकिन भारत जैसे एक देश में शिक्षा के हर क्षेत्र में मातृभाषा-प्रेम ही मुख्य नहीं। कुछ ऐतिहासिक कारणों से किसी विशेष भाषा को स्वीकृत करने की आवश्यकता आ जाती है। आज भारत की आन की समस्या है कि उसकी अपनी एक आम भाषा हो। मेरे मत में भारत के एक प्रतीक के रूप में या सिम्बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में संस्कृत को ही आम भाषा का स्थान देना है। लेकिन यह असंभव है। स्वतंत्र्योत्तर काल में डा० कैलासनाथ कटजू, डा० सी. कुंजन राजा जैसे विद्वानों ने संस्कृत को भारत की आम भाषा बनाने के संबंध में विचार किया था। पर यह सुझाव अव्यावहारिक सिद्ध हो चुका है। तभी अधिकांश लोगों से बोली जानीवाली हिन्दी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकारा गया।

इस के बाद कई ऐतिहासिक तथ्य हमें घूरने लगे। दो तीन शताब्दियों तक एक सार्वदेशिक भाषा यहाँ शिक्षा का माध्यम रही। हमें मानना पडेगा कि इतिहास ने यह सार्वदेशिक भाषा हमारे सिर पर लाद दी। लेलिन ऐसी लादी हुई भाषा में भी यदि प्रयोजन के तत्व हों तो उस से लाभ उठाना भी एक ऐतिहासिक तत्व है। इसीलिए जब भारत की भाषा समस्या जटिल हो गयी तब पं० जवाहरलाल नेहरू ने त्रिभाषा सूत्र की संकल्पना की।

अपनी संस्कृति, अपने जीवन और अपनी शिक्षा के मूल स्रोत तक पहुँचने केलिए और हमारे बालकों की बुद्धि-शक्ति को अभिव्यंजना का अवसर प्रदान करने केलिए मातृभाषा ही उत्तम है। यदि पूछा जाये कि हमारे देश की सामान्य और असामान्य जनता की भाषा-भारत की भाषा कौन सी है तो कहना होगा कि केरलवालों की भाषा मलयालम है, तमिलनाड की भाषा तमिल है, तेलुगु भाषियों की भाषा तेलुगु है और हिन्दी भाषी प्रान्तों के संबंध में यह भाषा हिन्दी है। चिंतन और संस्कृति के स्रोत मातृभाषा में ही खुलते है।

पर साथ ही साथ एक संपर्क-भाषा की आवश्यकता है। अंग्रेज़ी से जो कि एक सार्वदेशिक संपर्क-भाषा है, हाथ धोने की ज़रूरत नहीं। सोवियत रूस की रूसी भाषा और चीन की चीनी भाषा भी अन्तरर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विकसित हुई हैं। यदि हमारे बालक इन में से दो-एक भाषायें सीखें तो अच्छा होगा। इस विषय में कोई हठधर्मिता नहीं होनी चाहिए। मेरा विश्वास है ऐतिहासिक कारणों से हमें उपलब्ध सार्वदेशिक भाषा के द्वारा हमारा सार्वदेशिक संपर्क बना रहे तो हमें उसे छोडना नहीं है।

हमारा भारत ही ऐसा एक देश है जहाँ भाषा के नाम पर झगड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिसाद नहीं होते। पर भाषा संबंधी अशांति यहाँ अवश्य है। भाषा मात्र बोलने में ही काम नहीं आती। वह एक ओर पारस्परिक प्रेम भी उत्पन्न कर सकती है और दूसरी ओर प्रभुता दासता का भाव भी उत्पन्न कर सकती है। भाषा आज्ञा देने का ही नहीं, अभ्यर्थना करने का भी माध्यम बन सकती है। यह तत्व यदि हम समझ सकें तो शायद भारत की भाषा संबंधी झंझटें भी मिट सकती है।

बताया जाता है कि चूँकि हिन्दी भारत की अधिकांश जनता द्वारा बोली जाती है अतः हिन्दी भारत की आम भाषा हो। चूँकि अधिकांश की भाषा हिन्दी न्यूनांश के ऊपर लादी जाने की संभावना है अतः यह आवश्यक है कि हिन्दी का अध्ययन स्वेच्छापूर्वक किया जाने-वाला एक कर्तव्य हो और हिन्दी सिखाने के संबंध में कभी भी कोई दबाव नहीं हो।

प्रधानता की दृष्टि से प्रथम स्थान मातृभाषा को, द्वितीय स्थान एक भारतीय भाषा हिन्दी को और तृतीय स्थान अंग्रेज़ी को देनेवाला वही त्रिभाषा सूत्र हमें स्वीकार्य लगता है। पर भारत में कहीं भी ठीक तरह से त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन नहीं हुआ है। मेरा विचार है कि यदि हर भारतीय अपनी मातृभाषा के अलावा एक अन्य भारतीय भाषा का भी अध्ययन करे तो भारत की भाषा संबंधी झंझटों का हल हो सकता है। हर हिन्दी भाषी को हिन्दी के अलावा एक अन्य भारतीय भाषा भी सीखनी होगी। मेरा अनुरोध है, इस प्रकार के एक मनोभाव द्वारा भारत की भाषा समस्या सुलझायी जाये।

केरल में हिन्दी प्रचार की एक दीर्घ परम्पता रही है। केरल एक ऐसा प्रान्त है जो हिन्दी के संबंध में कोई विरोध नहीं करता। भारत के अन्य प्रान्तों के लोगों की अपेक्षा केरल के लोग अंग्रेज़ी के प्रयोग में अधिक दक्ष हैं। रूसी, जापानी चीनी आदि भाषायें पढनेवाले भी यहाँ हैं। इस क्षेत्र में मातृभाषा के कार्यों में अधिक प्रगति आनी है। गत ३० वर्षों में सरकारी दफ्तरों में सरकारी कामकाज में मलयालम में टिप्पणी लिखने की शुरुआत नहीं हो सकी हैं। यद्यपि गत दो सौ पचास वर्षों में यहाँ अंग्रेज़ी प्रचलित रही है भी ठीक तरह से अंग्रेज़ी का उपयोग करनेवाले यहाँ बहुत कम है। अंग्रेज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम स्कूलों की संख्या यहाँ बढ़ रही है। मुझे सन्देह है कि इस बात का केवल सरकारी नीति केलिए छोड देना उचित है कि नहीं।

सरकार का यह कर्तव्य है कि वह जनता को भाषा संबंधी अपनी नीति के संबंध में समझायें और उसके अनुरूप योजनायें बनायें।

रात को कन्याकुमारी की ओर कार में जाते समय हम देखते है कि वहाँ से आनेवाली बैलगाडियों में गाडीवान सो रहे हैं। चूँकि बैल गाडीवान से अधिक सजग हैं इसलिए वे गाडी को धीरे धीरे तिरुवनन्तपुरम पहुँचा देते हैं। लगता है कि भाषा के क्षेत्र में हमारी गति भी ऐसी धीमी गति से हो रही है।

खैर इस सम्मेलन में भाग लेने का जो अवसर मुझे दिया गया उस के लिए मैं इस सम्मेलन के कार्यकर्ताओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी के विकास आदि के लिए जो महान सेवा कर रही है उस का अभिनन्दन करता हूँ। हिन्दी कविता रचना आदि प्रतियोगिताओं में जो विद्यार्थी विजयी हुए उन्हें बधाई देते हुए मैं इस सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

❀

26–3–1983 को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया उद्घाटन भाषण।

प्रकाशक बन्धुओं से

केरल ज्योति का 'तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन विशेषांक' अक्तूबर १९८३ में निकल रहा है। आप की संस्था का विज्ञापन देकर इस उद्यम में सहयोग दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा मार्च 1983 में प्रान्तीय स्तर पर आयोजित विविध हिन्दी प्रतियोगिताओं में निम्न लिखित प्रतिभागी उन्नत स्थान पाकर विजयी हुए।

भाषण प्रतियोगिता (कनिष्ठ)

प्रथम

कु. सजिता तम्पी
सेन्ट तेरेसास कालेज, एरणाकुलम

द्वितीय

श्री० आर. वेणुगोपाल
मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

भाषण प्रतियोगिता (वरिष्ठ)

प्रथम

श्री० रमेश आन्टणी
मार इवानियोस कालेज, तिरुवतनन्तपुरम

द्वितीय

श्री० एन. शेखर
गवण्मेन्ट आर्ट्स कालेज, तिरुवतन्नपुरम

निबंध प्रतियोगिता (कनिष्ठ)

प्रथम

श्री० आर. वेणुगोपाल
मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

कु. सजिता तम्पी
सेन्ट तेरासास कालेज, एरणाकुलम

निबंध प्रतियोगिता (वरिष्ठ)

प्रथम

श्री० एन. शेखर
गवण्मेन्ट आर्ट्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

श्री० एस. गोपीकृष्ण वारियर
श्री केरलवर्मा कालेज, तृशूर

कहानी प्रतियोगिता (कनिष्ठ)

प्रथम

श्री० आर. वेणुगोपाल
मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

कु. दीपा नायर
होली फामिली कान्वेन्ट जी. एच. एस. तृशूर

कहानी प्रतियोगिता (वरिष्ठ)

प्रथम

श्री० वी. बालगोपाल
मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

श्री० एन शेखर
गवण्मेन्ट आर्ट्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता प्रतियोगिता (कनिष्ठ)

प्रथम

श्री० आर. वेणुगोपाल

मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

कु. टी. सुधा

फोर्ट मिषन गेल्स हाई स्कूल
तिरुवनन्तपुरम

कविता प्रतियोगिता (वरिष्ठ)

प्रथम

श्री० वी० बालगोपाल

मार इवानियोस कालेज, तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

श्री० एन. शेखर

गवण्मेन्ट आर्ट्स कालेज, तिरुवनन्तपुरम

अखिल केरल हिन्दी नाटक प्रतियोगिता

प्रस्तुति

प्रथम

'बदला'

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम
तिरुवनन्तपुरम

द्वितीय

'दर्द का इलाज'

केन्द्रीय विद्यालय, पांगोड, तिरुवनन्तपुरम

श्रेष्ठ अभिनेता

प्रथम

श्री० रत्नदीप

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

द्वितीय

श्री० राजु नायर

केन्द्रीय विद्यालय, पांगोड, तिरुवनन्तपुरम

श्रेष्ठ अभिनेत्री

प्रथम

कु. श्रीकुमारी

केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

द्वितीय

कु. के. जमुना सेना

केन्द्रीय हिन्दी विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

श्रेष्ठ रचना

'बदला' श्री० रघुनाथन नायर, पी-टी. सी अध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम

विजेताओं को उचित पुरस्कारों से प्रोत्साहित किया गया (सचित्र विवरण गतांक में)।

विजेताओं को हार्दिक बधाई देते हुए हम उन विद्यालयों के प्रति कृतज्ञता भी अर्पित करते हैं जिन्होंने प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सहयोग दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरोखा

केरलीय दारुशिल्प

केरल के दारुशिल्पों का अपना व्यक्तित्व और परंपरा है। प्रस्तुति शारीरिक संरचना, वस्त्राभूषणों व डिज़ाइनों के संयोजन आदि में केरलीयता प्रकट होती है। केरलीय मंदिरों के कूत्तम्पलम और नमस्कारमण्डप इस के पर्याप्त उदाहरण हैं।

के. अप्पुक्कुट्टन आचारी

(मातृभूमि साप्ताहिक ६०/४०)

केरल की सडकें

केरल में नेशनल हाइवे की लंबाई ८३६ कि. मी. है। स्टेट हाइवे की लंबाई २०२२ कि. मी. है। पी. डब्लियू. डी. सडकों की लंबाई १४१२९ कि. मी है।

केरल की गरीबी

दरिद्र भारत का एक अति दरिद्र प्रांत है केरल। केरल की प्रतिशीर्ष आय भारत की प्रतिशीर्ष आय का अस्सी प्रतिशत मात्र है।..... शिक्षा में केरस आगे है।....कंपूट्यर लेसर, क्यामरा, रेडियो, दूरदर्शन, इलेक्ट्रोणिक यंत्र, माइक्री प्रोससर, औषध, रासवस्तुएँ, सूक्ष्म उपकरण आदि कई ज्ञानाधिष्ठित अत्याधुनिक उद्योग यहाँ आरंभ कर सकते हैं।

डा० एस. मोहन

(मातृभूमि सप्ताहिक ६०/३३)

डा० कनक रेले

केरल की नृत्यकला मोहिनियाट्टम से संबंधित वैज्ञानिक अनुसन्धान करनेवाली डा० कनक रेले विश्व विख्यात कलाकार हैं।....नृत्य में स्नातक पाठ्यक्रम को मान्यता देने केलिए बंबई विश्वविद्यालय को प्रेरित करनेवाली—उस केलिए एक संस्था चलानेवाली—कनक रेले केरलीयों की अपेक्षा मोहिनियाट्टम को प्यार करनेवाली कलाकार हैं। उनका विश्वास है कि यह कलारूप कथाकली से भी प्राचीन है।

के. एस. नारायण पिल्लै

(मातृभूमि सप्ताहिक ६०/४३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आवरण पृष्ठ 4 से आगे)

प्रतिनिधियों का जो सम्मेलन हुआ उसमें यह आशंका प्रकट की गयी कि इस रूपरेखा के पीछे हिन्दी को केरल के स्कूली पाठ्यक्रम से क्रमशः पूर्णतः हटाने का षडयंत्र काम कर रहा है ।

सम्मेलन में पौरस्त्य भाषा अध्यापक समिति, केरल कालेज हिन्दी अध्यापक फार्म, केरल हिन्दी प्रचार सभा, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हिन्दी विद्यापीठ, भारतीय भाषा समिति, केरल हिन्दी साहित्य मंडल आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया ।

सम्मेलन ने आह्वान किया कि देश के कोने कोने के भारतीय भाषा प्रेमी विशेष कर हिन्दी प्रेमी केरल सरकार के शिक्षा मंत्री को इस रूपरेखा में सुझायी गयी भाषा संबन्धी नीति को विशेश कर हिन्दी संबंधी नीति को छोड देने की अपील करते हुए तार द्वारा या पत्र द्वारा यथाशीघ्र अनुरोध करें कि नये पाठ्यक्रम में केरल की मातृभाषा मलयालम को प्रथम स्थान और भारत की संपर्क भाषा एवं राजभाषा हिन्दी को द्वितीय स्थान दें, हिन्दी का अध्यापन पांचवीं कक्षा से आरंभ करें तथा हिन्दी अध्यापन का कालांश बढा दें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25 KERAL JYOTI Vol. XVIII
May 1983 Price : Re

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

हिन्दी के विरुद्ध षड्यन्त्र ?

केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में अगले वर्ष से सुधार लाने के लिए केरल सरकार ने शिक्षा मंत्री की अध्यक्षता में एक संचालन समिति (स्टीयरिंग कमिटी) गठित की है। इस समिति ने नये पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने के लिए एक उपसमिति गठित की है। उपसमिति ने जो रूपरेखा बनायी है उसमें सुझाया गया है कि "संपर्क भाषा अंग्रेज़ी पाँचवीं कक्षा से पढायी जाय। राष्ट्र-भाषा हिन्दी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए दो साल और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।" इसका मतलब यह होगा कि हिन्दी का अध्ययन अगले साल से सातवीं कक्षा से ही आरंभ होगा।

इस संबन्ध में विचार करने केलिए ३०-५-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में विविध संस्थाओं के

(शेष आवरण पृष्ठ ३ पर)

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रक
मुद्रक : राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४. सम्पादक : के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

FREE
29-7-83

केन्द्रीय विद्यालय हिन्दी स्नातक शिक्षक शिविर के तत्वावधान में १८–५–१९८३ को तिरुवनन्तपुरम में आयोजित कवि सम्मेलन में डा० के. अय्यप्प पणिक्कर अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं। पास बैठे हैं श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा, डा० धर्मवीर ऐ ए. एस. और श्री० वी. वी. अच्चुण्णी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१
केरल

तार:-"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

पुष्प: १८

दल : ३

जून १९८३

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

यह अंक

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के तत्वावधान में बंबई, मद्रास एवं हैदराबाद संभाग के सेवारत प्रशिक्षित स्नातक हिन्दी अध्यापकों का एक शैक्षिणिक शिविर ९–५–१९८३ से २१–५–१९८३ तक केन्द्रीय विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम में चला।

इस शिविर में विविध भाषा भाषी हिन्दी अध्यापकों ने भाग लिया। पर पूरा वातावरण हिन्दी का था। सभी प्रतिभागी विशेषज्ञ और अधिकारी आपस में हिन्दी में ही वार्तालाप करते थे। सभी कार्यक्रम हिन्दी के माध्यम से ही संपन्न हुआ।

शिविर कई दृष्टियों से सफल रहा। नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, व्याकरण आदि विधाओं के पाठ्यसूत्र निर्माण पर चर्चा एवं प्रायोगिक व सामूहिक कार्य हुआ। हर कक्षा के स्तर के अनुसार उपलभ्य बाल साहित्य पुस्तकों की सूची बनायी गयी। कक्षा ६ से १० तक की पाठ्य पुस्तकें पढाने में अनुभूत होनेवाली कठिनाइयों पर चर्चा हुई और निवारण के उपाय ढूंढे गये। शिक्षकों, प्राचार्यों तथा सह आयुक्त एवं अन्य अधिकारियों के कक्षा निरीक्षण हेतु उपयुक्त बिन्दु तैयार किये गये। हिन्दी की विविध पत्रिकाओं की प्रदर्शनी आयोजित हुई और उनकी सूची बनायी गयी। स्थानीय शैक्षिक संस्थाओं का सन्दर्शन किया गया।

शिविर में जो कविसम्मेलन आयोजित हुआ वह भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। इस में विविध भाषाभाषी प्रतिभागियों की हिन्दी कवितायें प्रस्तुत की गयीं और स्थानीय प्रमुख मलयालम कवियों की मलयालम कवितायें प्रस्तुत हुईं। इससे अध्यापकों को हिन्दी में सृजनात्मक कार्य करने की प्रेरणा मिली और साथ ही साथ मलयालम कविता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का थोडा सा प्रत्यक्ष परिचय पाने का अवसर मिला। जैसे कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए मलयालम के प्रमुख आधुनिक कवि डा० के० अय्यप्प पणिक्कर ने कहा, हर कविता की कुछ कुछ बातें सब समझ पाते हैं और कुछ कुछ बातें किसी की समझ में नहीं आती।

केरल हिन्दी प्रचार सभा में शिविर के प्रतिभागियों का जो स्वागत हुआ उस अवसर पर शिविर के निदेशक श्री० अच्चुण्णी साहब के सुझाव पर यह निर्णय किया गया कि इस शिविर पर केरल ज्योति का एक अंक निकाला जाये जिसमें कवि सम्मेलन में प्रस्तुत कवितायें भी प्रकाशित की जायें। इसी निर्णय का परिणाम है यह अंक। ❀

इस अंक में

पृष्ठ

एक शैक्षणिक शिविर 3

शैक्षिक यात्रायें 8

शिबिर के प्रतिभागी हिन्दी अध्यापकों का स्वागत केरल हिन्दी प्रचार सभा में 10

कवि सम्मेलन 15
हरिश्याम पाण्डेय

मलयालम की काव्य परम्परा 17
एम. पी. अप्पन

मेरा मुख 19
एम० पी० अप्पन

जीवन गान 22
प्रो० विष्णुनारायणन नम्पूतिरी

अमृता प्रीतम के प्रति 23
टी. एस. पोन्नम्मा

दो कविताएँ—
लहरें
अमर ज्योति 24
वी. वी. अच्चुण्णी

दोनों की महिमा एक है 26
के. गणपति

मुक्तक 27
हरिश्याम पाण्डेय

समय 29
श्य.मा गुप्ता

स्वागत 30
कुन्नुकुषि कृष्णनकुट्टी

नेता 31
वी. के. एस. नम्पूतिरी

शिलाखण्ड 32
डी. ललिता

बरसात के मौसम में 33
सुरेशचन्द्र जायसवाल

केरल 35
डॉ० जी. आर. साक्षी

शैक्षिक संगम 36
के. डी. राय

ज़िन्दगी 38
कुसम गुप्ता

दो कवितायें—
संबन्ध
रोज रोज होता है महाभारत 39
रामकृष्ण ठाकुर

आत्मसमर्पण 40
पुरुषोत्तम भोंडेकर

मुक्तक 41
गिरिजा शंकर यादव

कौन है अंधा ? 42
एन. पद्मावती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक शैक्षणिक शिविर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के तत्वावधान में बंबई, मद्रास एवं हैदराबाद संभागों के सेवारत प्रशिक्षित स्नातक हिन्दी शिक्षकों का एक शैक्षणिक शिविर केन्द्रीय विद्यालय, तिरुवनन्तपुरम में ९–५–१९८३ से २१–५–१९८३ तक संपन्न हुआ।

मद्रास संभाग के सहायक आयुक्त श्री. दीपचन्द सोलंकी ने शिविर का उद्घाटन किया।

शिविर के निदेशक थे श्री० वा. वी. अच्चुण्णी, शिक्षाधिकारी, मद्रास संभाग, और सह निदेशक थे श्री० सोमदत्त शुक्ल, आचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, आई० एन० एस० हमला, बम्बई।

विशेषज्ञ थे श्री० के. गणपति, स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी), केन्द्रीय विद्यालय, अम्बाल, बैंगलूर और श्री० सुरेशचन्द्र, स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी), केन्द्रीय विद्यालय, आई० आई० एस० सी० बैंगलूर।

शिविर के उद्देश्य

शिविर कुछ ऐसे शैक्षणिक उद्देश्यों को सामने रखकर चलाया गया जो अध्यापकों की क्षमता और कुशलता बढाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिविर के प्रमुख उद्देश्य निम्न लिखित थे।

अध्यापक बालोपयोगी साहित्य से परिचित हो जाएँ ताकि विद्यार्थी विद्यालय-पुस्तकालय का सही उपयोग कर सकें।

अध्यापक विषयोपयोगी और अन्य सहायक पुस्तकों का अधिकाधिक परिचय प्राप्त करें जिससे वे अपने अध्यापनकार्य को नई दिशा प्रदान कर सकें।

अध्यापक पठन-पाठन के प्रति अधिक रुचि लें एवं पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तकों पर विस्तृत चर्चा करें जिस से कि अध्यापकों में उनके गहन अनुभव का आदान-प्रदान हो सके।

शैक्षणिक-उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अच्छे और अधिक लाभदायक पाठ-सूत्र तैयार करना।

अध्यापकों को सफल एवं सशक्त अभिव्यक्ति एवं अधिकारपूर्वक बोलने का प्रशिक्षण देना।

अध्यापक की निरीक्षण-क्षमता को बढाना और उन में शैक्षिक यात्राओं के सफल आयोजन की क्षमता पैदा करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्यापक को कक्षा-शिक्षण के कार्य में दृश्य श्रव्य साधनों के उपयोग द्वारा प्रभावशाली बनाने एवं सही व आवश्यक सहायक सामग्रियों का प्रयोग करने के योग्य बनाना । हर कक्षा और प्रत्येक विषय की सहायक–सामग्री की सूची बनाना ।

हर कक्षा और हर विषय में उपयोगी प्रायोजनाकार्य की सूची बनाना ।

प्रत्येक कक्षा के पाठ्यक्रम का विभाजन करना ।

इकाई परीक्षा के लिए आदर्श प्रश्न-पत्र और प्रश्न बैंक का निर्माण करना।

अध्यापकों को औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षण में एकीकरण के महत्व से अवगत कराना ।

दैनिक शिक्षण में शिक्षण शिविर का प्रभाव आँकने की एक जाँच सूची तैयार करना ।

प्रतिभागी

शिबिर में निम्न लिखित अध्यापकों ने भाग लिया :—

क्रम	नाम	विद्यालय	संभाग
1.	श्री० पी. एच्. भोंडेकर	अंबाझरी	बंबई
2.	श्री० ए. डब्ल्यु सिंग	एस. सी. पुणे	,,
3.	कु० निर्मला डावरे	,,	,,
4.	श्रीमती डी. भट्टी	,,	,,
5.	श्रीमती एम. डी. शुक्ला	आई. एन. एस्., हामला	,,
6.	श्रीमती विमला पन्धे	ए. एफ. एस्, पुणे	,,
7.	श्री० रामकृष्ण ठाकुर	भंडारा	,,
8.	श्री० के. डी. राय	देवलाली	,,
9.	श्रीमती कुसुम गुप्ता	खडकवासला, पुणे	,,
10.	श्रीमती पद्मा तिवारी	कुलाबा क्र–२	,,
11.	श्रीमती राजेश्वरी सुंदर	सी. एल. आर. आई. मद्रास	मद्रास
12.	श्रीमती सुजाता देवो	पांडिचेरी	,,
13.	श्रीमती एस. चंद्रिका कुमारी	ए. एफ. एस., आवडी	,,
14.	श्रीमती के. जी. कृष्णकुमारी	,,	,,
15.	श्रीमती श्यामा गुप्ता	,,	,,

केरल ज्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

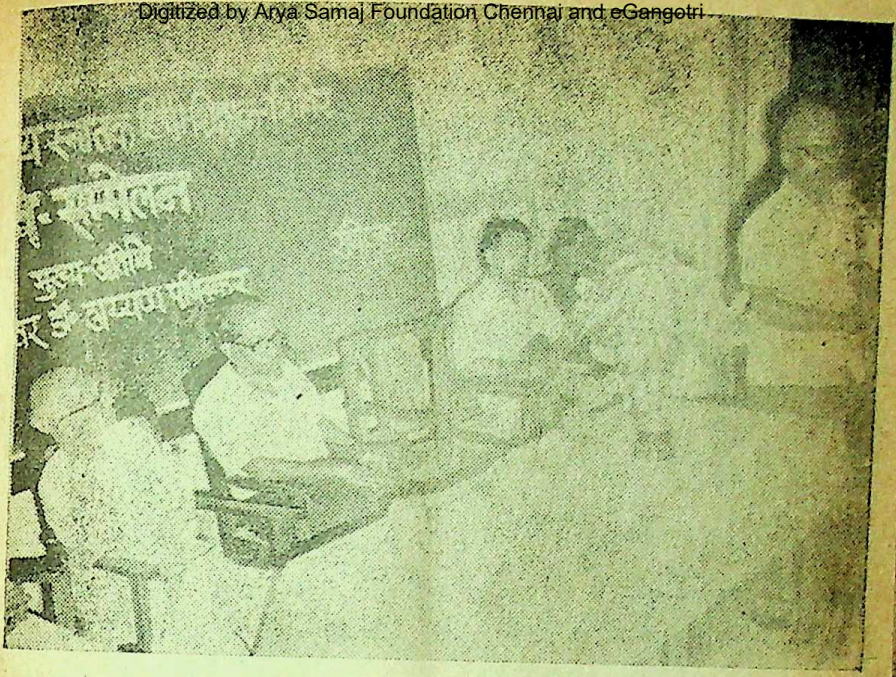

अखिल भारतीय हिन्दी कवि सम्मेलन में कविता सुना रहे हैं श्री० वी. वी अच्चुण्णी।

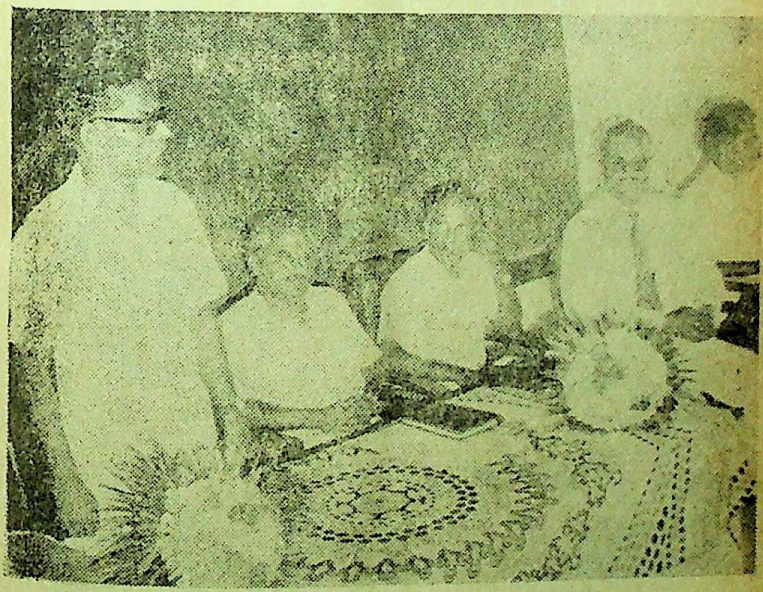

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में आयोजित शैक्षिक शिविर का उद्घाटन करते हुए मद्रास संभाग के सहायक आयुक्त श्री० दीपचन्द सोलंकी बोल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

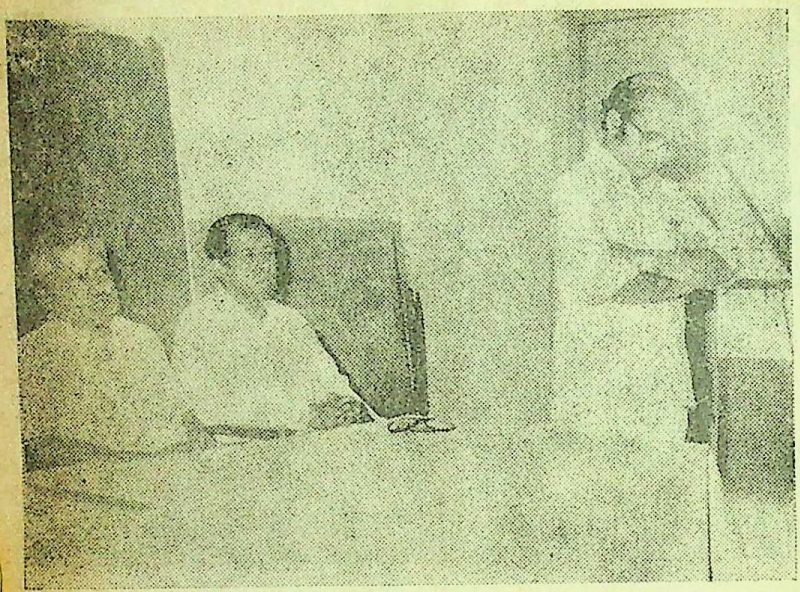

शैक्षिक शिविर के समापन समारोह में प्रस्थानकालीन भाषण
दे रहे हैं श्री० एन. आर. हीरे गंगे ।

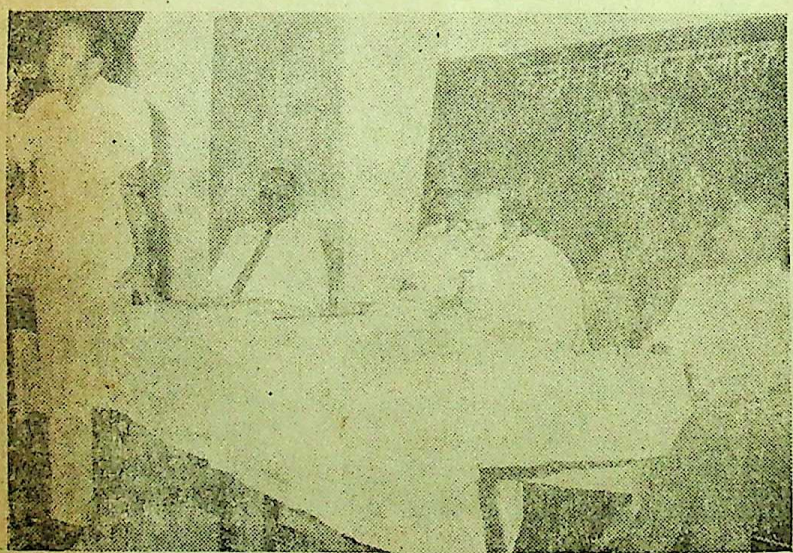

केरल राज्य के उद्योग विभाग के विशेष सचिव श्री० अरुण कुमार
शैक्षिक शिविर के प्रतिभागियों से बोल रहे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम	नाम	विद्यालय	संभाग
16.	कु० ज़ीनत बीबि	पोर्ट ट्रस्ट, कोचीन	मद्रास
17.	कु० के. के. पंकजाक्षी	ए. एफ्. एस , सुलूर	,,
18.	श्रीमती डा. ललिता	त्रिमलगिरी	हैदराबाद
19.	श्रीमती शशीकान्ता जोशी	,,	,,
20.	श्रीमती मंगला गडसूरकर	उप्पलक्कं-१	,,
21.	श्री० धर्मव्रत शास्त्री	उप्पलक्कं-२	,,
22.	श्रीमती ललिता देवी	ए. एस्. सी , बेंगलूर	,,
23.	श्रीमती तजुन्निसा	,,	,,
24.	कुमारी वीणा गोगना	,,	,,
25.	श्री० के. वी. कुरियाकोस	जालाहल्ली	,,
26.	कुमारी एल्. पद्मावती	मल्लेश्वरम	,,
27.	श्रीमती के. एस. प्रभावती	मलकापुरम्	,,
28.	श्रीमती टी. आर. सुब्बलक्ष्मी	,,	,,
29.	श्रीमती निर्मला मेरी	१०४ क्षेत्र, विजयनगर	,,
30.	श्री० हरिश्याम पांडेय	द्रोणीमलाई	,,
31.	डॉ० जी. आर. साक्षी	,,	,,
32.	श्रीमती सरबजीत कौर	त्रिमलगिरी	,,
33.	श्रीमती सुधा नेलवाडकर	,,	,,
34.	श्री० गिरिजाशंकर यादव	कलपाक्कम	मद्रास
35.	श्री० वी. के. पुरुषोत्तम	ताम्बरम	,,
36.	श्रीमती के. विलासिनी बाई	तिरुवनन्तपुरम	,,

शिविर के तत्वावधान में जो बहुभाषी कवि सम्मेलन आयोजित हुआ वह कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। उसमें पढी गयी कवितायें इस अंक में प्रकाशित हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा को इस शिविर के प्रतिभागियों का स्वागत करने का अवसर मिला। स्वागत सम्मेलन में प्रतिभागियों ने बताया कि केरल हिन्दी प्रचार सभा से वे संपर्क बनाये रखेंगे और यथा संभव सेवायें सभा की प्रगति के लिए अर्पित करते रहेंगे।

शिविर के प्रतिवेदन से प्रकट है कि शिविर का संचालन अत्यंत सफल रहा और जिन उद्देश्यों को लेकर यह शिविर आयोजित हुआ उन उद्देश्यों की पूर्ति शिविर कर सका।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक यात्राएं

भाषा शिक्षण में शैक्षिक यात्राओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इस उद्देश्य की पूर्ति केलिए दिनांक १४ को सायंकाल चार बजे हमने स्थानीय संग्रहालय, चिड़ियाघर, कोवलम् समुद्र तट, पद्मनाभ स्वामी मन्दिर आदि स्थानों के दर्शन किए। इन स्थानों के प्राकृतिक सौन्दर्य, और सांस्कृतिक महत्व से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

दिनांक पन्द्रह को हम कन्याकुमारी चले। रास्ते में पद्मनाभपुरम् का ऐतिहासिक राजमहल, शुचीन्द्रम् का मन्दिर, इनके भी दर्शन किए। कन्याकुमारी में विवेकानन्द शिला, ध्यान मंडप, कन्याकुमारी का मन्दिर, गान्धी मंडप इत्यादि स्थानों को भी देखा। कन्याकुमारी में हिन्द महासागर, बंगाल की खाड़ी तथा अरब सागर का मिलन अत्यन्त मनोरम है। सागर की लहरों से भिड़क अनेक समुद्र स्नान भी समुद्रों के इस संगम पर स्नान कर रहे थे। देश-विदेश से यात्री यहाँ आते हैं। तरह-तरह के माल भी खासकर सागर से पाई जानेवाली चीजें यहाँ प्राप्त होती हैं।

दिनांक १६ शामको हम 'अरुविकरा' गए। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य मन लुभाने वाला है। पर्वतों से घिरे प्रांगण से नदी कल-कल करता बहती है। जिसपर बाँध बनाया गया है और सारे तिरुवनन्तपुरम शहर को पीने का पानी यहीं से प्राप्त होता है। नैय्यार का बाँध भी अत्यन्त सुन्दर स्थान पर बना है। यहाँ का बगीचा और मनुष्य निर्मित मूर्तियाँ अत्यन्त हृदयहारी है। यहाँ का प्राकृतिक दृश्य जैसे नाले, वन उपवन, पर्वत श्रेणियाँ और बादलों में लुक-छिप करती चोटियाँ आदि देखते ही बनते हैं

दिनांक १९ को सायं ५ बजे केरल हिन्दी प्रचार सभा में हमारा स्वागत हुआ। वहाँ का मुद्रणालय, ग्रन्थालय आदि हमने देखे। केरल के प्रसिद्ध विद्वान और समाजसेवी जैसे डा० पी. के. नारायण पिल्लै, प्रो० पी. जे जोसफ, श्री० पी एन. पणिकर, श्री० के. पी. आलिकुञ्ञु आदि वहाँ उपस्थित थे। डा० पिल्लै ने हिन्दी को सम्पर्क भाषा के पद पर बनाए रखने केलिए सतर्क रहने का आह्वान किया और हिन्दी को समृद्ध बनाने के लिए सभी भारतीय भाषाओं से खासकर संस्कृत से शब्द ग्रहण को माँग की। श्री० पी एन. पणिकर ने आज़ादी को सार्थक बनाने के लिए निरक्षर जनता को अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्रदान करने पर जोर दिया। हिमाचल-प्रदेश से लेकर केरल तक के प्रतिनिधि अध्यापकों के सम्मिलित होने के कारण उन्हें ये सभा सचमुच पूरे भारत का प्रतीक सा लगा और उन्होंने जाति पाति भाषा या प्रान्तीय भेदभाव को भूलकर एकता का अनुभव करने का आह्वान दिया। सचमुच ये प्रसंग अत्यंत प्रेरणाप्रद था। सभा के कार्यकर्ताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रेम से हम सब अत्यन्त भावाभिभूत हो गए और हमने भी अपने को सभा का अभिन्न अंग महसूस किया। बाद में शहर के प्रसिद्ध सभागृह टैगोर सेन्टीनरी सभागार में गए। वहाँ केरल के दिवंगत उपन्यास सम्राट श्री० सी. वी. रामन पिल्लै की एक-सौ-पच्चीसवीं जैयन्ती समारोह का उद्घाटन हो रहा था। केरल के मुख्य मन्त्री श्री० के. करुणाकरन्, वित्त मन्त्री श्री० के. एम. माणी, प्रसिद्ध साहित्यकार डा० के. एम. जॉर्ज, मूर्धन्य उपन्यासकार तकषि शिवशंकर पिल्लै, सर्वश्रेष्ठ नाटककार एन्. कृष्ण पिल्लै, आलोचक कन्निकेरा एम. कुमार पिल्लै आदि केरल के सांस्कृतिक और साहित्य की महान विभूतियों के भाषण हमने सुने। साथ ही भारत सरकार द्वारा पद्म-भूषण उपाधि से विभूषित सिने-कलाकार श्री० प्रेम नजीर का भी अभिनन्दन हुआ। मलयालम सिनेमा के हास्य नट अटूर भासी भी वहाँ थे। आकाशवाणी द्वारा आयोजित केरल के श्रेष्ठ कवियों की रचनाओं का गायन भी हमने सुना। सचमुच यह अविस्मरणीय अनुभव था।

●

—एक प्रतिभागी

गुरु गोविन्द दोनों खडे
काको लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपकी
गोविन्द दियो दिखाय ॥

—कबीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिबिर के प्रतिभागी हिन्दी अध्यापकों का स्वागत केरल हिन्दी प्रचार सभा में

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली के तत्वावधान में तिरुवनन्तपुरम में ९–५–८३ से २१–५–८३ तक आयोजित शैक्षणिक शिबिर के प्रतिभागी हिन्दी अध्यापकों का हार्दिक स्वागत १९–५–८३ को सायंकाल में केरल हिन्दी प्रचार सभा में किया गया।

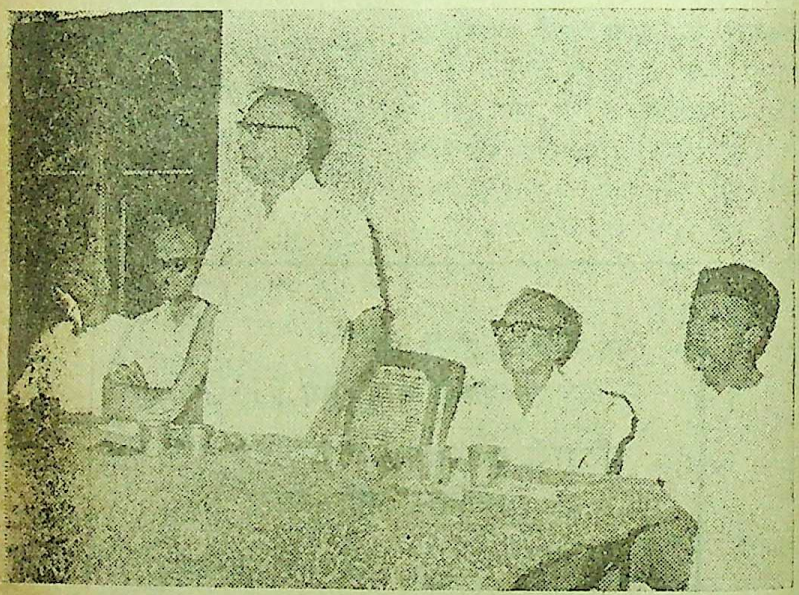

केरल हिन्दी प्रचार सभा में शिबिर के प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत।
भाषण दे रहे हैं डा० पी. के. नारायण पिल्लै। बैठे हैं (बायें से)
श्री० कवियूर श्रीधरन नायर, श्री० वी. वी. अच्चुण्णी,
श्री० पी. एन. पणिक्कर और श्री० के. पी. अलिक्कुंजु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत सम्मेलन की अध्यक्षता केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं प्रकांड पंडित डा० पी. के. नारायण पिल्लै ने की। आपने बताया कि हिन्दी के अध्यापक साधारण भाषाध्यापक नहीं हैं। वे राष्ट्रभाषा के द्वारा भारतीय संस्कृति के विशिष्ट मूल्यों का प्रचार करनेवाले हैं, भारत की भावात्मक एकता को सुदृढ करनेवाले हैं और भारत की अखण्डता के संरक्षक हैं। उन्होंने हिन्दी अध्यापकों से आह्वान किया कि हिन्दी को भारत की संपर्कभाषा और राजभाषा के रूप में उचित प्रतिष्ठा दिलाने केलिए अथक परिश्रम करें।

त्रिभाषा सूत्र पर चर्चा करते हुए डा० पिल्लै ने बताया कि त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा को प्रथम, राजभाषा हिन्दी को द्वितीय, और ग्रंथालय भाषा अंग्रेजी को तृतीय स्थान दिया जाना है जब कि कई प्रान्तों में हिन्दी को तीसरा स्थान नहीं दिया गया है।

प्रतिभागियों को उद्बोधित करते हुए केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के मंत्री एवं केरल के प्रमुख समाज सेवक श्री० पी. एन. पणिक्कर ने आग्रह किया कि अनौपचारिक विद्या केन्द्रों एवं प्रौढ साक्षरता केन्द्रों में हिन्दी का अनौपचारिक शिक्षण की व्यवस्था हो। आपने कहा कि स्कूली ग्रन्थालयों

श्री० पी. एन. पणिक्कर का उद्बोधन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

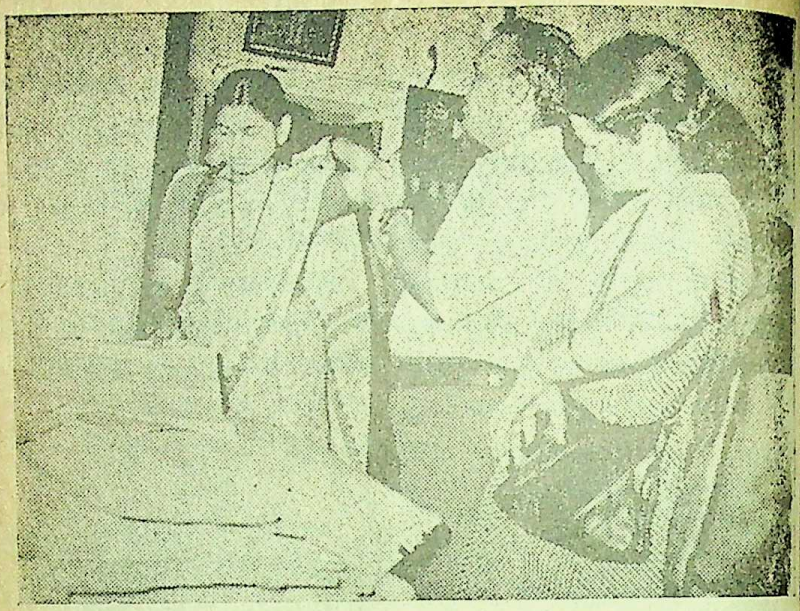

शिविर के प्रतिभागी केरल हिन्दी प्रचार सभा के राष्ट्रवाणी मुद्रणालय में।

शिविर निदेशक श्री० वी. वी. अच्चुण्णी का भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल के ये पकवान, फल और मेवे कितने स्वादिष्ट हैं ?

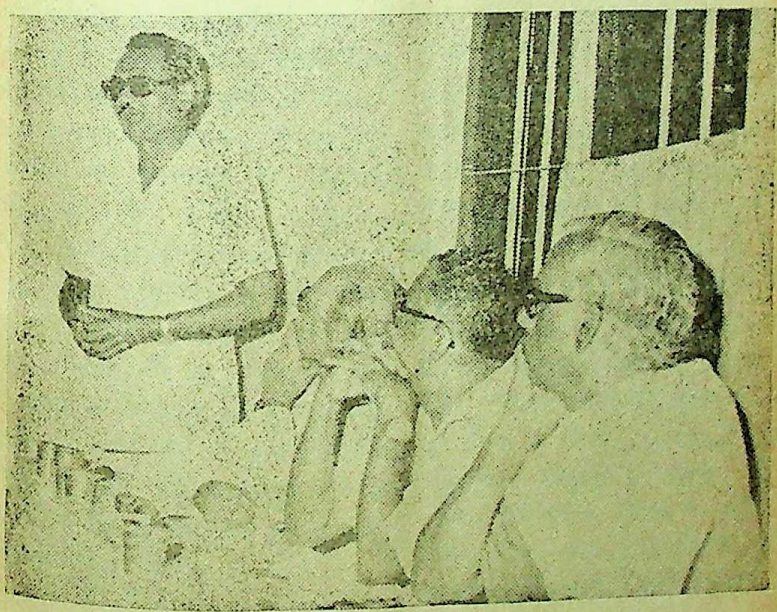

प्रतिभागियों की ओर से कृतज्ञता प्रकाशित कर रहे हैं डा० एस. डी. शुक्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवं ग्रामीण ग्रंथालयों में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों को भी कम से कम उतना स्थान दिया जाये जितना अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तकों को दिया जाता है।

प्रतिभागियों की ओर से श्री० के. गणपति, डा० एस. डी. शुक्ल, श्री० हरिश्याम पांडेय, श्रीमती कुसुम गुप्ता आदि ने केरल हिन्दी प्रचार सभा की गतिविधियों पर संतोष प्रकट किया और वादा किया कि सभा के कार्यों में वे सदा सहयोग देते रहेंगे।

शिविर के निदेशक श्री० वी. वी. अच्चुण्णी ने शिविर में कवि सम्मेलन आयोजित करने में दिये गये सहयोग के लिए और सभा भवन में प्रतिभागियों को दिये गये हार्दिक स्वागत के लिए केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

केरल ज्योति के संपादक श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने स्वागत भाषण दिया और केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिकुंजु ने कृतज्ञता प्रकट की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि सम्मेलन

प्रस्तोता :— हरिश्याम पाण्डेय

केन्द्रीय विद्यालय हिन्दी स्नातक शिक्षक शिविर के तत्वावधान में दिनांक १८-५-१९८३ को सायंकाल ६ बजे के० वि० तिरुवनन्तपुरम के सभागार में एक सरस कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें मद्रास, हैदराबाद, बम्बई संभाग से आए प्रतिभागी शिक्षकों तथा स्थानीय हिन्दी मलयालम भाषा के कवियों ने भाग लिया। कविसम्मेलन की अध्यक्षता मलयालम के कविवर डॉ० के. अय्यप्प पणिक्कर ने की तथा मुख्य अतिथि थे मलयालम के महाकवि श्री० एम. पी. अप्पन। निदेशक श्री० वी. वी. अच्चुणी ने मान्य अतिथियों का स्वागत पुष्पहारों से कर उनका परिचय कराया। अध्यक्षीय भाषण में डॉ० पणिक्कर ने इस बहुभाषी कवि सम्मेलन की सराहना की। शिविर के प्रतिभागी प्रतिनिधि हरिश्याम पाण्डेय ने कवि सम्मेलन का प्रभावपूर्ण ढंग से संचालन निदेशक श्री० वी. वी. अच्चुणी के मार्गदर्शन में किया।

कवि सम्मेलन की शुरुवात महाप्राण निराला की कविता 'वर दे वीणावादिनी' से हुई, तत्पश्चात् गीतकार श्री० सुरेन्द्र चन्द्र ने मधुर स्वर में 'घिर घिर आए बादल सजना, हाय न तुम आए' गाकर श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। हिन्दी गजल के सशक्त हस्ताक्षर डॉ० धर्मवीर आई. ए. एस. ने 'मर जाते तो क्या मिलता, बच जाते तो क्या लेते' प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुतकर सम्मेलन में जान डाल दी। 'पल-पल पर मैं बरसा दूँगा यहाँ जवाहर सोना' जैसा सुन्दर गीत पढकर मलयालम के विख्यात कवि श्री० विष्णुनारायणन नंपूतिरी ने श्रोताओं के मन को जीत लिया। महाराष्ट्र के पुरुषोत्तम भोडेकर ने 'कभी कभी अपनों में बेगाने मिल जाते हैं' गीत को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। मलयालम के प्रमुख कवि श्री० कटम्मनिट्टा रामकृष्णन् ने अपने गीत में जीवन को एक सरिता बताया। कवि सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ० के. अय्यप्प पणिक्कर ने अपने गीत में भारतीय दर्शन की रूप रेखा प्रस्तुत की। तत्पश्चात् कविवर श्री० एम. पी. अप्पन ने जीवन दर्पण में बिम्ब देखने की बात कविता के माध्यम से कही। निदेशक एवं श्रेष्ठ कवि वी. वी. अच्चुणी ने अपनी कविता 'लहरों पे, लहरों पे, लहरों पे; लहरें' पढकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। कवयित्री श्रीमती टी. एस. पोन्नम्मा (हिन्दी अधिकारी, केरल सरकार) ने अमृता प्रीतम से प्रभावित होकर लिखा गया गीत 'नारी आज सम्मानित, हमारा मन आमोदित, प्रमोदित' प्रस्तुत किया। म० प्र० की धरती के वरदपुत्र श्री० रामकृष्ण ठाकुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने 'दोस्ती के दर्पण में दरार क्यों पड गई' तथा इसी तरह की अन्य कविताएँ प्रस्तुत कर मानव मन की झांकी प्रस्तुत की । म० प्र० सागर से पधारे डॉ०जी. आर. साक्षी ने अपनी रचना 'वृक्षों ने समेट लीं अपनी छाया हम धूप में आ गए' पढकर कटु यथार्थवादी दृष्टिकोण का दर्शन कराया । सर्वश्री के. वी. कृष्णनकुट्टी, के. जी. बालकृष्ण पिल्लै, वी. के. सुब्रह्मण्यन् नंम्पूतिरी तथा रामसुब्रह्मण्यम् ने भी अपने अपने गीत प्रस्तुत किये ।

खड्गवासला पूना से पधारी हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती कुसुम गुप्ता ने 'हीन अपने को न समझो झोपडीवालो' गीत सुमधुर स्वर में प्रस्तुत किया । श्री० गिरिजा शंकर 'गाजीपुरी' की 'आशा की ग़र एक किरण मिल गई होती, चन्द लम्हा जी लिया होता तेरे इन्तज़ार में' टीस भरी आवाज़ को सुनकर श्रोतागण आनन्दमग्न हो गये । विकलांग वर्ष पर अपनी रचना 'कौन है अन्धा' प्रस्तुत किया कु० पद्मावती जी ने । श्री० के. गणपति, श्रीमती ललिता, श्री० डी. सी. शर्मा तथा श्रीमती सरबजीत कौर ने अपनी सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत कीं । प्रारम्भ से अन्त तक संयोजक श्री० हरिश्याम पाण्डेय ने कवियों की रचनाओं से मिलती जुलती कविताओं का पुट दे देकर कवि सम्मेलन को रंगीन बनाये रखा ।

अन्त में शिविर के सह-निदेशक डॉ०सोमदत्त शुक्लजी ने आमन्त्रित कवियों तथा नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों के प्रति शिविर के प्रतिभागियों की ओर से आभार व्यक्त किया ।

के. वि. द्रोणिमन
५८३११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम की काव्य परंपरा

एम. पी अप्पन

सब लोग सुख से जीना चाहते हैं। इस भूमि पर ऐसी कितनी ही वस्तुएँ हैं जो श्रोत्र, चक्षु, स्पर्शन, रसना और घ्राण इन पाँचों इन्द्रियों को आह्लाद प्रदान करती हैं। उनसे प्राप्त आनन्द नगण्य नहीं कहा जा सकता। सांसारिक सुख इन्हीं वस्तुओं पर आधारित है। यह सहजीवियों के प्रति स्नेह नहीं है तो उपर्युक्त सुख भी अपूर्ण ही रहेगा। उत्तम कविताओं के आस्वादन से जो आत्मनिर्वृत्ति मिलती है वह ऐन्द्रिय सुखों से श्रेष्ठ है। उस सुख का अनुभव किये बिना मनुष्य जीवन पूर्ण नहीं हो सकता।

कविता विचारामृत है और इसीलिए वह सदा हमें आह्लादित करती है। उत्कृष्ट कविता वर्ण्य वस्तु को नया भाव प्रदान करती है और अनुवाचक को आनन्द की उच्चकोटि तक पहुँचा देती हैं। अन्युत्तम कविता की विशिष्टता यह है कि वह हमारे हृदयों को आह्लादित करती है और साथ ही हमारी आत्मा का उन्नयन करती है। इसीलिए कविता सदा आराध्य होती है।

मलयालम काव्य समृद्ध हैं। तुञ्चत्तु रामानुजन् एषुत्तच्छन जैसे श्रेष्ठ कवियों की रचनाएँ वर्षों से मलयालियों को निर्वृति प्रदान करती आयी है। बाद के कई कवियों ने भी अनेक हृद्य कविताएँ रची हैं।

कुमारनाशान, उल्लूर एस. परमेश्वरय्यर, वल्लत्तोल नारायण मेनोन ये तीनों महाकवि विश्व-साहित्यकारों का स्थान पा चुके हैं। कितने ही जीवन रागों को उन्होंने बडी निपुणता से प्रस्तुत किया है। कितने ही भाव चित्रीकरण! कितनी ही रसामृत परम्पराएँ! उन त्रिमूर्तियों ने भी भावगीत रचे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उनका यश ज्यादातर उनके खण्डकाव्यों पर आधारित है।

उन महाकवियों के बाद महाकवि जी. शंकरकुरुप और अन्य कवि हुए जिनका मुख्यक्षेत्र भावगीत था। उस क्षेत्र में वे अत्यन्त शोभित हुए। यद्यपि भावगीत की कुछ अपनी सीमाएँ हैं, तो भी वह जो काव्यकला धर्म निभाती है वह अत्यन्त श्रेष्ठ है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जी और उनके समकालीन कवियों के उत्तम भावगीत विश्वसाहित्य के अन्य भावगीतों के समस्कन्ध हैं। लेकिन उनकी रमणीयता अन्य देश-वासियों को विदित नहीं हो पाई है। इन भावगीतों की मनोहारिता विदेशियों तक पहुँचाने में वे ही कवि समर्थ हो सकते हैं जो मूल रचनाओं की जान नष्ट किए बिना उनका अनुवाद प्रस्तुत कर सकते हैं।

अब तक मैं ने मलयालम कविता की बात बतायी। मैं जानता हूँ कि हिन्दी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, बंगला, मराठी, पंजाबी जैसी भाषाओं में भी अत्यन्त सुन्दर भावगीत हैं। उनमें कुछ गीतों के अंग्रेज़ी अनुवादों का रूपान्तर मैं ने मलयालम में किया है। इस सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मुझे दिया गया। इसके लिए मैं इसके कार्यकर्ताओं के प्रति आभारी हूँ। आप सब कवि भाइयों और बहिनों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ जो आर्षभूमि के विविध भागों से यहाँ पधारे हैं।

अत्यन्त गौरव और आदर के साथ मैं इस कवि सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

१८-५-१९८३ को केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम में आयोजित कवि सम्मेलन में दिया गया उद्घाटन भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम कविता

मेरा मुख

एम. पी. अप्पन

स्फटिक निर्मल सरोवर में प्रतिबिंबित चारु चन्द्र सम
मुकुर में प्रतिबिंबित अपना चेहरा
मैं देखता रहा चाव से,
प्रभात में ।
भूतिपूरित भूमि में
कितने ही
श्रीपूर्ण विचित्र दृश्य समूह है नयनाभिराम ।
किन्तु
ये द्युतिपूर्ण दृश्य
मेरेलिए उतने सुखद नहीं लगते
जितनी अपनी मुखकान्ति है ।
मुझ में मुखशोभा बनकर
अनुपम शैली में विलसता होगा
आदिम उदयरश्मि और आदिम वसन्त दीप्ति से लेकर
इस अभिराम उषा की कान्ति तक
चमकती रही विविध रमणीयताओं का
समंजस सम्मेलन ही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा यह हृद्य मुख सौभग
कितनी ही प्रमदाओं के हृदन्त दर्पणों में
प्रतिबिंबित होता होगा ।
मुझे भी असुख देता हुआ ।
अहह !
मेरे सौष्ठव को हरानेवाली कान्ति से युक्त
कितने ही मनोज्ञ युवक
विविध युगों में हुए !
मणिदीपों के समान चमकते रहे वे कहाँ गये ?
मही में कौन उन मृत सुभगों का स्मरण करता है ?
ढेरों के ढेर भरा हुआ सोना भी
अस्थिर यहाँ,
सुवर्णकुसुम सम
क्षण में मिट जायेगा,
पर समझे कौन ?
लोभनीय वरांगियों से प्राप्त सुख की स्मृति कभी
लोकमानस भित्ति पर प्रतिबिंब बन नहिं शोभती
खड्ग बल पर भय दिखा कर बडे बनते लोग भी
कल नहीं प्रतिबिंब पाते मनुज-हृदय की वेदि पर ।
यदि मैं चाहूँ
कि
मर्त्य-हृदयों में
मेरा मुख
प्रतिबिंबित हो कर
नितांत कांति बरसाता हुआ
विलसता रहे सदैव
तो
देह की चारुता या शक्ति
पर्याप्त नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकेलिए अपेक्षित है
नित्य निरवद्य अहैतुक मानव स्नेह ।
अन्य दुःख को दूर करने जो जीवन की बलि देते हैं
वे ही अति गणनीय चिर स्मरणीय धन्य माने जाते ।
अंधकार में तडप रहे लोगों को ज्योति दिलाने को
रातों के आंसू पोंछ उन को अल्प सांत्वना देने को
दाना पाने तरस रहे दीनों की भूख मिटाने को
रक्तहीन अति शुष्क नसों में प्राण प्रवाहित करने को
अपने सारे सुख को त्यज मैं परिश्रम करता जाऊँ तो
लोग हमेशा याद करेंगे मुझे और मेरे सुख को ।

रूपांतर : के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

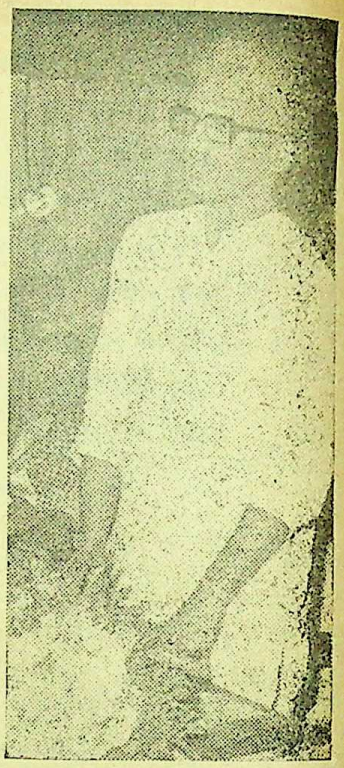

जीवन-गान

प्रो० विष्णुनारायणन् नंपूतिरी

बाग-मकान न दिया राम ने
मिला मुझे यह उपवन है
इसे सजाने इस में मिलने
में ही सुख मैं पाता हूँ ।।

मधुकर-मण्डित यह कोना है
मेरे जीवन का सपना
पल पल पर मैं बरसा दूंगा
यहाँ जवाहर और सोना ।।

अभूषण-गण की नव झंकार
यहाँ नहीं सुन पड़ती है
पर सरिता की लहर मनोहर
यहाँ तान भर देती है ।।

मिट्टी की यह बनी झोंपड़ी
मेरा पावन कर्म-स्थान
गाता रहता यहाँ हर-घड़ी
मैं तेरा ही जय-जय-गान ।

❀

(सन् १९५८)

यूनिवेर्सिटी कालेज
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमृताप्रीतम के प्रति

टी. एस. पोन्नम्मा

नारीत्व आज सम्मानित हमारा
मन आमोद-तरंगित हमारा
तू आज है पुरस्कृत
ज्ञानपीठ है गौरव पुलकित ।
देखी नहीं वह मृण्मयमूर्त्ति
देखी है तो भी काव्यात्मक स्फूर्ति
गाथा तेरी करती धन्य बनाती अपनी वाणी
शानदार नारियलों की सुंदर सुदूर दक्षिण धरणी
वीचीलालित पश्चिम सागर जय करता है तेरी
पवनविलोलित द्रुमलतिकाएँ आरती उतारती तेरी
पीडित नारीमन की उद्गार गूँजती तेरे कागज में
ताडित जनगण चेतना जाग उठती तेरे कैनवास में ।
स्वतंत्र सुंदर मानवता की प्रतिनिधि तू है अमृता
बहुचर्चित है देश विदेश में गुणमय तेरी गीता
तू है सज्जन-मानस मरालिका
अनुपम रहे सदा तेरी तूलिका !
मोड़ पर है तू इतिहास की खडी
असर तेरा है युगमन पर पडा

हिन्दी शिक्षाधिकारी
शिक्षा विभाग, केरल सरकार
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो कविताये

(१)

लहरें

वी. वी. अच्चुण्णी

लहरों पै लहरों पै लहरों पै लहरें
सागर तल से अवनीतट तक
चढ़ती गिरती झूमती लहरें
धरती से अम्बर की सीमा तक
फन फैलाती नर्तन करती
लहरों पै लहरों पै लहरों पै लहरें
चढ़ती गिरती उड़ती लहरें
जन मन क्षितिज को चीरती लहरें
जीवन रण स्वर मुखरित लहरें
क्षण क्षण उठती ओझिल लहरें
फेनिल धूमिल नीलिम लहरें
जीवन रस मद निमज्जित लहरें

उज्वल प्राणिल रागिल लहरें
लहरों पै लहरों पै लहरों पै लहरें
जन जीवन का सन्देश लिये
जन मानस का अरमान सजे
जन हृदय विकार तरंगों से
उत्तेजित उन्मेषित चालित
लहरों पै लहरों पै लहरों पै लहरें
भव संसृति सागर के तट पर
तप्त मन उच्छ्वसित आह मेह से
निसृत रिमझिम जलधारा से
विरचित अम्बुधि हृदय विलोडित
लहरों पै लहरों पै लहरों पै लहरें

❀

आकाशवाणी कोषिक्कोड़ से प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२)

अमर ज्योति

ज्योति जो जलाई जाती है
ज्योति वह बुझाई जाती है
संघर्ष की खानों में तप तप
जीवन के ज्योतिपुंज जलते हैं

पर्वत की चट्टानों के शीर्ष तोड़
गरज तरज कर सरिता बढती है
कूलों को तोड़ती, उमड़ती घुमड़ती
सागर मुख पर आत्मोत्सर्ग को
आतुर

जिस मिट्टी से रस खींच
पनपते हैं पेड़-पौधे, जीव-जाल
जीर्ण शीर्ण हो मिल जाते हैं
उस मिट्टी के ही कण-कण में

दीप से जले दीप इकट्ठे
झिलमिल झिलमिल जलते हैं
जन मन के अंधकार हर
जीवन को भास्वरतर कर

दीप अनेक पर प्रकाश एक
धड़ अनेक पर प्राण एक
मोति अनेक पर सूत्र एक
प्रतिबिम्ब अनेक पर सत एक

एक ही लौ की झलक
अनादि अनन्त अनित्य अरूप

केवल ज्योति

जीवन धुरि पर निशि-दिन
ज्योति चक्र बन घूमती है

धर्म-शांति के सनातन संगम पर
सत्य प्रेम के शाद्वल द्वीपों पर
शहीदों की चिताओं के अंगारे फूंक
अमर ज्योति जलाते हैं महामानव

*

आकाशवाणी, बैंगलूर से प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों की महिमा एक है

के. गणपति

गुरु और गोविन्द कहने को हैं,
दोनों की महिमा एक है ।

सावन में मनाते हैं कृष्णजयन्ती,
और सितम्बर में कृष्णन जयन्ती ।
दोनों जयन्ती कहने को हैं,
शिक्षक की महिमा एक है ।। गुरु ।।

ईश्वर बनाता है मिट्टी को मनुष्य
और गुरु बनाता है मनुष्य को मनुष्य ।
दोनों कलाकार कहने को हैं,
निर्माण की महिमा एक है ।। गुरु ।।

ईश्वर रचता है सारे लोकों को,
और गुरु दर्शाता है सारे रहस्यों को ।
रचना और दर्शाना कहने को हैं,
शिक्षण की महिमा एक है ।। गुरु ।।

ईश्वर हमें प्रदान करता है चक्षु
और गुरु प्रदान करता है ज्ञान-चक्षु ।
अजी दोनों दानी कहने को हैं,
करुणा की महिमा एक है ।। गुरु ।।

❀

प्लाट नं १९८,
वासवीनगर,
सिकन्दराबाद (आ० प्र०) ५०० ००३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तक

हरिश्याम पाण्डेय

ये मेरे देश की तक़दीर बनानेवाले,
किस क़दर जीते हैं दुनिया को सजाने वाले,
इनके पसीने की महक सुर्ख गुलाबों सी तो है—
फिर भी ठोकर क्यों लगाते हैं ज़माने वाले।

गीत

श्रम का दूत भाग्य-भारत का जो हलधर कहलाता है।
मेरे देश का अवढर दानी, दर-दर ठोकर खाता है॥

नवजीवन किल्लोल रहा है
खेतों में खलिहानों में,
प्यार धरा का बोल रहा
हिलती हड्डी के ढांचों में,

वह नंगा निर्वसन लजोड़ा काँटों में सो जाता है।
मेरे देश का अवढर दानी, दर दर ठोकर खाता है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृषि-बाला का सजग-सहेली
खड़ी दुपहरी होती है,
लाज निगोड़ी करे ठिठोली
अटपट होली होती है,

उस भूले भोलेपन में मन, अनजाने खो जाता है ।
मेरे देश का अवढर दानी, दर-दर ठोकर खाता है ।।

हाय, देश नीलाम हो रहा
मानवता गुमनाम हुई,
धरती के इस धन्यपूत की
अर्थी तक बदनाम हुई,

झाड झंखड़ी की कुटिया में जीवन राशरचाता है ।
मेरे देश का अवढर दानी, दर दर ठोकर खाता है ।।

के० वि० द्रोणिमल
बल्लेरी–कर्नाटक ५८३११८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'समय'

श्यामा गुप्ता

महीनों से सालों से सदियों से
चलता चला आ रहा हूँ मैं,
ऊँचे-नीचे पर्वत शिखरों में भी,
निरन्तर बढता जा रहा हूँ मैं।
ठहरता नहीं मैं एक पल भी
झुक जाए चरणों में चाहे सिन्धु भी,
बूढा हो गया हूँ तो क्या कोई ग़म नहीं,
कदमों में ताक़त अभी कम नहीं,
तुम भी, हाँ—तुम भी,

बढना चाहो, तो साथ मेरे बढो,
चलना चाहो, तो साथ मेरे चलो,
रह सको, तो साथ मेरे रहो,
बह सको, तो साथ मेरे बहो,
क्यों कि मैं समय हूँ, केवल समय'।

केन्द्रीय विद्यालय,
वायुसेना, आवडि
मद्रास-६—५५

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वागत

कुन्नुकुषि कृष्णन कुट्टी

अक्षदंड पर क्रम से
मात्रा भर भी चूक न करके
निश्चित पथ चलकर सूरज
विषुवत् रेखा पहुँच रहा है ।
चाहे दक्षिणायन हो
चाहे हो उत्तरायन
काल की नियत रेखाओं को
अंशुमान कभी न लांघता ।
हमने अपथ संचरण किया
काबू में लाने केलिए अपार को
उसका फल ?
असहनीय दुःख भार से
दमघुट रहा है ।
आकाश में और भूमि में
ओणम और विषु की
सुन्दरता है ।
शष्प में और पुष्प में
दृश्यमान विगत सुदिनों के प्रतीक
चाहे कर्णिकार हँस उठे
या वैशाखी पक्षी गावे
यहां आँसुओं की आर्द्रता बगैर
पानी का स्रोत कहीं नहीं दिखता ।
आकाश में बाँह फैलाकर
मेघ की आर्द्रता पाकर
मिट्टी को सुनहरा बनानेवाले
वृक्ष मिट्टी खा रहे हैं ।
चाहे वृक्ष हो या पुरुष
दोनों समान हैं
उसका उन्मूलन करनेवाला
नाम और यश पा रहे हैं ।
उसके ऊपर क्या पाना ?
ऋतुभेद और ओणम
विषु, कर्णिकार पुष्प आदि
बेचे, तो भी मिलता है धन ।
सपाट बन गया वन
खेत बदलकर बस्ती बना है
ग्राम आज स्मृतिमात्र रह गया
मथित रह जाता है मन ।
वसन्त पुष्पदलों को खोज
सुगन्धि लेकर जब आया
सुगन्ध-विक्रय केलिए उद्यत
फूल को देख दंग रह गया
हर रोज़ पुष्प रंगोली रचता था
मेरा सुन्दर केरल राज्य
आज वहीं विषु दिन विरस है
फिर भी, करता मैं स्वागत

(मूल मलयालम से कवि द्वारा अनूदित)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता

वी. के. एस. नम्पूतिरी

व्यस्त पलों की धुरी में
घूमते हैं प्राण,
उस घुमाव-फिराव की
वक्र रेखा के किनारे
एक बार,
दग्ध-जीवन के जले-कटे
रेंगते कणों को रौंदती
जा रही नेता की सजी गाडी
धीरे धीरे धीरे,
गूंज उठा गगन
जय जयकार से,
हर्षित नेता बढ़े आगे,
हाथ जोड़ने, मुस्कुराने
और हँसने की चेष्टा करते हुए
विकृत कर चेहरा
विजय की मस्ती में !
पर, एक झोंका और गर्जन !
चीख़ उठी जनता
शोरगुल में देखा उसने
खुल रही हैं नेता की
बन्द मुट्ठियाँ
पंजों से टपकती हैं बूंदें
रक्त की,
नसें तनती हैं
चेहरा वीभत्स होता जा रहा है,
तृष्णा, लालच और शैतानियत
की मूर्ति में
परिणत हो रहे नेता,
अपनी इस अजीब, किन्तु
सहज परिणति की
परछाई को धोने की कोशिश में
एक बार फिर, हाथ जोड़ने
मुस्कुराने और हँसने की-
चेष्टा में रत हैं वे !
पर, मुस्कुराहट नहीं, हँसी नहीं
करोड़ों विकल चेतनाओं की
उग्रमूर्तियाँ रक्त वर्ण की
निकलती हैं गरजकर
मुँह से !
चौंकते हैं नेता स्वयं—
"कलई खुल गयी मेरी"
गिरते हैं धड़ाम,
स्तब्ध है जनता ।

साहित्याचार्य महा विद्यालय
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाखण्ड

डी. ललिता

तेरी महिमा असीम
तेरी गरिमा असीम
तेरे कार्य असीम
तेरी लीला असीम
तू बन बैठा शिलाखण्ड ।

किसी को दिया ज्ञान
किसी को बनाया दानी
किसी को दिया मान
किसी को बनाया धनी
तू बन बैठा शिलाखण्ड ।

तेरे चरण महान
तेरा स्पर्श महान
तू बैठा है अचल
तेरी निष्ठा महान
सुना है,
प्रेरणा दी थी विवेकानन्द को
हे शिलाखण्ड
कर दूर कुछ अन्धकार मेरे भी । ❀

के. वि. तिरूमलगिरि
सिकन्दराबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरसात के मौसम में

सुरेशचन्द्र जायसवाल

घिर-घिर आये बादल सजना, हाय रे तुम न आये
बरसात के मौसम में
दादुर बोले पपिहा गाये, मनवा हमरा रोये
बरसात के मौसम में
प्यास बुझी प्यासी धरती की, हमरी कौन बुझाये
बरसात के मौसम में
विरह-अगन तन हमरा जलाये, आग ये कौन बुझाये
बरसात के मौसम में
लिख-लिख पतिया रतिया सारी, नयनन नीर बहाये
बरसात के मौसम में
रूठे हम जब तुमने मनाया, रूठी जवानी कौन मनाये
बरसात के मौसम में
बोले कागा हमरी अटरिया, (मुवा) झूठी आस बंधाये
बरसात के मौसम में
मेघा उनसे कह दे जाके, उन बिन कछु न सुहाये
बरसात के मौसम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याद तुम्हारी जब-जब आये, कजरा बह-वह जाये
बरसात के मौसम में
तुम बिन साजन हमको जवानी, राम कसम न भाये
बरसात के मौसम में
बैरन बरखा हमरी भई, तुम्हें कैसे यह समझाये
बरसात के मौसम में।
आजा प्रियतम पंथ निहारूँ, दिल का दीप जलाए
बरसात के मौसम में।
हम जी न सकेंगे, मर न सकेंगे, जब लग तुम न आए,
बरसात के मौसम में
दीप जलेंगे होली मनेगी, लौट के जब तुम आए
बरसात के मौसम में

❀

केन्द्रीय विद्यालय, आई० आई० एस० सी०
यशवन्तपुर, बेंगलूर–२२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल

डॉ० जी. आर. साक्षी

नन्दनवन है मेरे भारत-
का केरल यह प्रान्त ।
सब खुशियाँ हैं इसके भीतर,
सबके मन हैं शान्त ।।

बैठ कुंज में ये सब जपते
पद्मनाभ का नाम ।
हिन्दी का संवर्धन करते,
लेकर हरि का नाम ।।

कोई मन में मैल न रखते,
सब से हिल-मिल रहते ।
और अतिथि आ जाए तो
दुख दे सब कुछ सहते ।।

हरा-भरा है दृश्य यहाँ का,
बरबश मन को हरता ।
और सृजन के सोपानों से,
संवर्धित जग को करता ।।

जायफल-लवंग-इलायची
काजू-कवलीफल का देश ।
तन्दुल रसम कटहल सांपार से,
सुगन्ध-भरा परिवेश ।।

इसमें रहकर जो भी अपने
मन को संस्कृत करते ।
धवल चाँदनी सा सब को
सागर सा परिवृत करते ।।

भारत सदा ऋणी है इसका
पाकर उज्ज्वल दान ।
नमन करें हम नया तीर्थ,
नया बने यशमान ।।

प्रान्त सभी इस प्रान्त सरीखा
अनुकरण यदि करते ।
तो निश्चित ही भारत के
गौरव को उज्ज्वल करते ।।

❀

केन्द्रीय विद्यालय, द्रोणिमलै
बल्लारी (कर्नाटक) ५८३ ११८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शैक्षिक संगम

के. डी. राय

अविभावक, गुरु, विद्यार्थी तीनों
शैक्षिक संगम हैं।
पर आज का विद्यार्थी, कल का शिक्षक,
आधुनिक अभिभावक-तीनों
की धाराएँ तो सर्वथा विपरीत हैं।

शिक्षक समायोजन में सामाजिक उपेक्षा ही पाता है,
अर्थ की कमी तो उसका जन्म सिद्ध अधिकार है।
अविभावक अध्यापक को काठ का पुतला, समाज का दास
घोषित कर स्वयं भावना प्रधान मालिक होता है।
एकलव्य को आज कहानी के रूप में छोटी कक्षाओं में पढ़ा जाता है;
जिन्हें विद्यार्थी बड़ा होने पर शायद भूल जाता है।
ठीक भी हैं—क्यों कि भूलना मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है;
मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखता है;
अनुपयोगी, अहितकर तथ्यों से दूर रखता है।

प्रश्न उठता है अब गुरु द्रोण ही कहाँ रहे ?
प्रश्न जटिल है पर उत्तर सरल है।

अध्यापक यदि सचमुच अध्यापक है, तो कल-परसों क्या-
बरसों तक गुरु द्रोण से कम न रहेगा।
उसकी सुधामय वाणी से उस पत्थर का अन्तस्तल भी-
तरल होकर पीयूष धारा के रूप में उमडेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक अनैतिकताओं को खुराक न मिलने के कारण;
नैतिकता, कर्तव्यशीलता, सदाचारी संस्कारों में पलकर
बालक जन्म से ही एकलव्य होगा।
जन्मजात प्रवृत्तियाँ कुप्रवृत्तियों पर हावनी होंगी,
चिरकाल तक गुरु प्रतिष्ठा स्थिर रहेगी
फलस्वरूप शिक्षक, अविभावक-विद्यार्थी-
त्रिवेणी की धारा बनकर-
अविरल गति से शैक्षिक संगम होंगे।

केन्द्रीय विद्यालय,
वायुसेना देवलाली

सिख को ऐसा चाहिए
गुरू को सब कुछ देय।
गुरू को ऐसा चाहिए
सिख से कछु न लेय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिन्दगी"

कुसुम गुप्

हीन अपने को न समझो झोपड़ी वालों
चाँद लाने के लिए रवि सांझ को ढ़लता ।
प्यार कर लो हर किसी से
प्यार ले लो हर किसी का
प्यार का घट कब न जाने फूट जायेगा
हर मुसाफिर राह में ही छूट जायेगा ।
ज़िन्दगी पर रात दिन है मौत का पहरा
आँख रोई जब किसी ने फूल को मसला
खिलखिलाकर हँस पड़ा उस क्षण जब कि
एक छोटा बीज धरती चीर कर निकला ।
हीन अपने को न समझो झोपडी बालों
चाँद लाने के लिए रवि सांझ को ढ़लता ।

१७/३ एन. डी. ए. खडकवा
पुणे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंध

रामकृष्ण ठाकुर

संबंध,
सड़ा कपड़ा सा
ज़रा खिंचा-
फट जाता है
लगाते हैं नया पैबन्द-
सोचते हैं,
वक्त कट जाता हैं ❀

रोज-रोज होता है महाभारत

रोज-रोज,
'शब्द-शर' से होता हूँ
आहत-पीडित
दिन भर होते संघर्ष में
औ' करता हूँ आघात,
निन्दा, आलोचना, चुगली से
'विष-बुझे' तीरों से सामने
शाम,
थककर चूर-चूर
अनगिन घावों की पीड़ा ले
लौट आता अपने शिविर में
दूसरों की तिलमिलाहट में
घावों की चुनचुनाहट भूलकर
कल के व्यूह-रचना की सोचता हूँ
सोचता हूँ,
रोज-रोज होता है-
महाभारत आज भी।

❀

केन्द्रीय विद्यालय,
भंडारा (महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

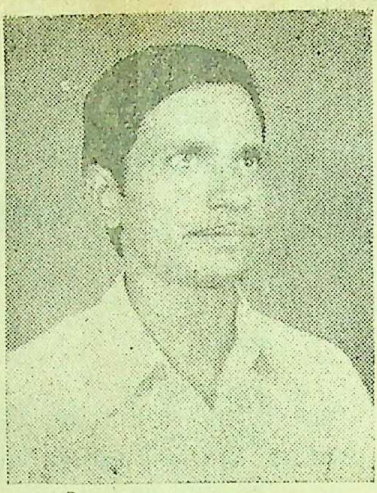

आत्मसमर्पण

पुरुषोत्तम भोंडेकर

जब था यौवन, तब था सावन,
कविताओं की कविता थी तुम,
जब था मिलन तब था गायन,
जीवन का संजीवन थी तुम ।
ग्रीष्म ऋतु में बन हरियाली,
छा कर लहरा जाती थी तुम,
शीत की सिहरन में तुम आली,
बन छा जाती धूप सुनहली,
सब रागों की अनुरागिणी सी,
प्राणों के अंतर्प्राणों का,
सजग जागरण बन आती तुम ।
बिछड़ रहे यादों के साये,
खुद साया बन आती थी तुम,
जगति के उस चरम छोर तक
आभा बनकर छाती थी तुम ।
कहीं साँस गर टूटे मेरी,
बन जाना तुम मेरा स्पंदन,
उस स्पंदन को भर बाहों में
अमर बने यह आत्मसमर्पण ।

केन्द्रीय विद्या
अंबाझरी, नागपुर
(महारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुक्तक

गिरिजाशंकर यादव

(१)

न कवि हूँ, न कविता किया करता हूँ,
बिन गढ़े शब्द, यों ही पढ लिया करता हूँ,
जो कुछ देखा, उसे यों ही रख लिया
करता हूँ
समयानुसार उसे, यों ही पढ लिया
करता हूँ।

इन्तजार

(२)

चलते-चलते थक गया हूँ
जिन्दगी की राह में,
आज तुम भी आ मिली हो
पहुँच कर मज़ार में।

(३)

जब तलाशा था तुम्हें
जिन्दगी की चाह में,
मिलने से अब क्या हुआ—
जब सो रहा मज़ार में।

(४)

आशा की गर एक किरण,
मिल गई होती,
चन्द लम्हा जी लिया होता-
तेरे इन्तज़ार में। ❀

केन्द्रीय विद्यालय;
मद्रास-कल्पाकम (६०३१०२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन है अंधा?

एल. पद्मावती

[१९८१ 'अंतर्राष्ट्रीय विकलांग' वर्ष के रूप में संसार के सब राष्ट्रों ने मनाया था। विकलांगों के जीवन में नव प्रभात लाने के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाई गई तथा लाखों-करोड़ों रुपए खर्च किए गए। खेद की बात है कि अनगिनत विकलांग अंतर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष पर और विकलांग हो कर रह गए। प्रस्तुत कविता में एक दीन-हीन विकलांग (जीवंत शव) को देखकर दिल में उठी भावनाओं की अभिव्यक्ति है।]

उद्धार करने जीवन आया धूमधाम से, विकलांगों का महावर्ष,
नव उल्लास, उत्साह लाया भरने सुदिन हताश हृदयों में सुवर्ष,
मुरझाये सुमन जीवन वाटिका के देख रहे नित नए सपने,
बुझे जीवन-दीप देख रहे नई ज्योति पाने नव जीवन अपने।
सुन, ज़ोर-शोर से की गई महान प्रतिज्ञाएँ बड़ी संस्थाओं की,
देख, आदर्शभरी योजनाएँ-नीतियाँ सहृदय देश-देश की,
देख, लाखों रुपए करोड़ों निधि बहती उदारता से राष्ट्रों की,
देख, नए प्रशिक्षण केन्द्र, उद्योग-सुविधाएँ विकलांगों की।
हे बंधु, देख जीवंत शव को कराहता तपती ग्रीष्म ऋतु में,
हे राही, देख छिपी व्यथा कैसी उन ज्योतिहीन नयनों में,
हे सुधारक, सुन छिपी कथा कैसी उस निराश हृदय में,
हे उपकारी, देख छिपी आहें कैसी उस हताश दिल में।
हाय! कौन सुनता जन-समुदाय में दुःख-गाथा उसकी?
हाय! कौन सुनता चीख पुकार? अस्तित्व है कोई उसका?
सहस्रों आए-गए पथिक उसी राह से पर रहा सदा तिरस्कृत
सैकड़ों हुई सभाएँ उठाने ऊपर उसी को, पर हार सर्वदा उपेक्षित।
सभाएँ हुईं समाप्त, जन-सागर आधी रात हुआ शांत,
थका भूख से अन्धा कटा पेड़-सा लुढ़क गया मौन क्लांत
अरे! रात अंधेरी में करता अट्टहास चीखा-चिल्लाया क्यों
"अरे जग, कौन है अंधा? विकलांग-उद्धार का ढोंग क्यों?" ❀

केन्द्रीय विद्यालय
मल्लेश्वरम, बेंगलूर ५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नयी दिल्ली के मद्रास संभाग के सहायक आयुक्त श्री० दीपचन्द सोलंकी का भव्य स्वागत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

eg. No. KL/TV(S)/25 **KERALJYOTI** Vol. XVIII-No

une 1983 Price : Re. 1.0

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

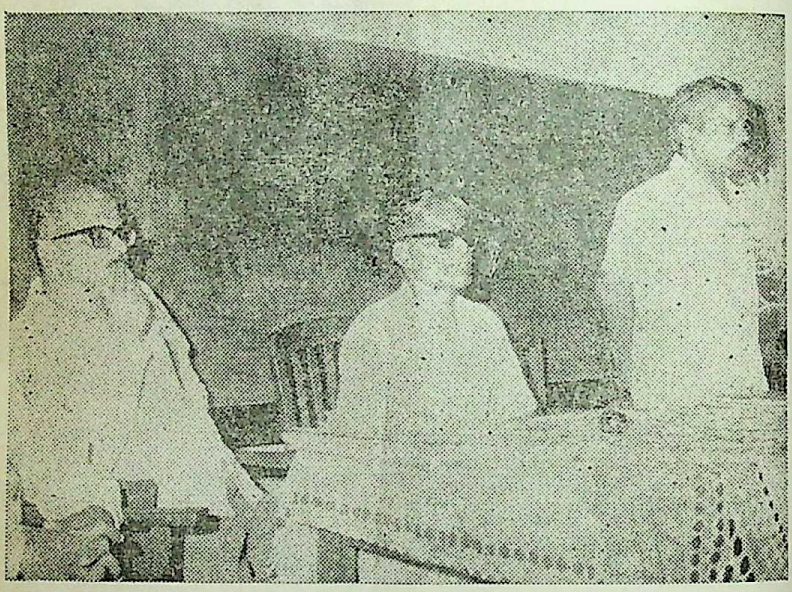

तिरुवनन्तपुरम में आयोजित प्राइमरी एवं प्रशिक्षित स्नातक हिन्दी शिक्षकों के शैक्षिक शिविर के उद्घाटन सम्मेलन में सहायक आयुक्त तथा प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बोल रहे हैं केन्द्रीय विद्यालय, पट्टम के प्राचार्य श्री० ए. सीतारामन ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशि
क: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पिल्ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

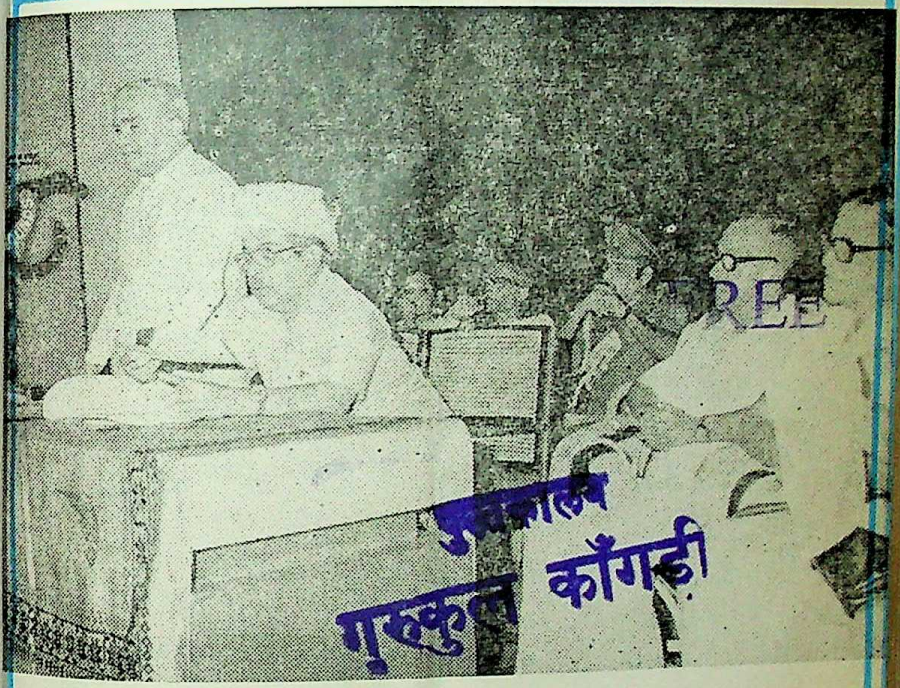

केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९८२) एवं कालिदास पुरस्कार से सम्मानित केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै का अभिनन्दन करने केलिये तिरुवनन्तपुरम में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन बोल रहे हैं। श्री० सी. एच. मुहम्मद कोया (उप मुख्यमंत्री, केरल) स्वामी गोलोकानन्द, डॉ० ए. एस. नारायण पिल्लै, डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै, श्रीमती एल. ओमनक्कुञ्ञम्मा आदि भी चित्र में दर्शित हैं।

35-7-83
FREE

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक			वार्षिक		
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००		५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००		४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००		३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००		१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००		१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार :-"जय हिन्दी"
फोन : ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

पुष्प: १८

दल : ४

जुलाई १९८३

संपादकीय

जो हिन्दी प्रेमी नहीं वे देशप्रेमी नहीं

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा १-७-१९८३ को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करते हुए केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन ने स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा की कि देश की एकता को बनाये रखने की क्षमता केवल हिन्दी में है इसलिए हिन्दी की पवित्रता को स्वीकार करते हुए केरल की शिक्षा पद्धति में हिन्दी अध्यापन को उचित स्थान दिया जायेगा और हिन्दी पाठ्यक्रम में जो अपर्याप्तता आ गयी है उस का परिहार किया जायेगा। आप ने आगे कहा कि जो लोग हिन्दी से प्रेम नहीं करते वे देशप्रेमी नहीं माने जा सकते। इस बात पर उन्होंने तीव्र दुःख प्रकट किया कि देश के कुछ प्रान्तों में हिन्दी अध्यापन व प्रचार को वांछित प्रमुखता नहीं दी जाती। उन्होंने केरल के छात्रों से आग्रह किया कि वे अखिल भारतीय परीक्षायें हिन्दी माध्यम में लिख कर उन्नत स्थान पाने की क्षमता आर्जित करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

उल्लूर स्मारक ग्रंथालय एवं गवेषण संस्थान का रजत जयंती समारोह 3

कवित्रय की रचनाओं का अध्ययन करें
पी. रामचन्द्रन 5

हिन्दी का अनौपचारिक शिक्षण भी हो
सी. वी. पद्मराजन 7

मानसिक दासता ही हिन्दी विरोध का कारण है 9
प्रो० विष्णुनारायणन नंपूतिरी

स्वभाषा द्वारा प्रतिभा विकसित हो सकेगी
पी. गोविन्द पिल्लै 12

कर्नाटक राज्य में हिन्दी की प्रगति
एन. रामय्या 18

सब कुछ तेरा
सूर्यकुमार पांडेय 21

केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९८२) एवं कालिदास पुरस्कार प्राप्त डॉ० पी. के, नारायण पिल्लै का अभिनन्दन 23

हिन्दी
प्रद्युम्न 'विद्या वाचास्पति' 31

केरल में हिन्दी शिक्षण की समस्यायें
माणि वल्लिक्काट 32

शकुन्तला
डॉ० कृष्णकुमार 37

हिन्दी को केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिलाने के लिए कर्मसमिति क्रियाशील 44

केरल की वर्तमान स्थिति में जब कि स्कूली पाठ्क्रम सुधार समिति ने अंग्रेजी को संपर्क भाषा मान कर उसका अध्ययन पाँचवीं कक्षा से आरंभ करने और हिन्दी को महज़ राष्ट्रभाषा मान कर उसका अध्यापन सातवीं कक्षा से आरंभ करने की सिफारिश की है, मुख्यमंत्री की यह उद्घोषणा अत्यंत महत्वपूर्ण और आशाजनक है अब यह आशंका दूर हो गयी है कि पाठ्यक्रम में हिन्दी का स्थान गौण रह जायेगा ।

जैसे संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्य श्री० एम. रामगोपाल रेड्डी ने २-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में उपसमिति को दिये गये स्वागत के अवसर पर बताया हिन्दी प्रचार में केरल का अनुकरण अन्य हिन्दीतर प्रान्त भी करते तो देश केलिए कितना श्रेयस्कर होता !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लूर स्मारक ग्रंथालय एवं गवेषण संस्थान का रजत जयंती समारोह

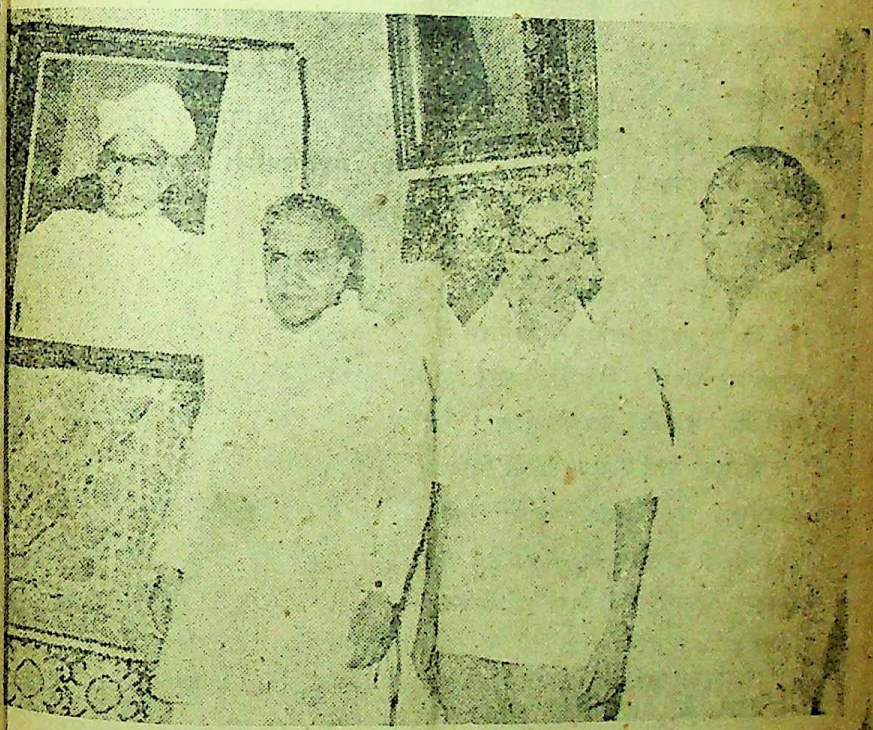

उल्लूर स्मारक ग्रंथालय में भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० एस. राधाकृष्णन के चित्र का अनावरण राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन ने किया। राज्यपाल के साथ दिखाई दे रहे हैं (बायें से) श्री० एन० गोपालन नायर, डॉ० पी के. नारायण पिल्लै और श्री० सी. एस. नीलकंठन नायर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लूर स्मारक ग्रंथालय, तिरुवनन्तपुरम के रजतजयंती का समापन समारोह २८-५-१९८३ को मनाया गया।

मलयालम के प्रमुख कवि, गद्यकार एवं गवेषक स्व० उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर की स्मृति में स्थापित इस ग्रंथालय की स्थापना सन् १९५६ में हुई। आज यह केरल के प्रमुख ग्रंथालयों में एक है। इस में उल्लूर स्मारक ओपन विश्वविद्यालय भी कार्यरत है। विख्यात कवि एवं पंडित डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै इस ग्रंथालय और ओपन विश्वविद्यालय के स्थापक-अध्यक्ष हैं।

समारोह का उद्घाटन केरल के राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन ने की। डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै सम्मेलन के अध्यक्ष रहे। डॉ० बाबू पॉल, आई. ए. एस. ने समाप्ति भाषण दिया। डॉ० के. एम. जार्ज ने ग्रंथालय की विविध योजनाओं पर प्रकाश डाला और डॉ० पी. के नारायण पिल्लै को उन की निस्तन्द्र सेवाओं के लिए अभिनन्दित किया।

केरल के राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन ने ग्रंथालय में स्थापित डा० राधाकृष्णन के चित्र का अनावरण किया। डा० राधाकृष्णन ने १९६६ में ग्रंथालय के भवन का उद्घाटन किया था।

महाकवि एम. पी. अप्पन ने ग्रंथा[illegible] के अध्यक्ष, डा० पी. के. नारायण पि[illegible] की साहित्यक, शैक्षिक एवं सांस्कृति[illegible] सेवाओं पर प्रकाश डालते हुए मान[illegible] राज्यपाल से प्रार्थना की वे डा० पी. [illegible] को पाटंबर पहनायें। माननीय राज्य[illegible] श्री० पी. रामचन्द्रन ने डा० पी. के. [illegible] पाटंबर पहना कर सम्मानित किया। माननीय राज्यपाल का भाषण इसी [illegible] में अन्यत्र प्रकाशित है।

श्री० सी. एस. नीलकंठन नाय[illegible] स्वागत भाषण दिया [illegible] डा० मावेलिक्करा अच्युतन ने कृत[illegible] अर्पित की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्रय की रचनाओं का अध्ययन करें

पी. रामचन्द्रन
राज्यपाल, केरल

उल्लूर एस. परमेश्वर अय्यर केरल के महान पुत्रों में एक थे। उनका नाम घर घर में लिया जाता है। अतः उनकी उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डालने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है।

एक बात पर मैं आपका विशेष ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा। यद्यपि उन्होंने अपना जीवन एक छोटे सरकारी नौकर के रूप में आरंभ किया तो भी मौलिक साहित्य सृजन के लिए ही नहीं साहित्यिक शोध द्वारा प्राचीन ग्रंथों को आनेवाली पीढियों के लाभार्थ प्रकाश में लाने का भी समय वे निकाल सके। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा मलयालम भाषा को समृद्ध किया जिस के लिए सारी केरलीय जनता को सदा उनके प्रति कृतज्ञ रहना चाहिये। वे अपने ज़माने के एक प्रमुख भाषाविद थे और चार भाषाओं पर उन का विशेष अधिकार था। यद्यपि उनकी मातृभाषा तमिल थी तो भी वे संस्कृत के पण्डित थे। उन्होंने अंग्रेजी का पर्याप्त अध्ययन किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयालम का गहन अध्ययन किया। यही कारण है कि वे अन्य साहित्यों की संपदा से मलयालम को समृद्ध कर सके।

मलयालम कवित्रय में एक थे श्री उल्लूर। कवित्रय के अन्य दो कवि थे महाकवि कुमारन आशान और महाकवि वल्लत्तोल नारायण मेनोन। तीनों के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन किया जाना है। गद्य, पद्य, अनुवाद और शोध के क्षेत्रों में उन्होंने अपनी सर्वोत्तम सेवायें अर्पित कीं और मलयालम साहित्य को पुष्ट किया।

सन् १९७७ में आप ने महाकवि की जन्म शताब्दी मनायी। अभी छः वर्ष बाद आप उन के नाम पर स्थापित इस ग्रंथालय एवं अनुसंधान केन्द्र का रजत जयन्ती समारोह मना रहे हैं जिस का आज समापन हो रहा है। प्रतिवेदन से पता चलता है कि आप की यह संस्था एक उत्तम ग्रंथालय और अनुसंधान केन्द्र चला कर साहित्य की महान सेवा कर रही है। इसके अतिरिक्त इस संस्था में माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए अनौपचारिक कक्षायें चलती हैं और एक ओपन विश्वविद्यालय भी चल रहा है। कुछ उपयोगी ग्रंथ भी इस संस्था द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं। ये सब कार्य निश्चय ही उस महान व्यक्ति की स्मृति के अनुरूप ही हैं जिन्होंने अपना सारा जीवन साहित्य को संपुष्ट करने केलिए समर्पित किया था। हम उन के प्रति कृतज्ञ रहें।

मेरी कामना है कि साहित्य सेवा के क्षेत्र में इस संस्था का भविष्य अति उज्वल हो।

[महाकवि उल्लूर स्मारक ग्रंथालय एवं अनुसन्धान केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम के रजतजयन्ती समारोह के समापन सम्मेलन में दिये गये उद्घाटन भाषण का सारांश]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का अनौपचारिक शिक्षण भी हो

सी. बी. पद्मराजन

सामूहिक विकास मंत्री, केरल

स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में हम अपने देश में एक ऐसी सुशक्त भावात्मक एकता की नींव डाल सके जो भाषा, जाति, धर्म, प्रान्त आदि की सीमाओं से परे है।

राष्ट्रीय एकता की एक प्रमुख कड़ी है भाषा। इस कड़ी की भूमिका हिन्दी के सिवाय और कोई भाषा अदा नहीं कर सकती। स्वतंत्रता प्राप्ति के पैंतीस वर्ष बाद आज जब हम मुड़कर देखते हैं तो लगा है कि स्वतंत्रता संग्राम ने भावात्मक एकता, राष्ट्रीयता आदि जो उत्तम मूल्य हमें प्रदान किये उन में शैथिल्य आ गया है। जातिपांति, भाषा, प्रान्त, आदि विघटनकारी तत्वों का संघर्ष पुनः सिर उठाने लगा है। कई भयानक चित्र उभर रहे हैं। मेरा विश्वास है कि गांधीजी

हिन्दी को साधारण जनता तक पहुँचाने में भी हम समर्थ नहीं हुए हैं।

के दर्शाये मार्गों से ही हम उन्नति प्राप्त कर सकेंगे।

केरलीय जनता में भाषायी कट्टरता नहीं है। किसी भी भाषा का विरोध हम नहीं करते। किसी भाषा के प्रति हमें विद्वेष नहीं। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा बन चुकी है। परन्तु अंग्रेजी बोलने में जो रुचि दर्शायी जाती है वह हिन्दी बोलने में नहीं पायी जाती। हिन्दी को साधारण जनता तक पहुँचाने में भी हम समर्थ नहीं हुए हैं। इस में किसी को मैं दोषी नहीं ठहराता। केरल हिन्दी प्रचार सभा इस क्षेत्र

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यालयों की कक्षाओं, पुस्तकों और बुद्धिजीवियों के संकुचित क्षेत्र से हिन्दी को जनता के स्तर पर उतार लाना है ।

में महान सेवा कर रही है । अनेक विद्यार्थी हिन्दी पढ़ते हैं और परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं । कई स्थानों में जाकर उस का फायदा भी उठाते हैं । हिन्दी को भावात्मक एकता का प्रतीक बनाने के लिए हिन्दीतर प्रान्तों में कोई नया उपाय ढूंढ निकालना है । बच्चों को हिन्दी पढाना, परीक्षाओं में बिठाना, पुरस्कार देना, उन्हें नौकरी दिलाना यह सब आवश्यक है । इसके साथ ही साथ कुछ ऐसी कार्यशैली अपनानी होगी जिससे साधारण जनता के जीवन से हिन्दी भाषा जुड जाये । इस संबंध में हमें सोचना है ।

यहाँ जनता में अंग्रेजी का, अंग्रेजी शब्दों का जितना प्रचार हो पाया है उतना प्रचार हिन्दी का नहीं हो पाया है । हिन्दी केवल हिन्दी जानने वालों तक ही सीमित रह जाती है । इस स्थिति को बदलने के लिए कुछ करना होगा । मैं केवल यह समस्या आपके सामने रखता हूँ । समस्या को सुलझाने का मार्ग आप को ढूंढ निकालना होगा । विद्यालयों की कक्षाओं, पुस्तकों और बुद्धिजीवियों के संकुचित क्षेत्र से हिन्दी को जनता के स्तर पर उतार लाना है ।

केरल में कई अनौपचारिक विद्या-केन्द्र हैं । केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति (कानफेड) द्वारा संचालित इन केन्द्रों में १४ से ३५ तक की आयुवालों को पढाया जाता है । इन में अधिकांश ऐसे हैं जिन्हें स्कूल जाने का अवसर ही नहीं मिला था । इनकी किसी परीक्षा में बैठने के लिए नहीं, व्यावहारिक साक्षरता प्राप्त करने के लिए पढाया जाता है । हिन्दी प्रचार में भी ऐसी कार्यशैली अपनायी जा सकती है । इस प्रकार की पढाई से हिन्दी साधारण जनता में उतर आयेगी । इससे लोगों में हिन्दी को सुनकर पहचानने की क्षमता आयेगी, हिन्दी के कुछ शब्द सुन कर समझने की क्षमता आ जायेगी कानफेड से इस क्षेत्र में सहयोग लिया जाये तो अच्छा होगा ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा हिन्दी प्रचारकों के लिए १७-३-१९८३ से २६-३-१९८३ तक आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दिये गये भाषण का सारांश ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानसिक दासता ही हिन्दी विरोध का कारण है

प्रो० विष्णु नारायणन नंपूतिरी

प्रो० विष्णु नारायणन नंपूतिरी अंग्रेजी के अध्यापक हैं और मलयालम के प्रमुख कवि हैं। २६-३-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिये गये अध्यक्षीय भाषण का सारांश है प्रस्तुत लेख।

सन् १९४७ के पूर्व के युग की कुछ विशेषतायें थीं। उस समय का वातावरण जिस तरह 'जय हिन्द' के चैतन्य से पूर्ण था उसी प्रकार 'जय हिन्दी' के चैतन्य से भी पूर्ण था। उस समय हिन्दी का अध्ययन करना यहाँ की संस्कृति का एक अंग था। इसलिए थोड़ी हिन्दी मुझ में भी आ गयी। जीवन में मैं ने जो पहली उपाधि पायी वह हिन्दी में थी। जीवन में मेरी जो पहली कविता लिखी वह एक हिन्दी कविता का अनुवाद था।

भारतीय हृदय की भाषा

गत २२ वर्षों से मैं अंग्रेजी कविता का अध्यापन कर रहा हूँ। चूँकि मैं भारतीय हूँ तभी मेरे अंतस्थल के सुप्त अनुभवों और स्वप्नों और याथार्थ्यों को वाणी मिलती है जब मैं कालिदास की कवितायें पढ़ता हूँ, हिन्दी कवितायें पढ़ता हूँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयशंकर प्रसाद की रचनायें पढता हूँ, प्रेमचन्द के उपन्यास पढता हूँ, हरिवंश राय बच्चन की कवितायें पढता हूँ।

महाकवि जी का उपदेश

महाकवि जी शंकरकुरुप, ने एक बार मुझसे कहा था—"कविता लिखते समय 'विगम' के स्थान पर श्रावण लिखो। क्यों कि श्रवण शब्द सारे भारत में प्रचलित है। भारतीय पृष्ठभूमि के संदर्भ में जब बरसात के मौसम के संबंध में कहना है तब बरसात के मौसम के लिए आषाढ शब्द का प्रयोग करो।" उन्होंने भारत की आम भाषा के संबंध में, भारत के आम स्वप्न के संबंध में, भारत के आम सत्यों के संबंध में और भारत के आम दुःखों और भयों के संबन्ध में जो मर्मस्पर्शी बातें बतायी थीं उनमें एक पैगंबर की वाणी की मधुरता और दृढता थी।

भारत की आम भाषा

यह निर्विवाद सत्य है कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। भारत की दरिद्रता अज्ञता और दुखों को दूर करने का आम उपाय ही हो सकता है। भारत तो अपनी ही भाषा में सोच सकता है। भाषाहीन चिन्तन केवल 'अत्यन्त आधुनिक' अयथार्थ चिन्तन में ही संभव है। चिन्तन को भाषा ही रूप देती है, शब्द ही रूप देते हैं। वेदकालीन ऋषियों का कथन है—'वाक वै सरस्वती'। प्रबोधक शब्द ही चिन्तन का रूप लेता है। आम भाषा के माध्यम के बिना चिन्तन, स्वप्न, संचार और भावसंश्लेषण असंभव है। जिन लोगों ने केरल के बाहर पर्यटन किया है उन के लिएं इस बात में कोई सन्देह नहीं रह जाता कि भारत की आम भाषा कौन सी है। तमिलनाडु की सीमा पार करते करते हिन्दी का क्षेत्र आरंभ हो जाता है। हिन्दी के सहारे लोग नेपाल तक पैदल जा सकते हैं, लोगों का परिचय पा सकते हैं, पानी मांग कर पी सकते हैं।

मानसिक दासता

यदि यहाँ की जनता में भारतीय संस्कृति से अलगाव मिलता है तो उसका एकमात्र कारण विदेशीप्रभाव है, उसके आगे झुकनेवाली मानसिक दासता है। हिन्दी विरोध के पीछे या आम भाषा की समस्या के पीछे और कोई कारण नहीं हो सकता। वास्तव में केरल के विद्यार्थियों, अध्यापकों, कृषकों और श्रमिकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए भाषा की कोई समस्या नहीं। समस्या केवल उन राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए है जिनका लक्ष्य उदरपूरण है। मेरा विश्वास है कि यदि यहाँ के राजनीतिक कार्यकर्ता अपने अधिकारों का उपयोग करके इस देश की गरीबी और अज्ञान जैसी ज्वलंत समस्याओं का हल करने का परिश्रम करेंगे तो यह भाषा समस्या अप्रत्यक्ष हो जायेगी। यह तो मानी हुई बात है कि सारे भारत में समझी जानेवाली एकमात्र भाषा हिन्दी है। और किसी भाषा के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर संचार असंभव है।

संस्कृत की उत्तराधिकारिणी

दसवीं सदी तक संपूर्ण भारत संस्कृत भाषा के चैतन्य से पूर्ण था। उसके बाद ही आजकल दिखाई देनेवाली विघटन-प्रक्रिया आरंभ हुई। हिन्दी ही संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है। संस्कृत जब अपने दृढ आवरण को तोड कर स्वतन्त्रता की ओर बढ रही थी तभी हिन्दी ने जन्म लिया। संस्कृत की लुप्त-प्रचार-अवस्था से हिन्दी की उत्पत्ति हुई। क्रिया, संज्ञा आदि संस्कृत से लिये गये। हिन्दी संज्ञक यह नयी भाषा वास्तव में संस्कृत का ही रूपान्तर है। इसलिए जिस प्रकार एक आम रिसर्वोयर में भरा जल नलियों से चारों दिशाओं में पहुँचाया जा सकता है उसी प्रकार संस्कृत का विज्ञान हिन्दी के द्वारा सभी भाषाओं में आसानी से पहुँचाया जा सकता है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि भारत का भविष्य इस केलिए सहायक होगा। जो हो, मेरा विश्वास है कि भारत नाम का कोई यथार्थ विद्यमान रहा है तो उस का कारणभूत चैतन्य, और संस्कृति हिन्दी से परिरक्षित रहेगी। इसलिए राष्ट्र की अखण्डता का स्वप्न यदि यथार्थ बनाना हो तो उसका एकमात्र उपाय हिन्दी को भारत के हृद्स्पन्दन की भाषा बनाये रखना है। आशा है कि शासन पक्ष और विपक्ष मिल कर इस दिशा में आत्मोत्सर्ग की भावना के साथ प्रयत्न करेंगे। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वभाषा द्वारा प्रतिभा विकसित हो सकेगी

पी. गोविन्द पिल्लै

आज यह आह्वान बुलन्द हो रहा है कि मातृभाषा की उपेक्षा करके अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाये ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पैंतीस वर्ष बाद भी हमारी मातृभाषाओं को उचित मान्यता नहीं मिल पायी है। पैंतीस वर्ष पहले हमारे बुद्धिजीवियों अध्यापकों और शिक्षित जनों को मातृभाषा के प्रति जो आस्था थी वह आज नहीं रही। आज यह आह्वान बुलन्द हो रहा है कि मातृभाषा की उपेक्षा करके अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाओं को प्रोत्साहन दिया जाये । मेरे एक मित्र ने जो कि मातृभाषा में शिक्षण सामग्री तैयार करनेवाली एक संस्था में कार्यरत हैं —आज के 'मातृभूमि' दैनिक में अंग्रेज़ी की पुनःस्थापना पर जोर देते हुए एक विकृत लेख लिखा है। अंग्रेज़ी की उपेक्षा कोई नहीं करता। वह एक विश्वभाषा है । इस बात में कोई सन्देह नहीं कि अंग्रेज़ी, रूसी, फ्रेंच, जर्मन जैसी भाषाओं का अध्यापन उच्च शिक्षा के स्तर पर होना चाहिए । मैं भली भांति जानता हूँ कि मुझ अकिंचन मलयाली के व्यक्तित्व के विकास में अंग्रेज़ी का कितना योगदान रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस देश में मौलिक प्रतिभा और चिन्तन को उजागर करने में विदेशी भाषा कभी सहायक नहीं हो सकती ।

है। शेकस्पीयर, शैली, मिलटन और बयरण के काव्यों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है । जेल की कोठरियों में रहते समय मुझे इन ग्रंथों से बडी संतृप्ति और आत्म-विश्वास मिला है । अंग्रेज़ी मेरे जीवन और आत्मा का अंग बन गयी है। मैं नहीं चाहता कि भारत अंग्रेज़ी की शिक्षा छोड दे । उसे जारी रखना है उचित ढंग से, उचित स्तर पर उचित मात्रा में और उचित स्थानों पर। साथ ही साथ अन्य प्रमुख विदेशी भाषाओं को भी समान स्थान देना है । लेकिन मातृभाषा और अन्य भारतीय भाषाओं की उपेक्षा करते हुए अंग्रेज़ी को प्रमुखता देना हमारे आत्म-सम्मान केलिए हानिकारक होगा । एक जमाना था जब कोई कोई अपने को कोच्चि के राजा की प्रजा कहने में गौरव का अनुभव करते थे । दासता पर ऐसा गौरव अनुभव करना आत्मसम्मान नहीं कहलाता।

इस देश में मौलिक प्रतिभा और चिन्तन को उजागर करने में विदेशी भाषा कभी सहायक नहीं हो सकती। हम जानते हैं कि विश्व के किसी राष्ट्र ने विदेशी भाषा के जरिये उन्नति नहीं पायी । आत्म-सम्मान शाली राष्ट्रों ने स्वभाषाओं के ज़रिये ही प्रगति पायी है।

हीब्रू की बात

हीब्रू भाषा की बात लें । गत २३०० वर्षों से यह बोली नहीं जाती थी । आज इस्रायल के विश्वविद्या-लयों में अध्ययन का माध्यम हीब्रू है। कोई नहीं कहेगा कि यहूदी इस से पिछड गये ।

जापान का उदाहरण

पिछली सदी के मध्य में ही जापान का आधुनीकरण आरंभ हुआ। यह प्रक्रिया किसी विदेशी भाषा के जरिये नहीं, स्वभाषा के जरिये हुई। अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन आदि विदेशी भाषायें जाननेवाले वहाँ भी हैं । उन भाषाओं को वे उपयोगी मानते है । पर उन का मौलिक चिन्तन स्वभाषा में ही होता है। इसीलिए किसी भी पश्चिमी देश की ललकारने की क्षमता उन में आ गयी । भारतीय भाषायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी दृष्टि से जापानी भाषा के पीछे नहीं। आधुनिक जापानी भाषा के विकास के पहले ही कई भारतीय भाषाओं में महाकाव्य और वैज्ञानिक ग्रंथ लिखे गये।

रूस की भी यही बात है। गदर के पहले रूस की स्थिति भी भारत की सी थी। अंग्रेजी के स्थान पर वहाँ फ्रेंच प्रतिष्ठित थी। विवाह, दावत आदि के अवसर पर रईसों का वार्तालाप फ्रेंच में ही होता था। स्थिति हमारे देश में भी ऐसी मिलती है। माताजी और पिताजी को मम्मी, डैडी पुकारा जाता है। विविध धार्मिक संस्थाओं द्वारा अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की स्थापना प्रतिवर्ष हो रही है। आज अखबारों में हिन्दी और मातृभाषा की उपेक्षा करते हुए अंग्रेजी की प्रशंसा में लिखे गये लेख छपते हैं। ये लेख ऐसे अखबारों में छपते हैं जो पहले हिन्दी के प्रचार-प्रसार करने में लगे हुए थे।

सतीन्द्रदास बोस की कथा

इस शताब्दी के वैज्ञानिकों में प्रमुख थे सतीन्द्रदास बोस। उनके कुछ आविष्कारों ने आइनस्टीन का भी ध्यान आकृष्ट किया था। आइनस्टीन, ओडिंगर, माक्सप्लान जैसे इस सदी के सर्वप्रथम चार-पा वैज्ञानिकों की कोटि में सतीन्द्रदा बोस भी आते हैं। वे भौतिकी अतिगहन सिद्धान्त सरल बंगला बड़ी आसानी से सिखाते थे। आ भी हर विषय के विद्वान ऐसा क सकते हैं। लेकिन इस बात का प्रच किया जा रहा है कि अंग्रेजी माध्यम में ही भौतिकी, गणित आ सभी विषयों का अध्यापन हो चाहिए। इस पक्ष का समर्थन क वालों का लक्ष्य गणित, भौति इतिहास आदि विषय सिखाना न है बल्कि इन विषयों के सहारे अंग्रे सिखाना है। ऐसे विद्वानों के ले से ऐसा प्रतीत होता है कि विदे भाषा का अध्ययन ही शिक्षा प्रथम लक्ष्य है। अंग्रेजी सिखानी है पर सभी विषय अंग्रेजी के माध्यम क्यों सिखाये?

हिन्दी आज विश्व भाषाओं स्थान पा चुकी है। अरब, रू चीनी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि भाषा के स्तर की एक भाषा है हिन्दी भारत के बाहर में मारीशस, जमै आदि स्थानों में हिन्दी बोली ज है। इसलिए वह एक विश्व भा है। यदि हम सजग होते तो रा संघ में उसे स्थान दिला सकते। अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस वर्षों में हिन्दी को यह स्थान मिलेगा ही।

हिन्दी हो या मलयालम हर भारतीय भाषा के मार्ग को यहाँ का शिक्षित वर्ग अवरुद्ध करता है। राधाकृष्णन आयोग मुदलियार आयोग, कोठारी आयोग जैसे प्रमुख शिक्षा आयोगों ने सिफारिश की है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही

राधाकृष्णन आयोग, मुदलियार आयोग, कोठारी आयोग जैसे प्रमुख शिक्षा आयोगों ने सिफारिश की है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही हो।

हो। इसका कारण भी राधाकृष्णन आयोग ने स्पष्ट किया है। बालक का बौद्धिक विकास मातृभाषा के द्वारा ही संभव है, अन्य भाषाओं द्वारा नहीं। जिस भाषा को बालक माँ के दूध के साथ अपनाता है उसी में उसके चिन्तन के छोटे-छोटे सांचे रूप लेते हैं। इन सांचों के संयोजन से ही चिन्तन का विकास होता है। चिन्तन और भाषा में इस प्रकार का निकट संबंध है।

साधारण कार्यों केलिए एक भाषा, तात्विक कार्यों के लिए एक भाषा, प्रशासन के लिए एक भाषा, जनता की बोलचाल के लिए एक भाषा ऐसी रीति ठीक नहीं।

कुछ लोगों का प्रश्न है कि बिना अंग्रेजी जाने गल्फ जाकर जीविका कमायें कैसे? हम जानते हैं कि गल्फ जानेवाले अधिकांश मलयाली न अंग्रेजी जानते हैं न अरब। वहाँ पहुँचने पर वे वहाँ की भाषायें सीख लेते हैं। योरप के विश्वविद्यालयों में एम. एस. सी के बाद फ्रेंच या जर्मन भाषा अनिवार्य रूप से पढनी पडती है। इन सब बातों को समझे बिना हमारे जीवन के लिए हानिकारक दृष्टिकोण को अपनाना ठीक नहीं। अन्य भाषाओं के माध्यम से अध्ययन करते रहें तो हम आधुनिक विज्ञान को कभी आत्मसात नहीं कर पायेंगे। मातृभाषा के विरुद्ध एक षड्यंत्र चल रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले शिक्षा के बजट का ३२ प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा के लिए आवंटित होता था। यद्यपि इस रकम में वृद्धि हुई है तो भी शिक्षा के बजट का २३ प्रतिशत ही प्राथमिक शिक्षा के लिए जाता है। विश्वविद्यालय खुलते जा रहे हैं! उच्च शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य भाषाओं के माध्यम से अध्ययन करते रहें तो हम आधुनिक विज्ञान को कभी आत्मसात नहीं कर पायेंगे ।

केलिए करोडों रुपया खर्च किया जाता है । लेकिन प्राथमिक विद्यालयों को आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराने की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता । आज दो तरह के स्कूल मिलते हैं । दरिद्रों और हरिजनों के लिए एक प्रकार के स्कूल और धनिकों के बच्चों केलिए पब्लिक स्कूल और रेकोग्नाइस्ड स्कूल । विभिन्न वर्गों के बीच की खाई बनाये रखते हुए एक नये संभ्रान्त वर्ग की सृष्टि की जा रही है । उजडते हुए वर्णाश्रम को नया रूप और भाव प्रदान करनेवाली यह चाल खतरनाक है । हिन्दी विरोध भी इसी चाल का एक अंग है ।

हर भारतीय भाषा का विकास किया जाना है । इन में सर्वाधिक विकसित और अधिकांश जनता से बोली जानेवाली भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना है । जो उत्तर प्रदेश और बिहार के अधिकांश लोगों को हिन्दी सिखाने का प्रयत्न किये बिना मलयालियों और तमिलवालों प हिन्दी थोपने का प्रयत्न करते हैं अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं उन का मोह है कि जिस प्रक अंग्रेजों ने अंग्रेजी के सहारे सारे भा पर राज किया गया उस प्रक हिन्दी के सहारे वे सारे भारत प शासन करेंगे । हमें इस मनोवृ का विरोध करने और इसे संशोधि करने का अधिकार है । पर क कारण हिन्दी दंडित न होने पा

ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों हिन्दी का अभी विकास करना है अन्य भारतीय भाषाओं की तुल में चिन्तन, साहित्य और विज्ञान क्षेत्र में हिन्दी का अधिक विकास हु है । कई उच्च स्तरीय ग्रंथ हि में निकल रहे हैं । सभी उपनि अठारहों पुराण, चारों वेद, षड्द आदि हिन्दी में उपलब्ध हैं जब ऐसे ग्रंथ मलयालम में अभी वि हैं । फादर कामुल बुल्के द्व लिखित रामकथा के स्तर का शोधग्रंथ निर्भाग्यवश मलयालम

ज्ञान विज्ञान के विविध क्षे में हिन्दी का अभी वि करना है ।

केरल ज्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा और मातृ संस्कृति की प्रतिष्ठा का प्रयत्न जारी रखें तो जनता स्वीकार करेगी कि सारे भारत केलिए स्वीकार्य आम भाषा हिन्दी है ।

अभी तक नहीं निकला है इस का अर्थ यह नहीं कि मलयालियों में इस की क्षमता नहीं । ऐसे कार्यों को प्रोत्साहन देना है । विश्वविद्यालयों को चाहिए कि ऐसे कार्यों को समाजोपयोगी मानें । शिक्षित समाज को इस की उपयोगिता स्वीकार करनी है ।

हमारे कई प्रोफेसर और मंत्री कहा करते है कि उन्हें मलयालम ठीक ठीक नहीं आती । ऐसा कहने में वे गौरव का अनुभव करते हैं । उनकी अंग्रेज़ी सुनने का अवसर मिले तो अंग्रेज़ लज्जित हो जायेंगे । इस प्रवृत्ति के विरुद्ध यदि हम मातृ-भाषा और मातृ संस्कृति की प्रतिष्ठा का प्रयत्न जारी रखें तो जनता स्वीकार करेगी कि सारे भारत के लिए स्वीकार्य आम भाषा हिन्दी है ।

अंग्रज़ी का निष्कासन करने की जरूरत नहीं । हमें अंग्रेज़ी और अन्य योरोपीय आषाओं का अध्ययन करना है । विश्व संस्कृति की संपूर्ण सत्ता को आत्मसात नहीं कर पायें तो हम भारत को एक महान राष्ट्र नहीं बना सकते । पर मात्र दूसरों की दावत खा कर हम शक्तिशाली नहीं बन सकते । जो दावत मिले उसे स्वीकार करें । पर घर में पर्याप्त भोज़न पकाना ही होगा ।

मातृभाषा का सशक्त प्रचार आरंभ करना होगा । मातृभाषा के विरोध में यदि हमारे, साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री, अधिकारी और मंत्री कहते फिरें तो देश की बडी दुर्गति होगी । ऐसा करना आनेवाली पीढियों के प्रति बडा अपराध होगा ।

युवकों को यह कहकर गुमराह किया जाता है कि विदेशों में नौकरी

मातृभाषा के विरोध में यदि हमारे साहित्यकार, शिक्षाशास्त्री अधिकारी और मंत्री कहते फिरें तो देश की बडी दुर्गति होगी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक राज्य में हिन्दी की प्रगति

एन. रामय्या

[जनवरी १९८३ में कर्नाटक सरकार के सार्वजनिक शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सहायक शिक्षा निदेशक (हिन्दी) श्री० एन. रामय्या द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट ।]

वैसे तो कर्नाटक में भी अन्यान्य दक्षिण भारतीय प्रांतों के समान हिन्दी का प्रचार कार्य स्वतंत्रता के पूर्व के दिनों से ही पूज्य गाँधीजी की प्रेरणा से शुरू हुआ । हिन्दी के प्रति बढती माँग के कारण यहाँ सन् १९४२ से ही स्कूली शिक्षा में हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में स्थान दिया गया था । फिर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद-हिन्दी के राज भाषा-घोषित होने पर १९५० से हिन्दी अनिवार्य तृतीय भाषा के रूप में हाईस्कूलों में पढाई जाने लगी है । यद्यपि प्रारंभ में हिन्दी परीक्षा का अनिवार्य विषय नहीं बनी थी, तथापि १९७१ से एस. एस. एल. सी. परीक्षा में वह अनिवार्य विषय बनी है ।

हिन्दी अध्ययन समिति

हिन्दी के प्रचार व प्रसार कार्य में मार्गदर्शन देने तब की मैसूर-

---

पाने केलिए अंग्रेज़ी का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । विदेशों से भारतीयों को वापस भेजा जा रहा है । तेल का दाम गिर जाये तो गल्फ में रोज़गार पाना दुष्कर हो जायेगा । हमें अपने देश में ही अपना भविष्य निर्मित करना होगा, विदेशों में नहीं ।

इन सब तथ्यों को ध्यान में रख कर हमें भारतीय भाषाओं का और विशेष कर उन में सर्वोन्नत हिन्दी का प्रचार प्रसार करना है । ❀

हिन्दी प्रचारकों के लिए १७-३-१९८३ से २३-३-१९८३ तक केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह में दिया गया भाषण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार ने १९५४ में 'हिन्दी अध्ययन समिति' की रचना की थी। इस समिति की सलाहों के अनुसार मैसूर नगर में १९५५ से चार साल की अवधि का "हिन्दी विद्वान" कोर्स चालू हुआ। ऐसा कोर्स भारत के और किसी प्रांत में नहीं चल रहा है। इस कोर्स में सरकार की ओर से ही दो साल में एक बार प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों में से बीस-बीस अध्यापकों को नियोजित कर अध्ययन के लिए भेजा जाता है। इस में उत्तीर्ण अध्यापकों को हाई-स्कूलों में नियुक्ति के समय तरजीह दी जाती है। इन विद्वानों को सीधे बी. एड्. में प्रवेश पाने का अवकाश भी प्राप्त हुआ है।

प्रशिक्षण की सुविधा

हिन्दी विद्वान कोर्स के अलावा हिन्दी अध्ययन समिति की सलाह पर हाईस्कूल के हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए राज्य सरकार ने मैसूर नगर, रायचूर और बागलकोटे में एक-एक हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना की थी। किसी कारणवश १९८०-८१ से ये विद्यालय बन्द किये गये। हाईस्कूल के हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर राज्य सरकार ने फिर अगले साल से (१९८३-८४) एक हिन्दी शिक्षक कालेज को चालू करने, आर्थिक सहायता माँगते हुए केन्द्र सरकार को एक प्रस्थापना भेजी है और इस प्रस्थापना के स्वीकृत होने की पूरी-पूरी संभावना है।

निशुल्क वर्ग

इस समय कर्नाटक में—कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् और मैसूर रियासत हिन्दी प्रचार समिति और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की शाखा ये चार स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएँ हिन्दी के प्रचार कार्य में लगी हैं। इन संस्थाओं की उच्च परीक्षाओं को स्थायी रूप से मान्यता प्राप्त हुई है। हर साल करीब एक लाख से अधिक विद्यार्थी इन संस्थाओं की विभिन्न परीक्षाएँ ले रहे हैं। ये संस्थाएँ करीब ४०० निःशुल्क हिन्दी वर्ग चला रही हैं।

कर्नाटक राज्य में १९७९ से निःशुल्क हिन्दी वर्ग चलानेवाले हिन्दी विद्यालयों को राज्य सरकार की ओर से अनुदान मिल रहा है। ऐसे विद्यालय लगभग ७५ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभिक वर्ग चलानेवाले हिन्दी अध्यापक को सौ रुपये और उच्च वर्ग चलानेवाले अध्यापक को एक सौ पचास रुपयों का माहवार अनुदान मिलेगा। एक विद्यालय में जितने वर्ग चलेंगे उतने अध्यापकों को अनुदान दिया जाता है। कर्नाटक सरकार से अनुदान प्राप्त पचहत्तर विद्यालयों के अलावा राज्य में पच्चीस ऐसे निःशुल्क हिन्दी विद्यालय भी हैं जिन्हें केन्द्र सरकार से अनुदान मिल रहा है। इन निःशुल्क हिन्दी विद्यालयों का निरीक्षण करने के लिए राज्य सरकार ने राज्य के चारों सार्वजनिक शिक्षा विभागों में हिन्दी विषय निरीक्षकों की नियुक्ति की। इन की रिपोर्ट के आधार पर विभागीय सह निदेशक अनुदान देने की सिफारिश करेंगे और उसके आधार पर राज्य के सार्वजनिक शिक्षा विभाग का हिन्दी कार्यालय अनुदान की अनुमति प्रदान करता है।

पुरस्कार योजनायें

हिन्दी प्रचार व प्रसार की योजना के अंतर्गत कर्नाटक राज्य ने जो प्रोत्साहन कार्यक्रम बनाया था, वह कुछ समय से स्थगित-सा था। फिर १९८२-८३ से यह प्रोत्साहन कार्यक्रम प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अनुसार हाईस्कूलों के छात्रों के लिए जिला स्तर पर तीन स्पर्धाओं को (वाक्स्पर्धा, निबन्धलेखन स्पर्धा और कंठपाठस्पर्धा) पिछले दिसंबर में चलाया गया। और हर स्पर्धा में दस-दस विजेताओं को नकद पुरस्कार दिये गये। जिला स्तरीय इन स्पर्धाओं को चलाये जाने के लिए कुल २२,८९० रुपयों का खर्च हुआ है। जिला स्तर पर की हर स्पर्धा में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त किये हुए छात्रों को अर्थात् हर जिला से तीनों स्पर्धाओं के छह विजेता छात्रों को अब इस राज्य स्तर की स्पर्धाओं में भाग लेने सरकार के खर्च से बुलाया गया है। इन इक्कीस जिलों के छात्र और एक-एक जिले से नियोजित एक-एक अभिभावक-अध्यापक जो यहाँ पर आये हैं, उन सब के भोजन और ठहरने की व्यवस्था सरकार की तरफ से की गई है। यह काम कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति को सौंपा गया था और इसे सेवा समिति ने सुचारु रूप से निभाया है।

पचास हज़ार रुपये की राशि

राज्य स्तर की कल की चली स्पर्धाओं में हर स्पर्धा से दस-दस के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिसाब से पुरे तीस विजेता छात्रों को अब के इस समारोह में नकद पुरस्कार वितरित किये जाएँगे। (प्रथम पुरस्कार २५० रूपयों का, द्वितीय पुरस्कार २०० रूपयों का और तृतीय पुरस्कार १५० रुपये का होता है, और बाकी चौथे से दसवें तक के पुरस्कारों की रकम एक-एक सौ रुपये की है।) इसी सुअवसर पर अप्रैल १९८२ की एस. एस. एल. सी परीक्षा की तृतीय भाषा हिन्दी में अधिक अंक प्राप्त किये पाँच छात्रों को भी नकद पुरस्कार वितरित किये जाएँगे। (प्रथम पुरस्कार २०० रुपये, द्वितीय पुरस्कार १७५ रुपये, तृतीय पुरस्कार १५० रुपये, चतुर्थ पुरस्कार १२५ रुपये और पचम पुरस्कार १०० रुपयों का होता है। इसके अलावा लेखकों के प्रोत्साहनार्थ भी इस शुभ अवसर पर नकद पुरस्कार वितरित किये जाएँगे। जिन की मातृभाषा हिन्दी न हो ऐसे कर्नाटक के हिन्दी लेखकों के ग्रन्थों पर (प्रथम पुरस्कार एक हजार रुपये का, द्वितीय पुरस्कार आठ सौ रुपये का और तृतीय पुरस्कार छह सौ रुपये का) तीन पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे। इसी प्रकार हिन्दी से कन्नड़ और कन्नड़ से हिन्दी में अनूदित तीन-तीन ग्रन्थों को भी पुरस्कृत किया जाएगा।

इन सारी योजनाओं के लिए राज्य सरकार ने पचास हज़ार रुपये की धन-राशि मंजूर की थी। एतदर्थ सार्वजनिक शिक्षा विभाग की ओर से सरकार को हार्दिक धन्यवाद देते हुए इस रिपोर्ट को समाप्त करता हूँ।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ तेरा

सूर्य कुमार पांडेय

दिन भी तेरे
रातें तेरी
सब कुछ तेरा
क्या है मेरा ?
तुम प्राणों में
अंतरतम में,
तुम्हीं दृश्य में
तुम ही भ्रम में
नींद, सपन
छाया का घेरा
शाम तुम्हारी
और सबेरा
सब कुछ तेरा
क्या है मेरा ?
तुम तारों में
नील गगन में,
तुम्हीं भीड़ में
तुम निर्जन में
सुख - दुख पर
स्मृतियों का घेरा

तुम प्रकाश हो
तुम्हीं अँधेरा
सब कुछ तेरा
क्या है मेरा ?
सूरज - चाँद
तुम्हारी आँखें,
सत्य - कल्पना
वाली पाँखें
मन का खग
जब करे बसेरा
तब ही मिटे
जन्म का फेरा ।
सब कुछ तेरा
क्या है मेरा ?

❀

२/१०, त्रिवेणी नगर,
सीतापुर रोड, लखनऊ - २२६००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९८२) एवं कालिदास पुरस्कार प्राप्त डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै का अभिनन्दन

श्री शंकरा अकादमी के सचिव डॉ० मावेलिक्करा अच्चुतन डॉ० पी. के को पुष्पगुच्छ देकर अभिनन्दित कर रहे हैं ।

विख्यात विद्वान एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै का अभिनन्दन करने केलिए विविध सांस्कृतिक संस्थाओं के सहयोग से केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा ५-५-१९८३ को विवेकानन्द हॉल, तिरुवनन्तपुरम में एक विशाल सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

सम्मेलन की अध्यक्षता श्री० सी०एच० मुहम्मद कोया (उपमुख्य मंत्री, केरल) ने की । केरल के माननीय राज्यपाल श्री० पी० रामचन्द्रन ने सम्मेलन का उद्घाटन किया ।

तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के० प्रभाकरन नायर, श्रीरामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आश्रम, तिरुवनन्तपुरम के अध्यक्ष स्वामी गोपाकानन्द, केरल साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष डा०के. एम. जोर्ज, विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी की कार्यकारी अध्यक्षा डा० एम० लक्ष्मीकुमारी, सर्वविज्ञान कोश प्रकाशन के निदेशक डा० वेल्लायणी अर्जुनन, चिन्मया मिशन की संरक्षिका श्रीमती एल. ओमना कुञ्ञम्मा, सीताराम भक्त सभा के अध्यक्ष श्री० आर० वरदराजन आदि महान व्यक्तियों ने डा० पी० के० नारायण पिल्लै का अभिनन्दन करते हुए भाषण दिया। कृतज्ञता भरे अपने उद्गार प्रकट करते हुए डा० पी. के. नारायण पिल्लै ने बताया, कि स्वामी विवेकानन्द के सन्देश का उज्वल प्रकाश ही विश्व को तमोगुण के अंधकार से मुक्तकर सत्व गुण से आलोकित कर सकता है। विवेकानन्द केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम के अध्यक्ष डा० ए. एस. नारायण पिल्ले ने स्वागतभाषण दिया योंगया।

श्री शंकरा अकादमी के सचिव डा० माबेलिक्करा अच्चुतन ने कृतज्ञता प्रकट की। भाषणों का सारांश है।

श्री० पी० रामचन्द्रन, राज्यपाल

साहित्यिक ,सेवाओं केलिए पुरस्कृत एक विशिष्ट लेखक के अभिनन्दनार्थ आयोजित इस समारोह में भाग लेने में मुझे बडी खुशी हो रही है।

स्वागत भाषण में बताया गया कि निम्न कोटि के लेखक आज अनुचित लाभ उठा रहे हैं। चूंकि मैं लेखक नहीं हूं, मैं इस आरोप से बच गया हूँ।

श्री नारायण पिल्लै के व्यक्तित्व की विशेषताओं की झांकी मैं प्राप्त कर सका हूँ। आप संस्कृत, मलयालम और अंग्रेजी के मंजे हुए लेखक हैं। शायद आप मराठी और बंगला भी जानते होंगे। आप उच्च कोटि के लेखक हैं। स्वामी विवेकानन्द पर विरचित अपने महाकाव्य विश्वमानु की महत्ता की स्वीकृति के रूप में उन्हें यह पुरस्कार मिला है।

मैं संस्कृत नहीं जानता। मैं ने उस काव्य के अंग्रेजी अनुवाद का थोडा अंश पढ़ा है। स्वामी विवेकानन्द पर लिखने की प्रेरणा आप को श्री रामकृष्ण परमहंस से मिली होगी। उच्च कोटि का काव्य लिखने केलिए प्रेरणा लगन और अंतर्ज्ञान भी आवश्यक है। डा० नारायण पिल्लै में ये सभी गुण होंगे। तभी आप विवेकानन्द पर यह काव्य लिख सके।

स्वामी विवेकानन्द उन भारतभूमि में उत्पन्न बहुमूल्य रत्नों में एक थे। वे, इस दुनियाँ में आये, दुनियाँ को देखा, और दुनियाँ को जीत लिया। अपने अति ह्रस्व जीवन काल में आप भारत पर ही नहीं सारे विश्व पर अपनी अमिट छाप छोड गये। कोई व्यक्ति या देश जो भारत के संबन्ध में थोडा बहुत जानता हो स्वामी विवेकानन्द की देन का जिक्र किये बिना नहीं रह सकता। स्वामी विवेकानन्द पर कई लेखक लिख सकते हैं। कुछ तो उन प्रभावों पर लिखेंगे। डा० नारायण पिल्लै ने उन पर एक विशिष्ट काव्य की रचना की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

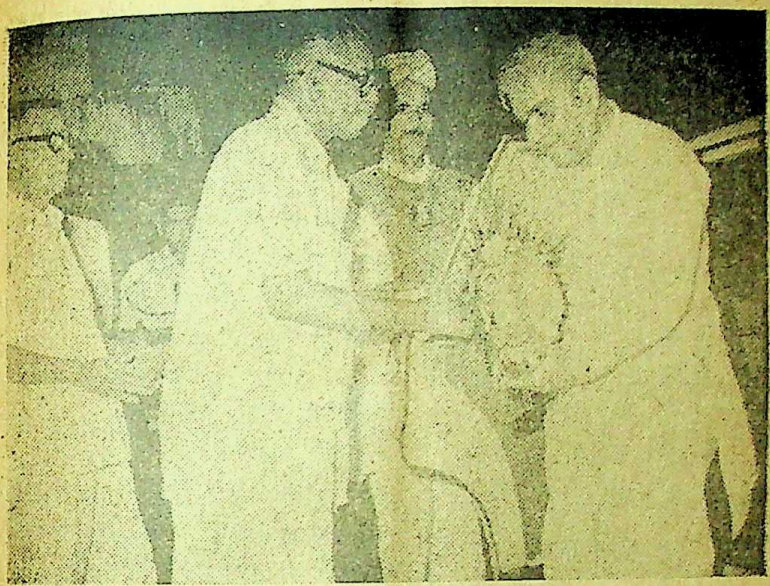

राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

स्वामी विवेकानन्द ने बाललीलाओं में ही किस प्रकार अपनी विलक्षताओं का परिचय दिया उस का विवरण इस काव्य में मिलता है । अपने गुरुदेव के साथ विवेकानन्द का कैसा भावैक्य रहा इस का वर्णन तो पढते ही बनता है । हम तो इस प्रकार के काव्य लिख नहीं सकते । पर हमें इस काव्य का अध्ययन मनन करना है जिस से हम समझ सकें कि स्वामी विवेकानन्द इस देश के लिए और इस धरा के लिए क्या थे क्या हैं और क्या रहेंगे । डा० पिल्लै ने विवेकानन्द के साथ तादात्म्य प्राप्त कर के उनका चरित्र अंकित किया है । अभिनय को सफल बनाने के लिए जिस प्रकार अभिनेता अभिनय पात्र के साथ एकीभाव प्राप्त करता है उसी प्रकार डा० पिल्लै ने विवेकानन्द के व्यक्तित्व में आमग्न होकर, उन का चरित्रगत विशेषताओं से प्रभावित और प्रेरित होकर यह काव्य रचा है । विवेकानन्द के सभी विशेषताओं के साथ एकीभाव प्राप्त करके ही डा० पिल्लै ने इस काव्य की रचना की है ।

डा० पिल्लै कई क्षेत्रों में बहुमूल्य सेवायें की हैं । वे एक समर्थ विद्यार्थी थे । क्यूरेटर, प्रोफेसर, प्रिंसिपल आदि जिन जिन पदों पर वे रहे उन सभी पदों को सफलता पूर्वक संभालने में कुछ उठा-कर नहीं रखा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० पिल्लै की काव्य साधना और सिद्धियाँ इसलिए भी विशिष्ट हैं उन्होंने वैदिक साहित्य का गहरा अध्ययन किया है। हमारे देश के प्राचीन साहित्य और संस्कृति में जिस के हृदय में रुचि और श्रद्धा नहीं वह हमारे वैदिक साहित्य के गहन अध्ययन में रुचि नहीं ले सकता और अपने साहित्यिक परिश्रम के प्रति न्याय नहीं निभा सकता। इस में रुचि ही नहीं, एकाग्रता और समर्पण भी आवश्यक है। लगता है कि डा० पिल्लै ने वैदिक साहित्य के अध्ययन में अपने को अर्पित कर दिया है। उन्होंने इस का मात्र अध्ययन ही नहीं, पोषण भी किया है। उन की एक कृति में मैं ने विवाह संबन्धी ऋग्वेदेतर मंत्र पाये। शायद मद्रास में विवाहों में इन मंत्रों का उच्चारण उन्होंने सुना होगा। या विवाह की पवित्रता समझ कर विवाह के कार्मिकों के समक्ष इन मंत्रों का परिष्कृत रूप रखना उन्होंने आवश्यक समझा होगा। जो हो इस बात पर हम गर्व कर सकते हैं कि भारतीय संस्कृति और हिन्दू संस्कृति इन आंतस्रोतों में उन्हें बड़ी रुचि है।

डा० पिल्लै हमेशा कुछ नयी चीज का आविष्कार करने का प्रयत्न करते रहते हैं। यही कारण है कि आप 'रामकथापट्टु' नामक रामकाव्य को खोज निकाल सके। किसी के घर से उन्होंने उसकी पांडुलिपि ढूंढ निकाली और समाज के समक्ष प्रस्तुत की। देश की महान परंपरा के विशिष्ट तत्वों को ढूंढ निकालना और नयी पीढ़ी को उसके संबंध में समझाना चाहिए। डा० पिल्लै ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज विभिन्न संस्थाओं ने मिल कर डा० पिल्लै का अभिनन्दन समारोह आयोजित करके बड़ा अच्छा किया। महापुरुषों का आदर उनके जीवित रहते ही करने की जो प्रथा हमारे देश में चल पड़ी है वह बहुत ही अच्छी है। स्वर्गीय श्रेष्ठ साहित्यकारों की महत्ता भी आज हम पहचानने लगे हैं। वे समाज केलिए जो कुछ उत्तम हो सका कर गुजरे। गरीबी में उनका जीवन गुजरा। लोग उन्हें भूल गये होंगे। आज हम उन की और जीवित साहित्यकारों की महत्ता स्वीकार कर रहे हैं। जीवित महापुरुषों का आदर करने से अधिक सेवा केलिए उन्हें उत्साह मिलेगा। उन्हें जो आदर दिया जाता है उसके अनुरूप अपने को बनाने केलिए वे अधिक परिश्रम करेंगे और समाज को उसका फल मिलेगा।

संस्कृत एक मृत भाषा मानी जाती है। मैं ने कहीं पढ़ा कि डा० पिल्लै संस्कृत के एक विशेषज्ञ हैं और संस्कृत में अच्छीतरह बोलते भी हैं। संस्कृत में भाषण करना बहुत बड़ी बात है। संस्कृत का साहित्य समृद्ध है। अन्य साहित्य तो इस से प्रेरणा और भाव ग्रहण करते हैं। संस्कृत विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाओं में एक है। हम इस की महत्ता मानें या न मानें बाहरी देश इसकी महत्ता मान चुके हैं। केरल में संस्कृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रमुख भाषा है। कोई केरलीय संस्कृत के प्रभाव से मुक्त नहीं है। मलयालम के अधिकांश शब्द संस्कृत से आये हैं। डा० पिल्लै ने संस्कृत में प्रावीण्य प्राप्त किया है और मलयालम तथा अन्य भाषाओं की यथाशक्ति सेवा की है।

इन शब्दों के साथ मैं इस समारोह का सहर्ष उद्घाटन करता हूँ और कामना करता हूँ कि डा० पिल्लै दीर्घकाल तक स्वस्थ सानन्द रह कर समाज की सेवा करते रहें।

श्री० सी. एच. मुहम्मद कोया

मैं डा० नारायण पिल्लै को भली भाँति जानता हूँ। जब मैं यहाँ का शिक्षा मंत्री था तब मैं चाहता था कि यहाँ संस्कृत का एक उच्च अध्ययन केन्द्र आरंभ हो। इसके संबंध में एक रिपोर्ट तैयार करने केलिए डा० पिल्लै को एकांग आयोग के रूप में नियुक्त किया था। यद्यपि वह योजना शिथिल हो गयी तो भी डा० पिल्लै ने बड़े परिश्रम से रिपोर्ट तैयार की। और उस में संस्कृत के प्रति उनकी विशेष रुचि प्रकट थी।

जगतगुरु शंकराचार्य के इस केरल में आर्य संस्कृति विस्मृत हो गयी है। संस्कृत शिक्षा को केरल उचित प्रोत्साहन नहीं दे रहा है उसके बावजूद डा० नारायण पिल्लै ने मलयालम और संस्कृत में एम. ए. की उपाधि प्राप्त की और

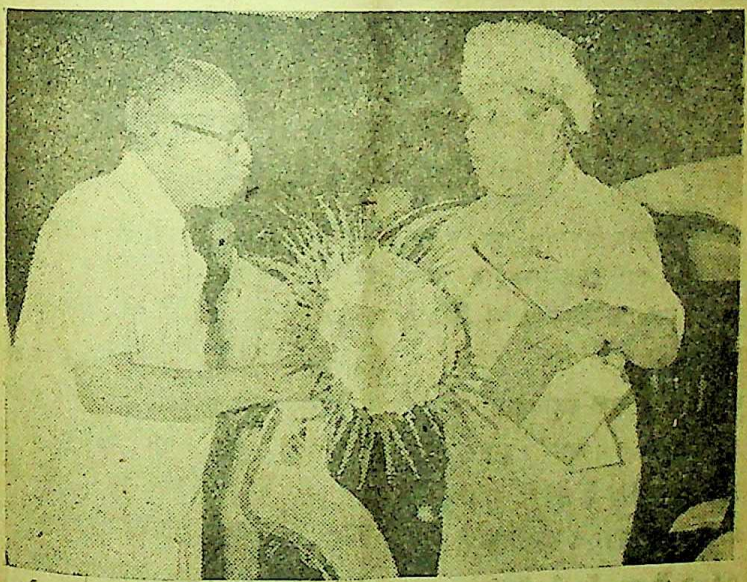

उप मुख्यमंत्री श्री० सी. एच. मुहम्मद कोया का हार्दिक स्वागत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

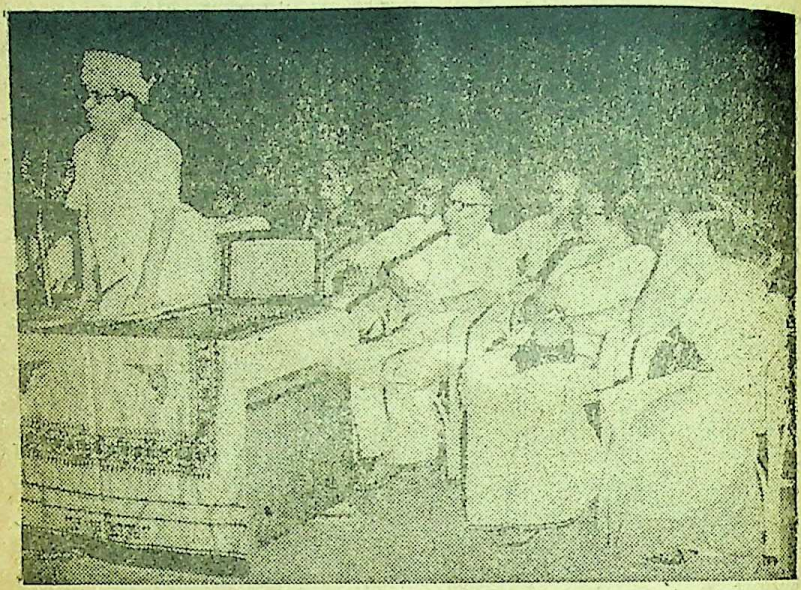

अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं केरल के उपमुख्यमंत्री श्री० सी. एच. मुहम्मद कोया। बैठे हैं—बाएँ से डॉ० वेल्लायणी अर्जुनन, डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै, श्री० आर. वरदराजन, श्रीमती एल. ओमनकुञ्जम्मा और डॉ० एम. लक्ष्मी कुमारी

स्वामी विवेकानन्द के संबंध एक उत्तम काव्य रचकर कालिदास पुरस्कार प्राप्त किया। यह इस सारे केरल के लिए गौरव की बात है।

मलयालम में एक कहावत है "आँगन की जुही सुगन्ध नहीं देती"। हमारे प्रान्त में इतने बड़े पंडित हैं इसकी याद उत्तर प्रदेश की एक संस्था ने हमें दिलायी!

१९८२ में डा० पिल्लै को 'विश्वभानु' पर केन्द्र साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। तीन वर्षों से केन्द्र साहित्य अकादमी से संस्कृत का पुरस्कार केरलीय विद्वान ही पाते आये हैं। इनमें डा० पी. के. प्रमुख हैं।

संस्कृत के प्रोफेसर के रूप में और विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षिक के क्षेत्रों में उन्होंने काम किया है। उल्लूर स्मारक ग्रन्थालय और श्री शंकर संस्कृत अकादमी की स्थापना आपने की है। मद्रास विश्वविद्यालय से गोदावरी पुरस्कार और वेदान्त पुरस्कार आपको मिले हैं। केरल साहित्य अकादमी ने भी उन्हें पुरस्कृत किया है। संस्कृत के जीवित पंडितों में आप प्रथम गणनीय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी पीढी को डा० पिल्लै से कई चरित्रगत विशेषताएँ ग्रहण करना है। आपने अपने काव्य केलिए कोई नवीनतम विषय न चुनकर स्वामी विवेकानन्द पर काव्य रचा है। इस से स्पष्ट है कि वे यशःप्रार्थी नहीं है।

हमारे विश्व विद्यालय में अनुसन्धान विभाग बिलकुल दुर्बल है। इतिहास जैसे विषयों में भी बहुत कम लोगों ने यहाँ डॉक्टरेट् की उपाधि पायी है। डा० पी. के. ने ऐसा एक काव्य रचकर और कालिदास पुरस्कार प्राप्त कर हमारे आलसी युवक युवतियों के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

मेरा विश्वास है कि केरल विश्वविद्यालय संस्कृत को उचित प्रमुखता देगा और संस्कृत में अनुसन्धान करने केलिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करेगा।

श्री० गोलोकानन्द स्वामीजी

डा० पी. के. नारायण पिल्लै डा० पी. एन. पी. महादेवन, डा० सदाशिवन जैसे बडे अध्यापकों के परिचय से कई छात्र विद्वत्ता के उच्च शिखर पर चढ सके हैं। डा० पिल्लै आध्यात्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं, सेवानिवृत्त होते ही उनके हृदय में जो आध्यात्मिक भावना सुप्तावस्था में रही वह पल्लवित हो उठी और धर्मशास्ता कन्याकुमारी और श्री० रामकृष्ण संबन्धी स्तोत्रों और विश्वभानु नामक काव्य में परिणत हुई।

जैसे माननीय राज्यपाल ने अभी सुझाया यदि डा० पी. के, बोलचाल की संस्कृत भाषा सिखाने में भी अपना योगदान दे तो बहुत अच्छा होगा।

डा० के. एम. जॉर्ज

डा० पी. के. विख्यात पण्डित हैं, गवेषक हैं, आचार्य हैं। सम्पादक रह चुके हैं।

गद्य और पद्य में रचनाएँ की है। इतिहासकार हैं।

अकसर देखा जाता है कि जो सर्गात्मक कृतियाँ रचते हैं वे वैज्ञानिक साहित्य नहीं रचते। महाकवि उल्लूर, ए. आर. राजराज वर्मा जैसा कुछ साहित्यकार ऐसे हुए हैं जिनमें इन दोनों प्रकार की प्रतिभाओं का सम्मिलन मिलता है। डॉ० पी, के. भी एक ऐसे व्यक्ति हैं। उनकी प्रतिभा बहुमुखी हैं। वे अच्छे संगठक हैं और कुशल प्रशासक हैं। मलयालम, संस्कृत और अंग्रेजी में उनका पूरा अधिकार है। डा० पी. के. नारायण पिल्लै एक विशाल वट वृक्ष है जो केरल की मिट्टी में उपजा है और विश्वभानु के किरणों से पुष्ट हुए हैं।

डा० वेल्लायणी अर्जुनन

पिछले ५० वर्षों से डा० पी. के. नारायण पिल्लै केरलीय संस्कृति को तथा मलयालय अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं को महत्वपूर्ण योगदान देते रहे हैं। केरल के साहित्यनायकों में कई ऐसे हैं जिनके नाम सह्याद्री के बाहर अपरिचित हैं। लेकिन विश्वभानु को रचना के साथ डा० पी. के. नारायण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिल्लै की ख्याति अखिल भारतीय स्तर पर व्यक्त हो गयी है।

डा० एम. लक्ष्मीकुमारी

स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त को व्यावहारिक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। उन्होंने विज्ञान और आध्यात्मिक साधना का समन्वय किया। भारत की युवा पीढी में नवोन्मेष उत्पन्न किया।

डा० पी. के. ने अपने काव्य में विवेकानन्द का व्यक्तित्व उसी प्रकार चित्रित किया है जैसे राम और कृष्ण का चरित्र पुराणों में चित्रित हुआ है। विश्वभानु का एक एक पद्य स्वामीजी के व्यक्तित्व, संदेश और शक्ति से अनुप्राणित है।

श्रीमती एल. ओमनक्कुञ्ञम्मा

परम भक्ति, परिशुद्ध हृदय, अनस्यूत साहित्य सेवा और निस्सीम मनुष्य स्नेह इन सबका मूर्त रूप है डा० पी. के.। उनका काव्य आदि से अंत तक प्रसादात्मक है और मधुर है देवी कन्याकुमारी का स्तोत्र रचते समय उन्हें विवेकानन्द का स्मरण हो आया और कन्याकुमारी में प्रतिष्ठित विवेकानन्द की मूर्ति ने जैसे उन्हें अनुगृहीत किया। इसी अनुग्रह के फल स्वरूप यह काव्य रचा गया।

श्री० के प्रभाकरन नायर

डा० पी. के. नारायण पिल्लै ने केरल की विशेषकर तिरुवनन्तपुरम नगरवासियों की बहुमूल्य सेवायें की है। विश्वभानु एक अतिश्रेष्ठ महाकाव्य है। यद्यपि यह संस्कृत में है तो भी हर पद्य का अंग्रेजी अनुवाद भी उस में दिया गया है। अत संस्कृत न जाननेवाले भी इस के भाव समझ सकते हैं। मेरा विश्वास है कि केरल की और बाहर की जनता इस काव्य के अध्ययन से लाभान्वित होगी। तिरुवनन्तपुरम के नागरिकों की ओर से मैं डा० पिल्लै का अभिनन्दन करता हूं।

श्री० आर. वरदराजन

विश्वभानु का उज्वल तेज डा० पिल्लै ने हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया। एतदर्थ मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

जैसे डा० पी. के. नारायण पिल्लै स्वामि विवेकानन्द के कथाख्यान में स्वामीजी की गरिमा से अभिभूत हो गये उसी प्रकार डा० पिल्लै को अभिनन्दन करने से हम भी उस गरिमा से अभिभूत हो रहे हैं।

तिरुवनन्तपुरम सरकारी महिला कालेज की प्राध्यापिका श्रीमती पी. सुशीलादेवी ने विश्वभानु के कुछ उत्तम अंशों को गाकर प्रस्तुत किया। ❋

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

हिन्दी

प्रद्युम्न 'विद्या वाचस्पती'

दर्द, कसक और करुणा से डूबी
एक स्वर लहरी
कहीं दूर से उभरकर
मुझे झकझोर रही है।
और–मैं
चला जा रहा हूं उस ओर।
गंतव्य पर
पहुंचकर देखता हूं,
साहित्य, समाज, संस्कृति और कला
की जननी एक विदुषी नारी को।
पेण्डुलम की भाँति,
अवनि और अम्बर मध्य अधर
अर्द्ध विक्षिप्तावस्था में झूलती
वह - अविरल गति से
अश्रु बहा रही थी।
शरीर से बह रहा रक्त
लटकते मांस के लोथड़े,
कह रहे थे व्यथा - कथा
उसके साथ घटित कु कृत्यों की !
मैंने पूछा - देवि !
किस पापी ने की है तुम्हारी, यह दशा ?
बोली वह, बेटे !
मेरी अड़सठ करोड सन्तान
विदेशी सौतन के मोहपाश से आबद्ध
विवश होकर मेरी यह दशा की है,
राजनीति के ठेकेदारों ने
सत्ता हथियाने के लिये
मुझे विवाद ग्रस्त बनाया है।
और - मैं लटक रही हूं।
उत्तर - दक्षिण के मध्य अधर।
पहिचाना नहीं ?
मैं तेरी माँ हूं—अभागन हिन्दी।

राष्ट्र भाषा कुटीर
पभ्ररापाली, जि: रायपुर (मध्यप्रदेश)
पिन-४९३५५८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल में हिन्दी शिक्षण की समस्यायें

माणि वल्लिकाट

[अखिल केरल पौरस्त्य भाषाध्यापक समिति (पी. बी. एस.) के ३५ वें वार्षिक समारोह के सिलसिले में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत निबंध]

हिन्दी उत्तर भारत की प्रधान भाषा है और समस्त भारत की सामान्य राष्ट्रभाषा है। आज उसने राजभाषा का पद भी प्राप्त किया है। शिक्षण से तात्पर्य है तालीम या अध्यापन। कठिन या जटिल प्रश्नों को या उलझनों को हम समस्या मानते हैं। तब हमें विचार करने की बात है कि राजभाषा की तालीम में जटिल प्रश्न क्या क्या हैं? याने हिन्दी का शिक्षण कैसे सफल और सबल बनायें?

विश्व के राष्ट्रों की भाषाओं में हिन्दी का स्थान प्रमुखतम ही है जो संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्य भाषाओं में एक है। भारत एक गणतंत्र राष्ट्र है, जो भाषावार प्रान्तों में विभक्त हुआ है। एक एक प्रान्त अपना अपना व्यक्तित्व जमाना भी चाहता है। आज हिन्दी के शिक्षण में एक जटिल समस्या भी यह है। और एक बात दक्षिणवालों की गलतफहमी है कि दक्षिणी प्रान्त केरल में उत्तरीय हिन्दी को क्यों मान्यता दें? हिन्दी के प्रचार प्रसार से पूरे भारत में उत्तर वालों की हो धाक जम जायेगी न? सचमुच ऐसा ख्याल भारत को एक समझकर कंधे से कंधे भिडाकर आगे बढने की प्रेरणा और देशप्रेम की भावना के अभाव का फल है।

सच्चा नागरिक अपने देश को दुनिया में सर्वश्रेष्ठ मानता है। जहाँ सच्चे नागरिक होते हैं वह अपना ही राज होता। जिस देश में जिसका राज है वहाँ उसकी अपनी भाषा होती है। भारत में अरबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं का प्रचार-प्रसार कैसे और क्यों हुआ। दिल्ली में सल्तनत बदलती रही तो भाषा में भी तबदीलियाँ आती रहीं। इस ऐतिहासिक तथ्य को हमें स्वीकार करना ही है। उस दृष्टि से पैंतीस वर्षों से होकर हिन्दी का प्रचार और सम्यक शिक्षण केरल में नहीं हुआ तो वह शासन सत्ता की असमर्थता है। केरल और केन्द्र सरकार की ओर से कटिबद्ध आयोजन इस क्षेत्र में नहीं हुआ। प्रशासकीय स्तर पर इसकी उपेक्षा की गई जो एक गणनीय समस्या है।

हमारे संविधान में हिन्दी राष्ट्रभाषा घोषित की गई है। उसके प्रचार के लिए १५ वर्ष की अवधि भी दी गई थी। तब तक अंग्रेज़ी को विश्व विद्यालयों में शोधन का माध्यम भी बनाये रखा। पर आज भी अंग्रेज़ी को हटा कर उस स्थान पर हिन्दी को पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित नहीं कर सके। यह छात्रों में हिन्दी के प्रति उपेक्षा और अंग्रेज़ी के प्रति रुचि उत्पन्न करती है।

बहुभाषी भारत की भाषाई समस्या के सुलझन में हमने त्रिभाषा सूत्र का आयोजन किया जिसमें पहला स्थान मातृभाषा का ही रखा जो उचित ही हुआ। पर दूसरी और तीसरी भाषा के संबंध में विविध प्रान्तों ने विविध नीतियाँ अपनाई हैं। संभवतः हिन्दी प्रान्तों में अंग्रेज़ी की उपेक्षा सी हुई है। और कोई एक दक्षिणी भाषा का अध्ययन भी न होने के बराबर ही रहा। तब हिन्दीतर प्रान्तों ने ऐसी शिथिलता हिन्दी के प्रति भी बनाये रखी। यह केरल में भी हुई है।

१९७९ से ८२ तक के चार ही वर्षों में केरल की मेट्रिक-परीक्षा में हिन्दी की प्रान्तीय औसत लें तो पता चलेगा कि औसत अंक १७ से १३ बन गया है। इस गिरावट का क्या कारण है? कोठारी कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार १९७६ से गणित और विज्ञान को प्रामुख्य देकर हिन्दी का पर्चा ५० अंक का रखा, जब अंग्रेज़ी और मलयालम के लिए सौ सौ अंक नियत है। इसके साथ "ग्रूप सिस्टम" भी आ गया। फल यह हुआ कि छात्रों ने हिन्दी पर्चे का पूर्ण रूप से त्याग सा किया।

केरल के स्कूलों में पाँचवीं कक्षा में हिन्दी शिक्षण का श्रीगणेश होता है। मनोवैज्ञानिक ढंग से भाषा शिक्षण में निम्न कक्षाओं में हिन्दी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनने और कहने का अवसर ही लेखन और वाचन से अधिक दिये जाने की व्यवस्था है। लिपियों से बढकर अनुकरण और चित्र संकेतों से वाचन तथा मौखिक अभ्यास कराया जाता है। पर इसके साथ लिपियों का ठीक ठीक अध्यापन नहीं चलता है। फलस्वरूप उच्च कक्षाओं में आने पर लेखन और वाचन में छात्र असमर्थ हो जाते हैं। यह सब छात्र और अध्यापकों को खटकनेवाली समस्या है। इससे हिन्दी के प्रति उनकी रुचि नष्ट हो जाती है।

भाषा शिक्षण में अनुकरण ही मुख्य है। इस दृष्टि से हिन्दी के लिए अवसर बिलकुल कम है। क्लास के बाहर भी मलयालम और अंग्रेज़ी सुनने, बोलने और वाचन करने का अवसर ज़्यादा है। हिन्दी की अपेक्षा इन दोनों के कालांश भी क्लास में दुगुना है। हफ्ते के तीन कालांश में दो घंटे का समय ही हिन्दी सुनने और बोलने को मिलता है। ज़्यादा से ज़्यादा १८० अध्ययन दिन मिलने पर भी साल में ७२ घंटों का समय पर—भाषा हिन्दी पढ़ने को केरल में मिलता है। (१८० × ३/५ × ४०/६० = ७२) इतने थोडे समय में कोई भी अध्यापक हिन्दी का स्तर उठा नहीं सकता। विद्यार्थी ज़्यादा समझ भी नहीं सकते।

साप्ताहिक, माहिक, दैनिक आदि पत्र पत्रिकायें जो यहाँ प्रचलित हैं उनके द्वारा मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेज़ी का भी प्रचार प्रसार होता है। पर हिन्दी का नाम मात्र को भी नहीं। छात्रों को हिन्दी का वातावरण केवल अपने क्लास में हिन्दी के कालांशों में ही प्राप्त है। समाचार पत्रों के विज्ञापन बडे बडे नेताओं के भाषण किसी में हिन्दी की नौबत नहीं आती है। अनुकरण के अवसर कम मिलते हैं। युवजनोत्सव स्कूल का वार्षिकोत्सव आदि में हिन्दी को उचित मान्यता नहीं दी जाती। हिन्दी में नाटक, संगीत, भाषण आदि में प्रतियोगितायें चलायी नहीं जाती।

भाषा शिक्षण में भाषा प्रधान है और विषय गौण। अतः केरल के शिक्षण में हिन्दी को विषय केन्द्रित न बनाकर भाषा केन्द्रित बना दें। पहले साहित्यिक नहीं प्रयोजनमूलक हिन्दी का ही प्रचार हो। बाद में स्वयं आकृष्ट होकर वे ज्ञान, कौशल, (कला) और भावात्मक विकास की ओर बढेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के तीन रूप मिलते हैं। (१) शुद्ध साहित्यिक, (२) उर्दू मिश्रित, और (३) हिन्दुस्तानी। संपर्क भाषा के तौर पर हम हिन्दी का स्वागत करते हैं। पर हिन्दी के नाते व्रज, उर्दू, और अवधी भाषाओं का थोपा जाना हिन्दी के शिक्षण में समस्या उत्पन्न करता है।

पाँचवीं कक्षा के कुछ मौखिक अभ्यास के बाद लेखन और वाचन की क्षमता पाये बिना अधिकतर विद्यार्थी अगली कक्षाओं में, आते हैं। "ऑल प्रमोशन" भी इसका एक बडा दोष है। यों हाई स्कूल में आने पर स्वयं ढह जानेवाली नींव पर हम भाषाई महल की मंजिलें खडा करने का यत्न करते हैं। छात्रों के स्तर या रुचि का ध्यान रखकर सिखा नहीं सकते हैं। पूरे पाठ सिखाने पडते हैं। जिन्हें लिपि तक का ज्ञान नहीं वे कैसे वाचन व लेखन करें।

पाठ्य योजना के अनुसार एक एक क्लास में नियत किताबें समय योजना से मेल नहीं खाती है। अतः कोई भी कुशल अध्यापक जितना ही प्रयत्न करे, सरस और सफल रूप से समझा नहीं सकेगा और एक गणनीय समस्या है पाठ्य पुस्तकों के पाठों का संकलन और विषय। छात्रों का ध्यान आकृष्ट करने योग्य मूल्य, या भाव आज अधिकतर पाठों में नहीं। लेख, कविता आदि छात्रों की अवस्था और भाषाई हैसियत के अनुरूप नहीं। पाठों का क्रम भी सरल से कठिन की ओर नहीं बल्कि उल्टा है।

सिखाते समय कवितायें गद्यात्मक ढंग से प्रस्तुत करने पर हिन्दी के प्रति छात्रों में रुचि उत्पन्न नहीं हो सकती। कंठस्थ करने में विद्यार्थी असफल रह जायेंगे। यह एक समस्या है जिसका मुख्य कारण अध्यापकों के प्रशिक्षण का स्तर ऊँचा उठाने के कार्यक्रमों का अभाव है।

व्याकरण के शिक्षण में अधिकांश शिक्षक निगमनात्मक विधि को अपनाते हैं। यह उचित नहीं। आगमनात्मक विधि ही श्रेष्ठ है। उदाहरण के बाद व्याकरण नियमों को समझाना अच्छा है।

पाठ्य योजना बृहत होने के कारण पूर्व पठित पाठों से छात्रों की क्षमता जितनी बढ गई है, इसकी जाँच या परख करने का अवसर अध्यापक बहुत कम ही निकाल सकते हैं। यह शिक्षण में एक बडी त्रुटि है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान के इस युग में वैज्ञानिक और कानूनी कार्य चलाने केलिए तकनीकी शब्दों की जरूरत है। यह हिन्दी के संबंध में एक समस्या है। पर बाहर की भाषाओं से उन्हें अपनाने में झिझक नहीं होनी चाहिए। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है जिसके दो प्रकार है। (१) मौखिक, (२) लिखित। मौखिक अभिव्यक्ति में ध्वनि, उच्चारण आदि की समस्यायें भी हैं। पर-भाषा के अध्ययन में मातृ-भाषा का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। जैसे कि "ज्ञ" का हिन्दी वाले "ग्य" जैसा उच्चारण करते हैं, जब कि "हम ज + ञ" = ज्ञ ज्ञ बोलते हैं। वैसे ही ष 'ष' ड़ 'ठ' जैसे उच्चारण हिन्दी में नहीं। लिपि और उच्चारण संबंधी ऐसी समस्यायें मातृभाषा के प्रभाव से होती हैं। देश प्रेम भारत-माता जैसे शब्दों में हमें स्वाभाविक ही 'श' और 'त' का पूर्ण उच्चारण आता है। अर्द्ध उच्चारण बर्तनी से आता है।

हिन्दी के शिक्षण में परिनिष्ठित रूप के निर्धारण का अभाव है। हिन्दी मातृभाषियों से बोलने में यह बात हमें कठिनाई पैदा करती है। कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया का बदलना और मलयालम के नपुंसक लिङ्गवाले शब्दों को पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिंग में समझाना आदि भी मलयालम भाषियों की समस्याओं में मुख्य है।

विडम्बना की बात है कि आज-कल नये नये पब्लिक स्कूल खुल रहे हैं। इस से देश में दो तरह के नागरिकों की सृष्टि होगी और अंग्रेज़ी को बढ़ावा मिलेगा। धनी लोग पब्लिक स्कूलों में जाकर अंग्रेज़ी में बड़ा अधिकार प्राप्त करते हैं। उन्हें सरकारी नौकरी में अधि-मान्यता दी जाती है। यह नीति हिन्दी-शिक्षण की बड़ी समस्या है। और एक बात है कि विश्व-विद्यालयों में हिन्दी को अनिवार्य न रखकर स्वैच्छिक विषय रखा गया है।

स्कूलों में भी भाषा के अध्यापकों से स्नातक अध्यापकों का पद ऊँचा रखने की चेष्टा हो रही है। केरल सरकार ने प्रान्तीय भाषा (मलयालम) को हुकुमत की भाषा घोषित किया है। पर आज तक उसकेलिए सफल और सबल सक्रिय यत्न नहीं हुआ है। हिन्दी पर जोर देते हुए भी "ऐ. ए. एस," "ऐ. पी. एस" आदि परीक्षाओं में अंग्रेज़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को मान्यता दी जाती है । ये बात केरल के हिन्दी-शिक्षण में सराहनीय नहीं ।

हिन्दी सीखने और सिखानेवालों को आवश्यक प्रोत्साहन नहीं मिलता। उन्हें एकत्रित होकर हिन्दी-शिक्षण संबंधी समस्याओं पर विचार विमर्श करने का अवसर नहीं मिलता हिन्दी और प्रान्तीय साहित्य संबंधी विषयों में चर्चा, समारोह, शिविर आदि चलाने का प्रबंध शिक्षा के क्षेत्र में आज नहीं। पर अन्य विषयों के लिए ऐसा प्रबंध रहता भी है । अहिन्दी प्रान्तों के हिन्दी अध्यापकों, लेखकों और साहित्यकारों को हिन्दी प्रान्तों में दौरा करने का अवसर अवश्य देना चाहिए ।

परीक्षा में प्रश्न-पत्र अध्यापकों का पंडिताऊपन जाहिर करने का माध्यम न समझना चाहिए । वह छात्रों की हैसियत के मुताबिक उनकी क्षमता की जाँच करने के उद्देश्य से तैयार किया जाना चाहिए। परीक्षक अंक देने में कंजूसी भी न दिखा दें । तब हिन्दी के प्रति छात्रों को रुचि होगी । ❀

अध्यापक, सेन्ट मेरीस हाईस्कूल
मणरकाट पी. ओ
कोट्टयम, केरल

उपन्यास

शकुन्तला

[पूर्व प्रकाशित के आगे]

डा० कृष्णकुमार

तीनों कन्यायें समवयस्का ही प्रतीत होती थीं । उनकी विस्रम्भ-वार्ताओं की मधुर हास्य-ध्वनियों ने और अनुपम रूप-लावण्य ने हठात् दुष्यन्त को अपनी ओर आकृष्ट कर लिया । उसका मन एक अनिर्वचनीय आवेग से भर गया । चारों ओर स्वर्गीय सङ्गीत सा गूंजने लगा और सुगन्धित पुष्पों की वर्षा सी होने लगी । उसे प्रतीत होने लगा कि मानो तपस्विनियों का रूप धारण करके स्वर्ग की अप्सरायें धरातल पर अवतीर्ण हो गई हैं । मन एकाग्र हो गया, शरीर निष्कम्प होकर पैर वहीं स्तब्ध हो गये । मुझको देख कर ये तापस-कन्यायें कहीं घबरा न जायें, यह विचार करके दुष्यन्त वहीं लताओं के झुरमुटों के पीछे छिप कर उनके रूप-सौन्दर्य का रसास्वादन करने लगे ।

ये तीनों कन्यायें यद्यपि समान रूप-लावण्य से सुशोभित और समवयस्का ही थीं, तथापि मध्य में बैठी हुई कन्या का सौन्दर्य सबसे अधिक कान्तिमान् और आकर्षक लगता था । रूप की मानों वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा ही थी। पूर्णिमा के चन्द्र को भी लज्जित करनेवाले रक्ताभ स्वर्णिम कपोल, लाल कमल की पंखुड़ियों से भी कोमल चंचल फड़कते होठ, नीले कमलों को भी लजानेवाली कान्तिमती बड़ी बड़ी आकर्षक आँखें, आँखों के ऊपर नन्हें, नन्हें श्यामल वर्ण के धनुराकार भवों की पंक्तियाँ गोल लंबी परन्तु जरा सी नुकीली नासिका और चन्द्रकला के समान चौड़ा उज्ज्वल मस्तक, केशों के बन्धे जूड़े मे से एक लम्बी लट इस गौर वर्ण मस्तक पर मचलती हुई कृष्ण-रेखा सी सुशोभित थी। ऐसा उज्ज्वल कान्तिमान् मुख दुष्यन्त को दृष्टि में पहले कभी नहीं आया था। उसकी तन्वा देहयष्टि मानों ताजे सुगन्धित यौवनरूप पुष्पों से सजी पारिजात तरु की एक शाखा ही थी।

तीनों कन्याओं ने तपोवन के अनुरूप वल्कल-वस्त्र धारण कर रखे थे। तथापि बीच वाली कन्या की शोभा कुछ और ही थी। वह जैसे शिव के लिये तपस्या में रत तपोवेशधारिणी पार्वती उमा ही थी। उसने कटि के ऊपर सुशोभित पयोधरों को वल्कल के उत्तरीय में सम्भाल कर, गांठ की डोरी को कटि में ही लपेट कर पीछे की ओर बांध लिया था। उत्तरीय के ऊपर से किनारों से झांकते हुये पुष्प-गुच्छों के समान समुन्नत पयोधर मानो कह रहे थे कि इस उच्छृङ्खल यौवन को बांधे रखने का प्रयास व्यर्थ है। कटि से लेकर जघनों को आवृत करता हुआ वल्कल का ही अधोवस्त्र घुटनों से कुछ नीचे तक लटक रहा था। उसके कुछ तन्तु और भी नीचे तक लटक कर तपे स्वर्ण की सी आभा वाली गौर पिण्डलियों का चुम्बन कर रहे थे। इनके मध्य में से ये पुष्ट पिण्डलियां अग्नि शिखा के समान चमक-चमक जाती थीं। कन्या ने अपने सुन-हरे-कृष्ण केशों को जूड़े में बांध कर सिर के पीछे पार्श्व में स्थापित करके उसके चारों ओर सुग कुन्द सुमनों की मालायें लपेट ली थीं।

दायीं ओर बैठी हुई कन्या ने मध्य में बैठी कन्या की कटि में कोहनी का हल्का सा प्रहार करके मुस्करा कर कहा —

"शकुन्तले! आओ। उठो। विलम्ब हो रहा है। आकाश में सूर्य अब अस्ताचल की ओर उन्मुख है। दिन भर की तीव्र गर्मी से सन्तप्त जल के प्यासे ये वृक्ष रूप और लतायें अपनी कोमल शाखाओं को हिला कर हमको पुकार रहे हैं।"

अहो! यही महर्षि कण्व की पुत्री शकुन्तला है? दुष्यन्त का सारा शरीर आवेग से सिहर उठा। वे उस तपस्विनी बाला को एकाग्र दृष्टि से देखते हुये मानों नेत्रों से ही पी जाना चाहते थे।

शकुन्तला नाम की वह तपस्विनी बाला कलश को कटि पर सम्भाल कर उठ कर खड़ी हो गई। उसके साथ ही उसकी दोनों सखियाँ भी खड़ी हो गईं। इनमें दायीं ओर की कन्या का नाम प्रियंवदा और बायीं ओर की कन्या का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम अनसूया था। शकुन्तला ने जैसे दोनों पर एक साथ दृष्टि-निक्षेप करके कहा—

"प्रियंवदे! अनसूये! आओ। अब इन वृक्षों और लताओं को जल पिलाकर इसकी प्यास बुझा दें।"

तीनों कन्यायें अपने शरीर और बल के अनुरूप कलशों को कटि पर रखे हुये परस्पर वार्ता करती, हंसती और छेड़-खानी करती हुई वाटिका को सींचने लगीं। अब उनमें इस प्रकार वार्तालाप होने लगा—

शकुन्तला—"प्रियंवदे! देखो। यह केसर का वृक्ष अपनी पल्लव रूप अंगुलियों को हिला हिलाकर जैसे मुझको पुकार रहा है। चलूं। पहले इसी को जल पिला कर अनुगृहीत कर दूं।"

प्रियंवदा—"शकुन्तले! अवश्य जाओ। अच्छा, कुछ समय के लिये जरा इस वृक्ष से सट कर तो खड़ी हो जाओ।'

शकुन्तला—'(आंखें तिरछी करके) क्यों खड़ी हो जाऊँ?"

प्रियंवदा—क्योंकि इससे ऐसा प्रतीत होगा कि प्रियतम रूप तरु के साथ उसकी प्रियतमा रूप वल्लरी सहारा लिये खड़ा है।"

शकुन्तला—'इसी से तो तुम प्रिय बोलनेवाली प्रियंवदा कहलाती हो।"

इस प्रकार तीनों सखियाँ बतियाती, हंसती, खिलखिलाती तपोवन की वाटिका की वनस्पतियों को एक-एक करके सींचने लगीं। जिस वनस्पति के भी वे समीप पहुँचती, उसकी पतियाँ और शाखायें हिल-हिल कर मानो उनका स्वागत करतीं और उनके हारा स्तनसदृश कलशों से उडेले गये दुग्धसदृश जल का पान करके तृप्त हो जातीं। कन्याओं के आगे बढ जाने पर फिर और निष्कम्प सी होकर वे मानो वियोग के दुःख को प्रकट करने लगतीं।

इसी समय अनसूया की दृष्टि दाहिनी ओर आम्र-वृक्ष को आलिङ्गित किये एक लता पर पड़ी। उस ओर सङ्केत करके उसने शकुन्तला से कुछ कहा तथा तीनों सखियों में पुनः चुहल होने लगी—

अनसूया—"प्रिय सखि! देखो। तुम इस वनज्योत्स्ना नाम की मल्लिका को तो भूले ही जा रही हो। तुमने बड़े यत्न और स्नेह से इसे सन्तान के समान पाला है, पयःपान करके सींच कर बड़ा किया है। इसको छोड़ कर आगे क्यों बढो जा रही हो?',

शकुन्तला—"अनसूये! यह तो मेरी अपनी सुता ही है। यदि इसको भूल जाऊँगी तो अपने को भी भूलनेवाली होऊँगी। (समीप खड़ी होकर) अनसूये! पुष्पों के गुच्छों से लदी यह लता हमारे मनों को मोहित किये ले रही है। आम्र-वृक्ष का आलिङ्गन प्राप्त करके मानो स्वयं भी मुग्ध है। ये सुन्दर खेत पुष्प आम के पल्लवों और छोटे-छोटे कच्चे फलों के चारों ओर इस प्रकार छा गये हैं, जैसे कि कोई प्रेमिका अपने प्रेमी को मनोरम यौवन से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आच्छादित कर ले । इस लता ने तो आम्र-वृक्ष का पति के रूप में ही वरण कर लिया है। श्वेत वर्ण के सुगन्धित पुष्प-गुच्छ रूप पयोधरों को प्रियतम के स्कन्ध से सटाये यह आलिङ्गन के परम सुख का अनुभव कर रही है ।"

प्रियंवदा— "अनसूये ! क्या तू जानती है कि शकुन्तला इस वनज्योत्स्ना और आम्र-वृक्ष को इतना अधिक क्यों देखती है ?"

अनसूया—"नहीं। मैं तो नहीं जानती।"

प्रियंवदा—"इन दोनों को देखकर यह सोचती रहती है कि जिस प्रकार इस वनज्योत्स्ना ने अपने अनुरूप वर को प्राप्त कर लिया है, उसी प्रकार मैं भी अपने अनुरूप वर को प्राप्त कर लूँ ।"

शकुन्तला— (प्रियंवदा की ओर तिरछी दृष्टि डाल कर) "चल हट । यह तो तेरे अपने मन की अभिलाषा होगी ।"

शकुन्तला ने झुक कर वनज्योत्स्ना को जल से सींचना शुरु किया । अचानक ही उसका हाथ एक पुष्पगुच्छ पर जा पड़ा। फूलों में छिपा एक भौंरा मधु-रस का पान कर रहा था । शकुन्तला के हाथ का आघात पाकर वह बाहर निकल आया और उसके मुख पर मंडराने लगा । वह कभी तो उसकी आँख पर आक्रमण करता, कभी माथे पर बैठ जाता, कभी कपोल पर मंडराता, कभी कान में गुंजार करता और कभी होंठ पर डंक मारने का प्रयत्न करता ।

भौंरे के इस उपद्रव से शकुन्तला बहुत घबरा गई । कलश को एक ओर पटक कर वह वेग से हाथ पैर पटकने लगी । कभी वह इधर को भागती और कभी उधर को । परन्तु वह जिधर भी भागती, दुष्ट भौंरा भी उधर को ही उसके पीछे उड़कर वहीं पहुँच जाता । घबरा कर वह सखियों को पुकारने लगी—

"अनसूये ! प्रियंवदे ! ओ मेरी सखियो ! देखो, यह दुष्ट भौंरा मुझे काटे जा रहा है मेरे पीछे पड़ गया है और किसी प्रकार छोड़ता ही नहीं है। इस दुष्ट से मेरी रक्षा करो, रक्षा करो ।

इस दृश्य को देखकर अनुसूया और प्रियंवदा को भी आनन्द आ रहा था । वे हसने लगी । प्रियंवदा ने मुस्करा कर कहा—

हम तुम्हारी रक्षा करनेवाली कौन होती हैं । प्रजाजनों की रक्षा करना तो राजा का कर्तव्य है । वही दुष्टों से सज्जनों को बचाता है । इस देश का राजा दुष्यन्त है । वही तुम्हारी रक्षा करेगा । उसी को तुम पुकारो ।

लताओं के झुरमुटों के पीछे छिपे हुये दुष्यन्त यह सारा दृश्य देख रहे थे। शकुन्तला के रूप और यौवन ने उनके हृदय पर अधिकार जमा लिया था । उस की इन चेष्टाओं ने उनको और भी अधिक विह्वल करके विमोहित कर लिया । किसी प्रकार इन तापस-कन्याओं के समीप पहुँचा जाये, ऐसा अवसर तो वे खोज ही रहे थे । अब उनको अवसर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल गया। झुरमुट में से बाहर निकल कर आगे बढ़कर उन्होंने कहा —

"हे तपस्वि-कन्याओ! तुम डरो नहीं। इस समय पृथ्वी पर पौरव वंशी राजा दुष्यन्त का शासन है। किसी का साहस नहीं हो सकता, जो तपोवन में आकर यहां की बालिकाओं पर दृष्टि भी डाल सके। यह कौन है, जो इस प्रकार की धृष्टता करने का साहस कर रहा है?"

दुष्यन्त की ओर देख कर वे तीनों तापस-बालायें कुछ सकपका सी गईं। इस समय वह भौंरा भी किसी दूसरी ओर उड़ गया। लज्जित सी शकुन्तला दूसरी ओर मुख मोड़कर और शरीर को झुका कर पैर के अंगूठे से भूमि को कुरेदने लगी। घबराहट से हृदय-गति बढ़ जाने पर भी उसने उत्सुकतावश दृष्टि को तिरछा करके राजा की ओर दृष्टिपात किया। तदनन्तर पुनः मुख को मोड़ लिया। तभी परिहासप्रिय प्रियंवदा ने कहा—

"आर्य! यह हमारी सखी शकुन्तला है और कुलपति कण्व की कन्या है। वनजोत्स्ना को जल पिलाते हुये वहां से निकल कर एक दुष्ट भौंरे ने इस पर आक्रमण कर दिया। आप इसकी रक्षा करें।"

शकुन्तला ने दृष्टि को तिरछा करके प्रियंवदा की ओर गुस्से से देखा। परन्तु वह उसी दुष्ट भाव से मुस्कराती रही। तभी अनसूया ने दुष्यन्त से कहा —

आर्य! कोई विशेष बात नहीं है। हमारी यह सखी शकुन्तला वनज्योत्स्ना नाम की इस मल्लिका लता को सींच रही थी। वहाँ फूलों में एक भौंरा छिपा रस-पान कर रहा था। उसने वहाँ से निकल कर इस पर आक्रमण कर दिया। उसी से यह घबरा गई। आपको देखकर वह दुष्ट कहीं चला गया है।

शकुन्तला के सौन्दर्य को देखकर दुष्यन्त का हृदय उनके अधिकार में नहीं रह गया था। वे बार-बार उसकी ओर दृष्टि डाल लेते थे। दुष्यन्त की तेजस्वी प्रभावशालिनी आकृति से वे तीनों कन्यायें भी प्रभावित हो रही थीं। परिचय जानने की इच्छा से अनसूया ने पूछा—

"आर्य! आकृति से आप अत्यधिक तेजस्वी, प्रभावशाली और शिष्ट हैं तथा किसी राजवंश के दीपक प्रतीत होते हैं। आपकी इस मधुरवाणी ने हमारे हृदयों के भय को दूर कर दिया है और हम प्रसन्न हैं। तथापि इस समय आपको यहाँ आया देखकर हमको कुतूहल भी है। यदि कोई कष्ट न हो तो यह बताने का कष्ट करें कि आपने किस राजर्षि वंश को अलङ्कृत किया है? आपने अपने विरह से किस प्रदेश की प्रजा को उत्कण्ठित किया है और नागरिक सुविधाओं से रहित इस तपोभूमि में आने का कष्ट किस कारण किया है?"

दुष्यन्त के हृदय की गति तीव्र हो गई। कहीं वे तापस-कन्यायें घबरा न जायें और सङ्कोच करें, यह विचार कर उसने अपना यथार्थ परिचय देना उचित नहीं समझा। तब वे स्वतन्त्रता पूर्वक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्ता नहीं कर सकेगी। दुष्यन्त ने कहा —

"भद्रे! इस कुरु देश के सम्राट् पोरववंशी दुष्यन्त हैं। राज्य में धार्मिक क्रियाओं की देख भाल केलिये उन्होंने मुझको धर्माधिकारी के पद पर नियुक्त किया है। तपोवनों में तपस्वियों की धार्मिक क्रियायें निर्विघ्न पूरी हो रही हैं, विद्याध्ययन में छात्रों को कोई बाधा तो नहीं होती, इत्यादि बातों को जानने के लिये मैं यहाँ तपोवन में आया हूँ। तपोवन को देख कर और कुलपति कण्व को प्रणाम करके मैं यहाँ से वापिस चला जाऊँगा और साम्राट् को यहाँ का समाचार दूँगा।"

दुष्यन्त को उच्च पदस्थ राजकर्मचारी जानकर प्रियंवदा और अनसूया ने उसको आदर से प्रणाम किया। परन्तु लज्जा और घबराहट से शकुन्तला के मुख से एक शब्द भी नहीं निकल सका? यह स्तब्ध सी सिर झुकाये मुख मोड़े खड़ी रही। उसका दृश्य अनिर्वचनीय आवेग से भरता जा रहा था। वह दाहिने अंगूठे से भूमि को कुरेदते हुये चुप ही रही।

तब अनसूया ने कहा — "आर्य! कुलपति कण्व तो इस समय यहाँ आश्रम में नहीं हैं। वे एक विशिष्ट कार्य से कुछ दिनों के लिये बाहर गये हुये हैं। कुछ समय बाद वापिस आने की सम्भावना है। हो सकता है कि कल ही आ जावें। यह सामने ही कुलपति की कुटीर है। यह शकुन्तला कुलपति की ही पुत्री है। आश्रम आनेवाले अतिथियों के सत्कार का भार वे इस शकुन्तला को ही सौंप गये हैं। आप को कृपा होगी कि इस आश्रम के आतिथ्य को स्वीकार करें। सूर्य के पश्चिम क्षितिज की ओर प्रयाण करने पर भी अभी अन्धकार होने में बहुत देर है। आइये, कुछ समय इस सप्तपर्ण वृक्ष की छाया में वेदी पर बैठते हैं।"

अनसूया के कथन को स्वीकार करके दुष्यन्त सप्तपर्ण की वेदी पर बैठ गये। घने वृक्ष की छाया ने उन को शीतलता प्रदान की। नदी की ओर से बहकर आश्रम की वनस्पतियों के किसलयों एवं पुष्पों का स्पर्श करके आती सुवासित शीतल वातने उनकी सारी क्लान्ति का हरण कर लिया। वे तापस-बालायें भी उनके समीप बैठ गईं।

इसी समय प्रियंवदा ने शोख भाव से मुसकराते हुये शकुन्तला से कहा —

मेरी प्रिय सखि! अतिथि-सत्कार का भार तुमको ही सौंप कर कुलपति बाहर गये हैं। जाओ हमारे कलशों में जल तो है ही। इसी से आदरणीय अतिथि के हाथ-पैर धुला देंगे।

शकुन्तला उठने को ज्यों ही उद्यत हुई दुष्यन्त को यह अच्छा नहीं लगा। उनका हृदय तो उसके रूप-सौन्दर्य में डूब गया था। वे क्षण भर के लिये भी उसका जाना सहन नहीं कर पा रहे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने कहा —

"भद्रे ! आपकी मधुर वाणियों ने ही मेरा सत्कार कर दिया है। सप्तपर्ण की यह शीतल छाया और नदी के जलकणों को वहन करनेवाला पवन ही हमारा और अधिक सत्कार कर रहा है। यहाँ कुछ समय आपके साथ वार्ता-विनोद करते हुये हमारी थकावट दूर हो जायगी। इस गरमी से भरे दिन में वृक्षों को सींचती हुई आप भी थक गई होंगी।"

वे तीनों कन्यायें अब दुष्यन्त के साथ वार्तालाप करने लगीं। परन्तु शकुन्तला के मुख से एक शब्द भी निकल नहीं पा रहा था। वह नीचे को मुख किये बैठी थी। इसका हृदय उद्विग्न सा होने लगा और एक अनिर्वचनीय पीडा मन को व्यथित करने लगी। वह बार-बार मुख को ऊपर उठा कर एक तिरछी दृष्टि दुष्यन्त के मुख की ओर डाल लेता और दुष्यन्त को अपनी ओर देखते पाकर दृष्टि नीचे झुका लेती। दुष्यन्त भी बार-बार शकुन्तला की ओर देख रहा था और दोनों की दृष्टियाँ इस प्रकार टकरा टकरा जाती थीं।

दुष्यन्त और शकुन्तला के इन भावों को प्रियंवदा जैसे पढ रही थी। उसे परिहास सूझ रहा था। वह शकुन्तला की ओर तिरछी दृष्टि डाल कर दुष्यन्त से बोली—

आर्य ! आपने हमारा कुछ भी आतिथ्य स्वीकार नहीं किया। कुलपति कण्व यहाँ नहीं हैं। वे होते तो आदरणीय अतिथि का ठीक प्रकार से सत्कार करते तथा अपने जीवन के सर्वस्व को भी अतिथि के लिये अर्पित कर देते।

प्रियंवदा के कथन के अभिप्राम को समझ कर शकुन्तला का मुख आरक्त हो गया। मस्तक पर पसीने की बूँदें झलक आईं और शरीर कांपने सा लगा। हृदय की गति तीव्र हो गई। वह मुख से तो कुछ बोल नहीं सकी, परन्तु उसने प्रियंवदा की भुजा में जोर से एक चिकोटी काट ली।

लोक में प्रसिद्ध था की कुलपति कण्व ने विवाह नहीं किया था। वे ब्रह्मचारीथे तथा आजन्म ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने की उनकी प्रतिज्ञा थी। शकुन्तला उन कुलपति कण्व का पुत्री है, यह जान कर उसको अत्यधिक विस्मय हो रहा था। वे शकुन्तला की ओर संकेत करके उसकी सखियों से पूछने लगे—

दुष्यन्त— भद्रे ! हमको आपकी सखी के विषय में कुछ कुतूहल है। यदि आपकी अनुमति हो और कोई रहस्य न हो तो कुछ पूछना चाहते हैं।

प्रियंवदा— आर्य ! यह तो आपका अनुग्रह ही है। आप के कुतूहल को दूर करने में हमें प्रसन्नता होगी।

दुष्यन्त —भद्रे ! लोक में प्रसिद्ध है कि कुलपति कण्व ने विवाह नहीं किया है तथा जीवन भर ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने की प्रतिज्ञा की है। तब यह आपकी सखी किस प्रकार उन कुलपति की पुत्री है ?

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी को केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में उचित स्थान दिलाने केलिए कर्मसमिति क्रियाशील

केरल के पाठ्यक्रम में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने केलिए आवश्यक कदम उठाने के उद्देश्य से गठित कर्मसमिति ने केरल के मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री और शिक्षा विभाग के अधिकारियों से मिल कर मांग की है कि सरकार की स्टीयरिंग कमिटी ने हिन्दी पाठ्यक्रम संबंधी जो सुझाव दिये है उन्हें स्वीकृत न किया जाये और पाठ्यक्रम में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने केलिए आवश्यक कदम उठायें ।

कर्मसमिति ने इस संबंध में एक ज्ञापन समर्पित किया है ।

कर्मसमिति की रायें एवं सिफ़ारिशें

१. केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में समयोचित सुधार लाने में केरल सरकार जो लगन और तत्परता प्रदर्शित कर रही है उसका हार्दिक स्वागत और अभिनन्दन करते हैं ।

२. केरल में करीब १२००० स्कूल हैं जिनमें करीब ५८०० निम्न प्राथमिक विद्यालय हैं, २७०० उच्च प्राथमिक विद्यालय हैं और २२०० माध्यमिक विद्यालय हैं । प्रतिवर्ष यहाँ की एस. एस. एल. सी. परीक्षा में पाँच लाख परीक्षार्थी बैठते हैं । केरल के कुल विद्यार्थियों की संख्या ५७ लाख के करीब है । इतने अधिक विद्यालयों और विद्यार्थियों से संबंधित नयी योजनायें बडे सोच-विचार के बाद ही कार्यान्वित की जानी चाहिए ।

३. लेकिन पाठ्यक्रम सुधार केलिए गठित संचालन समिति की उपसमिति द्वारा तैयार की गयी रूप रेखा से विदित होता है कि संचालन समिति का गठन, उसकी उपसमिति का गठन तथा नये पाठ्यक्रम की रूपरेखा की तैयारी बडी जल्दी में की गयी है । ४–४–१९८३ को स्टीयरिंग कमिटी की पहली बैठक हुई, २०–४–१९८३ को उपसमिति की बैठक हुई और उपसमिति के आदेशानुसार उपसमिति के एक सदस्य ने कुछ ही दिनों में रूपरेखा तैयार की । रूपरेखा में ही बताया गया है कि नया पाठ्यक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२१ वीं सदी केलिए अनुयोग्य हो और कम से कम २० वर्ष तक विधिमान्य रहे। ऐसी हालत में यह रूपरेखा यथार्थ गंभीरता के साथ आवश्यक समय लेकर तैयार की जानी थी। चूँकि रूपरेखा बडी जल्दी तैयार की गयी इसलिए इस में कुछ त्रुटियाँ आ गयी हैं। भाषाध्यापन संबंधी विशेष कर हिन्दी अध्यापन के संबंधी सिफ़ारिशों में जो त्रुटियाँ आ गयी हैं वे निम्नलिखित हैं :—

(क) रूपरेखा में बताया गया है ईश्वरभाई पटेल कमिटी की रिपोर्ट पर प्रान्तीय सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की थी। बात ऐसी नहीं। १९७७ में तैयार की गयी उक्त रिपोर्ट का विशद अध्ययन करने के बाद प्रान्तीय सरकार ने उस पर शिक्षाविदों के विचार जानने केलिए प्रान्तीय शिक्षा संस्थान के तत्वावधान में १९७९ मार्च २७ से २९ तक तिरुवनन्तपुरम के वी. जे. टी हाल में एक त्रिदिवसीय विचारगोष्ठी आयोजित की थी। गोष्ठी का उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री ने किया था और अध्यक्षता तत्कालीन शिक्षामंत्री ने की थी। भाषाध्यापन के संबंध में और भाषाध्यापन केलिए आवश्यक समय के संबंध में सुदीर्घ चर्चायें करने के उपरान्त गोष्ठी ने पाठ्यक्रम के संबंध में जो सिफ़ारिशें पेश कीं उन में प्रथम सिफ़ारिश यों था —

सरकार की भाषाध्यापन संबंधी वर्तमान नीति जारी रखी जाये और विविध भाषाओं को दिये जा रहे आपेक्षिक प्रमुखता ज्यों की त्यों रहे।

(ख) कहना पडता है कि पटेल कमिटी की सिफ़ारिशों पर सरकार द्वारा लिये गये निर्णयों के पीछे जो भावना और तर्क रहे उन्हें बिलकुल समझे बिना और व्यावहारिक कठिनाइयों की ओर ध्यान दिये बिना ही यह रूपरेखा बनायी गयी है।

(ग) हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्कभाषा इन तीनों स्तरों पर प्राप्त प्रमुखता हर स्तर पर मान्य हो चुकी है। सरकारों और सभी माननीय नेताओं ने जिनमें वर्तमान शासकवृन्द भी शामिल है – हिन्दी की इस प्रमुखता को स्वीकार किया है। संविधान के अनुसार भारत की राजभाषा हिन्दी है। जो भी मानी हुई बात है कि भारत की संपर्क भाषा हिन्दी है। कोठारी आयोग और अन्य विशेषज्ञ समितियों ने भी इस बात पर ज़ोर दिया है। किंतु रूपरेखा में अंग्रेजी को संपर्क भाषा और हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहा गया है। यह तथ्यों का वक्रीकरण है।

(घ) रूपरेखा में बताया गया है कि हिन्दी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित होने केलिए सातवीं कक्षा तक प्रतीक्षा करनी होगी। हम मानते हैं कि यह कथन हिन्दी के प्रति पूर्ण उपेक्षा का द्योतक है। केरल की जनता ने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया है। पीढी दर पीढी यहाँ की जनता हिन्दी सीखती आयी है। पाँचवीं कक्षा से हिन्दी सीखने में विद्यार्थियों को कोई कठिनाई महसूस नहीं हुई है, प्रत्युत यह उनकेलिए अत्यंत लाभदायक है। अन्य प्रान्तों में विशेषकर उत्तर भारतीय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रान्तों में विविध क्षेत्रों में सेवारत मलयालियों को स्कूली स्तर पर सीखी हिन्दी बहुत काम आ रही है। रूपरेखा में सुझाया गया हिन्दी पाठ्यक्रम मलयालियों को उक्त प्रयोजन से वंचित रखेगा।

(ङ) सातवीं कक्षा से हिन्दी अध्यापन आरंभ करने के फलस्वरूप ऐसे विद्यालयों में जो केवल उच्च प्राथमिक विद्यालयों के रूप में कार्यरत है, हिन्दी अध्यापक और अध्यापन नहीं के बराबर रह जायेगा। दसवीं कक्षा तक का वर्तमान हिन्दी पाठ्यक्रम ही अत्यंत लघु है नयी व्यवस्था के परिणामस्वरूप हिन्दी के प्रारंभिक पाठ आठवीं कक्षा में शुरु करने होंगे। इसी कक्षा में तीन नये वैकल्पिक विषय भी पढाये जाने का संकल्प है। इससे विद्यार्थियों पर बडा बोझ पड जायेगा। यदि पाँचवीं कक्षा से अब जो लघु पाठ्यक्रम हिन्दी केलिए लागू है उसे जारी रहने दें तो आठवीं कक्षा तक पहुँचते पहुँचते माध्यमिक स्कूल के हिन्दी पाठ्यक्रम का आरंभ करने केलिए आवश्यक क्षमता विद्यार्थी प्राप्त कर सकते हैं।

(च) रूपरेखा की सिपारिश है कि भारतीय इतिहास के द्वारा भारतीय संस्कृति का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाये। हिन्दी की पृष्ठभूमि भारत की सामासिक संस्कृति की पृष्ठभूमि ही है।

(छ) वर्तमान पाठ्यक्रमों के अनुसार विद्यार्थी चौथी कक्षा से अंग्रेजी और पांचवीं कक्षा से हिन्दी पढते हैं। इससे उन्हें कोई कठिनाई महसूस होती हो इस का कोई प्रमाण नहीं। शिशुमनोवैज्ञानिकों का कथन है कि इस बरस के पहले की अवस्था में नयी भाषायें सीखने के लिए सबसे अधिक अनुयोग्य है। उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय विद्यालयों में प्राथमिक स्तर पर ही तीन भाषायें सिखायी जाती हैं। अंग्रेजी माध्यम में कई कठिन विषयों को अंग्रेजी में सिखाने का दुर्वह पाठ्यक्रम लागू है। रूपरेखा में इस बात का कोई जिक्र नहीं है कि इससे विद्यार्थियों का कोई कठिनाई अनुभव हो रही है। इन सब पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने की ग्रहणक्षमता रखनेवाले विद्यार्थियों केलिए पाँचवीं कक्षा से आरंभ हो रहे लघुतम हिन्दी पाठ्यक्रम को कठिन मानना तर्क संगत नहीं प्रतीत होता।

(ज) हाईस्कूल स्तर पर आठवीं से दसवीं कक्षा तक मुख्य विषयों और वैकल्पिक विषयों के लिए कालांशों का जो अनुपात रहेगा उस का कोई जिक्र रूपरेखा में नहीं किया गया है। इसका भी जिक्र नहीं मिलता कि मुख्य विषयों में सम्मिलित हिन्दी के अध्यापन केलिए कितने कालांश रहेंगे। हमारी आशंका है कि इस अव्यक्तता में हिन्दी के अहित की संभावना है।

(झ) कार्यानुभव के विषयों में अंग्रेजी और मलयालम का टंकण और आशुलिपि सम्मिलित है। हमारी राय है कि केन्द्र सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं में नौकरी पाने की संभावनाओं को ध्यान में रखकर हिन्दी टंकण और आशुलिपि को भी इन विषयों में शामिल किया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ट) रूपरेखा में की गयी है कि कार्यानुभव के विषयों केलिए आबंटित आधे आधे घंटे के दस कालांशों में से तीन कालांश हिन्दी को दिये जा सकते हैं। हिन्दी को पाठ्य विषयों में अंतिम स्थान दिया गया है। भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में अपनायी गयी हिन्दी के प्रति दिखायी गयी इस उपेक्षा का हम सशक्त विरोध करते हैं। हम यहाँ तक आशंका करते हैं कि यह नया कदम हिन्दी को केरल के पाठ्यक्रम से उखाड देगा। हमारी राय है कि यह रवैया छोड दे और पाठ्यभाषाओं में द्वितीय स्थान हिन्दी को दे दें।

(ठ) हम मानते हैं कि मातृभाषा के अलावा पढायी जानेवाली भाषाओं में हिन्दी का अध्यापन ही पहले आरंभ हो। वर्णमाला, शब्दभण्डार और वाक्य संरचना में मलयालम और हिन्दी समान है। मलयालम और हिन्दी की सांस्कृतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमियाँ भी समान हैं। केरलीय छात्रों केलिए हिन्दी एक स्वदेशी भाषा है। इन कारणों से एक विदेशी भाषा अंग्रेजी का अध्ययन आरंभ करने के पहले ही स्वदेशी भाषा हिन्दी का अध्यापन आरंभ करना ही शिशुमानस केलिए अधिक अनुयोग्य और मातृभाषा अध्ययन के लिए अधिक सहायक होगा।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर हम निम्नलिखित सुझाव पेश करते हैं :—

(१) मातृभाषा के अध्ययन केलिए यथार्थ स्थान दिया जाये।

(२) रूपरेखा में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित हो कि हिन्दी भारत की राजभाषा एवं संपर्क भाषा है।

(३) पाठ्यभाषाओं में दूसरा स्थान हिन्दी को दिया जाये।

(४) पाँचवीं कक्षा से हिन्दी का अध्यापन आरंभ करने की वर्तमान रीति जारी रखी जाये।

(५) हिन्दी अध्यापन केलिए सप्ताह में पाँच कालांश निर्धारित किये जायें।

(६) कार्यानुभव के विषयों की सूची में माध्यमिक स्तर पर हिन्दी टंकण और आशुलिपि भी शामिल किये जाये।

कर्मसमिति के सदस्य हैं

डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
भूतपूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
कोचिन विश्वविद्यालय (अध्यक्ष)

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम (संयोजक)

प्रो० एम. जनार्दनन पिल्लै
कोषाध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा,
तिरुवनन्तपुरम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० पी. जी. वासुदेव
हिन्दी विद्यापीठ, तिरुवनन्तपुरम

प्रो० एम. के सुकुमारन नायर
केरल कॉलेज टीचर्स फार्म, कोट्टयम

डा० वी. एन. फिलिप
केरल कालेज टीचर्स फार्म, कोट्टयम

श्री० के. के. भास्करन पिल्लै
केरल पौरस्त्य भाषाध्यापक संघ,
मावेलिक्करा

श्री० विळनिलम मत्ताई
केरल पौरस्त्य भाषाध्यापक संघ
मावेलिक्करा

डा० टी. एन. विश्वंभरन
केरल हिन्दी साहित्य मंडल
एरणाकुलम

श्री० वी. डी. कृष्णन नंपियार
केरल हिन्दी साहित्य मंडल
एरणाकुलम

श्री० पी. पी. अप्पु
विशेष अधिकारी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
(केरल)
एरणाकुलम

श्री० एम. कृष्णन नायर
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
(केरल)
एरणाकुलम

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै
संपादक, केरल ज्योति
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम

श्री० के. केशवन नायर
शिक्षक, हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान
आगरा

★

(पृष्ठ ४३ से आगे)

प्रियंवदा— आर्य ! आपका कथन सत्य है। आदरणीय कुलपति कण्व नैष्ठिक ब्रह्मचारी हैं। यह हमारी सखी शकुन्तला उनकी और सन्तान न होकर पालिता पुत्री है। परन्तु वे इसको अपनी औरस सन्तान भी अधिक स्नेह करते हैं।

दुष्यन्त— यह कुलपति की पालिता सन्तान किस प्रकार है ?

प्रियंवदा— आर्य ! यह एक लम्बा वृत्तान्त है। तथापि यदि आपको जानने का बहुत कुतूहल है, तो संक्षेप से सुनाये देती हूँ।

इस वार्तालाप के अनन्तर प्रियंवदा ने शकुन्तला के वृत्तान्त को सुनाना प्रारम्भ कर दिया। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वत्ता का आदर

राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै को शाटबंर पहना कर सम्मानित कर रहे है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

KERAL JYOTI

Vol. XVIII-No.4

July 1983

Price : Re. 1.00

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

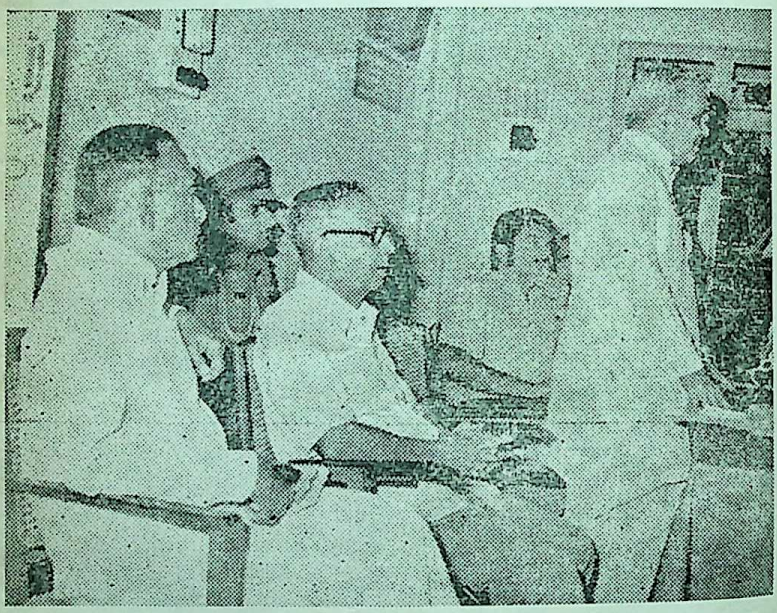

उल्लूर स्मारक ग्रंथालय, तिरुवनन्तपुरम के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं केरल के राज्यपाल श्री० पी. रामचन्द्रन। बैठे हैं (बाएँ से) श्री० सी. एस. नीलकण्ठन नायर, डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै और श्री. बाबुपाल, आई. ए. एस.

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित

मुद्रक : राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक : के. जी बालकृष्ण पिल्लै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

19-8-83

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० हरकिशन लाल भगत श्री० के. कृष्णनकुट्टी नायर, बापुजी स्मारक हिन्दी विद्यालय, आट्टिंगल को केरल हिन्दी प्रचार सभा के १९८२-८३ के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी प्रचारक पुरस्कार से सम्मानित कर रहे हैं। एक हज़ार रुपये का नकद पुरस्कार भी दिया गया।

19-8-83

FREE

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार:-"जय हिन्दी"
फोन: ६१३७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

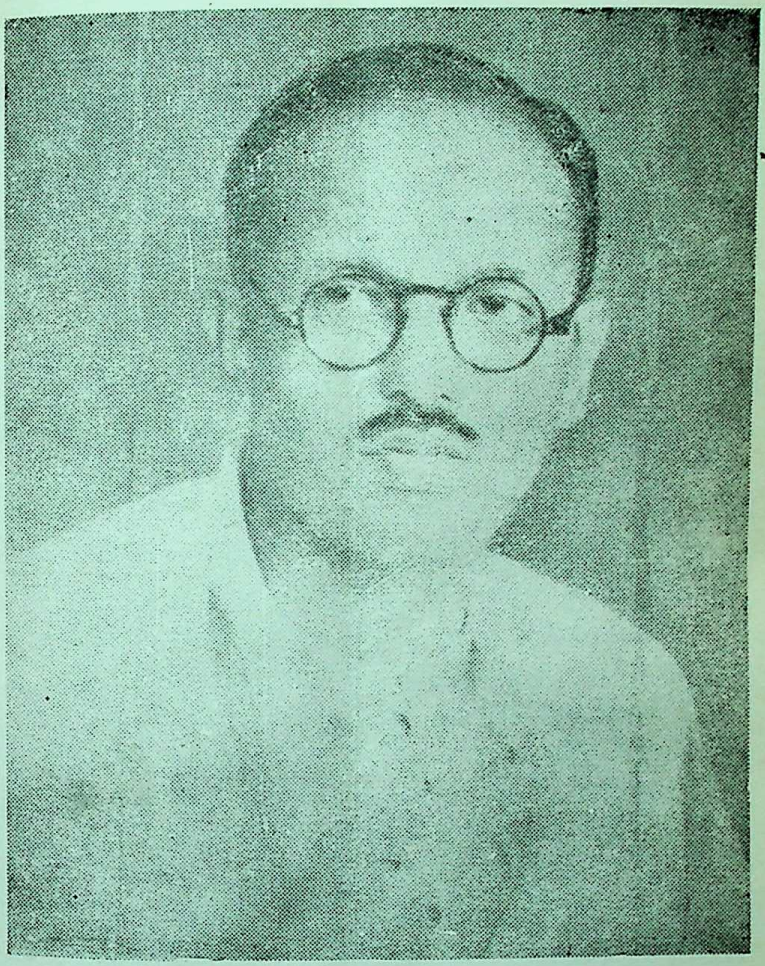

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै

इक्कीसवां मृत्यु दिवस—२५-७-१९८३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १८
दल : ५
अगस्त १९८३

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

हिन्दी की समस्या देशीय स्तर पर हल करें

केरल हिन्दी प्रचार सभा के स्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै की इक्कीसवीं मृत्यु-तिथि के अवसर पर २५-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित सार्वजनिक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए केरल के भूतपूर्व मंत्री और केरल विधान सभा के वर्तमान अध्यक्ष श्री० वक्कम पुरुषोत्तमन ने स्व० पिल्लै जी की पुण्य स्मृति में श्रद्धाँजलि अर्पित करते हुए देशीय स्तर पर हिन्दी की वर्तमान स्थिति का अवलोकन किया। आपने इस बात पर बडी चिंता व्यक्त की कि हिन्दी के प्रचार और प्रसार में देश के विभिन्न हिन्दीतर प्रान्तों में समान रुचि और श्रद्धा नहीं मिलती। किसी किसी प्रान्त ने त्रिभाषा सूत्र की भी अवगणना की है और हिन्दी को स्कूली पाठ्यक्रम से निकाल दिया है। कहीं कहीं नाममात्र केलिए हिन्दी पढायी जा रही है। यही नहीं जनता में हिन्दी विरोधी भावना उत्पन्न करके हिन्दी विरोध की नींव पर नये नये राजनीतिक दल बनाये जा रहे हैं। जब तक ऐसी स्थिति बनी रहेगी तब तक संपर्क भाषा के रूप में या राजभाषा के रूप में हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

देश का विकास लोगों की भाषा में करें
हरकिशन लाल भगत 3

केरल हिन्दी को उचित स्थान देगा ही
के. करुणाकरन 6

त्रिभाषा सूत्र—देश के विकास केलिए
डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै 9

अनुगीत
डॉ० मोहन अवस्थी 10

शिक्षा के हर क्षेत्र में हिन्दी सिखायें
प्रो० सामुवेल मत्ताई 11

आदमी बनकर दिखा दो
राजेन्द्र राजा 14

चुनौतियों का सामना
एम. के. वेलायुधन नायर 15

क्या हिन्दी संपर्क भाषा है ?
पी. जी कामत 21

काव्य के प्रयोजन
डॉ० एम. जे. पटेल 22

वार्तालाप
रामेश्वर दयाल दुबे 24

हिन्दी का प्रयोग और प्रचार साथ साथ बढे
संसदीय राजभाषा उपसमिति 29

संसदीय राजभाषा उपसमिति के विचारार्थ 38

शकुन्तला
(पूर्व प्रकाशित के आगे)
डॉ० कृष्णकुमार 42

पाठकों के पत्र 50

वांछित प्रतिष्ठा नहीं मिलेगी। अतः श्री० पुरुषोत्तमन ने सुझाया कि हिन्दी की इस देशीय समस्या का हल देशीय स्तर पर ही करने का प्रयत्न हो।

आज वास्तव में देशीय स्तर पर हिन्दी का प्रचार प्रसार करने की दिशा में कोई ठोस काम होता नहीं दीखता। चूंकि हिन्दी भारत की राजभाषा स्वीकृत हो चुकी है और देश के भिन्न भिन्न भाषायी समूहों को एक सूत्र में जोडने का एकमात्र सशक्त माध्यम हिन्दी है इसलिए इस समस्या को यों ही छोड देना उचित नहीं होगा। वर्तमान स्थिति जारी रहेगी तो ऐसा भी दिन आ सकता है जब भारत के विभिन्न प्रान्तों की सांस्कृतिक भिन्नता इस हद तक बढ जायेगी कि उन्हें एक राष्ट्र के अंग मानना कठिन हो जायेगा। बिना इस समस्या को सुलझाने का प्रयत्न किये इस बात का स्वप्न देखना भी व्यर्थ होगा कि एक दिन ऐसा आयेगा जब सभी हिन्दीतर प्रान्त सहसा एक स्वर में बोल उठेंगे कि हम अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी को राजभाषा बनाने केलिए तैयार हैं। देश के प्रमुख नेताओं और शिक्षाविदों को इस ओर ध्यान देना है। क्या हम शिक्षा संबंधी संवैधानिक धाराओं को समय की मांग के अनुकूल परिवर्तित नहीं कर सकते ?

एक प्रति का मूल्य : १ रु
वार्षिक चन्दा : १० रु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

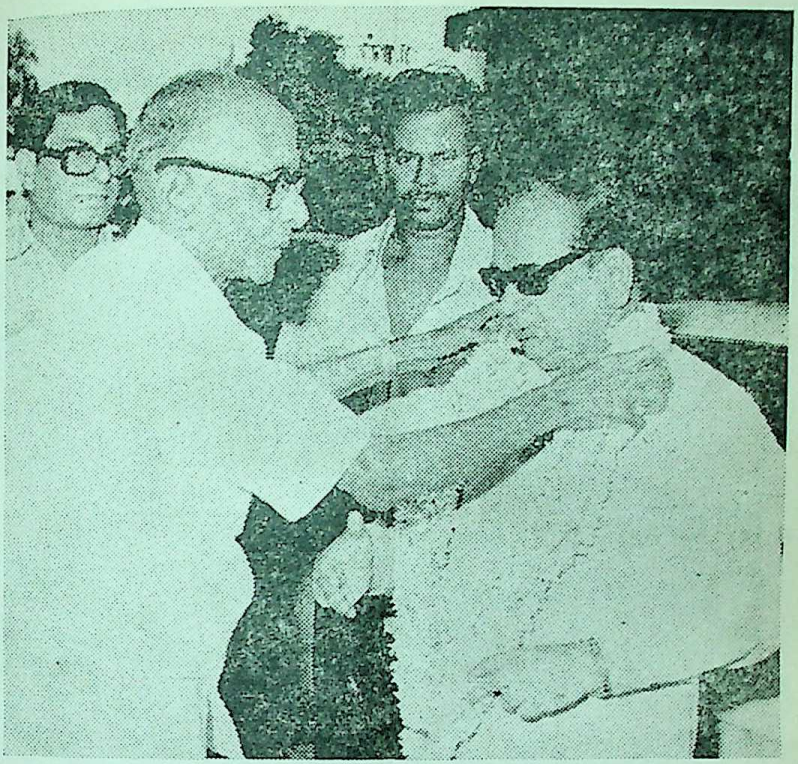

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया

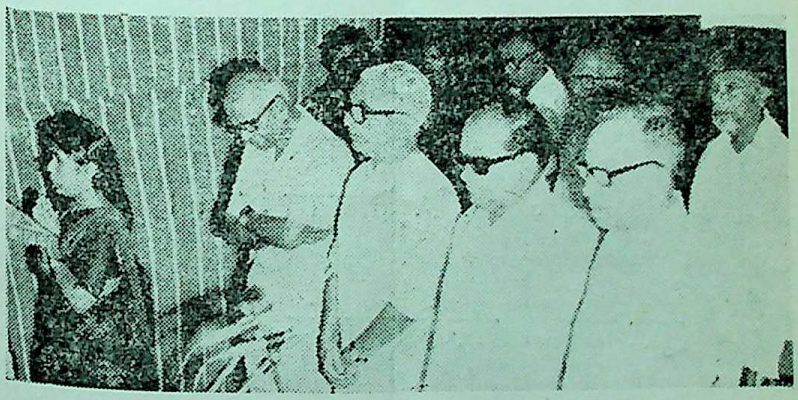

मंगलाचरण—श्रीमती पी. सुशीला देवी (प्राध्यापिका, सरकारी महिला कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम) द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

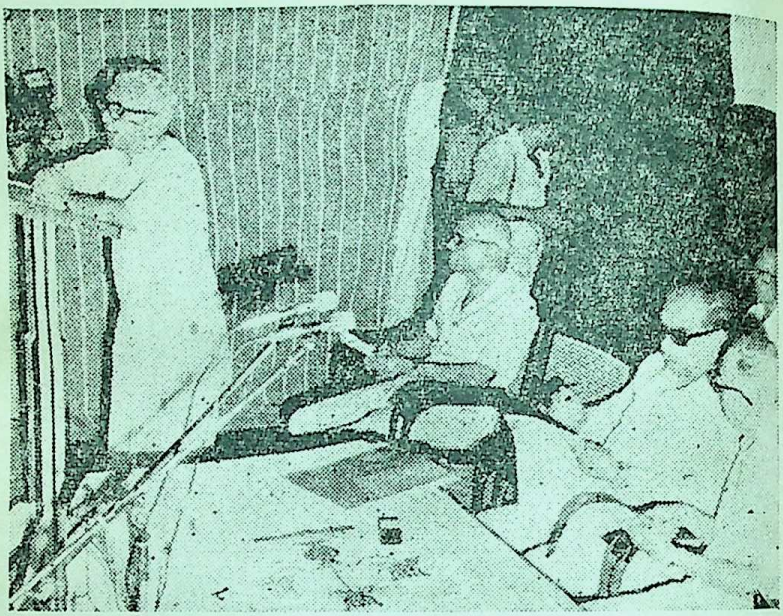

उद्घाटन भाषण दे रहे हैं केरल के मुख्यमंत्री
श्री० के. करुणाकरन ।

बैठे हैं—प्रो० सामुवेल मत्ताई, केन्द्र सूचना एवं प्रसारण
राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत एवं केरल हिन्दी
प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष
डा० पी. के. नारायण पिल्लै ।

पुरस्कार वितरणोत्सव के विविध दृश्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

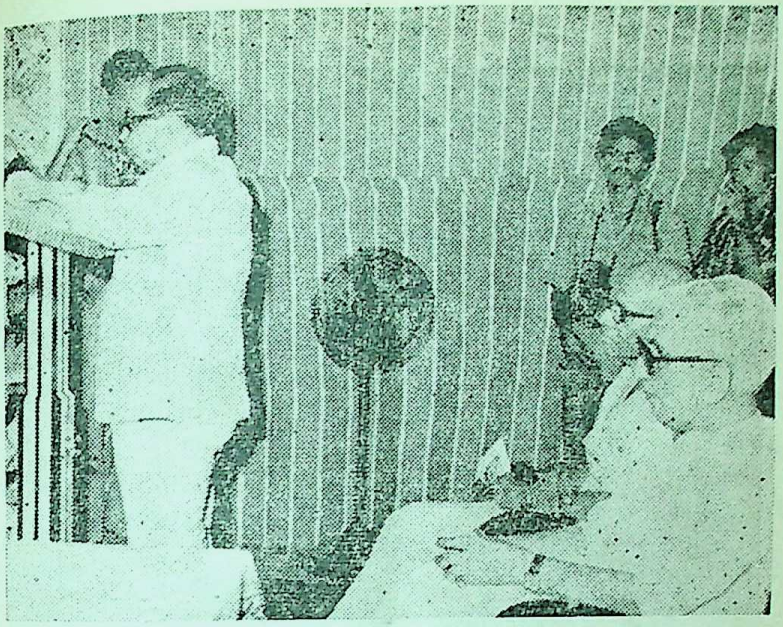

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत का अभिभाषण। बैठे हैं— (बाएँ से) प्रो० सामुवेल मत्ताई और मुख्यमंत्री श्री० के. करुणाकरन।

समारोह के उपरान्त 'नादम' द्वारा प्रस्तुत गानमेला में भाग लिये कलाकार केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर के साथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

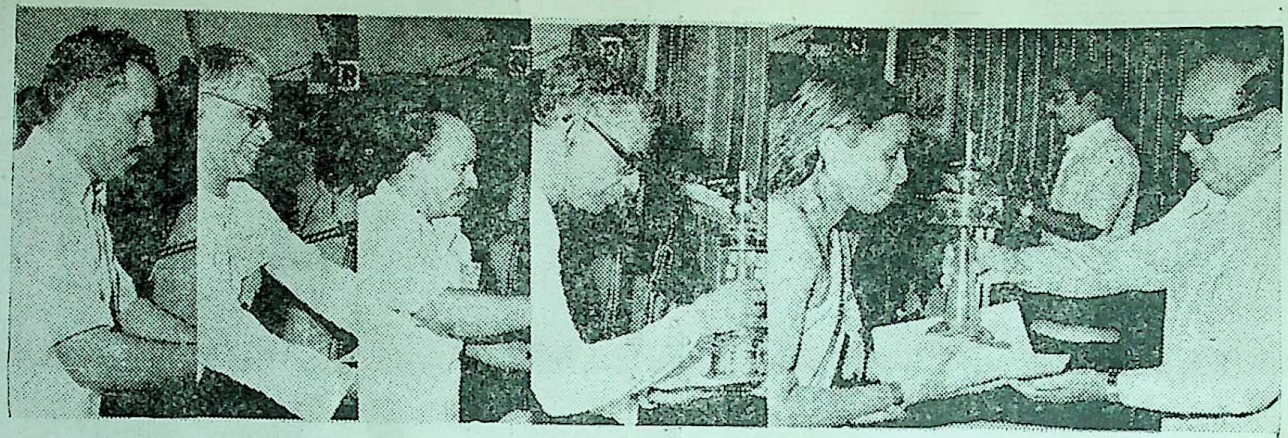

श्रेष्ठ हिन्दी प्रचारक

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत के कर कमलों से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं (दायें से) श्रीमती सी. शान्तम्मा, जयभारत हिन्दी कॉलेज, पेरूरकटा (द्वितीय स्थान), श्री० के. एस. कुमार, आज़ाद हिन्दी कॉलेज, नेमम (तृतीय स्थान), श्री० एन. एन. दामोदरन, एम. डी. कालेज, मूवाट्टुपुषा (प्रोत्साहक पुरस्कार), श्री० के. पी. के. पिषारटी, नवभारत हिन्दी कालेज, वेल्लयंपलम, तिरुवनन्तपुरम (प्रोत्साहक पुरस्कार) और श्री० वी. वेलप्पन नायर, हिन्दी महा विद्यालय, नेय्याट्टिनकरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिशु किशोर और युवा राष्ट्रभाषा के पथ पर—

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं (बायें से) पी. एस. प्रशान्त, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम; पी. दीपा, गिरीष हिन्दी विद्यालय, चिन्नचालै, तिरुवनन्तपुरम; एम. जया वर्गीस, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, तृश्शूर, सी. एन. जयश्री, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, तृश्शूर, त्रेस्याम्मा जोसफ, एम. डी. कालेज, मूवाट्टुपुषा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

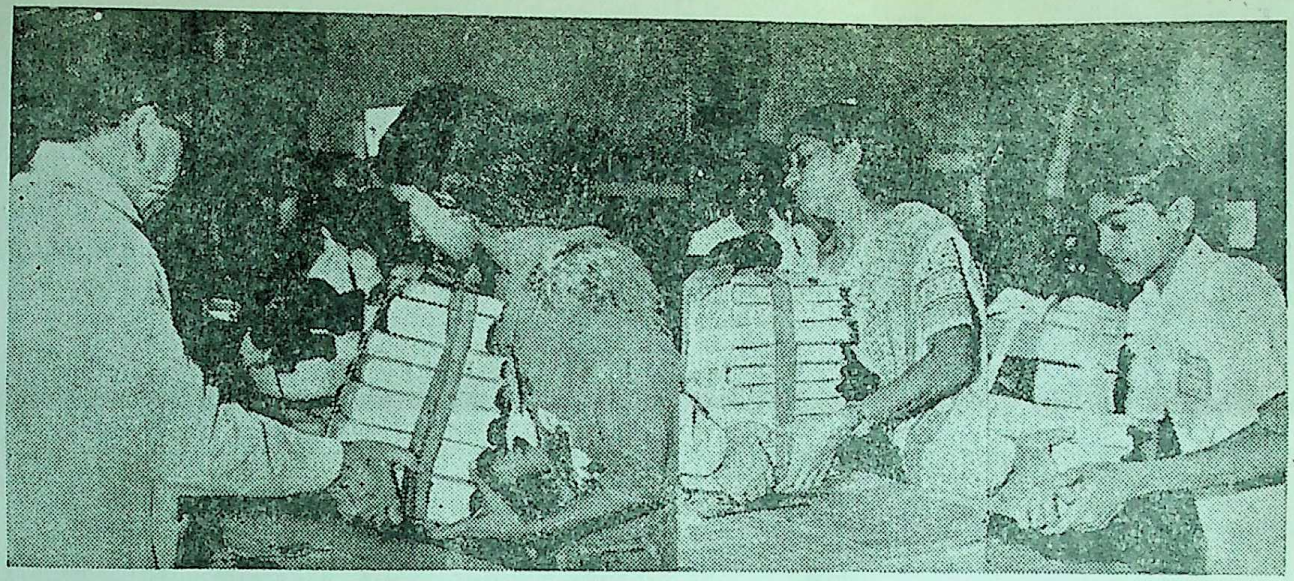

भारी भारी पुरस्कार

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत के करकमलो से पुरस्कार ग्रहण कर रहे हैं— (बाएँ से) ए. आर. उषा, हिन्दी विद्यालय, वेल्लिमण, ए. शान्ता, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, कलूर, एरणाकुलम और एस. रामकृष्णन, केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश का विकास लोगों की भाषा में करें

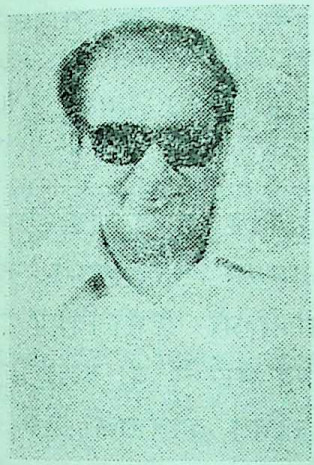

हरकिशन लाल भगत

केन्द्र सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री

[१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरणोत्सव में किया गया अभिभाषण]

प्रिय मित्रो,

आप सबने हिन्दी में दक्षता के लिए पुरस्कार वितरण करने का जो सौभाग्य मुझे प्रदान किया है उससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। इस दिशा में केरल हिन्दी प्रचार सभा ने जो प्रयास किये हैं वे सराहनीय हैं। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आज आपके संगठन के दो हज़ार से अधिक प्रचारक राज्य के विभिन्न भागों में हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा किये जा रहे प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसनीय हैं लेकिन मैं शुरू में ही एक बात बिल्कुल स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि आपको हिन्दी प्रचार के काम में अनावश्यक उत्साह नहीं दिखाना चाहिए। हमारे स्वतंत्र आधुनिक भारत के संस्थापकों ने जो वचन दिया था उसे हमें हमेशा याद रखना चाहिए। हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जानी है। लोग इसे स्वयं ही सीखेंगे। आपको सिर्फ एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ अधिक से अधिक लोग हिन्दी में रुचि लें। हिन्दी वैसी ही एक राष्ट्रीय भाषा है जैसी कि मलयालम, तमिल या बंगला। लेकिन इसके बारे में एक बड़ी विशेषता यह है कि हमने इसे राजभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के रूप में अपनाने की दिशा में भी काम शुरू कर दिया है। आप सभी जानते हैं कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे हमारे अधिकांश लोग समझते हैं। किसी भी स्वतंत्र देश की अपनी एक भाषा होनी ही चाहिए। हमारे देश के अधिकांश लोग हिन्दी समझते हैं अतः इस सरल और मधुर भाषा में बोलना आसान लगता है। केवल एक विदेशी भाषा का इस्तेमाल करते रहने से दासता का सा आभास होता है। हालांकि हमारा अंग्रेज़ी भाषा की उपेक्षा करने का कोई इरादा नहीं है क्योंकि हम विज्ञान और औद्योगिकी तथा जन संचार के क्षेत्रों में हुई अन्तर्राष्ट्रीय प्रगति से स्वयं को अवगत कराने के लिए इसका इस्तेमाल करते रहना चाहेंगे। लेकिन हमें अपनी भारतीय राष्ट्रीय भाषाओं का विकास करना होगा।

संसार के किसी भी देश को इतनी समृद्ध भाषाएँ राष्ट्रीय विरासत के रूप में नहीं मिली हैं। मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि जब मैं मलयालम, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, गुजराती, मराठी, पंजाबी, उर्दू, असमी या उड़िया जैसी क्षेत्रीय भाषाओं में से किसी के इतिहास पर नज़र डालता हूँ तो मुझे गौरव की अनुभूति होती है। इसका कारण बिल्कुल साफ है। अनेक भाषाओं की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से हुई है। इन भाषाओं में एक समानता यह भी है कि इनकी साहित्यिक कृतियों की विषय-वस्तु भी लगभग एक जैसी रही है। उनके पात्र भी समान हैं। रामायण या महाभारत पर आधारित प्राचीन महान रचनाओं ने सभी क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को बहुत बड़ी सीमा तक प्रभावित किया है। हमारी महान साहित्यिक विभूतियों के विचारों में भी बहुत समानता देखने को मिलती है। विभिन्न परिस्थितियों का चित्रण और सामाजिक समस्याएँ इतनी मिलती-जुलती हैं कि यह भेद करना कठिन हो जाता है कि कोई कृति शरत्चन्द्र चटर्जी द्वारा लिखी गयी है या मुंशी प्रेमचन्द द्वारा। इसी प्रकार

महाकवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर "भारतमाता" पर लिखी गई कविताओं और इसी विषय पर सुब्रह्मण्य भारती या वल्लत्तोल द्वारा रचित कविताओं में कोई अन्तर महसूस नहीं होता।

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर "भारतमाता" पर लिखी गई कविताओं और इसी विषय पर सुब्रह्मण्य भारती या वल्लत्तोल द्वारा रचित कविताओं में कोई अन्तर महसूस नहीं होता। विचारों में यह समानता ही हमारी राष्ट्रीय विरासत की मुख्य धारा रही है और हमें इस पर गर्व होना चाहिए।

इस अवसर पर मैं भाषा के विषय पर अपने कुछ विचार भी रखना चाहूँगा। मेरे विचार में यह देश के व्यापक हित में होगा यदि आपमें से कुछ लोग, जो हिन्दी भली-भाँति समझने लगे हैं, विख्यात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलयाली लेखकों की उत्कृष्ट कृतियों में से कुछ का हिन्दी में अनुवाद करें। इसी प्रकार आप हिन्दी की कुछ उच्च-कोटि की कृतियों का मलयालम रूपान्तर तैयार करने में योगदान दें तो यह भी समान रूप से लाभदायक होगा। साहित्यिक विचारों के इस प्रकार के आदान-प्रदान से दोनों भाषाओं के साहित्य को और समृद्ध बनाने में योगदान मिलेगा।

मैं एक और महत्वपूर्ण बात की तरफ़ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ। वह बात यह है कि हमसे प्रत्येक को अपनी मातृभाषा और हिन्दी के अतिरिक्त कम से कम एक और भारतीय क्षेत्रीय भाषा सीखने का प्रयास करना चाहिए। यह एकता को बढाने में सहायक होगी और इससे हमारी राष्ट्रीय अखंडता और सद्भाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

मैं इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू द्वारा २४ अप्रैल, १९६३ को लोकसभा में कहे गये शब्दों को दोहराना चाहता हूँ। लोकसभा में राजभाषा विधेयक पर हो रही बहस में हस्तक्षेप करते हुए उन्होंने कहा था—

"हमें इस देश का विकास लोगों की भाषाओं के माध्यम से करना है। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है। मैं समझता हूँ कि आप अंग्रेज़ी भाषा का भी प्रयोग जारी रखना चाहेंगे लेकिन लोगों के विकास के लिए असली भाषा उनकी अपनी भाषा होती है जिसे वे समझते हैं और जिससे उनका भावात्मक सम्बंध होता है। मैं तो यहाँ तक कहूंगा कि मैं उच्च वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकीय अध्ययनों के लिए अंग्रेज़ी का इस्तेमाल करने का समर्थक हूँ। लेकिन मैं यह समझता हूँ कि हमारे स्कूलों में विज्ञान की जानकारी का प्रसार करने के लिए भी हमें राष्ट्रीय भाषाओं के माध्यम से विज्ञान की व्यापक शिक्षा दी जानी चाहिए, नहीं तो लोग विज्ञान को एक सीमा तक ही सीख पायेंगे। इसका प्रसार नहीं होगा। उच्च शिक्षा और शोध कार्यों में विदेशी भाषा की आवश्यकता पड़ती है—एक ही भाषा की नहीं बल्कि कई भाषाओं की।

मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद करता हूँ। मैं आज के पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते उनसे यह अनुरोध करता हूँ कि वे भारत की दो महान भाषाओं—हिन्दी और मलयालम—के बीच बेहतर समझ पैदा करने के लिए अपने उस ज्ञान का पूरा-पूरा उपयोग करें। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल हिन्दी को उचित स्थान देगा ही

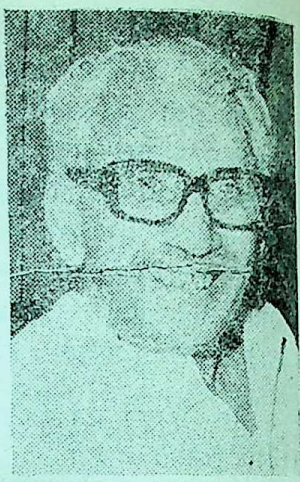

के. करुणाकरन
मुख्यमंत्री, केरल

[१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया उद्घाटन भाषण]

माननीय अध्यक्ष, श्री० भगत जी, भाइयो और बहनो,

मैं इस संस्था में नया नहीं हूँ। अत आप मुझ से किसी नयी बात की आशा नहीं करेंगे। केरल हिन्दी प्रचार सभा ने गत वर्षों में हमारी देशीय भाषा के प्रचार केलिए जो सेवाएँ की हैं उस का मूल्यांकन उसे पदे पदे प्राप्त विजय से हम आंक सकते हैं।

दुर्भाग्यवश हमारे देश के कुछ भागों में राष्ट्रभाषा हिन्दी को उचित स्थान नहीं दिया जाता। केरल में ऐसी बात नहीं। दक्षिण भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा केरल ने हिन्दी के प्रचार केलिए अधिक फलप्रद प्रयत्न किया है। लेकिन आये दिन यह शिकायत उठी है कि यहाँ भी हिन्दी के प्रति रुचि कम होती जा रही है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि हम हिन्दी अध्ययन को उचित स्थान नहीं देंगे तो भविष्य में हमें उसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी संबन्धी हमारे दृष्टिकोण में बड़ा परिवर्तन आया है। दक्षिण भारत के प्रान्तों में इस भ्रामक धारणा का प्रचार किया गया है कि हिन्दी राष्ट्रभाषा की हैसियत से अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करती है। इसके फलस्वरूप कम से कम एक जनविभाग के मन में हिन्दी के प्रति रुचि नष्ट हो गयी है। देशीय भाषा के रूप में और राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का महत्व हमें स्वीकार करना है। भारत की एकता को सुदृढ़ करने में एक आम भाषा का—राष्ट्रभाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का—स्थान प्रमुख है। लेकिन कोई भी भाषा अति ह्रस्वकाल की अवधि पे सारे राष्ट्र की भाषा स्वीकृत नहीं हो सकती। थोडी और लगन से हम काम करेंगे तो इस विषय में कमी ला सकते हैं।

गाँधीजी ने स्वतन्त्रता संग्राम के समय में ही हिन्दी को हमारी राष्ट्रभाषा का स्थान दिया था। उनका संकल्प था कि स्वतन्त्र भारत में जनता हिन्दी के प्रति प्रेम करेगी और हिन्दी को राष्ट्रभाषा का उचित स्थान देगी।

दक्षिण भारत के प्रान्तों में हिन्दी का प्रचार करने एवं हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए ही गाँधीजी ने उन दिनों दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की थी।

मेरा विचार है कि अन्य भाषाओं के प्रभाव से हिन्दी का ऐसा विकास किया जाये कि ज्यादातर लोग उसे समझ सकें। आज तो लगता है कि हिन्दी कठिनतर होती जा रही है। हिन्दी भाषा की शुद्धि पर अधिक महत्व दिया जा रहा है। गाँधीजी ने इस उद्देश्य से हिन्दुस्तानी पर जोर दिया था कि अन्य भाषाओं का प्रभाव उस पर पडे और अन्य भाषा-भाषियों केलिए वह अधिक सरल हो जाये। आज सारे भारत में विशेष कर केरल में संस्कृत निष्ठ हिन्दी का अध्ययन—अध्यापन किया जा रहा है। इस विषय में जो परिवर्तन आवश्यक है उसके संबंध में अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट हो रहा है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जैसे संकल्प किया था वैसे ही हमने त्रिभाषा सूत्र को इस प्रान्त में प्रमुखता दी है। देखा जाता है कि यद्यपि त्रिभाषा सूत्र की चर्चा सभी प्रान्तों में हो रही है तो भी कई प्रान्तों ने इस पद्धति को स्वीकृत नहीं किया है। केरल प्रभावी ढंग से त्रिभाषा सूत्र का कार्यान्वयन कर रहा है।

केरल में यह शिकायत उठायी जाती है कि हिन्दी के स्कूली पाठ्यक्रम में थोडा परिवर्तन किया गया है। इस संबन्ध में जाँच की जायेगी। बालकों का हिन्दी सीखने और हिन्दी में प्रावीण्य प्राप्त करने का अवसर प्रदान करना ही चाहिए। एक बात की मैं स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा करना चाहूँगा केरल की वर्तमान सरकार ने देशीय भाषा हिन्दी का पावनत्व स्वीकार करते हुए आगे बढने का निश्चय किया है। क्योंकि यह राष्ट्र की भाषा है। यह किसी प्रान्त विशेष की भाषा नहीं है। उसी भाषा के जरिये भारत प्रगति पा सकता है। यही भाषा भारत को एक बनाये रख सकती है। विदेशी शासन के समय हम में अंग्रेजी में काम करने का जो अभ्यास पड गया उसी के कारण हमें अंग्रेजी जारी रखनी पड रही है। चूँकि हिन्दी के प्रति हमारे मन में वाञ्छित मात्रा में प्रेम उपज नहीं पाया और विदेशी भाषा का प्रभाव हम पर बना रहा इसीलिए हमारे विकास की गति मंद पड गयी। केरलीयों को एक बात पर विशेष ध्यान देना है अखिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हम हिन्दी पर अच्छा अधिकार पा सकेंगे तो हिन्दी के माध्यम से ही हम अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में उन्नत स्थान प्राप्त कर सकेंगे।

भारतीय प्रतियोगिताओं में पहले केरलीयों को जो उन्नत स्थान मिलता था वह आजकल नहीं मिलता। इसे एक चेतावनी के रूप में हमें स्वीकार करना है। हमारे भाषा संबंधी दृष्टिकोण का आधार हमारे भविष्य की मांग होनी चाहिए। यदि हम हिन्दी पर अच्छा अधिकार पा सकेंगे तो हिन्दी के माध्यम से ही हम अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में उन्नत स्थान प्राप्त कर सकेंगे। इन सब बातों को ध्यान में रखकर ही केरल सरकार ने त्रिभाषा सूत्र को बड़ी तत्परता के साथ अमल में लाने का निश्चय किया है। हिन्दी को उचित स्थान देना ही होगा, उचित मान्यता देनी ही होगी। उसका विरोध करना ठीक नहीं।

मेरा कथन शायद कठोर लगेगा। मेरा विश्वास है कि जो व्यक्ति हिन्दी से प्रेम नहीं करता वह देश से भी प्रेम नहीं करता।

मैं इस परंपरा की शुभकामना करता हूँ जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में, राष्ट्र की जनता को एक सूत्र में बाँधने-वाली शक्ति के रूप में मानती है, उसका महत्व स्वीकार करती है और उसके प्रचार में प्रमुख भूमिका अदा करती है। इस समारोह में सम्मिलित होने का जो सुअवसर मुझे मिला उसकेलिए कृतज्ञता प्रकाशित करते हुए मैं इस सम्मेलन का उद्घाटन करता हूँ।

मेरा विश्वास है कि जो व्यक्ति हिन्दी से प्रेम नही करता वह देश से भी प्रेम नहीं करता।

जय हिन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिभाषा सूत्र—देश के विकास केलिए

डा० पी. के. नारायण पिल्लै

[१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया अध्यक्षीय भाषण ।]

माननीय मुख्यमंत्री, केन्द्र सूचना एवं प्रसारण मंत्री और मित्रो,

माननीय मुख्य मंत्री ने यहाँ हिन्दी के संबन्ध में जो उज्वल और प्रोत्साहजनक भाषण दिया उसे सुनकर मुझे लगा कि त्रिभाषा सूत्र के संबंध में ज़ोर देते हुए अपना विचार प्रस्तुत करूँ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कई महान शिक्षाविदों और पंडित जी जैसे महान राजनीतिज्ञ नेताओं ने गहन विचारमंथन के बाद त्रिभाषा सूत्र को जन्म दिया। हमें मातृभाषा हिन्दी और अंग्रेज़ी का इस प्रकार अध्ययन करना है कि तीनों भाषाएँ परस्पर सहायक हो। केरल की जनता केलिए अपनी मातृभाषा मलयालम का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। साथ ही साथ यदि हम राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा हिन्दी को उचित प्रमुखता प्रदान करके उसका विधिवत् अध्ययन न करें तो जैसे माननीय मुख्यमंत्री ने चेतावनी दी इस देश की प्रगति में बाधा पडेगी। इन दोनों भाषाओं के अलावा हमें अंग्रेज़ी का भी अध्ययन करना चाहिए। क्योंकि वह दिन दिन

विकसित होनेवाले विश्व विज्ञान का भण्डार और स्रोत है। हमारे दैनिक जीवन के व्यावहारिक प्रयोजनों केलिए और संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मलयालम हमें आवश्यक है। हमारी राजनीतिक प्रगति और जीवन केलिए हिन्दी अनुपेक्षणीय है। और एक विश्वनागरिक की हैसियत से विकस्वर विश्वविज्ञान को अर्जित करते हुए आगे बढने केलिए अंग्रेजी अत्यन्त अपेक्षित है। इन तीनों भाषाओं में एक एक को यथार्ह स्थान देकर पढना है और पढाना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुगीत

डॉ० मोहन अवस्थी

कहीं पर पाश ही जीवन मदोन्नत व्याध क्या जाने ?
जिसे संवाद की फ़ुरसत नहीं प्रतिवाद क्या जाने ?
अकथ गतिलोल अंगों में अजब सिहरन अजब थिरकन
कहाँ से नाद उठता है अचल निर्नाद क्या जाने ?
विघूर्णित लोचनों में नाचते अंगार की लपटें
जिसे मूर्च्छित बनातीं वह सुदृष्टि-प्रसाद क्या जाने ?
त्रिकोटि काटतीं साँसें फुरहरी फिरती यादें
सजग क्यों कर प्रमादी हो अजग उन्माद क्या जाने ?
तरल सौन्दर्य-आसव चू रहा है रोमछिद्रों से
भुजङ्गम दंश की दुःसह व्यथा प्रह्लाद क्या जाने ?
फँसा है दूर पंकिल दृश्य बिम्बों की नुमाइश में
अरे यह गाधजीवनचर अगम जलस्वाद क्या जाने ?
बनाए आयुकण भास्वर रतन जी तोड़ मेहनत ने
इसे सम्पत्ति-अपहर्ता कुटिल दायाद क्या जाने ?

रीडर, हिन्दी विभाग, इलहाबाद विश्वविद्यालय
१७८, एलेनगंज, इलाहाबाद-२११ ००२

इन तीनों भाषाओं में एक एक को यथार्ह स्थान देकर पढना है और पढाना है।

इस संस्था के संबंध मे गलती से कोई यह न समझ बैठे कि चूंकि यह हिन्दी प्रचार करनेवाली संस्था है इसलिए यह अंग्रेजी के विरुद्ध है। इस सस्था की नीति है कि अंग्रेजी को उचित प्रधानता देकर उसका अध्यापन अध्ययन किया जाय और मन्त्रालय भाषा के रूप में उसे अत्यधिक प्रोत्साहन दिया जाये। इस क्षेत्र में हमें मिलकर काम करना चाहिए। परस्पर मत्सर की कोई जरूरत नहीं। इन तीनों भाषाओं में एक एक को उचित मान्यता देना और उचित प्रोत्साहन देना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हिन्दी के प्रचार केलिए बहुत बडी सेवाएँ अर्पित करनेवाली इस संस्था का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और इसकी मंगल कामना करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षा के हर क्षेत्र में हिन्दी सिखायें

प्रो० सामुवेल मत्ताई

अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, केरल

[१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में दिया गया आशीर्वाद भाषण]

मिस्टर भगत, मुख्यमंत्री श्री० करुणाकरन, माननीय अध्यक्ष और मित्रो,

मेरेलिए यह निर्णय लेना कठिन हो रहा है कि इस सन्दर्भ में किस भाषा में बोलूं। ऋग्वेद में अनेक देवों का जिक्र मिलता है। उसमें जैसे बताया गया है "कस्मै देवाय" याने किस देव की आराधना करूं वैसे ही मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि किस भाषा में बोलूं। अंग्रेजी में बोलना अनुचित होगा। मुझे उत्तर भारत छोडकर इधर आये बीस वर्ष हो गए। इसलिए मेरा जो थोडा हिन्दी ज्ञान था वह भी छूटता रहा। यहां नहीं हिन्दी प्रचार सभा में केन्द्र मन्त्री के समक्ष हिन्दी में बोलने का धीरज मुझमें नहीं। मलयालम भी मैं ठीक तरह से नहीं जानता। इसलिए यही अच्छा लगता है कि मैं पुराने जमाने के पंडितों के समान मौन साधूं। तो भी दो शब्द कहने का प्रयास करूंगा। कई वर्ष पहले हमारे देश में त्रिभाषा सूत्र स्वीकृत हुआ। उस समय मैं दिल्ली में था। इस योजना को रूप देने में मेरा भी थोडा योगदान रहा। उन दिनों मैं केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति का सदस्य था। बाद को जब मैं विश्वविद्यालय आयोग में था, तब भी इस योजना से मेरा संबन्ध रहा।

त्रिभाषा सूत्र के आरंभ के थोडे ही दिन बाद उत्तर भारत के अधिकांश प्रान्तों ने इसे ठुकरा दिया। केन्द्र शिक्षा मन्त्रालय के एक कर्मचारी ने उन्हीं की पत्रिका में त्रिभाषा सूत्र को व्यर्थ बताते हुए एक लेख लिखा। लेखक का तर्क था कि उत्तर भारत के लोगों के लिए दक्षिण भारत की भाषा सीखना निष्प्रयोजन है। व्यर्थ का बोझ उठाना है। उसके उत्तर में मैं ने एक लेख में लिखा कि हमने सोच विचार करके जो योजना अपनायी है उसे ठुकराना ठीक नहीं है। यह भी लिखा कि मंत्रालय के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

एक कर्मचारी केलिए ऐसा लिखना अनुचित है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन भाषायें सिखाने का थोडा प्रयत्न केवल केरल में ही किया जा रहा है। कहा जाता है उत्तर भारत की भाषायें आर्य परिवार की हैं और दक्षिण भारत की भाषायें द्राविड परिवार की। दक्षिण भारत के कुछ प्रान्तों को लगा कि हिन्दी उन पर थोपी जा रही है। उत्तर भारत की आर्य भाषा-भाषी जनता ने भी त्रिभाषा सूत्र को छोड दिया है। बंगालियों ने पहले ही कहा कि उन्हें यह योजना नहीं चाहिए। पंजाब की दुर्घटनाओं के पीछे भी एक प्रकार से भाषा की ही समस्या है। भारत की एकता के लिए हम जिस भाषा को लाये वह हममें अनैक्य उत्पन्न कर रही है। मैं नहीं मानता कि भाषा एकता का कारण बनेगी। एकता हो तो कोई भी भाषा हम पढेंगे। तो पहले हमारे मनमें एकता उत्पन्न होनी है, हमारे हृदय में वास्तविक एकता उत्पन्न होनी है।

मैं केरल में पैदा हुआ। महाराष्ट्र में कॉलेजीय शिक्षा पायी। कुछ दिनों में पुणे में पढाया। आठ नौ वर्ष लाहौर में था। बीस वर्ष तक दिल्ली में रहा। सर्वीस में रहते हुए देश भर चक्कर लगाना पडा। इसलिए भारतीय एकता संबंधी मेरा रागात्मक विश्वास है। यदि यह देश किसी कारण से आपसी फूट द्वारा छिन्न-भिन्न हो जाये तो बहुत ही दुःखजनक दुर्गति होगी। चाहे भाषा के अध्ययन से अन्यथा हमें भारत की एकता को बनाये रखना है। उसके लिए हर तरह के त्याग केलिए हमें तैयार रहना है।

आज की स्थिति बहुत चिन्ताजनक है। आज हम अपना अपनी प्रान्तीय संस्कृति को बुरी तरह उभार रहे हैं। यदि हम इसी प्रकार प्रान्तीय संस्कृति को अनुचित प्रमुखता देते जायें तो भारत की एकता नामक कोई चीज ही नहीं रहेगी। संस्कृत या हिन्दी के द्वारा उसे ला नहीं सकेंगे। इसलिए हमें चाहिए कि भाषा के संबन्ध में या अन्य किसी बात के संबन्ध में विचार करते समय हमें यह पहले सोचना है कि हम भारतीय नागरिक हैं।

यदि हम इसी प्रकार प्रान्तीय संस्कृति को अनुचित प्रमुखता देते जायें तो भारत की एकता नामक कोई चीज ही नहीं रहेगी।

हमें एक रहना है। एकता के लिए भाषा सीखनी है तो सीखें। भाषा नहीं सीखते हो तो भी एकता न जाने पावे। यही मुख्य बात है।

अब कुछ दिनों से मैं प्रान्तीय शिक्षा सलाहकार समिति का अध्यक्ष हूँ। माध्यमिक शिक्षा के संबंध में मुझे बडा ज्ञान नहीं। अब तक मैं समझ नहीं पाया कि क्यों मुझे अध्यक्ष बनाया गया। शायद सोचा होगा कि चूँकि मैं बूढा हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हो केरल के हर शिक्षा क्षेत्र में इन तीनों भाषाओं का अध्यापन करते जाते हैं।

गया हूँ इसलिए किसी का कोई दोष नहीं करूँगा, आरंभ में ही एक समस्या आ गयी। समस्या है हमारे स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी को कितना कालांश दिया जाय। मेरे शामिल होने के पहले ही समिति ने कुछ निर्णय लिया है। मैं ने उसका मिनट्स ही देखा। इस संबंध में चर्चा करने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा के कुछ कार्यकर्ता मुझ से मिले। मैं ने उनसे कहा कि इस संबन्ध में आवश्यक अध्ययन करके उचित कार्रवाई पर विचार करूँगा। हमें देखना है कि बालक कितना भार वहन कर सकता है। लगता है कि यहाँ जिन बालकों ने पुरस्कार पाया वे बहुत भार वहन कर सकते हैं। बडी भारी पुस्तकें उन्हें पुरस्कार स्वरूप दी गयी हैं। लाखों विद्यार्थियों केलिए पाठ्यक्रम निर्मित करते हैं तो यह कहना शिक्षा सिद्धांत की दृष्टि से अवैज्ञानिक है कि सभी विद्यार्थी एक ही प्रकार का भार वहन करें। उसी प्रकार हर एक भाषा के आत्यन्तिक प्रयोजन को दृष्टि में रखते हुए भाषा-ध्यापन संबंधी क्रम निर्धारित करना होगा। अतः पाठ्यक्रम रूपीकरण में सभी भाषाओं को समान कालांश देने और समान अंक देने की माँग जटिल समस्या उत्पन्न करती है।

जो हो केरल के हर शिक्षा क्षेत्र में इन तीनों भाषाओं का अध्यापन करते जाते हैं, अंग्रेजी, हिन्दी और मलयालम थोडी मात्रा में हो सही सभी बच्चों को सीखनी है। जितना पढायें अच्छीतरह पढायें। मलयाली का हिन्दी वार्तालाप सुनते ही मैं समझ सकता हूँ कि बोलनेवाला मलयाली है। कारण यह है कि उनके उच्चा ण में थोडी भिन्नता पायी जाती है। झ, ज, र, आदि वर्णों के उच्चारण में यह भिन्नता विशेष रूप से प्रकट होती है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि हिन्दी सिखाते समय हिन्दी का ठीक उच्चारण भी सिखायें। जिस प्रकार अंग्रेजी के उच्चारण अध्यापन पर बल दिया जाता है उस प्रकार हिन्दी के उच्चारण अध्यापन पर भी बल दिया जाना चाहिए हमें हिन्दी का हिन्दी उच्चारण चाहिए, मलयाली उच्चारण नहीं। चार कालांश पढाने मात्र से काम नहीं चलेगा अच्छी तरह पढाना होगा। व्यावहारिक कुशलता उत्पन्न करनी होगी। उत्तर भारत में जाकर हमारे बच्चे जब बोलेंगे तो वहाँ के लोग ठीक तरह से समझ सकें। यही हिन्दी अध्यापन का लक्ष्य हो।

केन्द्र मंत्री से एक शिकायत करना चाहूँगा पैंतीस वर्ष मैं उत्तर भारत में रह चुका हूँ। लेकिन आज दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रम आसानी से मेरी समझ में नहीं आते। या यों कहूँ कि हिन्दी अधिकाधिक कठिन होती जा रही है। महात्मा गाँधी तथा अन्य नेताओं का आग्रह था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी बनकर दिखा दो

राजेन्द्र राजा

देवता बनना अगर संभव नही तो,
तुम मुझे बस आदमी बन कर दिखा दो ।
मानता, हर दीप कब सूरज बना है,
बूंद हर, मोती कभी बनती नहीं है ।
हर कोई ही व्योम को छूकर दिखा दे,
बात यह भी सत्य सी जचती नहीं है ।
गर नहीं तुम मेघ बनकर नाच सकते,
सिर्फ पनघट ही मुझे बनकर दिखा दो । ॥ १ ॥
हर किसी के घाव पर मरहम लगाना
हर कोई अब तक नहीं है सीख पाया ।
जो पराई पीर को अपनी समझ ले,
द्वार भी शायद ही कोई दीख पाया ।
तुम किसी के दर्द में ना रो सको तो,
दूसरों के हर्ष में हँस कर दिखा दो । ॥ २ ॥
हर किसी ने राह कब अपनी बनाई,
हैं यहां कितने जो अपने गीत गाते ।
बीन लेते रास्तों से कंटकों को,
युग पुरुष ही इस धरा पर वे कहाते ।
मैं, नहीं कहता, चमन बन कर खिलो तुम,
हो सके तो एक सुमन बन कर दिखा दो । ॥ ३ ॥

चीती (सिकन्द्राबाद), उ० प्र० २०३ २०१

हिन्दी प्रान्तीय भाषाओं की शब्दावली को आत्मसात करें और भारत के समग्र स्वभाव को हू बहू प्रतिबिंबित करे । हमारे संविधान मे भी यह बात कही गयी है । लेकिन इस ओर कोई प्रयत्न नहीं किया गया । हिन्दी के एक समर्थक के नाते मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आकाशवाणी और दूरदर्शन द्वारा प्रसारित हिन्दी समाचारों की भाषा सरल बनायी जाएँ ताकि इधर के लोग भी आसानी से समझ पाएँ । यह भी अनुरोध करूँगा कि आकाशवाणी और दूरदर्शन में समाचार पढनेवाली सुन्दरियों को थोड़ी और धीमी गति से पढने के लिए प्रेरित किया जाय ।

आज जिन विद्यार्थियों और अध्यापकों ने यहाँ पुरस्कार पाया उनका मैं अभिनन्दन करता हूँ । मेरा विचार है कि आपने जो हिन्दी सीखी है उसका खूब उपयोग भी करेंगे । इस सम्मेलन में भाग लेने केलिए मुझे आमंत्रित किया येतदर्थ मैं कृतज्ञ हूँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनौतियों का सामना

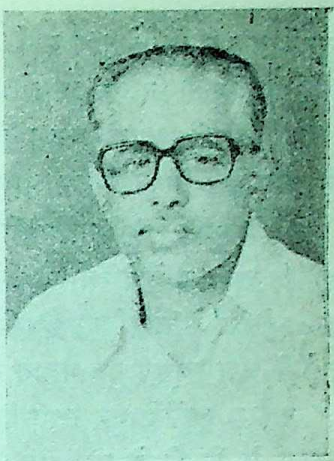

एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री, केरल हिन्दी प्रचार सभा

[१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरणोत्सव में दिया गया स्वागत भाषण]

केरल के माननीय मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन जी, केन्द्र सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री श्री० एच. के. एल. भगत जी, केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै जी, केरल की राज्य शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रो० सामुवेल मताई जी, पुरस्कृत होनेवाले आदरणीय प्रचारक बन्धुओ और प्रिय छात्रो, विद्वान सज्जनो, भाइयो और बहनो,

केरल हिन्दी प्रचार सभा का यह सौभाग्य है कि सभा की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पाये छात्रों और सभा के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी प्रचारक बन्धुओं को पुरस्कृत, प्रोत्साहित और अभिनन्दित करने केलिए प्रान्तीय व केन्द्र सरकारों के कर्णधार और देश के एक विख्यात शिक्षा शास्त्री इस मंच पर पधारे हैं। यह सम्मेलन यह सूचित करता है कि सरकार की दृष्टि में हिन्दी कितना महत्व पा चुकी है और जनता ने कितने प्रेम से उसे अपनाया है।

भारत की महानता इस बात में है कि यहाँ विविधता में एकता पायी जाती है। विविध भाषाओं और वेषों और आचार विचारों के होते हुए भी भारत की आत्मा एक है। यही एकता राष्ट्र की जान है। इस एकता को बनाये रखना है। तभी हम इसकी महान संस्कृति की सुरक्षा और विकास कर पायेंगे। तभी हम पूर्वजों की आत्मबलि के बदले प्राप्त बहुमूल्य स्वतंत्रता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को सुरक्षित रख पायेंगे। हमारी एकता की सब से सशक्त कडी है हिन्दी जिसके माध्यम से विविध प्रान्तों की आम जनता आपस में संपर्क कर पाती है। यह हमारी संपर्क भाषा है, संस्कृति की उत्तराधिकारिणी है और सर्वसम्मति से स्वीकृत राजभाषा भी है।

जब से पूज्य राष्ट्रपिता गाँधीजी ने हिन्दी प्रचार का रचनात्मक कार्यक्रम आरंभ किया, तब से केरल की जनता ने भी हिन्दी को प्रेम से सीखना आरंभ किया। केरल के तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० के. वासुदेवन पिल्लै के निस्वार्थ प्रयत्नों के फल स्वरूप यह महान संस्था—केरल हिन्दी प्रचार सभा स्थापित हुई। पचास वर्षों से यह सभा हिन्दी का प्रचार करने एवं केरल की जनता के हृदय में हिन्दी के प्रति प्रेम व श्रद्धा उत्पन्न करने का सफल प्रयत्न करती आयी है।

यद्यपि स्कूलों में पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी सिखायी जाती है तो भी अनेक कारणों से इसका वांछित परिणाम नहीं निकलता। स्कूलों का हिन्दी अध्यापन अपर्याप्त ही कहा जा सकता है। इस कमी को दूर करने केलिए और प्रौढों को भी हिन्दी सीखने का अवसर प्रदान करने के लिये केरल हिन्दी प्रचार सभा विविध स्तरीय हिन्दी परीक्षायें साल में दो बार—फरवरी और अगस्त में—आयोजित करती है।

परीक्षा संचालन के अलावा हिन्दी प्रचार की अन्य कई योजनायें भी सभा कार्यान्वित करती है। हिन्दी अध्यापकों के प्रशिक्षण केलिये सभा ने एक वर्ष का कोर्स चलाया था। यद्यपि सरकार के आदेश पर यह कोर्स समाप्त करना पडा तो भी हिन्दी प्रचारकों को हिन्दी अध्यापन की नवीनतम विधियों से अवगत कराने के उद्देश्य से केन्द्र सरकार और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के सहयोग से हर साल नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया जाता है।

हिन्दी प्रचारकों केलिए नवीकरण पाठ्यक्रम, टंकण एवं आशुलिपि में प्रशिक्षण, हिन्दी में उच्च परीक्षाओं के वर्ग, नवहिन्दी लेखक कार्य शिविर, केरल ज्योति मासिक पत्रिका, हिन्दी में मौलिक रचनाओं का प्रकाशन, राष्ट्रवाणी मुद्रणालय इत्यादि सभा की अनेक उपयोगी योजनाओं में कुछ हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में उच्च अध्ययन की सुविधा प्रदान करने केलिये सभा जो स्नातकोत्तर हिन्दी केन्द्र चलाती है, उसमें केरल विश्वविद्यालय की हिन्दी एम. ए. परीक्षा केलिये विद्यार्थियों को तैयार किया जाता है। स्नातकोत्तर केन्द्र से संलग्न स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक हिन्दी ग्रन्थालय को शोध विद्यार्थियों के उपयोगार्थ केरल विश्वविद्यालय ने मान्यता प्रदान की है।

विद्यार्थियों में हिन्दी अध्ययन की रुचि बढाने केलिये सभा विविध साहित्य कला प्रतियोगितायें हिन्दी में आयोजित करती है और विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार भी देती है।

हिन्दी प्रचार को व्यापक बनाने केलिये केन्द्र सरकार की सहायता से गांवों में कुछ निःशुल्क हिन्दी विद्यालय और मुख्य नगरों में कुछ केन्द्रीय हिन्दी विद्यालय भी सभा चलाती है।

हिन्दी अध्ययन में प्रोत्साहन देने केलिये सभा ने एक बृहत पुरस्कार योजना बनायी है। केरल सरकार की मेट्रिक परीक्षा में हिन्दी में सर्वाधिक अंक पानेवाले को स्व० वी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक स्वर्ण पदक दिया जाता है और पदक प्राप्त विद्यार्थी को प्रस्तुत करनेवाले विद्यालय को स्व० वी. सरस्वती तंकच्ची स्मारक रोलिंग ट्रॉफी दी जाती है। स्कूली स्तर पर चलायी जानेवाली सुगम हिन्दी परीक्षाओं में उन्नत स्थान पानेवाले विद्यार्थियों को पुरस्कार दिये जाते हैं और उन परीक्षाओं में सर्वाधिक विद्यार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले स्कूलों को ट्रॉफियाँ दी जाती हैं। सभा की हिन्दी प्रथम से लेकर साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में उन्नत स्थान पानेवालों को उचित पुरस्कार दिया जाता है। हिन्दी भूषण में सर्वप्रथम आनेवाले को स्व० के. वासुदेवन पिल्लै स्मारक स्वर्ण पदक तथा साहित्याचार्य परीक्षा में सर्वप्रथम आनेवाले को डा० के. भास्करन नायर स्मारक स्वर्ण पदक दिया जाता है। इन परीक्षाओं में सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत करनेवाले श्रेष्ठ प्रचारकों को नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इस संदर्भ में यह बात साभार उल्लेखनीय है कि इस पुरस्कार योजना में केन्द्र सरकार का आर्थिक सहयोग मिलता आया है।

सभा के इन बहुमुखी कार्यों में देश के मूर्धन्य नेताओं और विद्वानों का अनुग्रह रहा है। बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री. उ. न. ढेबर, डा० संपूर्णानन्द,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री० भक्तदर्शन, डा० यशपाल, डा० प्रताप चन्द्र चन्द्र, पं० कमलापति त्रिपाठी जैसे मनीषियों ने सभा के दीक्षान्त समारोहों में पधार कर स्नातकों को आशीर्वाद दिया है। इनके अलावा बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ गोविन्द दास, आचार्य कृपलानी, श्री. बाल गंगाधर खेर, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० रामकुमार वर्मा, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, प्रो० नूरुल हसन, श्री० पी. के. थुंगन जैसे विद्वानों और नेताओं ने सभा में पधार कर हमें अनुगृहीत किया है। यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि करीब पचास वर्ष पहले राष्ट्रशिल्पि पं० जवाहरलाल नेहरु ने अपनी सहधर्मिणी श्रीमती कमला नेहरु और सुपुत्री इन्दिरा प्रियदर्शिनी के साथ सभा में पदार्पण किया था।

१९८२-८३ में सभा द्वारा चलायी गयी हिन्दी प्रथम से लेकर साहित्याचार्य तक की परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाये विद्यार्थियों को आज यहाँ पुरस्कृत किया जा रहा है। इन प्रतिभाशाली छात्रों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे हिन्दी अध्ययन में अधिक रुचि लेंगे और हिन्दी में उच्चतम योग्यता प्राप्त करने का प्रयत्न करते रहेंगे। १९८२-८३ की इन परीक्षाओं में सर्वाधिक परीक्षार्थियों को प्रस्तुत करने में प्रथम तीन स्थान पाये राष्ट्रभाषा के प्रचारक बन्धु यहाँ नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्रों से सम्मानित होनेवाले हैं। अन्य चार प्रचारक बन्धुओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। पुरस्कृत होने-वाले राष्ट्रभाषा सेवियों का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ और उनसे अनुरोध करता हूँ कि वर्द्धित उत्साह के साथ राष्ट्रसेवा के इस महान यज्ञ में जुट जाय। आज हिन्दी के मार्ग में नयी चुनौतियाँ सिर उठा रही है। केरल सरकार द्वारा गठित पाठ्यक्रम सुधार समिति ने भ्रम से अंग्रेज़ी को संपर्क भाषा मान कर उस भाषा के अध्यापन केलिये अधिक समय दिलाने और हिन्दी को महज राष्ट्रभाषा मानकर उसे अंग्रेज़ी की अपेक्षा कम समय दिलाने की सिफारिश की है। वर्षों से हिन्दी का अध्ययन यहाँ पाँचवीं कक्षा से आरंभ होता आ रहा है। विद्यार्थियों, अध्यापकों या अभिभावकों ने इसका कभी विरोध नहीं किया है। जैसे पहले सूचित किया गया है वर्तमान हिन्दी पाठ्यक्रम ही इतना अपर्याप्त है कि मेट्रिक उत्तीर्ण विद्यार्थी हिन्दी में वार्तालाप करने की या सरल हिन्दी सुनकर समझने की योग्यता प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसी हालत में समिति ने न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने किस सिद्धांत के बल पर यह सिफारिश की है कि हिन्दी का अध्यापन सातवीं कक्षा से ही आरंभ हो। यदि यह सिफारिश स्वीकृत हो गयी तो हिन्दी का जो भव्य महल हम यहाँ खडा कर रहे हैं, उसकी नींव ही टूट जायेगी। हिन्दी प्रचारकों को इस आपदा की तरफ़ जनता का ध्यान आकृष्ट करना है।

हिन्दी विद्यार्थियों, प्रचारकों, एवं कार्यकर्ताओं को प्रेरणा प्रदान करने और आशीर्वाद देने केलिये यहाँ पधारे हुए हमारे विशिष्ट अतिथियों का स्वागत करना मेरा पुनीत कर्तव्य है।

केरल के मुख्य मंत्री श्री के. करुणाकरन पक्के गाँधीवादी हैं और इस कारण हिन्दी के बडे समर्थक हैं। आप केरल के अतिशक्त राजनीतिज्ञ और जनप्रिय मुख्यमंत्री हैं। इसी कारण से आप विभिन्न प्रकार की विषमताओं के बीच भी अपनी नेतृत्व शक्ति को यथायोग्य सुदृढ रखते हुए शासन को सुचारू रूप से संभाल रहे हैं। आप केरल हिन्दी प्रचार सभा के बडे हितैषी हैं। कई बार आप ने यहाँ पधार कर हमें अनुगृहीत किया है। हाल ही में पाठ्यक्रम नवीकरण समिति की हिन्दी विरोधी सिफारिशों को अस्वीकार करने और हिन्दी को पाठ्य भाषाओं में द्वितीय स्थान दिलाने की प्रार्थना करते हुए हिन्दी कार्यकर्ताओं ने जो ज्ञापन समर्पित किया था, तब आप ने यह आश्वासन दिया कि जब मैं मुख्य मंत्री रहता हूँ तब हिन्दी की हानि नहीं होगी। आदरणीय मुख्यमंत्री श्री० करुणाकरन जी, हम आप का सादर स्वागत करते हैं।

पुरस्कार वितरण करने के लिये केन्द्र सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के राज्यमंत्री श्री० एच. के. एल. भगत जी यहाँ विराजमान हैं। विधि, समाज-सेवा और राजनीति में आप की देन अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। डी. ए. वी कोलेज, लाहौर, लॉ कोलेज, लाहोर और डी. एम. कालेज, मोगा में उच्च शिक्षा प्राप्त करके आप वकालत करने लगे। कई वर्षों तक आप दिल्ली नगर पालिका के उपाध्यक्ष रहे। दीर्घ काल तक आप दिल्ली विधान सभा के और संसद के भी सदस्य रहे। आप केन्द्र निर्माण और आवास विभाग के राज्य मंत्री रह चुके हैं। आप की पुस्तक 'कमेन्टरी ऑन इन्डियन पीनल कोड' अपने क्षेत्र में विशिष्ट स्थान रखती है। राष्ट्रभाषा के प्रति आपकी बडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचि है, लगन है और श्रद्धा है। तभी तो आप अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम में थोडा समय हमारे बीच उपस्थित रहने और हमें प्रोत्साहित करने केलिये पा सके। परम श्रद्धेय भगतजी, हम आप का अत्यादर पूर्वक स्वागत करते हैं।

केरल के परिवहन मंत्री श्री० के. के. वालकृष्णन इस सम्मेलन की अध्यक्षता करने की हमारी प्रार्थना स्वीकार की थी। किन्तु अभी सूचना मिली है कि उन्हें किसी अतिप्रधान कार्य केलिए कहीं जाना पडा।

हमारा अनुरोध स्वीकार कर के इस सम्मेलन की अध्यक्षता सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं प्रकांड पंडित डा० पी. के. नारायण पिल्लैजी कर रहे हैं। आप मलयालम के विख्यात लेखक एवं गवेषक हैं। उत्तरप्रदेशीय संस्कृत अकादमी के कालिदास पुरस्कार एवं केन्द्र साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं। श्रद्धेय डा० पी. के. नारायण पिल्ले जी का हम सादर स्वागत करते हैं।

प्रो० सामुवेल मत्ताई ने शिक्षा क क्षेत्र में दीर्घकालीन और व्यापक अनुभव प्राप्त किया है। आप केरल विश्व विद्यालय के कुलपति एवं विश्व विद्यालय अनुदान आयोग क सचिव रहे हैं। संप्रति आप केरल की राज्य शिक्षा सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं। आप अंग्रेज़ी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान एवं अध्यापक हैं। सस्कृत, हिन्दी, मराठी, गुजराती, मलयालम, कोंकणी आदि कई भारतीय भाषाओं में भी आपका ज्ञान गहरा है। हमें आशा है कि केरल के और देश के हित को ध्यान में रखकर आप राज्य सरकार को ऐसी सलाह देंगे जिससे पाठ्यक्रम में हिन्दी का स्थान उन्नत रहेगा। आदरणीय प्रो० सामुवेल मत्ताई जी, हम स्नेहादर पूर्वक आप का स्वागत करते हैं।

हिन्दी प्रचारक बन्धुओं और विद्यार्थियों का भी मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ। उन सब अभिभावकों और विद्वानों को भी मैं स्वागत करता हूँ जो यहाँ उपस्थित रहकर इस सम्मेलन की शोभा बढा रहे हैं।

जयहिन्द! जय हिन्दी!!

केरल ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या हिन्दी संपर्क भाषा है?

पी. जी. कामत

जिनको हिन्दी के संपर्क भाषा होने में शका है, वे सुने; कान फाड़कर सुनें!

गोवा से प्रकाशित हो रही एक कोंकणी मासिक पत्रिका है 'शहनाय'। उसके जून १९८३ वाले अंक में 'मरिअम्मा' शीर्षक एक रिपोर्ताज कहानी आई है, जिसमें दो बस-यात्रियों के बीच का एक वार्तालाप है।

बस में बड़ी भारी भीड़ थी। जनाना सीट पर एक औरत बैठी हुई थी और सीट का बाकी भाग खाली था। एक आदमी वहाँ खिसक गया। उसको आश्चर्य हुआ कि इतनी भीड़ के बावजूद यह जगह क्यों खाली हैं। उसकी नजर उस औरत पर पड़ी। वह निहायत गरीब और बीमार-सी लग रही थी। उसका शरीर इतना मलिन था मानों गंदगी की बोरी हो। आदमी की जिज्ञासा जागी। उसने कोंकणी में सवाल किया— तूँ खं ची कि? (आप कहाँ की हैं?) औरत को शायद मालूम हुआ कि यह पुरुष मुझ से बोल रहा है। लेकिन उस ने जवाब नहीं दिया; टकटकी लगाकर देखती रही। थोड़ी देर बाद वह बोली— 'एन्री?' आदमी ताड़ गया कि वह गोवा की नहीं हैं; शायद कन्नड़ भाषा है। लेकिन आदमी को कन्नड़ नहीं आती थी। उसे अपने सवाल का जवाब चाहिए भी था। इसलिए उसने हिन्दी में पूछा—

"आप को हिन्दी आती है?"

"जी।" तुरन्त औरत का जवाब आया।

दयानन्दम्
तृशूर-२०
केरल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य के प्रयोजन

डा० एम. जे. पटेल
एम्. ए. पी-एच्. डी.

काव्य सिद्धांत में "काव्य प्रयोजन" महत्वपूर्ण विषय माना जाता है। काव्य के प्रयोजन के प्रति कवि और पाठक के मन में सदा उत्सुकता बनी रहती है। प्रस्तुत लेख में काव्य के प्रयोजन का परिशीलन किया गया है।

भारतीय आचार्य :

१- भरतमुनि—भरतमुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में काव्य के निम्न लिखित प्रयोजन लिखे हैं :

"धर्म्यं यशस्यमायुष्यंहितं बुद्धि
विवर्धनम् ।
लोकोपदेशजननं नाट्यमेतद्-
भविष्यति ॥"

२. भामहः - भामह का कहना है कि अच्छे काव्य का भली-भांति परिशीलन—"धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में तथा कलाओं में निपुणता, कीर्ति और प्रीति को प्रदान करता है।"

'धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं
कलासु च ।
प्रीतिं करोति कीर्तिञ्च साधु काव्य-
निषेवणम् ॥"

३. मम्मट—प्रसिद्ध आचार्य मम्मट नें काव्य प्रयोजनों का उल्लेख निम्नांकित रूप में किया है —

"काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे
शिवेतरक्षतये ।
सद्य परनिर्वृतये कान्तासंमित-
तयोपदेशयुजे ।"

इन प्रयोजनों में यश और अर्थ कवि के लिए प्रयोजनीय है व्यवहार-ज्ञान सद्यः पर निवृत्ति और कान्तासम्मित उपदेश सहृदय के लिए है तथा अकल्याण का नाश, दोनों की दृष्टि से रक्खे गये हैं।

४. निष्कर्ष—इस विषय में संस्कृत के सम्भवतः सभी आचार्य एकमत हैं—

"आनन्दानुभूति काव्य का सर्वप्रमुख प्रयोजन है।"

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य प्रयोजन :

१. प्लेटो—प्लेटो ने अपने 'रिपब्लिक' में कवियों के निष्कासन की बात कही है और कवियों पर आरोप लगाया है कि ईश्वर की असफल कृति जगत् का, ये असफल अनुकरण किया करते हैं। कविता मन को मोह लेती है। प्लेटो के मत में काव्य प्रयोजन है आदर्श सृष्टि की रचना का अनुसंधान करना और काव्य को इतना मनमोहक तथा प्रभावशाली बना देना जिससे पाठक आत्मविस्मृति के आवरण में उनके अनुसार ही आचरण करने केलिए बाध्य हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२. अरस्तु—अरस्तू काव्य के प्रयोजन में आनन्द को प्रमुख स्थान देते हैं ।

"कल्पनातत्व और ज्ञान तत्व आनंद के प्रवर्तन में कारणीयभूत होते हैं" इस पर अरस्तू ने ज़ोर दिया है । निष्कर्ष में यूं कह सकते हैं कि अरस्तु ने काव्यानंद को ही, चाहे वह कल्पना प्रसूत हो, चाहे ज्ञानार्जनजन्य और विरेचन प्रसूत मानसिक स्वास्थ्य जन्य हो, एक मात्र काव्य का प्रयोजन माना है ।

३. टाल्स्टाय : टाल्स्टाय के अनुसार मानव को मानव से मिलाना काव्य का प्रयोजन है । भारतीयों की तरह समन्वयात्मकता इनमें नहीं है अतः प्रवाद खडे हुए हैं ।

प्रवादों पर विचार

१. कला कला के लिए है : इस वाद के प्रचारक "आस्कर वाइल्ड" और उनके सहयोगी 'ब्रेडले' का मत है कि कवि को प्रचारक या धर्मोपदेशक के रूप में नहीं आना चाहिए । कला स्वयं अपना उद्देश्य है । उसकी रचना से जो संतोष होता है वही कवि का सब से बड़ा फल है ।

२. कला जीवन के लिए : जीवन को प्रेरणा प्रदान करना प्रोत्साहन देना और आनंद के साथ उचितानुचित विवेक की शक्ति जागृत करना कविता का एक बडा उद्देश्य होना चाहिए । भारतीय साहित्य की प्रवृत्ति अधिकांशतः इसी लक्ष्य की ओर है ।

३. कला का उद्देश्य जीवन से पलायन : कला मानव को कल्पना लोक में पहुंचा देती है जहाँ वह अपने दुःख-दैन्यता से जीवन में एक शांति का अनुभव करता है ।

४. कला का उद्देश्य आनंद साधना है : काव्य का आनंद लोकातीत होता है । यह मत सर्वमान्य है ।

५. आत्मसाक्षात्कार के लिए : कला का प्रयोजन है रजोगुण और तमोगुण से बुने हुए परदे को हटा कर सत्व का उद्रेक करें जिसमें विश्व में व्याप्त आत्मसत्ता और तज्जन्य आनंद का अनुभव किया जाए ।

६ सेवा के लिए : कला के द्वारा सेवा सम्पन्न तो होती ही रहती है । इसे ही उद्देश्य बनाने से कला का स्तर गिर जाएगा ।

७ मानव को मानव से मिलाने के लिए : समस्त मानव-जाति एक और अविभाज्य है तथा उनकी भावनाएँ भी एक ही होती हैं । यहाँ साधारणीकरण की सीमा का स्पर्श सहज हो जाता है । मानव जाति एक-सूत्र में बांधी जाएगी ।

८. उपसंहार : काव्यप्रयोजन तो सम्भव है ही, किन्तु आनंद में सभी की समाहिति हो सकती है; इसमें किसी को शंका नहीं होनी चाहिए ।

❀

श्री. काड सिद्धेश्वर कालेज,
हुबली-३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्तालाप

रामेश्वर दयाल दुबे

बोली धरा—"सृष्टि का कितना
असह्य भार उठाती ।"
नभ बोला—"हो धन्य, शून्यता
से तुम हो बच जाती ।।" (१)

कहा नदी ने—"निशिदिन देती
कब लौटाओगे जल ?"
सागर बोला—"उत्तर देंगे
मेरे छोने बादल ।" (२)

कहा कली ने—"हँसो न ज्यादा
जल्दी होगा झड़ना ।"
बोला कुसुम—"पाठ परिवर्तन
होगा सबको पढ़ना ।।" (३)

सागर बोला—"कहाँ ले चला
चोरी कर जल मेरा ?"
बोला मेघ—"नहीं सुनता क्या ?
तृषित धरा ने टेरा ।।,' (४)

कहा मोमबत्ती ने—"धागे,
उर में तुझे बिठाया !"
उत्तर मिला—"नाम पर तेरे
तिल-तिल जलना भाया ।।" (५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोला फूल गर्व से फूला—
"मुझ-सा अन्य कहाँ है ?"
कहा धूल ने—"तुम-से कितने
मुझ में छिपे यहाँ हैं ।।" (६)

दुख ने कहा - "अभागा कितना,
सभी मुझे ठुकराते ।"
सुख बोला—"पर बिना तुम्हारे
जन हैं मुझे न पाते ।।" (७)

"दोनों ओर मुझे घेरे क्यों ?"
—नदी तटों से बोली ।
तट बोले - "तेरे स्वामी तक
पहुँचाती हैं डोली ।।" (८)

बोली नाव—'पड़ी बन बाधा
मैं हूँ पार लगाती ।"
बोली नदी—"किन्तु मेरे ही
जल पर तू इठलाती ।" (९)

बोला कुसुम—"कुशल, मैं कोमल
तुझ-सा नहीं प्रखर हूँ ।"
काँटा बोला—"तोष कि तेरी
रक्षा में तत्पर हूँ ।।" (१०)

दिन बोला—"निशि, मेरे पीछे
पड़ी सदा क्यों रहती ?"
उत्तर मिला—"श्रांति हरने को,
सम्मुख भी तो रहती ।।" (११)

रवि ने कहा—"प्रभा ले मेरी
तू इतना इठलाता ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहा चन्द्र ने —"दग्ध धरा पर
शीतल लेप लगाता ।।" (१२)

"मुझ पतंग के नभ-विहार में
बाधक डोरा-बन्धन ।"
डोरा बोला—"मुक्त हुई तो
छिन्न-भिन्न होगा तन ।।" (१३)

बोली सुई - "जिधर मैं जाती
तू पीछे क्यों आता ?"
धागा बोला "छेद बनाती
उनको भरता जाता ।।" (१४)

"कितनी जल्दी सिर तक आई"—
लता अहं भर बोली ।
तरु बोला—"लघु जीवन पर ही
सत इतरा यों भोली ।" (१५)

बोली धूप—"तेज से मेरे
सारा जग अकुलाया ।"
बोली छाँह—"आज तक तू तो
मुझे नहीं छू पाया ।।" (१६)

बोला दीप—"शलभ, मैं जलता
तू क्यों जलने आया ?"
"जलने में सुख मिलता होगा
—यह विचार ही लाया ।।" (१७)

पगडंडी ने कहा—"डरो मत,
मैं हूँ मार्ग दिखाती ।"
बोलो चरण—"जिधर बढते हम
तू है बनती जाती ।।" (१८)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोली आँख—"चल दिया बाहर
कुछ करना भी आता ?"
आसू बोला— 'ज्वाला को जल
मुझे बनाना भाता ।।" (१९)

गिरि ने कहा—"कहाँ जाता रे !
कल कल करते झरने ?"
"जीवन को संगीत बनाकर
जीना, सार्थक—कहने ।।" (२०)

"पीत पत्र चल दिये, ढकेगा
कौन नग्नता मेरी?"
किशलय उझके—"आ पहुँचे हम
चिन्ता हरने तेरी ।।" (२१)

"गन्ध ! ठहर जा, कहाँ जा रही
तू कितनी सैलानी !"
कुसुम, तुम्हारी कीर्ति मुझे है
दूर-दूर पहुँचानी ।।" (२२)

'वाणी में मधु भरे कोकिला
क्यों छिपकर तू बोले ?"
"रूप-दिवाने जन के सम्मुख
काली कैसे डोले ?" (२३)

सत्ता बोली—"नहीं चाहिये
सत्य-वत्य की बातें ।"
बोला सत्य—"सहन करना तो
शीघ्र काल की घातें ।।" (२४)

"पौरुष का प्रतीक मैं नर हूँ
तू है अबला नारी ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"सोचा कभी, गोद में पलकर
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पाई प्रभुता सारी।" (२५)

बोला वृद्ध—"निरर्थक जीवन
सन्ध्या है घिर आई।"
शिशु बोला—"पर मुझे दीखती
ऊषा की अरुणाई॥" (२६)

कहा लेखनी ने— 'तेरी यह
नहीं कालिमा भ ती॥"
मसि बोली—"कालिमा किन्तु है
धवल भाव उपजाती॥" (२७)

कहा म्यान ने— 'रे कृपाण तू
कितना रक्त बहाता।"
उत्तर मिला—"न कुंठित होऊँ
तू ही मुझे छिपाता।" (२८)

बोला बाण—"फेंक कर मुझको
बता धनुष क्या पाता?"
उत्तर मिला—तुझे मैं तेरे
लक्ष्य निकट पहुँचाता॥ (२९)

"मूल न जकड़े होती तो मैं
छू लेता नभ ऊपर।"
"वृक्ष! तुझे मैं साधे, वरना
धूल चाटता भू पर॥" (३०)

❀

चित्रकूट
सी २७४, निराला नगर
लखनऊ (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का प्रयोग और प्रचार साथ साथ बढे

संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्यों का आह्वान

बैठे हैं बाएँ से — डा० वी के. सुकुमारन नायर, डा० पी. के. नारायण पिल्लै, श्री० ए. नीललोहित दासन नाटार, श्री० एम. रामगोपाल रेड्डी और श्री० जयराम वर्मा । संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्यों का स्वागत कर रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ।

संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्यों के स्वागत में २-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में एक सम्मेलन आयोजित हुआ ।

नगर के प्रमुख साहित्यकारों एवं अन्य बुद्धिजीवियों ने सम्मेलन में भाग लिया ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मंत्री श्री० एम. के. वेलायुधन नायर ने समिति के सदस्यों का स्वागत किया और राजभाषा के रूप में हिन्दी को शीघ्रातिशीघ्र प्रतिष्ठित करने की अपील करते हुए एक ज्ञापन समर्पित किया । ज्ञापन इसी अंक में अन्यत्र पढें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन की अध्यक्षता विख्यात साहित्यकार एवं केरल हिन्दी प्रचार सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै ने की।

केरल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति एवं राजनीतिशास्त्र के विख्यात विद्वान डा० वी. के. सुकुमारन नायर ने हिन्दी संबंधी अपने विचार प्रकट किये।

प्रेमपूर्ण स्वागत केलिए कृतज्ञता अर्पित करते हुए समिति की ओर से सर्वश्री जयराम वर्मा, एम. रामगोपाल रेड्डी एवं ए. नीललोहितदासन नाटार ने भाषण दिया। उन्होंने आह्वान किया कि राजभाषा हिन्दी का प्रयोग और प्रचार को साथ साथ बढावा दिया जाये ताकि अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी शीघ्र ही प्रतिष्ठा पा सके।

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकट की।

सम्मेलन में दिये गये मुख्य भाषणों के सारांश यों हैं :-

जयराम वर्मा

केरल हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी की जो महान सेवा कर रही है उस केलिए सभा को बधाई देता हूँ। जिस प्रेम से, जिस लगन से और जिस भावना से सभा ने हमारा स्वागत किया है उस केलिए मैं कृतज्ञ हैं।

केरल के लोग भाषाध्ययन में बडे कुशल रहे हैं। अंग्रेजी में वे बहुत कुशलता प्राप्त कर चुके हैं। हिन्दी की तरफ़ उनका ध्यान गया है। हिन्दी पर वे उसी तरह अधिकार पा रहे है जैसा उन्हें अंग्रेजी पर मिला है। यह जान कर हमें बडी खुशी हुई कि केरल में हिन्दी सीखनेवालों की संख्या काफी बढती जा रही है। हिन्दी के प्रचार केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा जो काम कर रही है उस केलिए उसे हर प्रकार का प्रोत्साहन मिलना चाहिए। सभा की जो कठिनाइयाँ है उन्हें दूर करना चाहिए जिस से यह और तेजी से बढे।

यह जरूरी है कि हिन्दी का प्रयोग राजभाषा के रूप में जल्दी सम्भव हो सके और जल्दी हिन्दी अंग्रेजी का स्थान पूर्ण रूप से ले सके इस केलिए हिन्दी का प्रचार और प्रसार किया जाये।

संसदीय राजभाषा उस समिति का कार्य हिन्दी के प्रचार और प्रसार से संबंधित नहीं है। प्रचार प्रसार के काम में बहुत बडे बडे लोग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा विश्वास है कि वह समय जल्दी आयेगा जब हिन्दी राजभाषा के पद पर अंग्रेज़ी के स्थान पर पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो जायेगी और हम गर्व से कह सकेंगे कि हिन्दी हमारी राजभाषा है ।

विद्वान लगे हुए हैं । संसदीय राज भाषा उपसमिति का काम यह देखना है कि जो लोग हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं वे हिन्दी का उपयोग सरकारी काम काज में कितना करते है । हिन्दी राजभाषा, राष्ट्रभाषा है । संसद ने निर्णय लिया है कि जब तक हिन्दी कार्यालयों में पूर्ण रूप से काम में नहीं लायी जा सकती है तब तक सह राजभाषा के रूप में अंग्रेज़ी बनी रहेगी। अहिन्दी भाषी प्रदेशों के हाथ में यह निषेधाधिकार (वीटोपवर) दे दिया गया है कि जब तक वे लोग सरकारी काम काज में अंग्रेज़ी के स्थान पर हिन्दी का प्रयोग करने के लिए पूर्ण रूप से तैयार न हो जायें तब तक अंग्रेज़ी का भी उपयोग किया जा सकता है । अहिन्दी भाषी प्रदेशों में इस बात की बडी आवश्यकता है कि जो लोग हिन्दी के काम में लगे हुए हैं उनकी हर प्रकार से सहायता की जाये जिससे हिन्दी जाननेवालों की संख्या ऐसे प्रदेशों में काफ़ी हो जाये । हिन्दी के राजभाषा होने पर उनकी कोई हानि होगी यह शक उन के दिल से मिटाना है । यह शक उनके दिल से निकल जाये कि हिन्दी राजभाषा के रूप में उन के ऊपर थोपी जा रही है । इस बात में कोई सन्देह नहीं कि जब तक अहिन्दी भाषी हिन्दी में सरकारी काम काज केलिए पूर्ण रूप से तैयार नहीं होंगे हाव तब अंग्रेज़ी सह राज भाषा बनी रहेगी । हमारा विश्वास है कि वह समय जल्दी आयेगा जब हिन्दी राजभाषा के पद पर अंग्रेज़ी के स्थान पर पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो जायेगी और हम गर्व से कह सकेंगे कि हिन्दी हमारी राजभाषा है। यह सोच कर हमारा सिर लज्जा से झुक जाता है कि दुनियाँ के सबसे बडे प्रजातांत्रिक देश भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पैंतीस वर्ष बाद भी अपनी राजभाषा प्रतिष्ठित नहीं हो पायी ।

हम समझ बैठे हैं कि विश्व के सभी देशों में अंग्रेज़ी बोली जाती है । हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लो ग रूस गये, जर्मनी गये, फ्रांस गये, कुवैत गये। हमने देखा कि इनमें किसी भी देश में अंग्रेज़ी बोली नहीं जाती। रूस जैसे देशों में अंग्रेजी का इस्तेमाल करना अपनी मानहानि समझते हैं, अपनी प्रतिष्टा के खिलाफ समझते हैं।

जब हम इग्लैंड में
हिन्दी में बोले :

हम लोग इंग्लैंड भी गये। इंग्लैंड के विदेश मंत्री से हम लोगों की मुलाकात हुई। हम लोग अंग्रेज़ी जानते हैं। उन्होंने हमारा स्वागत किया अंग्रेज़ी में और हम लोगों ने उस का उत्तर दिया हिन्दी में। हम ने उनकी बातों का हिन्दी में अनुवाद कराया और अपनी बातों का अंग्रेज़ी में अनुवाद कराया। उसी बीच हम ने कह दिया कि दुनियाँ के सब से बड़े प्रजातांत्रिक देश भारत के हम प्रतिनिधि यहाँ पर आये हुए हैं। उन्होंने कहा—"आप तो दुनियाँ के सब से बड़े प्रजातांत्रिक देश के प्रतिनिधि है। पर हम एक छोटे देश के प्रतिनिधि है"। हमारी बात उन्हें लग गयी। तो हमने कहा—"आप का देश प्रजातंत्र का जन्मदाता है। आप का देश प्रजातंत्र की रानी कहा जाता है। आप एक माने में आगे हैं तो हम दूसरे माने में आगे हैं।" तब उन को संतोष हुआ कि हमने उनका अपमान करने की कोशिश नहीं की है।

तो खैर, हमारी यह धारणा ठीक नहीं है कि अंग्रेज़ी सारे विश्व की भाषा है।

हिन्दी तो केन्द्र की राजभाषा है। केन्द्रीय कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग हो, और दूसरे प्रदेशों के साथ केन्द्र का पत्र व्यवहार तब हिन्दी के माध्यम से होगा जब हिन्दी पूर्णरूप से राजभाषा होगी। लेकिन जो प्रदेश है उन की अपनी अपनी राज-भाषायें हैं। यहाँ की मलयालम राजभाषा है। तो यहाँ का सरकारी काम मलयालम के माध्यम से हो। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो कि हिन्दी के जानने से समूचे भारत में काम चल जाये।

एक ज़माना था संस्कृत का हमारे देश की भाषा संस्कृत थी। आप आदि शंकर के प्रदेश के रहनेवाले हैं। जो संस्कृत जाननेवाले थे वे जब देश के कोने-कोने में जाते थे उन का सब काम संस्कृत के माध्यम से चल जाता था। विभिन्न प्रदेशों में विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषाएँ हैं। लेकिन एक संपर्क भाषा की ज़रूरत है। संपर्क भाषा हिन्दी हो, यह हमारे संसद का निर्णय है। यदि यहाँ की राज्यसरकार हिन्दी में पत्रव्यवहार नहीं करती तो यह नियम के अनुसार है। उनसे हम नहीं कह सकते कि वे हिन्दी में पत्र व्यवहार करें। केन्द्र से और इतर प्रान्तों से यहाँ की सरकार तब तक अंग्रेजी में पत्र व्यवहार कर सकती है जब तक हिन्दी पूर्ण रूप से देश की राजभाषा न हो।

संविधान का उल्लंघन

मुझे बडी खुशी हुई जब मालूम हुआ कि आप हिन्दी की पत्रिका भी चलाते हैं। यहाँ पर हम ने जिन दफ्तरों का निरीक्षण किया, उनमें एक दफ्तर के निदेशक से हम ने पूछा, कि आप प्रेस विज्ञप्ति क्यों केवल अंग्रेजी में देते हैं? तो वे कहने लगे कि यहाँ हिन्दी में कोई समाचार पत्र ही नहीं निकलता। तो हमने कहा आप पता लगाइए, यहाँ कोई पत्रिका होगी। आप केवल अंग्रेज़ी में विज्ञप्ति देते हैं तो आप संविधान का उल्लंघन करते हैं। आपका अंग्रेज़ी और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रेस विज्ञप्ति देनी चाहिए। देश की राजभाषा हिन्दी हो चुकी है। अंग्रेज़ी केवल सहराजभाषा है केवल उनकी मदद केलिए जो हिन्दी अभी नहीं जानते हैं।

हमारी समिति यह देखती है कि दफ्तरों में अंग्रेजी की जगह हिन्दी जाननेवाले अब कितने हैं? और जो हिन्दी जानते हैं वे हिन्दी में काम करते हैं कि नहीं। यदि हिन्दी के प्रयोग में कोई कठिनाई है तो हम उनसे सुझाव माँगते हैं कि उन कठिनाइयों को कैसे दूर करें? और उनकी जो कमियाँ हैं जैसे टंकक, टंकणयंत्र आदि की तो उनकी पूर्ति करने की कोशिश करते हैं। हम उनसे पूछते हैं कि तो यदि आप के पास हिन्दी अधिकारी नहीं हैं तो आप माँग क्यों नहीं करते? हम हिन्दी के प्रयोग में लगे हुए हैं और आप हिन्दी के प्रचार में लगे हुए हैं। दोनों के मेल से यह काम पूरा होगा। हम समझते हैं कि आप सबके सहयोग से वह दिन जल्दी आयेगा जब हम कह सकेंगे कि हिन्दी पूर्ण रूप से देश की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गयी। आप जो सेवा कर रहे हैं उसके लिए हम आपको बधाई देते हैं और यह भी चाहते हैं कि आप के रास्ते में कोई भी कठिनाई हो तो सरकार को आपकी पूरी सहायता करनी चाहिए जिससे आप अपना काम आसानी से कर सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम. रामगोपाल रेड्डी

मेरी यह मान्यता है कि एक भाषा के सीखने के बाद दूसरी भाषा सीखें तो उससे पहली भाषा के अध्ययन में उसी प्रकार बाधा नहीं पडेगी। जिस प्रकार एक दीपक जलाने के बाद दूसरा दीपक जलाने से रोशनी दुगुनी हो जाती है कम नहीं होती। यह ज़रूरी है कि केन्द्रीय स्तर पर सरकारी भाषा एक ही हो। हिन्दी के प्रचार केलिए आप जो प्रयास कर रहे हैं वह बहुत ही सराहनीय है। संसद में चार-पाँच व्यक्ति ही ऐसे मिलेंगे जो आपकी सी उच्चस्तरीय हिन्दी बोल पाते हैं। आपको केन्द्र सरकार से जो भी सहायता मिलनी है उसकेलिए हमसे सम्पर्क बनाये रखें। हमारी उम्मीद है कि हिन्दी सीखने में आप जो जोश दिखा रहे हैं वह सारे देशवासियों में जल्दी फैल जायगा और सारे भारत वर्ष केलिए अच्छे दिन आयेंगे। हम आशा करते हैं कि सारे दक्षिण भारत के अन्य प्रान्त भी आपके मार्गदर्शन में आगे बढेंगे। यह मैं देश का सौभाग्य मानता हूँ कि हमारी ज्यादा लडकियाँ हिन्दी सीख रही हैं। क्योंकि औरतें यदि हिन्दी सीख गयीं तो वे घर में बच्चों को हिन्दी सिखा सकती हैं। हम आप को बधाई देते हैं।

ए. नं ललोहितदासन नाटार

मेरे वैयक्तिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन के साथ हिन्दी का अटूट संबन्ध रहा है। बचपन में मैं अपने बडे भाई से जो हिन्दी पढते थे—हिन्दी के शब्द सुना करता था उन्हीं शब्दों से मेरे हृदय में राष्ट्रीय भावना का उदय हुआ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के हिन्दी प्रचार संबन्धी कार्यों से विद्यार्थी जीवन में ही मेरा संबंध जुड गया। मुझे लगता है जैसे माननीय वेलायुधन नायर जी ने बताया की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व केरल के नौजवानों में हिन्दी प्रचार केलिए जो जोश था वह अब नहीं रहा। हिन्दी में उच्च उपाधियाँ प्राप्त नौजवान नौकरी की खोज में बेकार घूमते फिरते हैं। उन लोगों को राष्ट्र संबन्धी सेवा में अच्छी तरह से लगाने की कोई योजना केन्द्र सरकार ने या प्रान्तीय सरकारों ने नहीं बनायी है। संसद सदस्यों को और अधिकारियों को इस समस्या का समाधान ढूँढना चाहिए।

उन्नीस सौ अस्सी में हमने विदेशों की यात्रा की। तब तक हमारी भी यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में उच्च उपाधियाँ प्राप्त नौजवान नौकरी की खोज में बेकार घूमते फिरते हैं। उन लोगों को राष्ट्र सम्बन्धी सेवा में अच्छी तरह से लगाने की कोई योजना केन्द्र सरकार ने या प्रान्तीय सरकारों ने नहीं बनायी है। संसद सदस्यों को और अधिकारियों को इस समस्या का समाधान ढूँढना चाहिए।

मिथ्या धारणा थी कि अंग्रेजी एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। लेकिन हमने देखा कि ब्रिटन के अलावा अन्य किसी देश में अंग्रेजी अंतरर्देशीय भाषा मानी जा सकती है तो संसार के सबसे बड़े प्रजातान्त्रिक देश में बोली जानेवाणी हिन्दी भी अंतर्राष्ट्रीय भाषा मानी जा सकती है। जिन लोगों ने अपना संपूर्ण जीवन हिन्दी के प्रचार प्रसार में बिताया है वे यह गौरव कर सकते हैं कि उन्होंने राष्ट्र सेवा केलिए महान कार्य किया है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी

हिन्दी प्रचार संस्थाओं के समक्ष मैं यह सुझाव रखना चाहता हूँ कि हिन्दी के परम्परागत भाषा साहित्य संबन्धी पाठ्यक्रम के साथ साथ प्रयोजन मूलक हिन्दी के कुछ ऐसे पाठ्यक्रम भी चलाएँ जिन से सरकारी कर्मचारियों को हिन्दी में कामकाज करने की विधि सीखने में सहायता मिले। बदलती हुई परिस्थिति में ऐसे पाठ्यक्रमों की बड़ी बड़ी जरूरत है। संसद सदस्यों और अधिकारियों के सहयोग से ऐसे पाठ्ययक्रमों की मान्यता प्राप्त करके आगे बढ़ना है।

आपने हिन्दी के संबन्ध में जो ज्ञापन हमें दिया है उसमें बताई हुई समस्याओं पर हम ध्यान देंगे और उन्हें हल करने का यथाभसंव प्रयास करेंगे।

डा० पी. के. नारायण पिल्लै

यह संस्था एक ऐसे तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी द्वारा स्थापित हुई जो गाँधीजी की प्रेरणा पाकर हिन्दी के प्रचार क्षेत्र में आये। जिन आदर्शों को सामने रखकर स्व०के० वासुदेवन पिल्लै ने इसकी स्थापना की थी उनका यहाँ पूर्णतः पालन हो रहा है। इस संस्था के सभी कार्य राष्ट्र की भावात्मक एकता को दृष्टि में रखकर किये जा रहे हैं। यह संस्था हिन्दी प्रचार केलिए स्तुत्यर्ह कार्य करती आ रही है। इसलिए केन्द्र और प्रान्तीय सरकार को चाहिए कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर प्रकार इस संस्था की पूरी सहायता करें। करीब २००० निस्वार्थ हिन्दी प्रचारक इस संस्था के काम में जुडे हुए हैं। वे इस विश्वास में काम करते हैं जिस हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है उसकी उचित प्रतिष्ठा और सम्मान होना चाहिए। वे इस आशा में काम कर रहे हैं कि एक न एक दिन हिन्दी सारे देश की सम्पर्क भाषा हो जाएगी। यद्यपि सारे देश में हिन्दी प्रचलित नहीं हो पायी है तो भी यह सारे देश की सम्पर्क भाषा स्वीकृत हो चुकी है। कुछ लोग यह कहते मिलेंगे कि सम्पर्क भाषा का पद हिन्दी को नहीं किसी भाषा को दिया जा सकता है। केरल के समीपवर्ती प्रान्तों में ही नहीं केरल में भी कुछ लोग ऐसा सोचने लगे हैं। इस धारण को दूर करना है।

त्रिभाषा सूत्र

बहुत सारी चर्चाओं और प्रयोगों के बाद हमने त्रिभाषा सूत्र को अपनाया। हमें उसे पूर्णतः स्वीकार करना है और उसके कार्यान्वयन में कोई कठिनाई हो तो उसे दूर करना है। उसके बजाय त्रिभाषा सूत्र में कोई परिवर्तन लाना ठीक नहीं होगा। व्यक्तित्व के विकास में मातृभाषा का अपना स्थान होता है। राष्ट्रीय जीवन में राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी बहुत बडा महत्व है। अंग्रेज़ी भी हमारे लिए बहुत लाभकारी है। इस प्रकार त्रिभाषा सूत्र को हर भाषा का अपना प्रयोजन है। मेरा आग्रह है कि संसदीय राजभाषा उपसमिति के जो वरिष्ठ सदस्य यहाँ उपस्थित हैं वे केरल हिन्दी प्रचार सभा की सेवाओं का सही रूप अधिकारियों के सामने प्रस्तुत करेंगे और सभा को

व्यक्तित्व के विकास में मातृभाषा का अपना स्थान होता है। राष्ट्रीय जीवन में राष्ट्रभाषा हिन्दी का भी बहुत बडा महत्व है। अंग्रेज़ी भी हमारे लिए बहुत लाभकारी है।

उचित प्रोत्साहन और सहायताएँ दिला देंगे।

डा० वी. के. सुकुमारन नायर

मैं एक शिक्षाविद के नाते बता सकता हूँ कि शिक्षा के क्षेत्र में केरल में हिन्दी का भी विरोध नहीं हुआ है। केरल के विश्वविद्यालयों में हिन्दी को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त है। यहाँ के ज्यादातर शिक्षार्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद प्रान्तीयभाषा की अपेक्षा हिन्दी सीखना अधिक पसन्द करते हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में भी यहाँ हिन्दी को उचित स्थान दिया गया है। कई शोधार्थी यहाँ हिन्दी में पी-एच. डी. कर रहे हैं।

हिन्दी स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीक के रूप में केरल में आयी और यह आज देश के इतर प्रान्तों के साथ संपर्क का एक प्रमुख माध्यम बनी हुई है। सरकारी स्तर पर संपर्क भाषा स्वीकृत होने के पहले ही हिन्दी केरल और इतर प्रान्तों के संपर्क-माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। मेरी आशा है कि हिन्दी की यह स्थिति बनी रहेगी। एक शिक्षाविद और राजनीति शास्त्रज्ञ के नाते डा० नारायण पिल्लै के विचारों का समर्थन करते हुए मैं यही कहूँगा कि हमें त्रिभाषा सूत्र को अमल में लाना है। नहीं तो हम देश की एकता और भावात्मक एकता बनाये नहीं रख पायेंगे।

संस्कृति की भाषा के रूप में हिन्दी

राजभाषा के रूप में हिन्दी की जो प्रगति हो रही है उससे ही संसदीय राजभाषा का संबंध है। लेकिन मेरे विचार में हिन्दी का जो महत्व प्रशासन के उपकरण के रूप में है उस से ज्यादा महत्व भारतीय संस्कृति की भाषा के रूप में उसे प्राप्त है। हिन्दी को सारे दक्षिण में मुख्य संपर्क भाषा का स्थान मिलना है। हिन्दी को सारे दक्षिण में संस्कृति की भाषा के रूप में स्वीकृति पानी है इसकेलिए सारे दक्षिण में विशेषकर केरल में हिन्दी का व्यापक प्रचार करना है। इस उद्देश्य को सामने रखकर हमें मलयालम के साहित्य का अनुवाद हिन्दी में और हिन्दी साहित्य का अनुवाद मलयालम में करना होगा। तभी केरल में हिन्दी संस्कृति की भाषा के रूप में स्वीकृत हो पायेगी। हिन्दी को संस्कृति की भाषा बनाने में केरल हिन्दी प्रचार सभा को महत्वपूर्ण योगदान देना है। केरल हिन्दी प्रचार सभा गत कई वर्षों से हिन्दी की जो महान सेवा करती आयी है उसकेलिए मैं सभा के कार्य-कर्ताओं को बधाई देता हूँ।

संसदीय राजभाषा समिति के जो वरिष्ठ सदस्य यहाँ पधारे हैं उनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसदीय राजभाषा उपसमिति के विचारार्थ

आदरणीय संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्य श्री० जयराम वर्माजी, श्री० एम. राजगोपाल रेड्डी जी, श्री० ए नीललोहित दासन नाटारजी, डा० पी. के नारायण पिल्लै जी, डा० वी. के. सुकुमारन नायरजी और विद्वत् वृन्द

केरल हिन्दी प्रचार सभा का सौभाग्य है कि संसदीय राजभाषा उपसमिति के सम्माननीय सदस्यों का स्वागत करने का अवसर आज यहाँ मिला। आपने इसके लिए हमें जो अवसर दिया एतदर्थ हम आप के अत्यन्त आभारी हैं।

केरल हिन्दी प्रचार सभा गत पचास वर्षों से केरल में हिन्दी का प्रचार करती आ रही है। दक्षिण के तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी स्व० के. वासुदेवन पिल्लै ने इस महान संस्था की स्थापना करके केरल का ही नहीं, देश का ही बडा हित किया। इस संस्था के प्रयत्नों का यह परिणाम है कि केरल की जनता ने बडे प्रेम से हिन्दी को अपनाया है। कभी यहाँ हिन्दी का किसी प्रकार का विरोध नहीं हुआ। केरल के स्कूलों में पाँचवीं कक्षा से दसवीं कक्षा तक हिन्दी अनिवार्य पाठ्य विषय है। कॉलेजीय स्तर पर भी वैकल्पिक भाषा के रूप में ही सही हिन्दी पढने की सुविधा है। यहाँ के सात कालेजों में हिन्दी एम. ए. की कक्षायें चलती हैं और प्रतिवर्ष करीब ५०० विद्यार्थी हिन्दी एम. ए. की उपाधि और करीब २५ अनुसन्धित्सु पी-एच. डी. की उपाधि पा रहे हैं।

यद्यपि पाँचवीं कक्षा से हिन्दी पढायी जा रही है तो भी स्कूली स्तर का हिन्दी अध्यापन अपर्याप्त ही कहा जा सकता है। मेट्रिक उत्तीर्ण विद्यार्थी न हिन्दी में वार्तालाप कर पाता है न हिन्दी में लिखकर अपने भाव प्रकट कर पाता है। इस कमी को पाटने के लिए सभा विविध स्तरीय हिन्दी परीक्षायें हिन्दी प्रथम से लेकर साहित्याचार्य तक चलाती है। अभी तक लाखों की संख्या में परीक्षार्थी सभा की विविध परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर प्रमाण-पत्र प्राप्त कर चुके हैं। प्रतिवर्ष करीब सवा लाख तक परीक्षार्थी सभा

२-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्यों का स्वागत करते हुए समर्पित किया गया ज्ञापन। विवरण अन्यत्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की विविध परीक्षाओं में सम्मिलित हो जाते हैं।

इसके अलावा सभा हिन्दी प्रचार की कई महत्वपूर्ण योजनायें कार्यान्वित कर रही है जिनमें प्रमुख हैं हिन्दी प्रचारकों के लिए नव करण पाठ्यक्रम, हिन्दी नवलेखक कार्य शिविर, हिन्दी टंकण एवं आशु लिपि विद्यालय, हिन्दी स्नातकोत्तर केन्द्र स्व० के. व सुदेवन पिल्लै स्मारक हिन्दी ग्रंथालय केरल ज्योति हिन्दी मासिक पत्रिका, हिन्दी से मलयालम और मलयालम से हिन्दी में अनुवाद राष्ट्रवाणी मुद्रणालय इत्यादि। हिन्दी में विद्यार्थियों की रुचि बढाने के लिए सभा विविध प्रकार की पुरस्कार योजनायें भी केन्द्र सरकार की सहायता से एवं अपनी तरफ़ से कार्यान्वित करती है।

सभा की प्रवेश परीक्षा को मेट्रिक के समकक्ष, हिन्दी भूषण को इन्टर के समकक्ष और साहित्याचार्य को बी. ए के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। भूषण उपाधि को उच्च प्राथमिक विद्यालयों में और साहित्याचार्य उपाधि को माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी अध्यापक की नियुक्ति के लिए पर्याप्त योग्यता स्वीकार की गयी है।

पहले यद्यपि राष्ट्रप्रेम से प्रेरित होकर यहाँ हिन्दी अध्ययन की ओर प्रौढ और छात्र आकृष्ट होते थे। तो भी आज हिन्दी अध्ययन का एक मात्र नहीं तो मुख्य अभिप्रेरण जीविकोपार्जन रह गया है। चूंकि यहाँ हिन्दी उपाधिधारियों की बेकारी और अपूर्ण रोजगार प्रतिवर्ष बढती जा रहीं है। इसलिए कालेजीय स्तर पर हिन्दी सीखनेवालों की संख्या भी घटती जा रही है। कुछ वर्ष पूर्व प्री डिग्री परीक्षा में द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी लेनेवालों की संख्या मलयालम लेनेवालों से ज्यादा रहती थी। पर गत वर्ष प्री. डिग्री के करीब एक लाख परीक्षार्थियों में से केवल पच्चीस हजार विद्यार्थियों ने ही द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी का परीक्षा दी। बाकी पचहत्तर प्रतिशत ने मलयालम को ही द्वितीय भाषा के रूप में अपनाया।

स्कूली विद्यार्थियों में भी हिन्दी सीखने की रुचि बराबर घटती जा रही है।

इस रुचि परिवर्तन के पीछे कुछ प्रशासनिक कारण भी है। सात वर्ष पूर्व तक मेट्रिक में हिन्दी पत्रों का अंक मलयालम और अंग्रेजी के पत्रों के अंक के समान एक सौ था। इसे घटाकर पचास कर दिया गया। अब सरकार द्वारा गठित पाठ्यक्रम नवीकरण समिति ने सिफारिश की है कि संपर्क भाषा अंग्रेजी का अध्यापन पाँचवीं कक्षा से शुरू किया जाय और राष्ट्रभाषा हिन्दी को पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए दो वर्ष और— यानी सातवीं कक्षा तक प्रतीक्षा करनी पडेगी। यदि यह सिफारिश स्वीकृत हो जायेगी तो निश्चय ही हिन्दी अध्यापन की नींव ही टूट जायेगी।

जैसे डा० दौलत सिंह कोठारी शिक्षा आयोग ने सुझाया था यदि पर्याप्त अभिप्रेरणा हो तो लडके और लडकियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक श्रम से और अधिक लगन से हिन्दी सीखेंगे। यह अभिप्रेरणा इस बात पर निर्भर है कि हिन्दी किस हद तक राजभाषा के रूप में प्रस्तुत होती है और किस हद तक हिन्दी का ऐसा विकास होता है कि हिन्दीतर भाषा-भाषी अपने ज्ञान और संस्कृति के पोषण के लिए हिन्दी की ओर सहज ही आकृष्ट हो जायें।

हमें खेद के साथ कहना पड़ता है कि इन दोनों दिशाओं में जो प्रयत्न हो रहा है उसमें आशाजनक प्रगति दृष्टिगोचर नहीं होती।

केरल सरकार ने अब तक हिन्दी को प्रशासन के किसी प्रयोजन केलिए नहीं अपनाया है। पहले सचिवालय में हिन्दी अनुवादक का जो पद था वह भी अब नहीं रहा।

केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों में भी हिन्दी का प्रगामी प्रयोग होता नहीं दीखता। अनेक कार्यालय ऐसे हैं जहाँ निर्धारित मापदंड के अनुसार हिन्दी अधिकारियों और कर्मचारियों के पदों का सृजन नहीं हुआ है। कई ऐसे कार्यालय हैं जहाँ हिन्दी अधिकारियों और कर्मचारियों के पद रिक्त हैं। इससे राजभाषा अधिनियमों के कार्यान्वयन में विलंब हो ही जाता है। परिणाम स्वरूप द्विभाषी फार्मों का हिन्दी भाग प्रायः व्यवहृत नहीं हो पाता। कुछ ऐसे कार्यालय भी हैं जहाँ नामपट्ट केवल अंग्रेजी में ही लिखा रहता है।

हिन्दी का उपयोग जहाँ अत्यन्त आवश्यक है वहाँ भी हिन्दी की उपेक्षा की जाती है। केरल के हवाई अड्डों में और रेलवे स्टेशनों में हिन्दी में घोषणा देने का कार्य अभी शुरू नहीं हो पाया है जिससे हिन्दी भाषी पर्यटकों को बड़ी असुविधा हो जाती है।

केन्द्रीय कार्यालयों के कर्मचारियों को हिन्दी सीखने केलिए जो वित्तीय प्रोत्साहन दिया जाता है वह बिलकुल अपर्याप्त है। जो प्रोत्साहन दिया जाता है वह भी कुछ प्रशासनिक कारणों से कुछ उत्साही कर्मचारियों को नहीं मिल पाता। केरल की मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर्मचारियों को राजभाषा विभाग की प्रबोध और प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर भी यह कह कर आर्थिक प्रोत्साहन नहीं दिया जाता कि उन्होंने मेट्रिक तक हिन्दी पढ़ी है। जैसे पहले बताया गया है केरल के स्कूली हिन्दी पाठ्यक्रम बिलकुल अपर्याप्त है। उसे प्रबोध या प्राज्ञ के समकक्ष नहीं माना जा सकता। इसलिए इस नीति में सुधार आवश्यक लगती है।

हिन्दी का विकास अभी इस हद तक नहीं हो पाया है कि ज्ञान और संस्कृति के पोषण केलिए हिन्दीतर प्रान्त की जनता हिन्दी की ओर आकृष्ट हो सके। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भारत में प्रकाशित उच्चस्तरीय पत्रिकाओं में अधिकतर आज भी अंग्रेजी में ही निकलती है। हिन्दी में ऐसी पत्रिकाओं की संख्या नगण्य ही कही जा सकती है। भारत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं की भी वही बात है । वैज्ञानिक और तकनीकी ग्रंथों की बात भिन्न नहीं है । हर विषय में अंग्रेजी में जितने ग्रंथ उपलब्ध हैं उस की तुलना में हिन्दी में उपलब्ध ग्रंथों की संख्या बहुत कम है ।

अतः संसदीय राजभाषा समिति के माननीय सदस्यों के समक्ष हमारा निवेदन है कि :

(१) केरल स्थित केन्द्र सरकारी कार्यालयों में निर्धारित मापदंड के अनुसार हिन्दी अधिकारियों और कर्मचारियों के पदों का सृजन किया जाये और इन पदों पर नियुक्ति और तैनाती में कोई विलंब न हो ।

(२) कुछ ऐसे कदम उठाये जायें जिनसे जनता को यह मालूम हो जाये कि हिन्दी ही देश की राजभाषा है । सभी कार्यालयों के नामपट्ट पर हिन्दी को प्रमुख स्थान दिलाना, हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशनों में घोषणा में हिन्दी को प्रथम स्थान देना आदि ऐसे कुछ प्रभावी कदम हैं ।

(३) हिन्दी अधिकारियों और कर्मचारियों की नियुक्ति में हिन्दीतर भाषा-भाषियों को प्राथमिकता दी जाये ।

(४) हिन्दी में काम करनेवाले कर्मचारियों को विशेष वेतन दिया जाये ।

(४) हिन्दी अधिकारियों के वेतन क्रम में ऐसी वृद्धि की जाये कि अन्य समान स्तरीय पदों से ये पद समशीर्ष हो जायें ।

(६) केरल की मेट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर्मचारियों को भी राजभाषा विभाग की परीक्षायें उत्तीर्ण करने पर आर्थिक प्रोत्साहन दिये जायें ।

(७) विज्ञान और तकनीकी विषयों में भारत सरकार द्वारा उतनी ही पत्रिकायें प्रकाशित की जायें जितनी अंग्रेजी में प्रकाशित होती है । ॐ

एम. के. वेलायुधन नायर
मंत्री
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-१४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला

[पूर्व प्रकाशित के आगे]

डा० कृष्णकुमार

मैं, अनसूया और शकुन्तला तीनों सखियाँ शैशव अवस्था से ही साथ रहीं, बढ़ीं खेलीं और पढ़ी हैं। हम तीनों एक दूसरे से अभिन्न हैं। मैं और अनसूया इसी गुरुकुल में अध्ययन करानेवाले अध्यापकों की पुत्रियाँ हैं। हम दोनों इस शकुन्तला को कुलपति कण्व की पुत्री ही मानती थीं। कुछ बड़ी होकर सांसारिक बातों का जब हमें बोध होने लगा तो यह आश्चर्य भी हुआ कि कुलपति कण्व तो बाल ब्रह्मचारी हैं, अविवाहित हैं. शकुन्तला इनकी पुत्री कैसे हो गई। किसी से या कुलपति से भी पूछने पर वे लोग इस प्रश्न का उत्तर टाल जाते थे।

एक बार इस तपोवन में महर्षि पाराशर का आगमन हुआ। उनके स्वागत-सत्कार का प्रबन्ध हमारी इस प्रिय सखी शकुन्तला ने किया था। प्रसन्न होकर उन्होंने आशीर्वाद दिया था कि तुम आर्यावर्त की साम्राज्ञी बनो। त्रिलोकविजयी चक्रवर्ती पुत्र को उत्पन्न करो। परन्तु उनको भी यह कुतूहल हुआ कि कुलपति कण्व के बाल ब्रह्मचारी होने पर भी यह शकुन्तला उनकी पुत्री कैसे हैं एक दिन भोजन के उपरान्त सब लोग यज्ञशाला के समीप खुले प्राङ्गण में बैठे ज्ञान-चर्चाओं में संलग्न थे। सूर्य अस्ताचल के शिखर पर आरूढ होकर दूसरी ओर किसी अज्ञात कूप में अपने को तिरोहित कर चुका था। रजनी की श्यामल चादर सारे विश्व को ढके ले रही कि एकाएक पूर्व दिशा में अष्टमी का चन्द्रमा आकाश में आरूढ हो गया। हलकी सी ज्योत्स्ना चमक दिखा कर अन्धकार को दूर ढकेलने लगी। वह भी बेचारा मोनिनी नायिका से टकेले गये नायक के समान वृक्षों के गुरगुरों में और भवनों की छायाओं में छिपने का स्थान खोजने लगा। उसी समय महर्षि पाराशर ने कुलपति से शकुन्तला के विजय का प्रश्न किया। कुलपति ने पहले तो इस वृत्तान्त को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकट करने में आनाकानी की, परन्तु महर्षि के आग्रह को वे टाल नहीं सके। उस समय हम दोनों सखियाँ भी वहीं उपस्थित थीं। कुलपति ने जो वृत्तान्त वर्णित किया, उसी को मैं आपको सुना रही हूँ।

कुलपति कण्व ने कहा —

"आप महर्षि विश्वामित्र को तो जानते ही हैं। क्षत्रिय वर्ण में उत्पन्न होते हुये भी उन्होंने तपस्या, साधना और ज्ञान से ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया है। इस लोक के निवासियों तथा महर्षियों को ही नहीं, देवताओं और ब्रह्मा को भी उनकी तपस्या के महान् सामर्थ्य को स्वीकार करना पड़ा। एक बार तो त्रिशंकु के यज्ञ का सम्पादन कराते हुये वे नई सृष्टि की रचना करने लगे थे। उस समय सभी ऋषियों के विनम्र अनुरोधों और प्रार्थनाओं ने उनके कोप को शान्त किया था।

महर्षि विश्वामित्र से मेरा परिचय उस समय से है, जब कि वे गाधिपुर के राजकुमार थे। मैं और वे कुलपति वामदेव के गुरुकुल में साथ साथ विद्याध्ययन करते थे। क्षत्रिय वर्ण होने और राजकुमार होने से उनकी अभिरुचि धनुर्वेद की ओर थी और मैं ब्रह्मविद्याओं का अध्ययन करता था। परन्तु हम दोनों की मित्रता अग्नि और वायु के समान थी। साथ रहना, साथ बैठना, साथ खेलना, साथ वनों से समिधायें लाना हम दोनों का रहता था। दीक्षान्त होने के बाद वे तो गाधिपुर चले गये और वहाँ का सिंहासन उन्होंने सुशोभित किया। मैं यहाँ हिमालय की तलहटी में चला आया और हस्तिनापुर राज्य की सीमा के अन्तर्गत मालिनी के तट पर उस स्थान पर अपना तपोवन और विद्याकेन्द्र स्थापित किया। परन्तु गाधिनरेश विश्वामित्र यहाँ प्रायः आते रहते थे और उस तपोवन में रहकर सत्संग के साथ ही आध्यात्मिक विजयों पर भी चर्चा करते थे। आज भी यहाँ उस जनपद के सैकड़ों छात्र विद्याध्ययन करते हैं।

अयोध्या के उत्तर में महर्षि वसिष्ठ का आश्रम हिमालय की तलहटियों में है। उसकी गणना सात महर्षियों में होती है। वे लौकिक विद्याओं के साथ ही अध्यात्मिक विद्याओं के भी परम पण्डित हैं। ब्राह्मण वंश में उत्पन्न क्षमाशील वसिष्ठ ब्रह्मर्षि कहलाते हैं। इक्ष्वाकु वंशी राजाओं के वे गुरु हैं। वे कुलपति हैं तथा उनके गुरुकुल में दस हजार से भी अधिक छात्र शिक्षा पाते हैं।

एक बार राजा विश्वामित्र सेना को साथ लेकर हिमालय की तलहटियों के वनों में घूमते हुए ब्रह्मर्षि वसिष्ठ के तपोवन की ओर चले गये। वसिष्ठ द्वारा किये गये अति व्यय से सम्पन्न राजकीय आतिथ्य से उनको आश्चर्य हुआ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस त्यागी ब्राह्मण के पास इतना धन कहाँ से आया है। परन्तु जब उनको विदित हुआ कि कामधेनु की पुत्री नन्दिनी का यह प्रभाव है, तो उन्होंने उस गौ को माँग लिया। वसिष्ठ तो सर्वस्वदानी हैं। उनको क्या इन्कार था। परन्तु नन्दिनी ने स्वयं ही जाना स्वीकार नहीं किया। कुपित नन्दिनी ने लाखों रूप धारण करके विश्वामित्र के सैनिकों को मार मार कर भगा दिया। वसिष्ठ के कहने से ही नन्दिनी का यह आचरण है, यह समझ कर विश्वामित्र ने उनको अनेक प्रकार से उत्पीडित किया और उनके पुत्रों को भी मार डाला। परन्तु वे वसिष्ठ को न तो क्रोधित कर सके और ना ही पराजित। तब क्षत्रबल की अपेक्षा ब्रह्मबल की श्रेष्ठता का अनुभव करके उन्होंने राज्य का परित्याग कर दिया। अल्पवयस्क पुत्रों को राजगद्दी पर बिठा कर और मन्त्रियों को उनका संरक्षक नियुक्त करके वे तपस्या करने के विचार से यहाँ मेरे तपोवन में चले आये।

पहले तो मैंने अपने सहपाठी विश्वामित्र को बहुत समझाया कि तुम उस कठिन असम्भाव्य कार्य को मत करो। क्षत्रिय वर्ण में रहते प्रजा का धर्म के अनुकूल पालन करके भी तुमको वही गति प्राप्त होगी, जो ब्रह्मज्ञानी ब्रह्मर्षियों को प्राप्त होती है। मनुष्य को सिद्धि अपने नियत कर्मों को करने से मिलती है। परन्तु दृढ़संकल्पी विश्वामित्र अपनी आस्था से डिगे नहीं और उन्होंने तपस्या करके ब्राह्मणत्व प्राप्त करने का ही निश्चय प्रकट किया। तब मैंने उनको तपस्या करने की विधियों का उपदेश देकर कहा कि इस तपोवन से लगभग चार कोस दूर पश्चिम दिशा में, जहाँ से भगवती भागीरथी की धारा कुछ ही दूर रह जाती है, एक छोटी सी धारा पर्वतखण्डों में से निकल कर उछलती कूदती भागती चली गई है। इस धारा को स्थानीय जन गोमती कहते हैं। इसके चारों ओर नडों का घना वन है तथा यह नडपित वन कहलाता है। तुम इसी वन में जाकर तप की साधना करो। दृढ संकल्प से अडिग रहने पर तुम निश्चय ही ब्राह्मणत्व को प्राप्त करके ब्रह्मर्षि कहलाओगे।

विश्वामित्र नडपित वन में चले गये। गोमती के तट पर एक स्थान को स्वच्छ करके वे तप की साधना में लीन हो गये। धीरे धीरे उन्होंने सभी सांसारिक भोजनों का भी परित्याग कर दिया। केवल प्राणायाम द्वारा वायु को फेफड़ों में कर लेने से ही वे पोषण प्राप्त करने लगे। कभी तो वे एक पैर से खड़े होकर दोनों हाथ ऊपर उठा कर कई सप्ताह खड़े रहते-और पैर के अंगूठे को भी अपना आधार बना लेते, कभी कांटों की शय्या बना कर उस पर लेटते, कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारों ओर अग्नि जलाकर सूर्य की तीखी धूप में बैठकर सूर्य की ओर देखते रहते। धीरे धीरे उन्होंने सभी इन्द्रियों पर विजय पा ली और परम आध्यात्मिक शक्ति का संचय अपने भौतिक शरीर में कर लिया।

विश्वामित्र के उस उग्र तप को देखकर देवराज इन्द्र का मन काँप उठा। मनुष्यों का तप करते देखकर उनको वैसे ही प्रसन्नता नहीं होती। उन्होंने स्वयं उग्र तप करके इन्द्रासन प्राप्त किया है, अतः वे शङ्कित रहते हैं कि अन्य कोई अधिक तपस्या के प्रभाव से उनका आसन न छीन ले। वे तपस्वियों के तप को भङ्ग करने केलिये उद्यत रहते हैं। अन्य साधनों के साथ वे इसके लिये अप्सराओं का भी प्रयोग करते हैं। इसके लिये उन्होंने मेनका, उर्वशी, घृताची आदि अनेक अप्सराय रखी गयी हैं तथा तपस्वियों का तप भङ्ग करने केलिये उनको भेजते रहते हैं। विश्वामित्र के तप को भङ्ग करने के लिये इन्द्र ने मेनका को बुलाया और कहा—

मेनके! तुम सभी अप्सराओं में सबसे अधिक सुन्दर अङ्गों वाली गुणवती और प्रभावशालिनी हो। मेरे कार्य को तुम सदा ही सिद्ध करती रहती हो। तुम्हारे अङ्गों का लावण्य देखकर कोई भी अपने मन को वश में नहीं रख सकता। यह सूर्य के समान तेजस्वी विश्वामित्र उग्र तप करके मेरे इन्द्रासन को छीनना चाहता है। उसने नरराज का पद छोड़ कर राजसिंहासन का परित्याग किया है और अब देवराज के पद के साथ ही इन्द्रासन की इच्छा की है। तुम किसी भी प्रकार इसकी तपस्या को भंग कर दो। तुम्हारी एक मोहक मुस्कराहट ही तीनों लोकों को विजय करने में समर्थ है, अङ्गों के लावण्य का तो कहना ही क्या है अपने रूप, यौवन, मधुर चेष्टाओं और वार्ताओं द्वारा तुम इसको इस प्रकार प्रलोभित करो कि तुम्हारे यौवन के पाश में फंस कर उसकी तपस्या खण्डित हो जावे। किसी भी प्रकार से हो, उसके तप को भङ्ग करने का उत्तर-दायित्व तुम्हारा ही है।

विश्वामित्र का नाम सुन कर मेनका एकदम घबरा गई। इस से वह थर थर काँपने लगी। जगत में वे एक ओर जहाँ उग्र कठोर तप के लिए प्रसिद्ध थे दूसरी ओर क्रोध तथा सामर्थ्य के लिए भी थे। उनके क्रोध को सहन करने की सामर्थ किसी में न थी। जो कहते थे. यह पूरा हो जाता था। कांपती हुई मेनका ने कहा—

देवराज! आप स्वयं ही विश्वामित्र की तपस्या की शक्ति और प्रभाव को जानते हैं। उनसे आप डरते भी हैं। एक बार आप जब त्रिशंकु को स्वर्ग नहीं आने दे रहे थे तो उन्होने आपको पराजित किया था। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय आप कुछ भी नहीं कर सके और सीधे ब्रह्मा की शरण में गये थे। दूसरी बात यह है कि उनको इन्दासन की इच्छा नहीं हो वे तो ब्रह्मर्षि पद प्राप्त करके ब्रह्मर्षि वसिष्ठ को पराजित करना चाहते हैं। आप उनके साथ किसी प्रकार की छेड़छाड़ न करें तो यही अच्छा है।

इन्द्र ने मेनका से पुनः कहा—मेनके! इस समय चाहे विश्वामित्र इन्द्रासन की कामना न कर रहे हैं, परन्तु इस तप से उनमें वह सामर्थ तो उत्पन्न हो ही जावेगा कि मेरा पद छीन सकें। विपत्ति उपस्थित होने से पहले ही उसका प्रतिकार कर लेना उचित होता है। अतः तुम को मेरे आदेश का पालन करना ही होगा।

मेनका बोली—आपके आदेश का पालन करने के लिये मैं चली तो जाऊँगी, पर मेरी सुरक्षा का भी आप ध्यान रखें। कहीं मेरी चेष्ठाओं से कुपित होकर उन्होने मुझ को नष्ट करने का प्रयत्न किया तो मुझे कौन बचायेगा। आप विश्वामित्र का तो कुछ बिगाड़ न सकेंगे, मुझ से हाथ धो बैठेंगे। जिन विश्वामित्र से सभी देवता डरते हैं, उनको मैं अकेले कैसे वश में कर सकती हूँ। पहले आप मेरी सुरक्षा का उपाय कीजिये, किसी सहायक को साथ भेजिये, तभी मुझको वहाँ जाने का आदेश दीजिये।

मेनका की युक्तियुक्त बात को सुन कर इन्द्र ने वसन्त और पवन देवताओं को बुलाकर मेनका के साथ जाने का आदेश दिया। वे बोले—मेनके! तुम इन दोनों को साथ ले जाओ। ये तुम्हारी सहायता और रक्षा करेंगे।

विश्वामित्र के उग्र कोप की सम्भावना से डरती हुई बेचारी मेनका को इन्द्र का आदेश स्वीकार करना पड़ा। विवश नेत्रों से एक बार इन्द्र की ओर देख कर वह वसन्त और पवन को साथ लेकर नड़ित वन में गोमती के तट पर उस स्थान पर पहुँची, जहाँ आँखें बन्द किये विश्वामित्र तप की साधना में लीन थे। पहले तो मेनका ने उनके चरणों में करबद्ध हो झुककर प्रणाम किया। उसके बाद कुछ दूर जाकर एक स्थान को स्वच्छ करके वह अति मोहक नृत्य करने लगी। पायलों की झंकार वनप्रान्त को एक अनिर्वचनीय मधुरिमा से भरती हुई चारों दिशाओं को व्याप्त करने लगी।

इसी समय वसन्त ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया मधुमास प्रारम्भ हो चुका था। वृक्षों पर और उनसे प्रेमिकाओं के समान लिपटी लताओं पर सुरभित सुगन्ध को बखेरते फूलों के गुच्छे लग गये। मधुकर इन पुष्पों के पराग से रञ्जित होकर मधुकरियों के साथ पुष्परस का पान करने लगे। आम्रवृक्षों पर मंजरियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छा गई। कोयल की मधुर कुहक प्रणयी जनों के कानों में प्रविष्ट हो कर हृदयों को उद्वेलित करने लगीं। मृगों ने मृगियों के पीछे भागना प्रारंभ कर दिया। इसी समय पुष्पों के पराग को चारों ओर बखेरते, वृक्षों की शाखाओं और लताओं को कम्पित करते पवन ने दक्षिण दिशा से आकर पंखुड़ियों को चारों ओर फैला दिया। इस उन्मादक वातावरण में मेनका के पायलों की मधुर झङ्कृतियों ने विश्वामित्र की समाधि तोड़ दी। उन्होंने ध्यानमग्न आँखों को खोल दिया और उत्सुकता से भरकर चारों ओर देखा। सुवासित सुमनों से भरे वन में नृत्य करती मेनका उनको प्रकृति का अद्भुत मनोहर पुष्प सी प्रतीत हुई। पवन ने उनके शरीर को कंपा दिया और उनके हृदय में कामविकार ने जन्म लिया।

उसी समय पवन का एक तीव्र झोंका आया। उसने मेनका के मनोहर कोमल अङ्गों से टोले लिपटे वस्त्र को खींचकर उड़ाया और विश्वामित्र के चरणों में डाल दिया। कुछ सकुचाती सी और लज्जा का अभिनय करती विवस्त्र मेनका अङ्गों को सिकोड कर वस्त्र को लेने के बहाने से विश्वामित्र के समक्ष जा उपस्थित हुई। वह हाथों को जोड़-कर वस्त्र को वापिस करने की प्रार्थना करने लगी।

मेनका के उन्मादक यौवन और वस्त्ररहित अङ्गों के मोहक सौन्दर्य को देख कर विश्वामित्र का मानसिक नियन्त्रण शक्तियों पर से हट गया। वे यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन सभी योगाङ्गों को भूल गये। काम-भावना से आविष्ट होकर और उठ कर उन्होंने चरणों में झुकी मेनका की बाईं भुजा पकड़ ली। ठोड़ी पकड़कर कपोलों को जो ऊपर उठाया तो उसके अधर पर भुवनमोहिनी मुस्कराहट और नयनों में अनुनय सहित आमन्त्रण को पाया। अति विह्वल मनवाले विश्वामित्र ने उस उन्मत्त देवाङ्गना को रमण के लिये आमन्त्रित किया। मेनका तो आई ही इसीलिये थी। मृदु भुजवल्ल-रियों को मुनि की ग्रीवा में लपेट कर तथा अङ्गों से अङ्गों को सटा कर उस अभिसारिका ने अधर पर अपना अधर रख दिया। उसका कार्य पूरा हो गया। मोह से आवृत उस तपस्वी की तपस्या मेनका के उद्दाम यौवन के प्रवाह में तिनके के समान बह गई। अनेक दिनों तक मोह से अभिभूत विश्वामित्र उस अभिसारिका देवाङ्गना के साथ रमण विलासों का आनन्द लेते हुये नडपित वन में गोमती के तट पर विहार करते रहे।

कई मास व्यतीत हो गये। ऋषि विश्वामित्र तप की साधना को भूल कर मेनका के साथ रंगरेलियाँ मनाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे। वसन्त ऋतु बीत गई, ग्रीष्म का समय निकल गया और वर्षा ऋतु भी निकल गई। शरद् का प्रारम्भ हो गया। कार्तिकमास की पूर्णिमा का चन्द्रमा ज्योस्ना से सारे जगत् को शुभ्र बनाये दे रहा था। विश्वामित्र गोमती के तट पर शिलातल पर बैठे मेनका की प्रतीक्षा में विकल से पूरा दिन बीत गया था। मेनका न जाने कहाँ चली गई थी। सहसा वह एक नवजात कन्या को गोदी में लेकर पीछे से आकर विश्वामित्र के सामने खड़ी हो गई। मुनि की गोदी में उसे रखकर वह मुसकरा कर बोली—

हे मुने! यह आपकी ही कन्या है। उसका आप पालन करें। मेरा कार्य पूरा हो गया है। मैं अब अपने स्वामी देवराज इन्द्र के पास जा रही हूँ।

विश्वामित्र हड़बडाये से उस दुष्ट मुस्कान से हँसती मेनका को देखते रह गये। उनको इस प्रकार की अवस्था में देखकर वह पुनः बोली—

मुनिवर! आपको उग्र तपस्या से अपभ्रांत होकर देवराज इन्द्र ने मुझ को यहाँ भेजा था। मेरा कार्य पूरा हो गया है तथा आपकी तपस्या खण्डित हो गई है। यह कन्या आप के ही वीर्य से उत्पन्न है। हम अप्सराओं की गर्भ की अवस्था बाहर से लक्षित नही होती। इसी कारण आप मेरी गर्भावस्था को जान नहीं सके। आज गर्भ पूरा होने पर प्रसव होकर इसका जन्म हुआ है। अपनी सन्तान का पालन अब आपको ही करना है। देवताओं का कार्य पूरा करके मैं अब यहाँ से अमरावती वापिस जा रही हूँ। यह कह कर वह दुष्टा मेनका पायलों की रुनझुन ध्वनि से वन प्रान्तों को गुञ्जारित करती हुई इन्द्र के पास अमरावती चली गई।

विश्वामित्र के मुख से एक शब्द भी न निकल सका। वे जाती हुई मेनका को तब तक देखते रहे, जब तक कि वन प्रान्तों की वनस्पतियों ने उसको ओझल नहीं कर लिया। अब उन्होंने गोदी में पड़ी नवजात बालिका पर दृष्टि डाली, जो आँखों को बन्द करके गहरी नींद में सो रही थी। मन ही मन लज्जा ग्लानि, उद्वेग और क्रोध से उनका शरीर कांपने लगा। यह मेनका मेरी तपस्या भंग करने आई थी। अपने उद्देश्य में सफल होकर, मेरा तप भङ्ग करके और इस नवजात कन्या को मेरी गोदी में डालकर वह चली गई है, यह देखकर वे क्रोध, पश्चात्ताप और लज्जा की अग्नि में अन्दर ही अन्दर जलने लगे। परन्तु इस सारे प्रकरण में उनकी अपनी ही निर्मलता भी कारण थी। वे उस अप्सरा का कुछ भी बिगाड़ न सकते थे, नाहिं उसको शाप देने का सामर्थ्य और साहस रह गया था। गोदी में रखी वह नवजात रूपवती कन्या गहरी नींद में सोई मानों उन को चिढ़ा रही थी। उसके प्रति विश्वामित्र को बहुत अधिक विरक्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न हुई। लज्जा और ग्लानि के कारण वे अपने सहपाठी कण्व के पास भी न जा सके। उन्होंने वहीं एक घने वृक्ष की छाया में उस कन्या को भूमि पर लिटा दिया तथा और भी अधिक उग्र तप करने के लिये ऐसे स्थान में जाने का विचार किया, जहाँ उनको कोई न जानता हो। वे सुदूर पूर्व में कौशिकी नदी के तट पर आश्रम बनाकर पुनः तपस्या की साधना करने लगे।

उस वृक्ष पर कुछ पक्षियों का निवास था। चन्द्रमा की ज्योत्स्ना के समान उज्वल चमकते मुखवाली कन्या को देखकर उनके मन में स्नेह उपजने लगा। वे उसके चारों ओर उड़कर छाया करने लगे तथा सिंह, बाघ, चीते, भालू आदि हिंस्र जन्तुओं से भरे उस वन में रक्षा करने लगे।

कण्व के द्वारा कही उस कथा को प्रियंवदा ने आगे बढाया। दुष्यन्त को भी उसमें बहुत रस आ रहा था। प्रियंवदा ने बताया कि कुलपति कण्व ने पाराशर से आगे इस प्रकार कहा—

एक बार अपने सहपाठी विश्वामित्र से मिलने तथा समिधाओं को एकत्रित करने के विचार से मैं नडपित वन की ओर चला गया। वहाँ मैंने उन विश्वामित्र को खोजने पर भी नहीं पाया। खोजते हुये मैं उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ वृक्ष के नीचे एक नवजात कन्या हाथ-पैर पटकती हुई उच्च स्वर से रुदन कर रही थी। चारों ओर ऊपर आकाश में उड़ते हुये पक्षी उसकी रक्षा कर रहे थे।

कन्या के अनुपम सौन्दर्य देख कर मैं विस्मित हो गया। लक्षणों से वह बहुत होनहार और भाग्यशालिनी प्रतीत होती थी। मैं विचार करने लगा कि यह रूपवती नवजात कन्या यहाँ कैसे आ गई, यह किसकी सन्तान है और कौन कठोरचित्त व्यक्ति इसको यहाँ छोड़ गया है? चारों ओर देखने पर भी मनुष्यों से रहित उस वन में कोई ऐसा दिखाई नहीं देता था, जो उस कन्या के विषय में कुछ बता पाता। मैं ने ध्यान लगा कर योगदृष्टि से उसके विषय में जाना। वह तो मेरे परम मित्र और सहपाठी विश्वामित्र की मेनका से उत्पन्न कन्या है। तप से भ्रष्ट होकर वे मेनका के प्रति आकृष्ट हो गये थे। ग्लानी और लज्जा के कारण वे इसको यहीं छोड़कर बहुत दूर पुनः तपस्या के लिये चले गये हैं। मित्र की उस पुत्री के प्रति मेरे हृदय में वात्सल्य और करुणा के भाव उमड़ने लगे। मैं उसको उठा कर अपने आश्रम में ले आया और उसको अपनी बहन गौतमी को दे दिया। वह भी बालब्रह्मचारिणी है। गौतमी उसका पालन अपनी पुत्री के समान करने लगी। वन मे इस कन्या की रक्षा शकुन्त (पक्षी) कर रहे थे, अतः इसका नाम मैं ने शकुन्तला रखा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठकों के पत्र

डॉ० जी. आर. साक्षी
केन्द्रीय विद्यालय, द्रोणिमलैनगर
बल्लारी (कर्नाटक)
५८३ ११८

सुदूर दक्षिण में हिन्दी के प्रति ऐसा अनुराग देखकर हृदय गद्-गद् हो गया और हम वेतन भोगी हिन्दी भाषियों को थोड़ी शर्म आने लगती है। हिन्दी के प्रति सच्चा राग और परिश्रम करना यदि केरलवासियों से सीखा हुता तो राष्ट्रभाषा की समस्या कभी की हल हो गई होती। जब मैं बैलाडीला लौह अयस्क परियोजना निक्षेप-५ बचेली (बस्तर) म० प्र० के अहिन्दी भाषी कर्मचारियों अधिकारियों की हिन्दी कक्षा लेता था तो हिन्दी सीखने के प्रति तत्परता केरलीय प्रतिभागियों में ही अधिक पाता था। निस्सन्देह मां भा ता के प्रति प्रेम व राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति सच्ची निष्ठा केरलवासियों के हृदय में है। केरलज्योति स्तरीय पत्रिका ही नहीं प्रेरणा की मशाल है। सम्पादकीय नितान्त मौलिक व हिन्दी रस से परिपूर्ण होती है। यदि कहें कि केरलवासी हिन्दी के रसिक हैं तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। केरलज्योति हिन्दी विद्वानों व शोधार्थियों के लिए संग्रहणीय पत्रिका है। काश तमिलनाडु के घर घर में हिन्दी पत्रिका केरल ज्योति पहुंचती और वे प्रेरणा ले पाते यूं तो भारत भर में केरल ज्योति विकीर्ण हो रही है।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

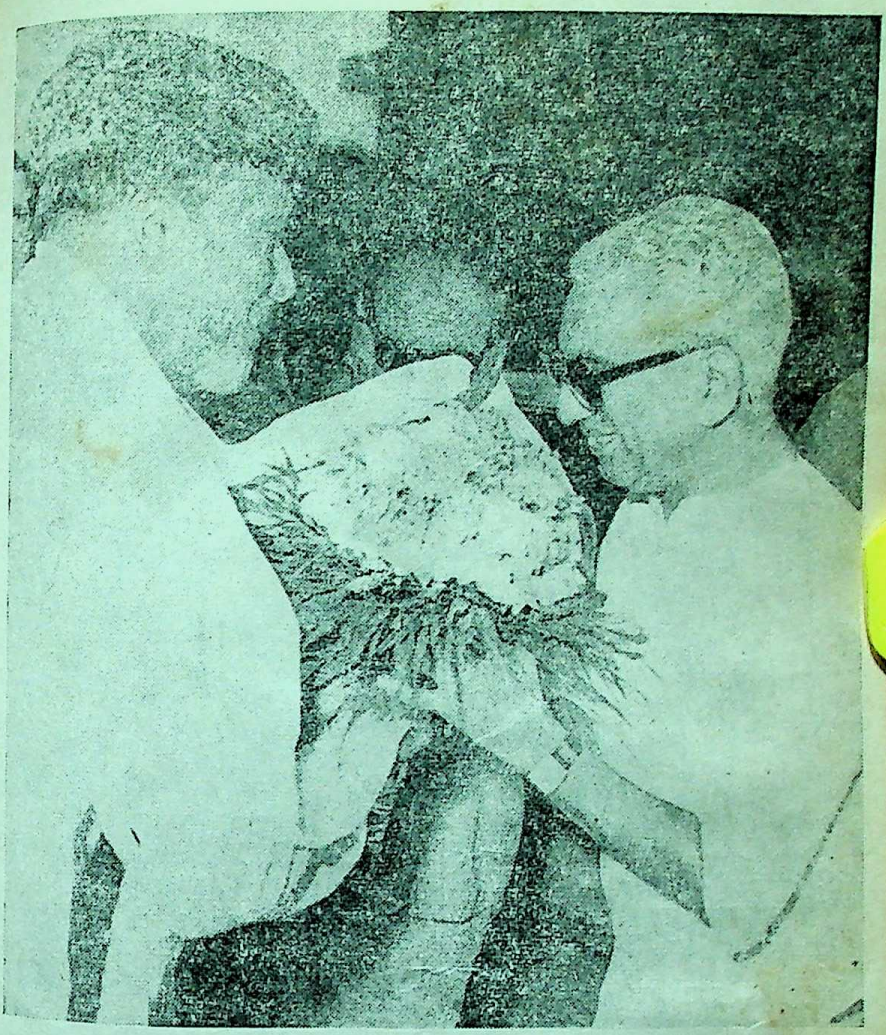

१-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह का उद्घाटन करने पधारे केरल के मुख्य मंत्री श्री० के. करुणाकरन का हार्दिक स्वागत कर रहे हैं सभा के. उपाध्यक्ष श्री० के. पी. अलिक्कुंजु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25 **KERALJYOTI** Vol. XVIII-No.

August 1983

Price : Re. 1.0

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्यों का स्वागत २-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में किया गया। भाषण दे रहे हैं श्री० जयराम वर्मा (उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व मंत्री एवं संसदीय राजभाषा उपसमिति के सदस्य)। बैठे हैं— श्री० एम. रामगोपाल रेड्डी (सदस्य, संसदीय राजभाषा उपसमिति) श्री० ए. नीललोहितदासन नाटार (सदस्य, संसदीय राजभाषा उपसमिति), डा० पी. के. नारायण पिल्लै (भूतपूर्व अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा) एवं डा० वी. के. सुकुमारन नायर (भूतपूर्व कुलपति, केरल विश्वविद्यालय)

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित।
क: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम-१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण पिल्लै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के यश स्तंभ डा० गंगाशरण सिंह जिन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कुरुक्षेत्र अधिवेशन में साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि दी गयी।

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक

प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक

श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल

श्री० वी. के. गोपालन नायर

प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै

श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी

श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

❀

* विज्ञापन दर

		मासिक			वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००		५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००		४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००		३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००		१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००		१०००	००

❀

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,

केरल हिन्दी प्रचार सभा

तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४

केरल

तार:-"जय हिन्दी"

फोन: ६१३७८

एक प्रति का मूल्य : १ रु

वार्षिक चन्दा : १० रु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुष्प: १८

केरलज्योति

दल: १

सितम्बर १९८

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

संपादकीय

साहित्य वाचस्पति गंगा बाबू

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद ने अपने कुरुक्षेत्र अधिवेशन में राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के यशस्तंभ डा० गंगाशरण सिंह जी को साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि देकर वास्तव में अपना गौरव बढाया है।

गंगा बाबू जैसे निस्वार्थ तपोनिष्ठ कर्मठ राष्ट्रसेवियों का जितना अधिक सम्मान किया जायेगा देश का विशेष कर युवा पीढी का उतना ही हित होगा।

गंगाबाबू का जीवन कठिन साधना में बीता है। १९२०-२१ के असहयोग आन्दोलन में सरकारी शिक्षालय छोडकर आप सार्वजनिक क्षेत्र में उतर पडे और आज ७८ वर्ष की इस वृद्ध अवस्था में भी आप विविध मंडलों में समाज की अमूल्य सेवा कर रहे हैं। यद्यपि उनका जन्म बिहार में हुआ और उनका आरंभिक राजनीतिक जीवन बिहार तक सीमित रहा तो भी कांग्रेस समाजवादी दल के स्थापक सदस्य, हिन्दुस्थान समाचार के अध्यक्ष, समाचार भारती के कार्यकारी अध्यक्ष, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के अध्यक्ष आदि पदों में और संसद के दीर्घकालीन सदस्य के रूप में आपने देश का जो नेतृत्व किया उससे उनके व्यक्तित्व का स्वरूप इतना विराट बन गया है कि उसे अब देश काल की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकेगा।

शिक्षा के क्षेत्र में विशेष कर हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में आपने जो योगदान दिया है वह अत्यंत महत्वपूर्ण है। नेशनल एसोसियेशन फार प्री स्कूल चिल्ड्रेन, नई दिल्ली, बालिका विद्यापीठ, मसौढी, बिहार विद्यापीठ, सदाकत आश्रम, पटना,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै का २१ वाँ मृत्यु दिवस 3
हिन्दी की समस्या देशीय समस्या है, देशीय स्तर पर उसे हल करना है
वक्कम पुरुषोत्तमन 6
हिन्दी माध्यम कॉलेज स्थापित करें
डॉ० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै 10
भाषायी समस्याओं के समाधान केलिए बुनियादी परिवर्तन लाये
के. प्रभाकरन नायर 13
व्यक्तित्व का विकास करनेवाली हिन्दी
डॉ० मावेलिक्करा अच्युतन 14
संपूर्ण स्वराज केलिए हिन्दी
एल. बंचमिन 17
ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त महादेवी वर्मा 22
तीन कवितायें—
(१) रात बोझिल थी 23
(२) मृत्यु के सिवा कुछ भी नहीं 24
(३) खुशी को उदास देखा है 25
रंजना सक्सेना
हिन्दी दिवस 26
दो कवितायें—
(१) अबाध 27
(२) आस्तीन का साँप 28
प्रद्युम्न 'विद्या वाचस्पति'
मैं क्यों हिन्दी सीखता हूँ, कैसे हिन्दी सीखता हूँ— एक परिचर्चा
आनी तोमस 29
यू. वेणुगोपालन 30
शान्ति मात्यु 31
पी. दीपा 32

बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पटना, कामाक्षी राव स्मारक समिति, मद्रास आदि संस्थाओं के अध्यक्ष की हैसियत से आप बहुमूल्य सेवायें अर्पित कर रहे हैं। हिन्दी विद्यापीठ, देवघर कि कुलाधिपति, केन्द्रीय हिन्दी समिति तथा विभिन्न मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समितियों के सदस्य के रूप में आप हिन्दी जगत को बहुमूल्य योगदान देते रहे हैं।

अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नई दिल्ली के अध्यक्ष पद पर रह कर आप देश की विविध स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं में जो समन्वय और सामंजस्य ला सके हैं वह कई दृष्टियों से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप देश के हिन्दी प्रचारकों और कार्यकर्ताओं के सच्चे मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक हैं।

पहले भी कई संस्थाओं ने आप को उपाधियों के विभूषित किया है। अखिल भारतीय हिन्दी सम्मेलन ने साहित्य रत्न की उपाधि, आगरा विश्वविद्यालय ने डी. लिट की उपाधि, नागरी प्रचारिणी सभा ने ताम्रपत्र तथा बिहार हिन्दी सम्मेलन ने मानपत्र प्रदान कर आपको सम्मानित किया है। राष्ट्र और राष्ट्र भाषा के कार्यकर्ताओं को दीर्घकाल तक आप के धीर मार्गदर्शन का लाभ मिलता रहे, यही कामना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व० के. वासुदेवन पिल्लै का २१ वाँ मृत्यु दिवस

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के वासुदेवन पिल्लै जी के इक्कीसवाँ मृत्यु दिवस के अवसर पर २५-७-१९८३ को केरल के विविध भागों में स्मर्यपुरुष को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

उस दिन तीन बजे से छः बजे तक केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में, केरल के स्कूलों में हिन्दी अध्यापन पर, संगोष्ठी आयोजित हुई। विख्यात विद्वान एवं लेखक डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै ने संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बताया कि हिन्दी यद्यपि भारत की राजभाषा और संपर्कभाषा स्वीकृत हो चुकी है तो भी केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में हिन्दी को

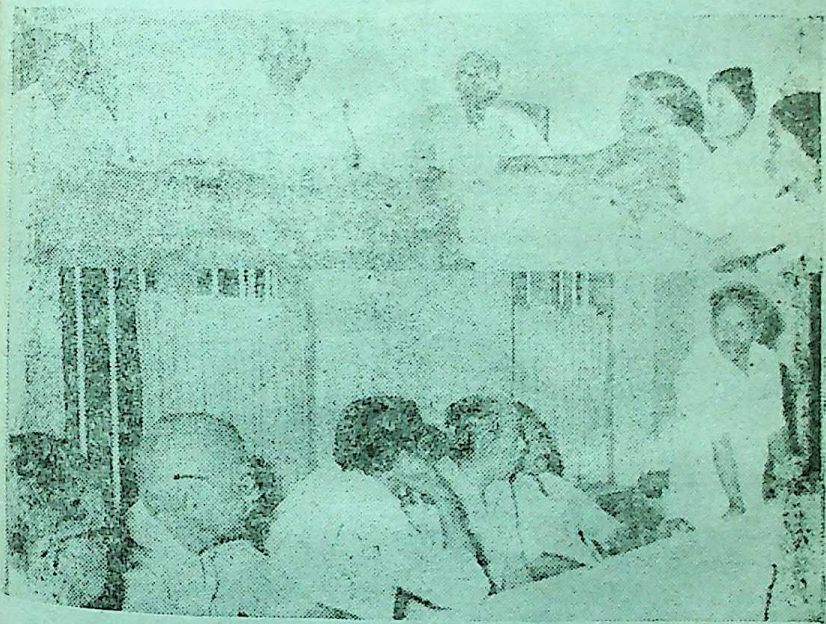

सेमिनार के दृश्य— ऊपर बाएँ से डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै, श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया, डा० के. पद्मावती आदि नीचे – प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर बोल रहे है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित स्थान नहीं दिया गया है। उन्होंने कहा कि केरल में पाठ्यभाषाओं में प्रथम स्थान मलयालम को और द्वितीय स्थान हिन्दी को दिया जाना चाहिए।

संगोष्ठी में अभिभाषण देते हुए कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष एवं विख्यात हिन्दी लेखक डा० एन. ई. विश्वनाथ अय्यर ने बताया कि आकाशवाणी का हिन्दी समाचार तथा दूरदर्शन का हिन्दी कार्यक्रम समझने की क्षमता केरल के हाईस्कूल के विद्यार्थियों में उत्पन्न किया

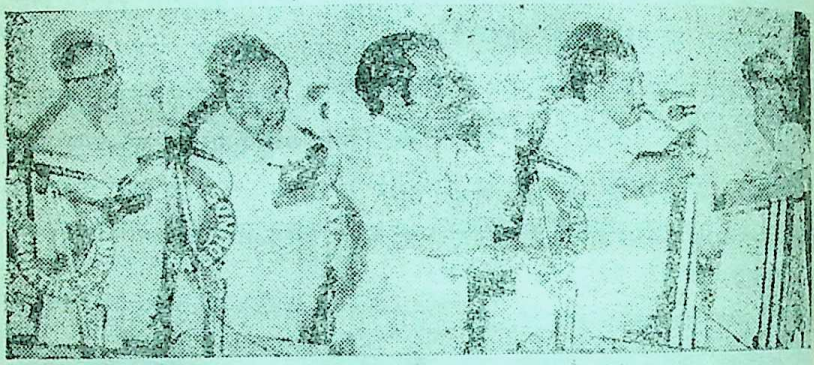

बाएँ से श्री० एम. वी. कुक्किल्लाया, श्री० बेंचमिन, डा० मावेलिकरा अच्युतन, श्री० के. प्रभाकरन नायर, और श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

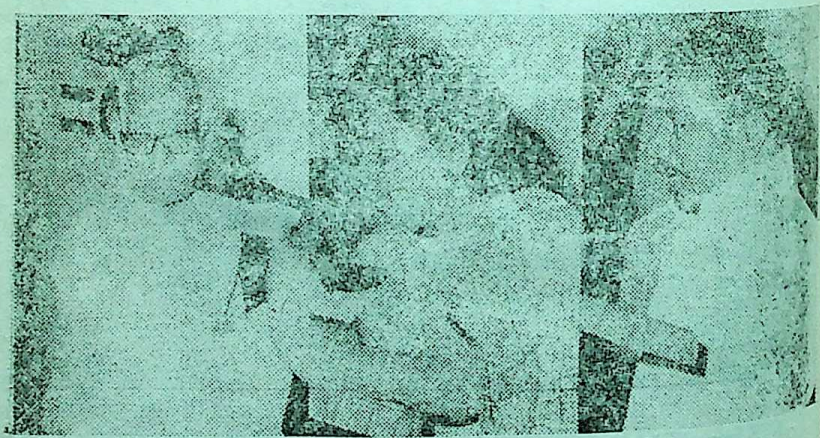

बायें से - डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै, श्रीमती जी. कमलम्मा और प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना चाहिए । उन्होंने सुझाव रखा कि हिन्दी के अध्यापन केलिए सप्ताह में कम से कम पांच कालांश नियत किये जायें ।

डा० नीलमपेरूर सुकुमारन ने बताया कि मेट्रिक परीक्षा मे हिन्दी के प्रश्न पत्र का भी अंग्रेजी और मलयालम के प्रश्न पत्रों का सा एक सौ अंक नियत हो ।

प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर ने आग्रह किया कि देशीयता की भावना भी हिन्दी के अध्यापन के द्वारा विद्यार्थियों में उत्पन्न की जाये ।

डा० मावेलिक्करा अच्युतन ने हिन्दी के सांस्कृतिक मूल्य पर बल दिया और कहा कि हिन्दी के पाठ्यक्रम को इस ढंग से सुधारना है कि विद्यार्थी हिन्दी के साथ साथ भारतीय संस्कृति को भी आत्मसात कर सकें ।

६ बजे जो सार्वजनिक सम्मेलन हुआ उस में डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै ने अध्यक्षता की । केरल के विधान सभा के अध्यक्ष श्री० वक्कम पुरुषोत्तमन ने सम्मेलन का उद्घाटन किया । तिरुवनन्तपुरम नगर निगम के अध्यक्ष श्री० के. प्रभाकरन नायर, गांधी स्मारक निधि, तिरुवनन्तपुरम के मंत्री श्री० एल. बंचमिन, डा० मावेलिक्करा अच्युतन, प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर और श्रीमती जी. कमलम्मा ने स्व० वासुदेवन पिल्लैजी की पुण्य स्मृति में भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं । (भाषण इसी अंक में अन्यत्र पढ़ें ।)

श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्ल ने स्वागत भाषण दिया और केरल हिन्दी प्रचार सभा के अध्यक्ष श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया ने कृतज्ञता प्रकट की ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी की समस्या देशीय समस्या है देशीय स्तर पर उसे हल करना है

वक्कम पुरुषोत्तमन
विधान सभाध्यक्ष, केरल

स्व० के वासुदेवन पिल्लैजी के इक्कीसवें जन्मदिवस के इस अवसर पर उनकी पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलियाँ अर्पित करने के लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं। ऐसे अवसरों पर स्वर्गीय महापुरुषों का स्मरण करते समय उन्होंने हमारे देश को जो महत्वपूर्ण देन दी है उसका भी स्मरण करना है और उसके पोषण के मार्ग ढूंढने चाहिये।

स्व० पिल्लैजी को प्रत्यक्ष देखने या उनसे परिचित होने का अवसर मुझे नहीं मिला। पर निश्चय ही उनके महत्वपूर्ण धीर योगदानों को मैं समझ सका हूँ। प्रतिकूल वातावरण में, जब कि हिन्दी, खादी आदि राज्यद्रोह के चिह्न माने जाते थे, उन्होंने सब कुछ त्यज कर नौकरी से त्यागपत्र देकर, खादी पहनने और हिन्दी का प्रचार करने का जीवनव्रत स्वीकार किया था। भारत के कई महापुरुषों का, विशेष कर पंडित जवाहरलाल नेहरु जैसे बड़े बड़े देशीय नेताओं का अभिनन्दन वे पा सके, यह छोटी बात नहीं। वे मलयालम नाटकों को हिन्दी में अनूदित करके अभिनेताओं को दिल्ली ले जाकर देशीय नेताओं के समक्ष प्रस्तुत करके उनका अभिनन्दन पा सके। इस हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना का नेतृत्व उन्हीं ने किया। करीब दो हज़ार हिन्दी प्रचारकों के सहयोग से काम कर रही इस संस्था के आरंभकालीन निर्माण का नेतृत्व किया।

आज जब ऐसी कई संस्थायें कई प्रकार के शोषणों का पात्र बन रही हैं, इस संस्था का सफलतापूर्वक संचालन करनेवाले कार्यकर्ताओं और प्रशासकों का मैं अभिनन्दन करता हूँ। आज इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण स्वीकार करने के पीछे मेरा यह भी उद्देश्य रहा कि मैं इस संस्था में आऊँ और इस की गतिविधियों का प्रत्यक्ष परिचय पाऊँ।

अंग्रेजी के पंजे

जैसे स्वागत भाषण में बताया गया, वांछित मात्रा में हिन्दी का प्रचार करने में या हिन्दी को देशीय भाषा बनाने में हम अब तक सफल नहीं हुए हैं। इसके कई कारण हैं। प्रथम कारण यह है कि अंग्रेजी का जो प्रभाव इस देश पर बना रहा है उसको हम हटा नहीं पाये हैं। अंग्रेजी के पंजे में भारत समा गया है। अंग्रेजों ने अपने शासन काल में अपनी प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखकर जो भाषा यहाँ सिखाई उसे यह कहकर बनाये रखना निरर्थक है कि वह एक अतर्देशीय भाषा है और उसको बनाये रखने से ही इस देश का विकास होगा। हम जानते हैं कि सबसे अधिक विकसित देश हैं अमरीका और रूस। अमरीका जो जो सिद्धियाँ प्राप्त करता रहता हैं उन्हें होड लगाकर उसी प्रकार रूस भी प्रतिदिन प्राप्त करता रहता है। रूस की एक प्रतिशत जनता भी अंग्रेजी नहीं जानती।

यहाँ कुछ लोगों ने यह माँग रखी है कि विज्ञान और तकनीकी विषयों के अध्यापन का माध्यम मलयालम हो। हमें यह सोचना है कि शिक्षा का माध्यम प्रान्तीय भाषायें हो या देशीय भाषा हिन्दी हो। इस देश की सभी वैज्ञानिक और अन्य पुस्तकों को मलयालम में अनूदित करने में कई वर्ष लगेंगे। पर यदि करीब साठ करोड जनों के इस बडे देश भारत की देशीय भाषा हिन्दी में इन ग्रन्थों की तैयारी करने लगें तो यह काम अधिक आसानी से हो सकेगा।

देशीय स्तर पर हिन्दी की स्थिति

किन्तु यह सब तभी हो सकेगा जब समस्त भारत हिन्दी को देशीय भाषा के रूप में अपनाएगा। भारत विविधताओं से भरा देश है। काश्मीर से केरल तक भारत का अवलोकन करें तो यहाँ कई संस्कृतियाँ मिलेंगी। और कई भाषायें मिलेंगी। सभी बातों में विविधता। राजस्थान की एक स्त्री और काश्मीर की एक युवती को देखने पर उन्हें एक देश की सन्तानें मानना कठिन होगा। कितनी विविधताओं से भरा देश है हमारा भारत! एक आम भाषा के जरिये ही हम भारतीयों में भावात्मक एकता उत्पन्न हो सकती है। यह सन्देह की बात है कि इस दिशा में केन्द्र सरकार की ओर से या प्रान्तीय सरकारों की ओर से कोई कदम उठाया जा रहा है या नहीं।

मैं केवल सरकारों को ही दोषी नहीं ठहराता। जब हम लोग देशीय एकता केलिए एक देशीय भाषा बनाना चाहते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और उसकेलिए प्रयत्न करते हैं तब कुछ लोग देशीय एकता की जड उखाडने का प्रयत्न करते हैं। कई प्रान्तों में राजनीति हिन्दी विरोधी प्रचार की नींव पर खडी हो जा रही है। उसके संबन्ध में मेरा कुछ कहना ठीक नहीं होगा। विशेष कर एक विधान सभाध्यक्ष के नाते राजनीतिक चर्चा करना मेरे लिये उचित नहीं होगा। लेकिन सत्य है कि इस पथ पर इतना सशक्त प्रतिरोध हो रहा है कि आगे कदम बढाना मुश्किल हो रहा है। यद्यपि हम इस

जब हम लोग देशीय एकता केलिए एक देशीय भाषा बनाना चाहते हैं और उसकेलिए प्रयत्न करते हैं तब कुछ लोग देशीय एकता की जड उखाडने का प्रयत्न करते हैं।

बात की खुली चर्चा नहीं करते तो भी हममें कई इस स्थिति से अवगत हैं। ऐसी कई राजनीतिक अभियान दक्षिण भारत के कई प्रान्तों में पनप रहे हैं। हिन्दी के विरोध में रेलगाडी को आग लगाकर और नामपट्ट तोडकर राजनीतिक अभियानों को जन्म दिया जाने लगा और तत्संबन्धी कार्यकलाप और प्रचार होने लगा। आगे बढनेवाले कदमों को पीछे हटने के लिए मजबूर करनेवाली कुछ बडी शक्तियाँ इन अवरोधों का निर्माण कर रही हैं। हमें खूब सोच समझकर आगे बढना होगा।

केरल में हिन्दी विरोध नहीं

एक बात हमें माननी है। केरल में हिन्दी का बडा विरोध नहीं। यहाँ की जनता हिन्दी के अध्यापन और प्रचार को विशाल दृष्टिकोण से देखने को तैयार हैं। यहाँ स्वागत भाषण में पूछा गया कि क्यों न केरल में अंग्रेजी को हटा कर हिन्दी को प्रमुखता दी जाये। मेरा कहना है कि यदि हम ऐसे एक अन्तर्देशीय भाषा की प्रधानता स्वीकार न करें तो भी हमारी युवा पीढी में भारत के इतर प्रान्तवालों से होड लगाने की क्षमता उत्पन्न करनी है। आज कई प्रान्त हिन्दी का विरोध कर रहे हैं। हिन्दी में चलायी जा रही परीक्षाओं का विरोध कर रहे हैं। हिन्दी को सारे भारत ने देशीय भाषा के रूप में स्वीकृत नहीं किया है। ऐसी स्थिति में हमारे बालकों के भविष्य के लिए उपयुक्त एक आम नीति अपनाने के लिए सरकारें मजबूर हैं। यह बात आप समझ लें। मैं हिन्दी का विरोध नहीं करता।

समझ लीजिए कि हमने प्रथम स्थान मलयालम को और द्वितीय स्थान हिन्दी को देने का साहसपूर्ण निर्णय ले लिया। जब तक अखिल भारतीय स्तर पर सब जगह यह नीति नहीं अपनायी जायेगी तब तक इससे हमें कई कठिनाइयाँ होंगी। यह एक देशीय समस्या है। देशीय समस्या का हल देशीय स्तर पर ढूंढना होगा। हमारी ऐसी देशीय संस्थायें हैं जो इस ढंग से सोचती है। जब देशीय स्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जोर से दबाव डालने के फलस्वरूप हिन्दी समस्त देश में देशीय भाषा के रूप में अपनायी जायेगी तब, मेरा विचार है, केरल में इस विषय में कोई कठिनाई नहीं होगी।

केरल के बच्चे हिन्दी सीखें तो वे ऐसी अच्छी हिन्दी लिख सकेंगे जैसी हिन्दी उत्तर भारतीय भी नहीं लिख सकते। इसमें कोई सन्देह नहीं। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि केरलीय जनता अन्य प्रान्तों के लोगों की अपेक्षा अधिक क्षम है। एक बार बी. एस-सी. परीक्षा में उन्नत स्थान पाये विद्यार्थियों को स्वर्ण-पदक प्रदान करने के लिए श्री० जगजीवन राम यहाँ पधारे तब मैं ने उनसे कहा आप देश के सर्वाधिक बुद्धिमान और सक्षम विद्यार्थियों को स्वर्णपदक प्रदान कर रहे हैं। कारण यह है कि भारत के सभी इतर प्रान्तों के लोगों से अधिक बुद्धिमान हैं केरलीय लोग। उन केरलीयों में सर्वाधिक अंक पानेवाले विद्यार्थी समस्त भारत के सर्वाधिक बुद्धिमान विद्यार्थी हैं। श्री० जगजीवराम ने अपने भाषण में मेरी इस राय से शतप्रतिशत सहमति प्रकट की एक शर्त पर। उन्होंने बताया केरल के लोग भारत के इतर प्रान्तवालों से अधिक बुद्धिमान और सक्षम हैं यदि, संयम से काम लें तो।" खैर, केरल के लोग जब केरल के बाहर पहुँचते हैं तो ऐसा लगता है कि दुनियाँ की कोई जनता इनके सम अनुशासित नहीं है। दो महीने पहले मैं सिकिम गया। वहाँ के विधान सभाध्यक्ष और मंत्रियों से मिला। उनसे वार्तालाप किया। वह एक पहाड़ी इलाका है। हिमालय पहाड़ का एक भाग है। वहाँ जाने पर मुझे पता लगा कि वहाँ बहुत कम मलयाली हैं। दो सौ के करीब। पर वहाँ के विधान सभाध्यक्ष और मन्त्री उनका बड़ा सम्मान करते हैं। उनका कथन है कि उन मलयालियों से अधिक क्षमता रखनेवाले कर्मचारी हैं ही नहीं। वे कोई समस्या नहीं उठाते। कोई आन्दोलन नहीं करते। अच्छी तरह बर्ताव करते हैं। कहने का मतलब है कि मलयाली लोग हिन्दी-भाषी लोगों से हाड लगा सकते हैं और प्रथम स्थान प्राप्त कर सकते हैं। इसमें हमें कोई कठिनाई नहीं। पर हिन्दी पहले समस्त भारत की देशीय भाषा स्वीकृत हो। उसके लिए सबको मिलकर दबाव डालना है। हिन्दी को समस्त भारत की देशीय भाषा का पद दिला देने का प्रयत्न ही स्व० वासुदेवन पिल्लै जैसे उन महापुरुषों को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए हमें करना है जिन्होंने हिन्दी के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया। मेरा अनुरोध है कि इस केलिए सभी हिन्दी प्रेमी इस अवसर पर प्रतिज्ञा करें।

❀

२५-७-१९८३ को केरल हिन्दी प्रचार सभा में दिया गया भाषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी माध्यम कालेज स्थापित करें

डा० शूरनाट्टु कुंजन पिल्लै

श्री० के. वासुदेवन पिल्लै उन महानों में एक है जिन्होंने ऐसी परम्परा की सृष्टि की जिसपर हमारा देश गौरव कर सकता है।

हमारे देश में ऐसे कितने ही महान हुए हैं जिन्होंने भाषा के लिए अपना जीवन अर्पित किया है। उनमें अधिकांश विद्वानों ने संस्कृत के लिए काम किया और कुछ विद्वानों ने अंग्रेज़ी के लिए काम किया। संस्कृत में प्रथम कोटि के कुछ साहित्यकार यहाँ हुए। पर मुझे सन्देह है कि अंग्रेज़ी में ऐसा उच्च स्थान हमारे देश के विद्वानों में कोई पा सका है या नहीं। अंग्रेजी सीखने से कई लोगों को ऊँची ऊँची नौकरी मिली। लेकिन इंग्लैंड के श्रेष्ठ कवियों या गद्यकारों की समशीर्षता हमारे किसी अंग्रेजी विद्वान को नहीं मिल पायी। अंग्रेजी के अध्यापन के लिए करोड़ों रुपया खर्च करने के बावजूद हमारा देश कुछ श्रेष्ठ अंग्रेजी साहित्यकारों को जन्म नहीं दे सका। इतनी बड़ी खर्च संस्कृत शिक्षा में

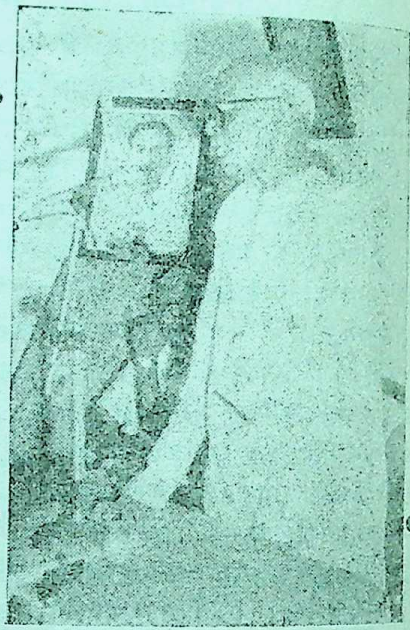

नहीं करनी पड़ी है तो भी संस्कृत में उच्चकोटि के साहित्यकारों की सृष्टि हम कर सके!

स्व० वासुदेवन पिल्लै के हृदय में हिन्दी के प्रति जो रागात्मक संबंध उत्पन्न हुआ उस से प्रेरित होकर उन्होंने हिन्दी की सेवा की। उन्होंने एक भारतीय भाषा के लिए जीवन अर्पित किया, इसलिए हमारे हृदय में वे प्रतिष्ठा पा गये। विदेशी भाषा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उन्नति केलिए इस सभी अधिक प्रयत्न करनेवाले भी हमारे हृदय में कोई स्थान नहीं पा सका।

इस अवसर पर मैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के विचारार्थ एक सुझाव रखना चाहूँगा। केरल में एक हिन्दी माध्यम कालेज की स्थापना हो। सभी विषयों का अध्यापन हिन्दी माध्यम में हो। साथ ही अन्य भाषायें सीखने का भी अवसर मिले। इस कालेज से एम. ए. उत्तीर्ण होनेवालों को अन्य कालेजों से एम. ए. उत्तीर्ण होनेवालों के समकक्ष मान्यता जाये। यह प्रथम चरण है। दूसरा चरण होगा इस कालेज के स्नातकों के लिए नौकरी आरक्षित करना। भारत के सभी प्रान्तों में हिन्दी माध्यम कालेजों की स्थापना करनी होगी। यही हिन्दी को देशीय स्तर पर राजभाषा बनाने की दिशा में प्रथम चरण होगा। पहले हिन्दी के ज्ञाता हों। तभी हिन्दी में काम काज किया जा सकेगा। हिन्दी माध्यम कालेज में एम. ए. तक का शिक्षण हो। केरल के हिन्दी माध्यम कालेजों में द्वितीय भाषा के रूप में मलयालम और तमिल पढायी जा सकती है। चाहे तो अंग्रेजी भी पढायी जा सकती है।

स्कूलों की हिन्दी अध्यापन शैली में भी सुधार की आवश्यकता है। हिन्दी माध्यम स्कूलों की भी स्थापना करनी होगी। हिन्दी माध्यम हाई-स्कूलों में पढकर मेट्रिक उत्तीर्ण होने वालों को भी नौकरी आरक्षित करनी होगी। केन्द्र सरकार और प्रान्तीय सरकार ऐसा आरक्षण करें। कोई इसका विरोध नहीं करेगा। अथवा कोई कोई विरोध करें भी तो भी कोई बात नहीं।

हिन्दी की प्रगति ऐसी योजनाओं से ही हो सकती है। स्व० वासुदेवन पिल्लैजी की आत्मा इस कार्य में आप को अनुग्रहीत करेगी।

केरल में बोलचाल के लिए एक भाषा है और काम-काज केलिए दूसरी भाषा है। वर्षों से यही रीति चली आ रही है। केरल की विशेषताओं में सबसे बडी विषमता यही है। सदा यही कहा जाता है कि अंग्रेजी माध्यम स्कूलों की स्थापना का विरोध किया जायेगा। पर आज तो अनेक अंग्रेजी माध्यम स्कूल ही स्थापित हो रहे हैं। १९५० में जब श्री० सुन्दर राज नायडु यहाँ शिक्षा विभाग के निदेशक थे तब केरल के सभी स्कूलों को मलयालम माध्यम स्कूलों में बदल दिया गया। उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल स्थापित करने की अनुमति पाने के लिए होली ऐंजल्स कान्वेंट की अंग्रेज महिलाओं को बहुत दौड धूप करनी पडी थी। आखिर यह निर्णय हुआ कि विदेशों से आनेवाले अफसरों के बच्चों को पढाने के लिए हर जिले में एक एक अंग्रेजी माध्यम स्कूल खोला जाये। पर आज स्थिति क्या है? मलयालम माध्यम स्कूल की स्थापना करने की अनुमति कोई नहीं चाहता।

भाषाओं के संबंध में हम ने विवेकशून्य दृष्टि ही अपनायी है।

स्टेथाम नामक अंग्रेज ने शैक्षिक सुधार आरंभ किया था। उनकी सिफारिश थी कि संस्कृत अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ायी जाये। उनका विचार था कि जिस प्रकार योरोप में जो ग्रीक या लेटिन नहीं जानता उसे शिक्षित नहीं माना जाता उसी प्रकार भारत में जो संस्कृत नहीं जानता उसे शिक्षित नहीं माना जा सकता। लेकिन यह सिफारिश आरंभ में ही ठुकरा दी गयी।

हिन्दी माध्यम कालेज स्थापित करने और हिन्दी माध्यम में एम. ए. तक का कोर्स चलाने की कल्पना आज उदित हो।

सी. वी. रामन पिल्लै के ऐतिहासिक उपन्यास मार्ताण्डवर्मा की सुभद्रा के समान और किसी स्त्री-पात्र का सृजन मलयालम साहित्य में नहीं हुआ है। ..... सुभद्रा का रूपरेखाचित्रण स्कॉट की फ्लोरा का अनुस्मरण कराता है।

—प्रो० लीलावती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षायी समस्याओं के साधान केलिए बुनियादी रिवर्तन लायें

श्री० के. प्रभाकरन नायर
अध्यक्ष, नगर निगम, तिरुवनन्तपुरम

व० वासुदेवन पिल्लै जी की पुण्य में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित का जो अवसर मुझे दिया गया स लिए मैं केरल हिन्दी प्रचार के कार्यकर्ताओं के प्रति अपना ार प्रकट करता हूँ।

ारत को स्वतंत्र हुए इतने वर्ष गये, पर अब तक हिन्दी को त्रभारत की राष्ट्रभाषा बनाने संकल्प पूरा नहीं कर सके। ी के स्थान पर हिन्दी को राष्ट्र- ा बनाने का संकल्प वर्षों पहले ा गया। किन्तु, जैसे माननीय ान सभाध्यक्ष ने बताया हिन्दी संबध में विविध प्रान्तों ने अपनी ी इच्छा के अनुसार अलग अलग ा अपनायी है। तमिलनाड वाले हिन्दी का कटुआ काढा मानते आन्ध्र में भी यही बात है। ल को छोड दक्षिण के अन्य सभी तों में हिन्दी की उपेक्षा की जा रही है। यह सोच कर बडा दुख हो रहा है कि राष्ट्रभाषा संबन्धी गांधीजी का आग्रह पूरा नहीं हो पाया। इस समस्या का शाश्वत समाधान ढूंढने केलिए बुनियादी परिवर्तन लाने होंगे। व्याख्यानों से यह समस्या नहीं सुलझेगी।

केरल की बात लें। जैसे विधान सभाध्यक्ष ने बताया, यहाँ अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को ही प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह सोचने की बात है यहाँ कितने हिन्दी माध्यम स्कूल हैं। केरल में, कम से कम तिरुवनन्तपुरम में हिन्दी माध्यम स्कूल स्थापित होना ही चाहिए। इस के लिए परिश्रम करना होगा। तभी स्व० वासुदेवन पिल्लै जी की आत्मा को शान्ति मिलेगी।

स्व० वासुदेवन पिल्लै की पुण्य स्मृति में तिरुवनन्तपुरम के नागरिकों की श्रद्धांजली करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यक्तित्व का विकास करनेवाला हिन्दी

डा० मावेलिक्करा अच्युत

आज हिन्दी अध्यापन एक मोड पर है। अंग्रेजी से लडते लडते हिन्दी क्षीण हो जायेगी, यह आशंका सब के मन में व्यापी हुई है। स्थिति यहाँ तक पहुँची है कि यदि सभी हिन्दी प्रेमी मिलकर इस चुनौती का सामना नहीं करेंगे तो हिन्दी का भविष्य खतरे में पड जायेगा।

प्रातस्मरणीय स्व० वासुदेवन पिल्लैजी का इक्कीसवाँ मृत्युदिवस है आज। इस अवसर पर मेरी स्मृति चार दशक पीछे जा रही है। उन दिनों तिरुवनन्तपुरम के मेन रोड (महात्मा गान्धी मार्ग) के समीप एक छोटे मकान में अपनी हिन्दी सस्था चलाते थे। उनके विद्यालय में मैं भी हिन्दी पढता था। श्री० एम. के. वेलायुधन नायर मेरे साथ पढ़ते थे। बडे गुरु के बडे शिष्य के रूप में श्री० एम. के वेलायुधन नायर अपने गुरु के आशीर्वाद से केरल हिन्दी प्रचार का समर्थ नेतृत्व कर रहे हैं। अपनी गुरुभक्ति को वे हिन्दी प्रचार के माध्यम से अभिव्यंजित कर रहे हैं।

उन दिनों मैं संस्कृत कालेज में पढ रहा था। मुझे लगा कि हिन्दी नहीं पढूँ कुछ खो जाऊँगा। उन दिनों के सम्मेलनों के देशाभिमानोज्ज्वल भाषण सुन कर हम पुलकित हो जाते थे। स्वातंत्र्योत्तर काल में जन्मे विद्यार्थियों को उस जोश की कहानी कहें तो वे शायद समझ नहीं पायेंगे। उन दिनों हिन्दी अध्ययन सिर्फ भाषाध्ययन नहीं था। हिन्दी एक संस्कृति थी। व्यक्तित्व के विकास के लिए उपयुक्त एक खास संस्कृति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी अध्यापन के द्वारा व्यक्तित्व का विकास किया जाता था। जैसे किसी वक्ता ने यहाँ बताया, हिन्दी अध्ययन के साथ ग्रामसुधार, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, मद्यनिरोध आदि जुड़े हुए थे। इनसे अछूते हिन्दी अध्ययन का संकल्प भी उन दिनों असाध्य था। वह जमाना ही ऐसा था। वासुदेवन पिल्लैजी के विद्यालय में पढ़ते हुए, यहाँ उपस्थित श्री० एस. डी. पिल्लै के बुक-स्टॉल से हिन्दी पुस्तकें खरीद कर पढ़ते हुए मुझ में यह बोध विकसित होता था कि भारतीय हूँ। वासुदेवन पिल्लैजी के विद्यालय में पढ़ते समय सत्रह वर्ष की आयु के पहले ही मैंने हिन्दी की एक परीक्षा भी उत्तीर्ण की। प्राथमिक, मध्यमा, राष्ट्रभाषा, प्रवेशिका और विशारद उत्तीर्ण करने के बहुत बाद ही मैं ने हिन्दी एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

जो हो हिन्दी अध्ययन के मेरे वर्ष अविस्मरणीय हैं। 1975 से 1978 तक मुझे दिल्ली में केन्द्र शिक्षा मंत्रालय में सर्वीस करना पड़ा। तब मेरी सीखी हिन्दी मुझे बहुत काम आयी। हरिद्वार में, ऋषिकेश में द्वारका में, मथुरा में, अयोध्या में, पुरी में मीराबाई के उज्वल संगीत से पुलकित चित्तौडगढ के भव्यमहल में भ्रमण करते समय हिन्दी मेरे लिए अत्यंत सहायक सिद्ध हुई। हर की पैडी में गंगास्थान करते समय हिन्दी ने मुझे मंत्र सुना दिया। संस्कृत सीख कर उसे जीवन की सांस के समान अपनाने के बाद भी मैं ने संस्कृत की मानसपुत्री हिन्दी को अपने हृदय में प्रतिष्ठित कर के उसकी आराधना की। जहाँ जहाँ मैं गया वहाँ वहाँ मैं हिन्दी या संस्कृत में बातचीत करता था। यद्यपि मैं अंग्रेजी भी जानता था तो भी मैं इसलिये अंग्रेजी नहीं बोलता था कि उत्तर-भारतीयों को अंग्रेजी अरोचक लगती है।

वासुदेवन पिल्लैजी से जो संस्कृति मुझे प्राप्त हुई वह मेरे जीवन में मुझे बहुत सहायक हुई। मुझे ज्ञात है कि हिन्दी अध्ययन के द्वारा ही मैं अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सका।

दिल्ली में मैं किसी राहगीर से अंग्रेजी में किसी मकान का पता पूछता वह यद्यपि अंग्रेजी जानता है तो भी तुरन्त मुँहतोड जवाब देता—"पता नहीं।" तब मैं वही प्रश्न हिन्दी में पूछता तो वही राहगीर स्नेहपूर्वक मेरी सहायता करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए तैयार हो जाता। मकान का ठीक ठीक पता मुझे बता देता।

हिन्दी का अध्ययन हमें भारतीय नागरिक बना देता है। भारत की मिट्टी में जीवन बिताने में हिन्दी अत्यन्त सहायक है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हिन्दी स्वतंत्रता का पर्याय-वाली शब्द था। हिन्दी देशाभिमान का प्रतीक थी। देशाभिमान की अनेक पुलकोद्गमकारी स्मृतियाँ हिन्दी जगा देती है।

मेरे इस शरीर में मनुष्य स्नेह भरा, देशाभिमान भरा एक हृदय है। पसीने की रोटी ही आज भी मैं खाता हूँ। किसी का धोखा देने का यत्न मैं ने नहीं किया है। साहित्य-रत्नों के संपर्क से मैं अपनी आत्मा को प्रदीप्त करता रहा। किसी का उपद्रव किये बिना, [illegible] परोपकार करते हुए मैं ने [illegible] अध्यापकीय जीवन बिताया है। [illegible] ने जीवन में ऐसा कोई कार्य [illegible] किया है जिस पर मुझे खेद [illegible] हो या लज्जा होती हो। मेरी [illegible] मेरे छात्र हैं। जो संस्कृत मलयाल[illegible] और शिक्षा पद्धतियाँ मुझ में [illegible] वह सब सिखाकर अपने विद्यार्थि[illegible] को मैं ने प्रगति के पथ पर अग्र[illegible] किया है। इस में मुझे चारिता[illegible] है। इस चारितार्थ्य का प्रध[illegible] कारण हिन्दी अध्ययन के द्वा[illegible] स्व० वासुदेवन पिल्लैजी से मुझे [illegible] संस्कृति थी।

स्व० वासुदेवन पिल्लै की पुण्य-स्मृति में मैं श्रद्धांजलियाँ अर्पि[illegible] करता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपूर्ण स्वराज के लिए हिन्दी

श्री० एल. बंचमिन

राष्ट्रभाषा का प्रचार संपूर्ण स्वराज के विभिन्न मार्गों में एक था। मैं इस सम्मेलन के सदस्यों का अवलोकन कर रहा था। आज यहाँ देखता हूँ कि खादी धारियों की संख्या बिलकुल नगण्य है। दस पन्द्रह वर्ष पूर्व हिन्दी प्रचारक और हिन्दी प्रेमी खादी ही पहनते थे। क्यों कि गाँधीजी ने संपूर्ण स्वराज के घटक के रूप में हिन्दी प्रचार आरंभ किया था। उनके अठारह रचनात्मक कार्यक्रमों में खादी प्रचार भी था और हिन्दी प्रचार भी था।

सच्चे हिन्दी प्रचारक और हिन्दी प्रेमी खादीधारी होंगे। वे शराब बंदी के लिए भी काम करेंगे। वे सभी भाषाओं के विकास के लिए प्रयत्नशील होंगे। हिन्दी प्रचारक की दृष्टि समग्र होगी।

हिन्दी प्रचार में क्यों व्यवधान पड रहा है? इसलिए केवल हिन्दी प्रचार अकेले आगे नहीं बढ सकता। इसके पीछे एक समग्र राजनीतिक इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। यदि पूछा जाये कि पुराने जमाने का दृढनिश्चय आज हमारे कितने नेताओं में है तो मैं निरुत्तर हो जाऊँगा।

जैसे माननीय विधान सभाध्यक्ष ने यहाँ बताया विदेशभाषा अंग्रेज़ी को और अंग्रेज़ी आचार विचार को आज स्टाटस सिंबल के रूप में अपनाया जा चुका है। आज सचिवालय का चपरासी भी अपने बेटे को अंग्रेज़ी माध्यम स्कूल में शामिल कराना चाहता है। यह एक अन्ध आचरण है। हमारे जीवन में अन्य क्षेत्रों में जो विफलतायें हुई उन्हीं के समान एक पराजय है यह। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्ष बाद भी हम स्वतंत्र भारत के नागरिकों के लिए समान शिक्षा प्रणाली का आविष्कार नहीं कर पाये। धनिकों के बच्चों के लिए एक प्रकार की शिक्षा। मध्यवर्ग के बच्चों के लिए दूसरे प्रकार की शिक्षा। निम्नवर्ग के बच्चों के लिए ऐसे स्कूलों का ही विधान मिलता है जहाँ न आवश्यक मात्रा में अध्यापक हैं, या अन्य अत्यावश्यक सुविधायें हैं। भारत के नागरिकों को हम जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिल भारतीय परीक्षाएँ क्यों न केवल हिन्दी में चलायी जायें? क्यों अंग्रेजी में भी लिखने की छूट दी जायें?

समदृष्टि से नहीं देखेंगे तब तक असमानतायें बढती ही जायेंगी। पश्चिम के अन्ध अनुकरण ने हमें गलत रास्ते पर पहुँचा दिया है।

केरल की जनता हिन्दी के अध्ययन और प्रचार के लिए त्याग सहन करने को तैयार है। जैसे किसी ने एक सांस्कृतिक सम्मेलन में बताया, मलयाली लोग समस्त भारत को अपना देश मानते हैं। समस्त भारत में वे व्याप्त हैं। एक सार्वभौमिक संस्कृति मलयालियों के रक्त में मिली हुई है।

मेरा मतलब है कि एक समग्रदृष्टि, राजनीतिक दृढनिश्चय और राजनीतिक सहायता से ही हिन्दी का प्रचार बढ सकेगा। अखिल भारतीय परीक्षाएँ क्यों न केवल हिन्दी में चलायी जायें? क्यों अंग्रेजी भी लिखने की छूट दी जायें? अंग्रेजी को इतनी अधिक प्रमुखता देने की कोई आवश्यकता नहीं। रूस या चीन में वैज्ञानिक प्रगति अंग्रेजी के माध्यम से नहीं हुई। जर्मनी में तकनीकी विषयों के उच्च अध्ययन के लिए जो जाते हैं उनको एक वर्ष तक जर्मन भाषा सिखायी जाती है और तत्पश्चात जर्मन भाषा के माध्यम से तकनीकी विषय सिखाये जाते हैं। हमारे कुछ आयोगों की मान्यता है कि यह सब यहाँ असंभव है। क्या यहाँ अभियान्त्रिकी का अध्यापन मलयालम में नहीं किया जा सकता? यहाँ के साधारण बढ़ई और राज अभियांत्रिकी नहीं कर रहे हैं? आधुनिक शिक्षा के प्रचार के पहले भी वे यह सब करते आये हैं न? यहाँ की शिल्पकला अंग्रेजी शिक्षा के आरंभ के पहले ही खूब विकसित हुई थी। इन सब बातों के संबंध में जनता को समझाना होगा। तभी कार्य सिद्ध हो सकता है।

केरल में अनेक हिन्दी प्रचारक हैं। अनेक हिन्दी विद्यालय हैं। इन की संख्या में और वृद्धि होनी है। केन्द्र सरकार कितनी ही योजनाओं में अनुदान देती है। हिन्दी प्रचार सभाओं को दिया जानेवाला अनुदान और हिन्दी सीखनेवाले विद्यार्थियों को दी जानेवाली छात्रवृत्तियों की रकम कितनी अपर्याप्त है! हिन्दीतर प्रान्तों से हिन्दी एम. ए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तीर्ण करनेवालों केलिए नौकरी क्यों आरक्षित नहीं की जा सकती? अधिक आकर्षक आत्म प्रेरणाओं के सहारे ही हम लोगों को हिन्दी से जोड सकेंगे। हिन्दी माध्यम स्कूलों की स्थापना क्यों नहीं की जा सकती?

यदि केरल हिन्दी प्रचार सभा एक आदर्श हिन्दी माध्यम कालेज आरंभ कर सके तो वह स्व० वासुदेवन पिल्लै के प्रति आदर प्रकट करने का एक उत्तम साधन होगा।

हिन्दी प्रचार सभाओं को दिया जानेवाला अनुदान और हिन्दी सीखनेवाले विद्यार्थियों को दी जानेवाली छात्रवृत्तियों की रकम कितनी अपर्याप्त है!

प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर

मेरा यह सौभाग्य है कि प्रातःस्मरणीय स्व० वासुदेवन पिल्लै की पुण्यस्मृति में अपनी श्रद्धांजली अर्पित करने का अवसर मुझे मिल रहा है। वासुदेवन पिल्लै जी के हिन्दी प्रचार अभियान रूपी दीपशिखा का एक छोटा स्फुलिंग हूँ मैं।

मलयालम हायर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद जब मैं अंग्रेजी स्कूल में नवीं कक्षा में (फोर्थ फाम) जब भरती हुआ तब द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी, मलयालम या संस्कृत ले सकता था। उन दिनों स्वतंत्रता संग्राम का सशक्त अभियान चल रहा था। उस में हिन्दी प्रचार को भी प्रमुख स्थान दिया जा रहा था। मैं ने द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी को चुना। स्कूल खुलने के तीन महीने बाद ही मलयालम हायर की परीक्षा का परिणाम निकला था। अतः नवीं कक्षा में जब मैं भरती हुआ तब हिन्दी की पहली पुस्तक के कई पाठ पढाये चुके थे। मुझे नागरी लिपि का परिचय भी नहीं था। हमारे हिन्दी अध्यापक स्व० सी. जी. एब्रहाम थे। उन्होंने मुझे द्वितीय भाषा के रूप में मलयालम लेने की सलाह दी। मुझे बडा खेद हुआ। सौभाग्य से मुझे स्व० वासुदेवन पिल्लै जी के हिन्दी विद्यालय का पता मिला। स्व० वासुदेवन पिल्लै जी ने मेरी दयनीय स्थिति पर तरस खायी और कहा—"घबराने की कोई बात नहीं। तुम प्राथमिक कक्षा में शामिल हो जाओ।" मैं स्कूली परीक्षाओं के साथ साथ हिन्दी परीक्षाओं में भी उत्तीर्ण होता रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासुदेवन पिल्लैजी के प्रति मेरे हृदय में बडा आदर है। स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं के भाषणों से प्रेरित होकर मैं भी विद्यार्थी आन्दोलनों में भाग लेने लगा। वासुदेवन पिल्लै जी भी अपने क्षेत्र में बडे विप्लवकारी रहे। विप्लवाशयों के एक अदम्य अग्निपर्वत थे स्व० वासुदेवन पिल्लैजी। १९५२ के सार्वजनिक चुनाव के समय तिरुवनन्तपुरम मोडल स्कूल के सीनियर हिन्दी अध्यापक का अपना पद त्याग कर वे तिरुवनन्तपुरम-नेय्याटिनकरा निर्वाचन क्षेत्र में लोकसभा का चुनाव लडने केलिए राजनीतिक क्षेत्र में उतर आये। उनका कहना था कि चूँकि हिन्दी भारत की राजभाषा स्वीकृत होनेवाली है इसलिए लोकसभा में दक्षिण भारत की आवाज बुलन्द करने केलिए, दक्षिण भारत की समस्याओं के प्रति संसद सदस्यों और अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करने केलिए ऐसे उम्मीदवारों को संसद सदस्य बनाना है जो हिन्दी में अपने भाव व्यक्त कर सकते हैं। पर उस समय के मतदाता उन के लक्ष्यबोध से अवगत नहीं हो पाये। उन्हें पराजित होना पडा।

विप्लवाशयों के एक अदम्य अग्निपर्वत थे स्व० वासुदेवन पिल्लैजी।

हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में भी स्व० वासुदेवन पिल्लै ने अपने विप्लवात्मक चिन्तन का प्रयोग किया। केरल के हिन्दी प्रचार यत्नों को सुशक्त और सुसंगठित बनाने केलिए उन्होंने केरल हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। वे जानते थे कि ऐसी एक संस्था के अभाव में केरल में हिन्दी प्रचार अभियान क्षीण पड जायेगा।

स्कूलों में हिन्दी अध्यापन की स्थिति सुधारने केलिए भी स्व० वासुदेवन पिल्लै ने भरसक प्रयत्न किया। उन दिनों भारतीय भाषाओं के अध्यापकों को अंग्रेजी अध्यापकों और अन्य विषयों के अध्यापकों से निम्न माना जाता था। उन्हें वर्णाकुलर अध्यापक कहा जाता था। स्व० वासुदेवन पिल्लै ने हिन्दी अध्यापकों केलिए एक विशेष वेतन दिलाने की मांग की।

जिन कार्यों को साधारण लोग असाध्य मानते थे उन्हीं कार्यों को स्व० वासुदेवन पिल्लै अपने हाथ में लेते थे और धीरतापूर्व अपनी लक्ष्य सिद्धि केलिए आगे बढते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातस्मरणीय गुरुवर स्व० वासुदेवन पिल्लै जी को मेरी हार्दिक श्रद्धांजलियाँ अर्पित करता हूँ।

श्रीमती जी. कमलम्मा

मुझे पुष्पों का स्मरण हो आता है। पुष्प तीन प्रकार के पाये जाते हैं—सुगन्ध फैलानेवाले पुष्प, वर्ण-शोभा से दर्शकों को आनन्दित करने वाले पुष्प और दुर्गन्ध फैलानेवाले पुष्प। सुगन्ध फैलानेवाले पुष्पों के सदृश थे स्व० वासुदेवन पिल्लै जी, उन का जीवन मेघज्योति के समान क्षणिक था। लेकिन वैसा ही प्रभा-पूर्ण भी था।

अपने अनेकों देश प्रेमी शिष्यों की परंपरा द्वारा राष्ट्रहित के ऐसे कार्यों को अक्षुण्ण बनाये रखने की जो क्षमता स्व० वासुदेवन पिल्लै में थी वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनकी स्थापित यह संस्था पल्लवित पुष्पित होकर देश का हित कर रही है।

एक बात की ओर मैं आप का ध्यान आकृष्ट करना चाहती हूँ। मेट्रिक उत्तीर्ण विद्यार्थी हिन्दी मलयालम या अंग्रेजी में एक वाक्य भी शुद्ध रूप से लिख नहीं पाता। शैक्षिक क्षेत्र की इस दुर्गति को दूर करना है। बच्चों को किसी भाषा के प्रति विरोध नहीं। प्रभावी ढंग से पढाये तो बच्चे हर भाषा पर अच्छा अधिकार पा सकते हैं।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त महादेवी वर्मा

भारत की विख्यात कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ज्ञानपीठ पुरस्कार से अलंकृत हो गयी हैं। विश्वसाहित्य मंदिर की महादेवी जी को केरल ज्योति परिवार का हार्दिक अभिनंदन।

वैसे तो केरल के हिन्दी पाठ्यक्रम में महादेवीजी की रचनाओं को प्रमुख स्थान मिलता रहा है। इस कारण केरल के हिन्दी विद्यार्थियों और हिन्दी प्रेमियों के मानस में महादेवीजी के प्रति अपार श्रद्धा है।

ज्ञानपीठ पुरस्कार ने केरल के ऐसे बुद्धिजीवियों और साधारण पाठकों में भी महादेवी के संबंध में जानने की उत्सुकता जगा दी है जो हिन्दी नहीं जानते। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सचित्र लेखों ने महादेवी के व्यक्तित्व और कृतित्व की झांकी प्रस्तुत की है। पर उनके विराट व्यक्तित्व का विश्व-दर्शन तभी मिल सकता है जब उनकी सारी प्रमुख रचनायें मलयालम में अनूदित होकर आये। क्या केन्द्र साहित्य अकादमी या केरल साहित्य अकादमी से यह आशा की जा सकती है कि इस दिशा में कुछ कदम उठाये जायेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन कवितायें

(१) रात बोझिल थी

रंजना सक्सेना

रात बोझिल थी कल की,
इसलिए आज दिन नहीं कटता ।
रूप फैला था अमिट चांदनी का,
यौवन सूर्य का नहीं ढ़लता ।
तारों ने टिमटिमा के कह ली अपनी,
अपनी ये आसमां नहीं सुनता ।
रात को चुप्पी कलेजा निकाल लेती थी,
दिन का ये शोर जान नहीं लेता ।
दे अंधेरा, अंधेरों की बात करता था,
ये उजाला तो उजाले की नहीं करता
खींचने आया था चांद अंधेरे का कफन,
दिन में तो कफन उड़ाने कोई नहीं आता ।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी दिवस

१४ सितम्बर १९४९ को प्रथम संविधान सभा ने हिन्दी को भारत राष्ट्र की राजभाषा के रूप मे मान्यता दी थी। तब से प्रतिवर्ष देशीय स्तर पर १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है।

हर हिन्दी दिवस पर हम संकल्प करते रहे हैं कि हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी को और अन्य राज्यों में वहाँ की जन-भाषाओं को राजभाषा तथा सभी स्तरों पर शिक्षा माध्यम के पद पर प्रतिष्ठित करवायेंगे और इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हर प्रकार का योगदान देने के लिए सदा तत्पर रहेंगे।

अब समय आ गया है कि इस संकल्प को कार्यरूप में परिणत करने के लिए क्रियाशील हों।

मलयालम साहित्य के कुलपति हैं सी. वी. रामन पिल्लै।

—तकषि

x x x

सी. वी. रामन पिल्लै के एतिहासिक उपन्यास तिरुवितांकूर रियासत के वर्णोज्वल काल्पनिक विवरण हैं।

—प्रो० गीकक

x x x

षेकस्पीयर ने जैसे हेनरी पंचम को प्रस्तुत किया वैसे ही सी. वी. रामन पिल्लै ने राजा केशवदास को चित्रित किया।..... सी. वी. अलक्सान्डर ड्यूमास और वाल्टर स्कॉट से भी महान थे।

—प्रो० जी. कुमार पिल्लै

x x x

मलयालम साहित्य की अजय्य एवरेस्ट चोटी है सी. वी. रामन पिल्लै। .....मलयालम के अति विख्यात साहित्यकार भी सी. वी. के समक्ष बहुत छोटे हैं।

—प्रो० सुकुमार अषिक्कोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१) अबाध

प्रद्युम्न 'विद्या वाचस्पति'

कहीं चिर हास्य का अभिशाप औ वरदान क्रन्दन का।
मगर-कोई करेगा क्या प्रकृति के प्यार बन्धन का ॥

क्षितिज के भाल का सौन्दर्य,
होता प्राण का सम्बल।
कहीं तो धूळ भी करती,
किसी के भाग्य से है छल।

मगर कोई हृदय के ज्वार को यदि रोकना चाहे।
तो - पहले रोक ले अर्पित उषा को भाल कुंकुम का ॥

जवानी रात की है नाच ले,
नंगी - भले, लेकिन।
अमावस के दिये को टिमटिमाहट,
को न सकती गिन।

भला उस मौन सरगम को छिपाकर कौन रख लेगा।
कि, जिसको जिंदगी को है मिला आधार शबनम का ॥

कहीं लाखों दिये जलते,
कहीं हरदम अंधेरा है।
पता क्या साँझ का कैसे,
कभी होता सवेरा है।

प्रथम मुसकान प्राचीं की घटाओं से नहीं रुकती।
कि, जैसे रुक नहीं सकता कभी तूफान यौवन का ॥ ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) आस्तीन का साँप

कुर्सी के मद ने
अपने पराये में फर्क
करने से अक्षम कर
उसे.....
स्वार्थ के आवेश
में कस लिया ।
मित्रता की पुरानी दीवार
लिप्सा के हल्के झोंकों को
सह नहीं सकी
और भरभराकर
ढह गई ;
धूलिसात हो गई
रेत के घरौंदे की तरह
एक ही लहर में
भरभरा कर रह गई ।
सुना है ..
एक साँप ने
अपने पालनकर्ता को ही
डस लिया ।
वह साँप था,
आस्तीन का साँप
साँप से भी
विषधर!
खतरनाक!!

❀

प्रद्युम्न 'विद्या वाचस्पति'
प्रधानाध्यापक
राष्ट्र भाषा विद्यालय पञ्जरवाली
जिला राजापुर, मध्यप्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं क्यों हिन्दी सीखता हूँ, कैसे हिन्दी सीखता हूँ"—एक परिचर्चा

हिन्दी भूषण में सर्व प्रथम
आनी तोमस कहती है :

[केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा संचालित विविध परीक्षाओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त विद्यार्थियों से एक परिपत्र द्वारा आग्रह किया गया कि 'मैं हिन्दी क्यों सीखता हूँ, कैसे हिन्दी सीखता हूँ, इस विषय पर अपने विचार केरल ज्योति में प्रकाशनार्थ लिख भेजें ।

अनेक छात्रों ने इस विषय पर अपने लेख भेज दिये हैं । हर अंक में इन में से चार पाँच लेख प्रकाशित किये जा रहे हैं । आशा है अन्य विद्यार्थियों केलिए यह स्तंभ प्रेरणाप्रद रहेगा।]

भारत में भिन्न भिन्न भाषायें बोली जाती हैं। पर पूरे उत्तर और मध्य भारत मे बहुधा हिन्दी या उससे मिलती-जुलती बोलियाँ बोली जाती हैं । दक्षिण के लोगों को हिन्दी को अपनाने मे कोई कठिनाई नहीं होता । क्योंकि हिन्दी हिन्दी संस्कृत से मिलती-जुलती है । हिन्दी एक सरल भाषा है । कोई भी इसे आसानी से पढ सकता है । उसपर संस्कृत का बडा प्रभाव पडा है । इसलिए दक्षिणी लोगों के लिए हिन्दी को स्वीकार करना कोई कठिन बात नहीं । हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के स्थान पर बिठाना सर्वथा उचित है । अंग्रेजी विदेशी भाषा है । उसे राष्ट्रभाषा का स्थान देना अपमान और लज्जा की बात है ।

बहुभाषा भाषी भारतीय जनता के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता है । इस बात को सब स्वीकार करते हैं । पर कोई हिन्दी का समर्थन करता है तो कोई अंग्रेजी का । भारत की राष्ट्रभाषा बनने के लिए सब प्रकार से योग्य भाषा हिन्दी ही है । हिन्दी का स्वरूप और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुगम हिन्दी परीक्षा, कक्षा VII में पुरस्कृत

यू. वेणुगोपालन का मत है:

भारत एक विशाल राज्य है। यहाँ चौदह से अधिक भाषायें बोली जाती हैं। इसलिए विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को एक सूत्र में बाँधने केलिए एक सामान्य भाषा आवश्यक है। भारत के अधिक लोग हिन्दी जानते हैं। इसलिए गाँधीजी ने राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को चुन लिया।

हिन्दी बहुत सरल है। उसका साहित्य बहुत ऊँचा है। राष्ट्रभाषा होने के कारण हिन्दी पढना हमारा कर्तव्य है और हिन्दी जानना हमको आवश्यक भी है। इसलिए मैं हिन्दी सीखता हूँ।

क्लास में अध्यापिका की सहायता से, पाठ पढ़कर, रेडियो से

रेडियो और दूरदर्शन दोनों हिन्दी सीखने में बहुत सहायक हैं।

अन्य भारतीय भाषाओं का स्वरूप एक-सा है। हिन्दी भारत भर में प्रचलित हो चुकी है और अधिकांश भारतीय थोडी बहुत हिन्दी जानते भी हैं।

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। ऐसी हालत में मैं हिन्दी सीखती हूँ। क्योंकि मैं भारतीय हूँ, मैं स्वतन्त्र भारत का अंग हूँ। देश की उन्नति और एकता बढाने के लिए हिन्दी सीखना मेरा कर्तव्य है।

हिन्दी सीखना सरल है। स्कूल में हिन्दी सीखना आरंभ होता है। हिन्दी प्रचार सभा हिन्दी प्रचार के लिए बहुत काम करती है। उसी के द्वारा बहुत से लोग हिन्दी सीखते हैं, समझते हैं। अब दूरदर्शन के द्वारा साधारण लोग तक हिन्दी सीख सकते हैं। स्कूल में जो कुछ पढते हैं और सुनते हैं ये सब दूर-दर्शन में देखने का अवसर मिलता है। रेडियो और दूरदर्शन दोनों हिन्दी सीखने में बहुत सहायक हैं।

❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुगम हिन्दी परीक्षा, कक्षा IX में पुरस्कृत

शान्ति मात्यु

मैं रेडियो का हिन्दी कार्यक्रम रोज़ सुनती हूँ और पढती हूँ ।

भारत में अनेक भाषाओंवाले लोग रहते हैं। इसलिए भारत-वासियों केलिए आपस में विचार विनिमय करना मुश्किल है। इसके लिए एक राष्ट्रभाषा अनिवार्य है।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। सारे उत्तर भारत में हिन्दी बोली जाती है। हिन्दी सरल भाषा है। संस्कृत से यह बहुत मिलती-जुलती है। इसलिए राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को चुन लिया है। राष्ट्र की एकता को सुदृढ करने में राष्ट्रभाषा का महत्वपूर्ण स्थान है।

मैं हिन्दी बहुत पसंद करती हूँ। मुझे हिन्दी बोलने में और सीखने में बहुत तात्पर्य है। बचपन से मुझे हिन्दी पसंद थी। मेरी अध्यापिका मेरी सहायता करती थी। मैं हिन्दी व्याकरण भी पढती हूँ। स्कूल से घर आकर हिन्दी खूब पढती हूँ और लिखती हूँ।

अब हिन्दी सीखना मुझे थोडा मुश्किल है क्योंकि मेरी बोलचाल की भाषा हिन्दी नहीं है; मलयालम है। पर मैं अब बहुत कोशिश करती हूँ। यहाँ छोटी छोटी हिन्दी पत्रिका नहीं मिलती। हिन्दी में बातचीत करने से बहुत लाभ होता। मगर यहाँ मेरी बोलचाल की भाषा मलयालम होने के कारण वह भी मुश्किल है।

मैं रेडियो का हिन्दी कार्याक्रम रोज़ सुनती हूँ और पढती हूँ।

आगे भी खूब पढने की कोशिश करूँगी। ★

क्लास में अध्यापिका की सहायता से, पाठ पढ़कर, रेडियो से प्रभाषण सुनकर और हिन्दी पंक्तियाँ पढ़कर मैं हिन्दी सीखता हूँ। कक्षा में अध्यापिका जब पढाती हैं तब मैं पूरा ध्यान देता हूँ।

प्रभाषण सुनकर और हिन्दी पंक्तियाँ पढ़कर मैं हिन्दी सीखता हूँ। कक्षा में अध्यापिका जब पढाता हैं तब मैं पूरा ध्यान देता हूँ। रेडियो के प्रभाषण और हिन्दी पंक्तियाँ—दोनों हमारा ज्ञान पुष्ट करते हैं। ❀

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी प्रथम परीक्षा में सर्व प्रथम

पी. दीपा

मैं अपनी माँ और बाप के साथ हिन्दी सिनेमा देखने जाती थी। हिन्दी के गीत बडे मधुर थे। मैं उसे समझ नहीं सकती थी। फिर भी मैं उसे बहुत पसंद करती थी। मेरी माँ से मिलने केलिए कई हिन्दी बोलनेवाले आते हैं। वे ऊँची आवाज में बात कहकर हँसते हैं। मुझ से हिन्दी मे पूछते क्या नाम है? मैं कुछ नहीं कहती। तब भी वे हँसते थे।

एक बार मेरे पिताजी दिल्ली गये। उनको हिन्दी अच्छीतरह नहीं मालूम थी। 'एक दो तीन' बस और 'थोड़ा थोड़' जानते थे। एक बार एक गुडिया खरीदने केलिए करोलबाग गये। दूकानदार ने कहा पांच रुपये में देंगे। पिताजी ने दो रुपया कहा। उसने कहा —अच्छा! ढ़ाई रुपये मे देंगे। पिताजी के हाथ में एक छोटी डयरी थी। उस में 'ढ़ाई' शब्द नहीं था दूकानदार अंग्रेजी भी नहीं जानता था। पिताजी जल्दी डरते डरते तीन रुपये बोले। वे तीन रुपये में उसे खरीद लाये। होटल जाकर अन्य मलयाली भाइयों से यह बात कही। तभी उन की गलती मालूम हुई।

मेरे पिताजी ने राजस्थान में एक होटल में जाकर अंग्रेजी में कहा— I want a room. राजस्थानी मानेजर क्रोध में आये और पूछा Are you an Indian? इस का अर्थ यह है कि अगर तुम भारतवासी हो तो तुम को भारत की भाषा जाननी चाहिए। भारत भर में यात्रा करके मेरे पिताजी ने मुझ से कहा कि हिन्दी पढ़े बिना हम कहीं भी नहीं जा सकेंगे। यह सब सुनकर मुझे हिन्दी पढ़ने की इच्छा हुई। मैं माँ के मित्रों को पत्र लिखना चाहती हूं। रेडियो और टेलिविज़न का हिन्दी कार्यक्रम समझना चाहती हूँ। यहाँ आनेवाले महान साहित्यकारों से मिलना और बात करना चाहती हूं। महाराणा प्रताप और मराठे वीर शिवाजी की कहानी पढ़ना चाहती हूँ। इसलिए मैं हिन्दी पढ़ती हूं मैं भी दिल्ली जैसी जगहों में जाना चाहती हूँ।

मेरी माँ मुझे हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा देती है। मेरे घर में बहुत सी किताबें हैं। केरल हिन्दी प्रचार सभा मुझे बहुमूल्य पुरस्कार देकर अनुग्रह देती है। यह भी एक बडी प्रेरणा है। ★

केरल ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

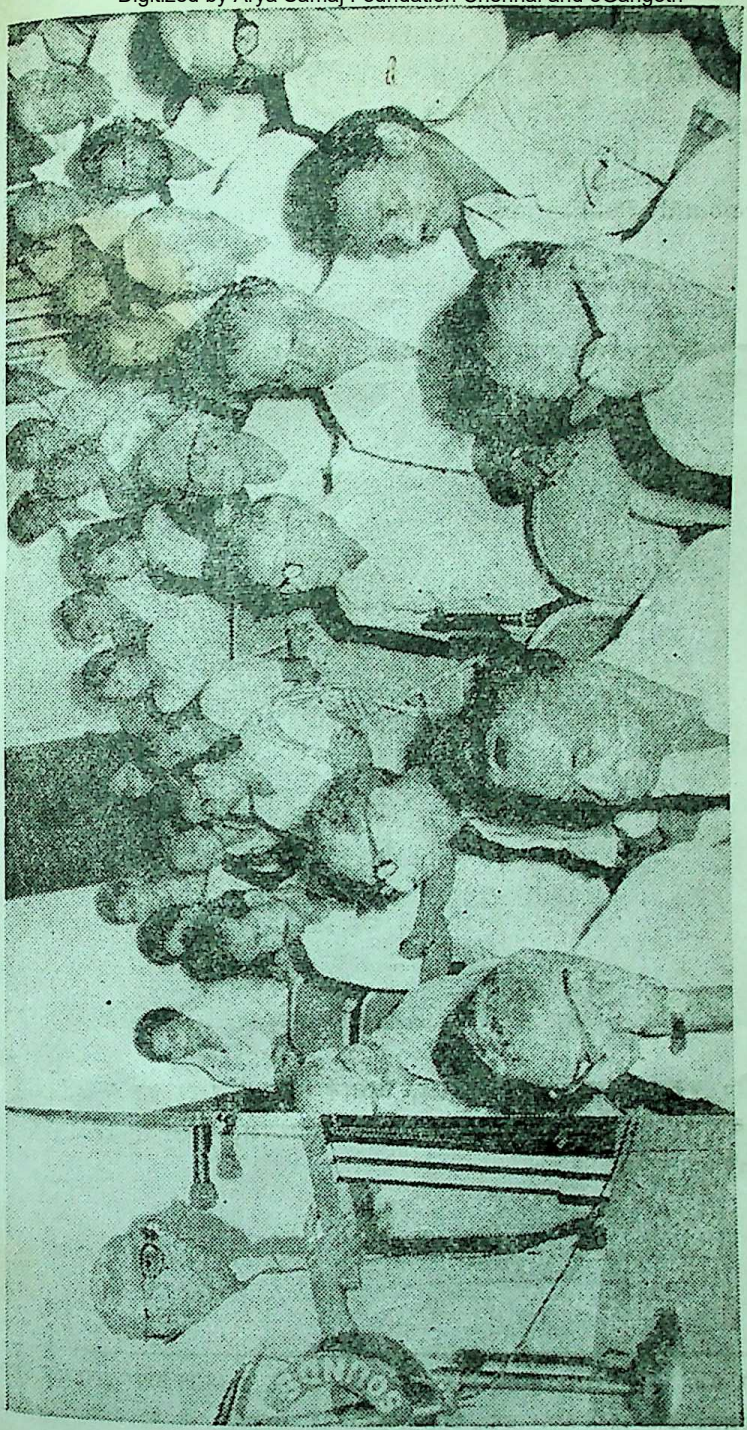

केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक एवं प्रथम मंत्री स्व० के. वासुदेवन पिल्लै के २१ वें स्मृतिदिवस पर केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं श्री० वक्कम पुरुषोत्तमन (अध्यक्ष, विधान सभा, केरल)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25

KERALJYOTI

Vol. XVIII-No. 6

September 1983

Price : Re. 1.00

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar S

श्री० वक्कम पुरुषोत्तमन (अध्यक्ष, विधान सभा, केरल) का स्नेहपूर्वक स्वागत कर रहे हैं श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया (अध्यक्ष, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम)

रल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रकाशित।
: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी बालकृष्ण पिल्लै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी
FREE 23-11-83

डा० एम. मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन। केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय के तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग के अध्यक्ष नियुक्त होने के उपलक्ष्य में डा० मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन 2-9-1983 को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में किया गया। समारोह का उद्घाटन कर रहे हैं केरल विश्वविद्यालय के कुलपति डा० पी. एस. हबीब मुहम्मद, आइ. ए. एस. बैठे हैं: डा० पी. के. नारायण पिल्लै (बायें) और डा० एम० मलिक मुहम्मद (दायें)

केरल हिन्दी प्रचार सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरल ज्योति

* प्रधान संपादक
प्रो० पी. जे. जोसफ़

* संपादक
श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै

* सह संपादक
श्री० आर. सुकुमारन नायर

* संपादक मण्डल
श्री० वी. के. गोपालन नायर
प्रो० एम. जनार्द्दनन पिल्लै
श्री० के. वी. कृष्णनकुट्टी
श्री० एम. के. वेलायुधन नायर

* विज्ञापन दर

		मासिक		वार्षिक	
आवरण पृष्ठ ४	रु.	५००	००	५०००	००
आवरण पृष्ठ २ एवं ३	रु.	४००	००	४०००	००
साधारण पृष्ठ पूरा	रु.	३००	००	३०००	००
साधारण पृष्ठ ½	रु.	१७५	००	१७५०	००
साधारण पृष्ठ ¼	रु.	१००	००	१०००	००

* पत्र व्यवहार का पता ।

मंत्री,
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ०१४
केरल

तार :-"जय हिन्दी"
फोन : ६१३७८

एक प्रति का मूल्य : १ रु
वार्षिक चन्दा : १० रु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केरलज्योति

सांस्कृतिक जागरण की मासिक पत्रिका

पुष्प: १८

दल। ७

अक्तूबर १९८३

संपादकीय

भाषा-योजना बनायें, नहीं तो....

गान्धी जयन्ती के अवसर पर देश की अनेकों समस्याओं पर प्रायः चर्चायें हुआ करती हैं। पर राष्ट्रभाषा प्रचार की समस्याओं पर उस दिन गान्धीवादियों का भी ध्यान नहीं जाता।

गान्धीजी ने बडी दीर्घदर्शिता के साथ हिन्दी को राष्ट्रभाषा केलिए चुना था। आप का आग्रह था कि राष्ट्रभाषा के पुनीत सूत्र में विविध भाषा भाषी भारतीय समूह एकीकृत हो जायें। इस लक्ष्य की सिद्धि केलिए आपने बहुत प्रयत्न भी किया।

गान्धीजी के प्रयत्न विफल नहीं हुए। प्रान्त प्रान्त में हिन्दी प्रचार संस्थायें बनीं। हिन्दी को स्कूली और कालेजीय पाठ्यक्रमों में स्थान मिला। हिन्दी को राजभाषा का भी पद मिला।

किन्तु इन सब प्रयत्नों के बावजूद आज भी वह स्थिति बहुत दूर है जिसका राष्ट्रपिता ने संकल्प किया था। अब तक न हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी को राजभाषा के रूप में पूर्णरूप से प्रतिष्ठा मिल सकी है और न हिन्दीतर प्रान्तों में हिन्दी का उतना प्रचार हो पाया है कि जितने से वहाँ की जनता में हिन्दी के माध्यम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में

डॉ० एम. मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन 3
पी. एस. हबीब मुहम्मद
डॉ० पी. के. नारायण पिल्लै
पी. एन. पणिक्कर
डॉ० एन. पी. पिल्लै
डॉ० धर्मवीर
डॉ० मुहम्मदकुंजु मेत्तर
एस. वी. कुक्किल्लाया
प्रो० सी. जी. राजगोपाल
एम. पी. अप्पन
प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर
के पी. अलिक्कुंजु
डॉ० के. पद्मावती
जवाबी भाषण—
डॉ० एम. मलिक मुहम्मद
'उसने कहा था' की प्रासंगिकता 19
डॉ० मृत्युंजय उपाध्याय
अंकुर 24
रामकृष्ण ठाकुर
मानस का मूलधर्म 25
डॉ० कुमारी आशा कपूर
शकुन्तला 31
डॉ० कृष्णकुमार
गाँधी-जयन्ती 37
विलफ्रड तोमस
जय देवि 39
किशन
श्रीमती शकुन्तला सिरोटिया पुरस्कृत 40

वाणिज्य, शिक्षा तथा प्रशासन आदि क्षेत्रों के कामकाज करने की क्षमता आ जाये। केरल, तमिलनाड जैसे हिन्दी क्षेत्रों से दूरस्थ प्रान्तों की स्थिति आज भी अभि लक्ष्य से बहुत नीचे है। जैसे राष्ट्रभाषा के प्रश्न पर चर्चा करते हुए सितंबर १९४९ में एक माननीय सदस्य ने कहा था —वे केवल लिख पढ सकते हैं, अपना मत व्यक्त नहीं कर सकते।

इस स्थिति में सुधार लाने केलिए यह आवश्यक है कि राजनीतिक दलों और सरकारों की ओर से इस दिशा में कुछ ठोस कदम उठाये जायें। जैसे डा० गोपाल शर्मा ने सुझाया है "अब तो हम ऐसी स्थिति में हैं जब भाषा के स्तर पर एक सुयोजित, कल्पनाप्रेरित, सब पक्षों से सुसंबद्ध सुगठित भाषा-योजना बनाना और उसे क्रियान्वित करना परम आवश्यक है। अन्यथा पच्चीस वर्ष पहले जो संक्रांति शुरू हुई थी, उसमें जितनी समस्यायें हल नहीं हुईं उन से अधिक पैदा हो सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा० एम. मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन

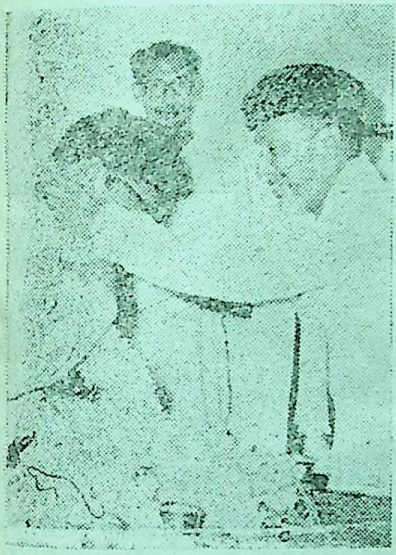

डा० मलिक मुहम्मद को अभिनन्दन की पुष्पमाला पहना रहे हैं केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष जनाब के. पी. अलिक्कुंजु

विख्यात हिन्दी विद्वान एवं लेखक तथा कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० एम. मलिक मुहम्मद का तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली आयोग, नयी दिल्ली, के आध्यक्ष नियुक्त होने के उपलक्ष्य में २-९-१९८३ को सायं ५ बजे केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में आयोजित विशेष सम्मेलन में हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन केरल विश्वविद्यालय के कुलपति श्री० पी. एस. हबीब मुहम्मद आइ ए. एस. ने किया। विख्यात विद्वान डा० पी. के. नारायण पिल्लै सम्मेलन में अध्यक्ष रहे।

महाकवि एम पी. अप्पन, श्री० पी. एन. पणिक्कर, डा० एन. पी. पिल्लै, श्री० एस. वी कुक्किल्लाया, प्रो० सी जी. राजगोपाल, प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर, डा० धर्मसीर, डा०के. पद्मावती, श्री०के पी. अलिक्कुञ्ञु, डा० मुहम्मदकुञ्ञु मेत्तर जैसे विद्वानों ने डा०मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन किया। सभा के मंत्री श्री०एम.के. वेलायुधन नायर ने स्वागत भाषण दिया और केरल-ज्योति के संपादक श्री० के. जी. बालकृष्ण पिल्लै ने कृतज्ञता प्रकाशित की। सम्मेलन के आरंभ में श्रीमती एम. तंकम्मा मालिक ने मंगलाचरण गाया। डा० मलिक मुहम्मद ने जवाबी भाषण दिया। भाषणों का सारांश यों है :—

स्वागत भाषण

आज इस अभिनन्दन सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे हैं केरल विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कुलपति श्री० पी. एस. हबीब मुहम्मद। श्री० हबीब मुहम्मद वर्षों से–करीब सन् १९५१ से १९५४ तक–तिरुवनन्तपुरम यूनिवर्सिटी कालेज में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। इसके बाद आप अखिल भारतीय सेवा के विविध पदों में रह कर अपने धीर नेतृत्व से एक अति समर्थ प्रशासक के रूप में विख्याति पा चुके हैं। साहित्यिक विषयों पर भी वे आधिकारिक ढंग से बोल सकते हैं।

नियुक्त होने के उपलक्ष्य में मैं उन का अभिनन्दन करता हूँ और केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से इस सम्मेलन में उन का हार्दिक स्वागत करता हूँ।

इस सम्मेलन के अध्यक्ष डा० पी. के. नारायण पिल्लै केरल हिन्दी प्रचार सभा के निकटतम बन्धु हैं। आप ने इस संस्था के बहुमुखी विकास के लिए अमूल्य योग दिया है। आप बहुभाषा पंडित हैं, यशस्वी साहित्यकार हैं और हिन्दी प्रचार

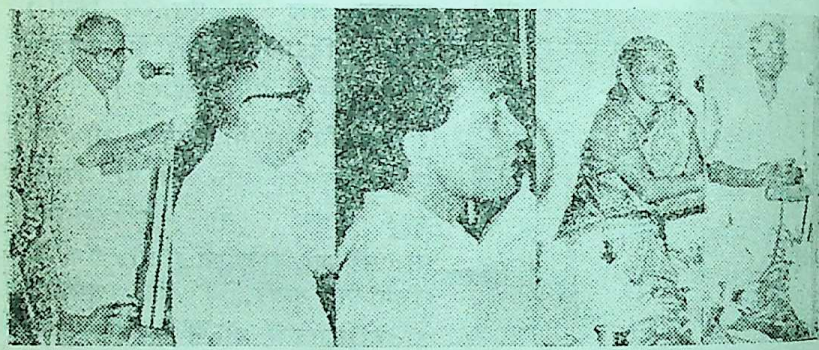

बायें से — श्री० एम. के. वेलायुधन नायर, डा० पी. के. नारायण पिल्लै, धर्मवीर आइ. ए. एस., डा० के. पद्मावती और श्री० एस. वी. कुक्किल्लाया।

हमारे अखबारों में यह चर्चा चल रही है कि यदि अकादमिक विद्वान विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त नहीं होंगे तो बडी हानी होगी। लेकिन श्री० हबीब मुहम्मद अध्यापन और प्रशासन के क्षेत्र में प्राप्त अपने अनुभवों के आधार पर यह प्रमाणित कर सकते हैं कि उपर्युक्त राय निर्मूल है। उनका नेतृत्व निश्चय ही केरल विश्वविद्यालय के लिए गौरवप्रद रहेगा। केरल विश्वविद्यालय के कुलपति

सभा के हितैषी हैं, भारतीय भाषाओं के समन्वयन केलिए यत्नशील हैं। डा० पिल्लै का भी मैं सादर स्वागत करता हूँ।

इस सम्मेलन में कई प्रमुख विद्वान डा० मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन कर रहे हैं। यह ऐसे व्यक्तियों का एक अंतरंग सम्मेलन है जो डा० मलिक मुहम्मद से हार्दिक संबंध रखते हैं। प्रतिभागियों की हृदयशुद्धि की दृष्टि से यह सम्मेलन अत्यंत महत्वपूर्ण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के अपने अतिव्यस्त कार्यक्रम से समय निकाल कर हमारा अभिनन्दन स्वीकार करने के लिए डा० मलिक मुहम्मद यहाँ पधारे हैं। निसंदेह उनकी इस नियुक्ति पर दक्षिण भारतीय जनता अधिक गौरव का अनुभव कर सकती है। हिन्दी कृष्णभक्ति काव्य, वैष्णवभक्ति आन्दोलन, भक्ति आन्दोलन के प्रेरणास्रोत, हिन्दी साहित्य को हिन्दीतर प्रदेशों की देन, राजभाषा हिन्दी आदि उनके प्रमुख ग्रन्थ हैं। हिन्दी प्रचार के क्षेत्र में भी आप ने मूल्यवान योगदान दिया है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में और अन्य स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाओं से विविध रूपों में संबद्ध होकर आपने हिन्दी प्रचार में बडा योग दिया है। विविध भारतीय विश्व विद्यालयों की शिक्षा समितियों और परीक्षा समितियों के सदस्य रहकर आपने भारत की भावात्मक एकता के लिए बडा प्रयत्न किया है। मेरा प्रबल विश्वास है कि डा० मलिक मुहम्मद विविध भारतीय भाषाओं को शब्दावली से उपयुक्त शब्द चुनकर वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली को संपुष्ठ कर पायेंगे जिससे हर प्रान्त की जनता इस शब्दावली में अपनापन अनुभव कर सके। आशा है कि आप अंग्रेजी के अन्ध विरोध में न पडकर वे अंग्रेजी के भी उपयुक्त शब्दों को भी स्वीकार करेंगे। इस नयी स्थानलब्धि में केरल हिन्दी प्रचार सभा की ओर से, भाषा प्रेमियों की ओर से और यहाँ उपस्थित प्रमुख साहित्यकारों की ओर से मैं आदरपूर्वक उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

श्री० पी. एस. हबीब मुहम्मद

आदरणीय डा० नारायण पिल्लैजी, डा० मलिक मुहम्मद, इस सम्मेलन के संयोजक बन्धुओ और केरल हिन्दी प्रचार सभा के शुभैषियो,

यह हमारे लिये बडे गौरव की बात है कि केरल के एक विश्वविद्यालय के एक विभागाध्यक्ष एवं दक्षिण के एक विख्यात हिन्दी विद्वान डा० मलिक मुहम्मद जिनकी मातृभाषा तमिल है और जिनका जन्म स्थान तमिलनाड है जो कि हिन्दी के प्रचार में अन्य दक्षिण भारतीय प्रान्तों की जितनी रुचि नहीं ले रहा है, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष चुने गए हैं। इस सन्दर्भ में इसका अधिक महत्व है जबकि देश के विघटनकारी और विभाजक तत्वों को दमित करने की और देश की और देश की भावात्मक एकता को और भी घनीभूत बनाने की अत्यन्त आवश्यकता है। चाहे हम संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात लें, चाहे प्रशासनिक आवश्यकताओं की बात लें, चाहे देशीय एकता के लिए जनता की तीव्र अभिलाषा की बात लें, यह अत्यन्त आवश्यक है, कि देश के विभिन्न भागों में प्रयुक्त होनेवाली एक आम भाषा हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि आम भाषा के लिए हिन्दी ही सबसे अधिक उपयुक्त है। इस आवश्यकता को महसूस करने का यह परिणाम है कि दक्षिण के प्रान्तों में जहाँ संस्कृत का प्रभाव अधिक प्रबल रहा है, विशेषकर केरल, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में हिन्दी के विरुद्ध या हिन्दी प्रचार के विरुद्ध कोई भावना नहीं है। इस तकनीकी युग की वर्धमान संश्लिष्टताओं के कारण यह आवश्यक हो जाता है कि हिन्दी को संश्लिष्ट तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली से संपुष्ट किया जाए। इसलिए यह हमारे लिए गौरव की बात है कि दक्षिण के एक विद्वान इस शब्दावली आयोग के अध्यक्ष पद के लिए चुने गए हैं। निश्चय ही दक्षिण की सबसे अधिक समृद्ध भाषा तमिल बोलनेवाले एक विद्वान ही इस पद के लिए सर्वथा सुयोग्य हैं। क्यों कि यह आवश्यक नहीं है कि तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्र में प्रयुक्त संश्लिष्ट शब्दावली केवल संस्कृत या हिन्दी की ही हो जैसे कि अब तक होता रहा है। विविध भारतीय भाषाओं से सर्वश्रेष्ठ शब्दावली का चुनाव किया जा सकता है। इन भाषाओं में निकटतर संबन्ध है यद्यपि हम इससे भली-भांति अवगत नहीं हैं।

भारत जैसे अन्य विशाल देशों के सामने जहाँ की जनसंख्या भी अधिक है— देशीय एकता की या आम भाषा के प्रचार की कोई गम्भीर समस्या नहीं है। पश्चिम के अतिविकसित संश्लिष्ट समाजों में अमेरिका, रूस या चीन में, जिन में अपनी अपनी देशीय बोलियों के होते हुए भी, एक आम भाषा के व्यापक व समादेशक प्रचार की सुविधा उपलब्ध है ऐसी कोई समस्या नहीं है। यहाँ की स्थिति इससे भिन्न है।

हिन्दी का प्रचार विशेषकर प्रौद्योगिक तकनीकी और वैज्ञानिक क्षेत्रों में सहज रूप से शीघ्रतापूर्वक नहीं हो सकता किन्तु जहाँ आवश्यक हो, पश्चिमी और दक्षिण पूर्व एशियाई शब्दों को उधार लेकर धीरे धीरे इस क्षेत्र में हम प्रगति कर सकते हैं, और इस दिशा में हमें भरसक प्रयत्न करना है।

हर देश ने अपने ढंग से भाषा समस्या को सुलझाया है। जब मुस्तफा कमालपाशा ने टर्की को इस्लामी देशों की मध्यकालीन अव्यवस्था से उभारना चाहा तब उन्होंने सोचा कि लैटिन वर्णमाला और रोमन अंक स्वीकार करना सुविधाजनक होगा। जब इन्डोनेशिया में देशीय एकता की समस्या अतिगंभीर हो गयी तब अधिकारियों ने राष्ट्रभाषा के लिए एक अस्फुट मलायी बोली को स्वीकार किया और व्यापक प्रचार आदि से एक यथार्थ इन्डोनेशियन भाषा में विकसित करने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफलता पायी। जापान या चीन जैसे देशों में यह समस्या ही नहीं उठती। यह धारणा है कि अति संश्लिष्ट तकनीकी और वैज्ञानिक विषयों का अध्यापन केवल अंग्रेजी या फ्रेंच भाषा के माध्यम से ही हो सकता है। रूस और चीन भी अति विकसित समाज हैं। जापान चीन से भी अधिक विकसित है। यद्यपि ये अति-विकसित प्रौद्योगिक समाज कतिपय विशेष प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का उपयोग करते हैं तो भी अपनी अंग्रेजीतर भाषाओं से ही अपना निर्वाह कर लेते हैं। कोई कारण नहीं है कि आज भारत में—जो कि प्रौद्योगिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में शीघ्रता से विकास पा रहा है—वैज्ञानिक व प्रौद्योगिक क्षेत्रों में समादेशक भाषा का अपना स्थान अंग्रेजी धीरे धीरे हिन्दी को न दे यद्यपि आरंभ में कुछ क्षेत्रों में अंग्रेजी भी का उपयोग साथ साथ किया जाना होगा।

आज, जब कि ऐसी एक आम धारणा फैली हुई है कि दक्षिण के लोग न राष्ट्र-भाषा सीखना चाहते हैं न इस भाषा के प्रयोग प्रचार से संबंधित उत्तरदायी पदों का भार वे ठीक ठीक संभाल नहीं पायेंगे, हमारे लिए यह अत्यन्त गौरवप्रद बात है कि हमारे बीच से एक विद्वान इस संश्लिष्ट कार्य का नेतृत्व करने के लिए चुने गये हैं। इसलिए डा० मलिक मुहम्मद के अभिनन्दनार्थ आयोजित इस सम्मेलन का उद्घाटन करने में मुझे बडा हर्ष हो रहा है। केरल विश्वविद्यालय की ओर से और यहाँ उपस्थित सभी विद्वानों की ओर से मैं डा० मलिक मुहम्मद को उच्च स्थान लब्धि के उपलक्ष्य में अभिनन्दित करता हूँ।

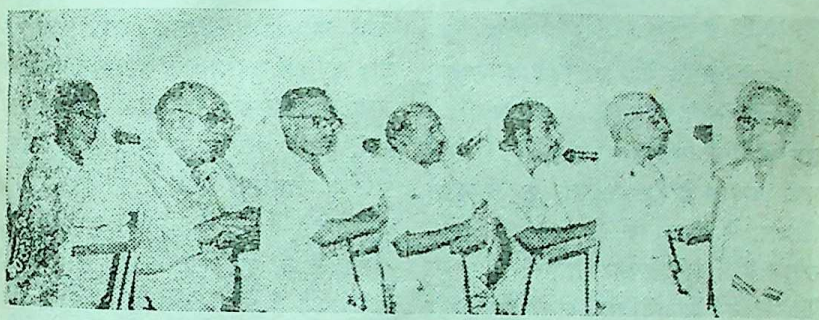

अभिनन्दन भाषण दे रहे हैं—(बायें से) के. पी. अलिक्कुञ्ञु, डा० एन. पी. पिल्लै, प्रो० सी. जी. राजगोपाल, प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर, डा० मुहम्मदकुंजु मेत्तर, महाकवि एम. पी. अप्पन और श्री० पी. एन. पणिक्कर

डा० पी. के. नारायण पिल्लै

इस सम्मेलन में उपस्थित रह कर मैं बडे हर्ष का अनुभव करता हूँ। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा पंडित का अभिनन्दन आत्मा को ही आनन्दित करनेवाला है। डा० मलिक मुहम्मद की प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख श्री० वेलायुधन नायर ने अपने स्वागत भाषण में किया है। डा० मलिक मुहम्मद जिन दो महान पदों का कार्यभार वहन कर रहे हैं उन से ही हम समझ सकते हैं कि वे पंडितों में समादरणीय स्थान पा चुके हैं। भाषा को एक व्यसन बना कर उस के द्वारा देश सेवा करने का जो कर्म पथ डा० मलिक मुहम्मद ने अपनाया है वह अत्यंत श्लाघनीय है।

हमारे स्वतंत्र देश का विकास स्वतंत्र मार्गों से किया जाना है। कई मार्गों से हमारा ऐसा विकास हो रहा है। मेरा पूर्ण विश्वास है कि भारत के बहुमुखी विकास में वैज्ञानिक विकास का प्रमुख स्थान है। हमें अपना साहित्य है, कला है, जीवन के विविध क्षेत्रों की अन्य उपलब्धियों प्राप्त हैं। लेकिन सब से प्रमुख आवश्यकता भारत में विज्ञान को विकसित करने की है। बिना वैज्ञानिक प्रगति पाये हम दुनियाँ के अतिशक्तिशाली और अतिविकसित देशों के समशीर्ष नहीं हो सकते। केवल अनुवाद करने से या दूसरों के चिंतन से उधार लेने से यह कार्य सिद्ध नहीं होगा। स्वतंत्र रूप से भारत में विज्ञान का विकास हो। विज्ञान के विकास केलिए यह आवश्यक है कि यहाँ स्वतंत्र चिंतन करनेवाले वैज्ञानिक और अध्यापक हों। स्वतंत्र चिंतन तो ऐसी भाषा द्वारा ही संभव है जिस में चिंतन करनेवाले का पूरा अधिकार हो। पर भाषा का उपयोग करते समय अक्सर शब्दों और वाक्यों की शुद्धि पर सन्देह हुआ करता है जो चिंतन में बाधा डालता है। भारत ने एक पारिभाषिक शब्दावली अपनायी है। जब हम ऐसा एक कार्यक्रम बनाएँगे जिससे हमारा वैज्ञानिक अनुसन्धान इस शब्दावली को आत्मसात करके उसके आधार पर हो और उन अनुसन्धानों का परिणाम उक्त शब्दावली द्वारा भारतीय भाषाओं में प्रकाशित हो सके तभी हमारे देश में विज्ञान का स्वतन्त्र विकास होगा। इस कार्य की नींव डालने का कार्य ही डा० मलिक मुहम्मद के नेतृत्व में कार्यरत आयोग संपन्न कर रहा है। यह शब्दावली हमारे भविष्य की नींव है। हमारा भविष्य वैज्ञानिक विकास पर निर्भर है। हमारे देश में ऐसे वैज्ञानिकों का निर्माण करना है जो पूर्ण स्वतन्त्रता से चिन्तन कर सकते हैं और लिख सकते हैं। रूस जैसे देशों में कितने ही वैज्ञानिक विषयों में वहाँ के वैज्ञानिक स्वतन्त्र रचनाएं करते हैं। अब हमारे देश में इधर उधर से कुछ वैज्ञानिक ग्रन्थों के अनुवाद हो रहे हैं। अब हमने ऐसी शब्दावली की नींव डाली है जिसके आधार पर हम स्वतन्त्रता पूर्वक अपनी ही वैज्ञानिक संस्कृति के बल पर वैज्ञानिक विकास कर सकते हैं। इस क्षेत्र में हो रहे कार्य का सारथ्य संभालकर हमारे विद्वान मित्र डा० मलिक मुहम्मद अत्यन्त महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं।

केरल ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें एक सामान्य लिपि की आवश्यकता है। भावात्मक एकता और राष्ट्रीय एकता केलिए यह अत्यन्त अपेक्षित है। देवनागरी लिपि दुनिया की लिपियों में अत्यधिक वैज्ञानिक है। प्रचार की दृष्टि से भी इसका स्थान प्रमुख है। मैं चाहता हूँ कि भारत की सामान्य लिपि के रूप में देवनागरी स्वीकृत हो। यह बडे सन्तोष की बात है कि हमारे मित्र डा० मलिक मुहम्मद भारतीय नागरी लिपि परिषद् के अध्यक्ष रहकर इस दिशा में महत्वपूर्ण सेवा कर रहे हैं। अपने स्थिरोत्साह और कठिन प्रयत्न से डा० मलिक मुहम्मद अपने जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति प्राप्त करते रहे हैं।

सचमुच केरल हिन्दी प्रचार सभा ही एक ऐसी संस्था है जो डा० मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन करने केलिए सर्वप्रकारेण अधिकारिणी है। भारत की भाषा नीति के संबन्ध में इस महान संस्था का आदर्श अत्यन्त आदरणीय है। इस संस्था की मान्यता है कि मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा ज्ञान विज्ञान की भाषा अंग्रेजी ये तीनों हमारेलिए आवश्यक है और इनमें एक-एक को यथार्ह स्थान दिया जाना है।

भाषा के क्या प्रयोजन हैं? भाषा के द्वारा हम ज्ञान विज्ञान अर्जित करना है, प्रकाश प्राप्त करना है। अंधकारपूर्ण संसार को भाषा ही प्रकाशपूर्ण बनाती है। यदि भाषा नहीं हुई होती तो यह संसार अंधकारपूर्ण ही बना रहता। यहाँ कोई है तो भाषा का ही है।

भाषा ही हृदय की आत्मा को द्योतित कर सकती है। आत्मा को प्रकाशित करनेवाले एक माध्यम के रूप में ही हम भाषा को प्रमुखता प्रदान करते हैं। आत्मा के वैज्ञानिक और भावात्मक अंशों को द्योतित करती है। जिस तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली का हम निर्माण कर रहे हैं वह हमारे देश में विज्ञान का आलोक फैलायेगी। गुणात्मक और परिमाणात्मक दृष्टि से शब्दावली निर्माण का यह कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। देशसेवा की भावना से प्रेरित हो कर आदरणीय डा० मलिक मुहम्मद ने यह कार्यभार ले लिया है इसकेलिए मैं उन का पुनः पुनः हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

पी. एन. पणिक्कर

महद् व्यक्तियों का आदर करने केलिए जो अवसर मिलता है उसे मैं जीवन का बडा सौभाग्य मानता हूँ। भारत की एक वीर संतान डा० मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन करने का जो अवसर आज मुझे मिला है उसे मैं अपने जीवन का एक परम सुन्दर मुहूर्त मानता हूँ। डा० मलिक मुहम्मद एक सामान्य लिपि के प्रचार केलिए कार्य कर रहे हैं। आज भारत में एक सामान्य लिपि की बहुत बडी आवश्यकता है। हम विश्वास करें कि इस लक्ष्य की सिद्धि में डा० मलिक मुहम्मद की प्रेरणा अत्यंत सहायक होगी। हमारे देश में जहाँ अधिकांश लोग आलसी और पतित हैं डा० मलिक मुहम्मद जैसे कर्मठ व्यक्ति विरले ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलते हैं। हमारा नारा है 'पढो और बढो।' इस का एक उत्तम निदर्शन है डा० मलिक मुहम्मद। इस आशा और विश्वास के साथ मैं उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ कि उनकी उत्तरोत्तर प्रगति होती जायेगी जिस पर हम अधिकाधिक गर्व कर सकेंगे।

डा० एन. पी. पिल्लै

मैं डा० मलिक मुहम्मद को वर्षों से जानता हूँ। हम दोनों का जन्म दक्षिणी तिरुवितांकूर में तिरुवितांकोड में हुआ। जब डा० मलिक मुहम्मद से मेरा पहला परिचय हुआ तब वे काचिन विश्व-विद्यालय में प्राध्यापक थे। फिर जब मैं राज्य शिक्षा सलाहकार समिति का अध्यक्ष रहा तब डा० मलिक मुहम्मद उस समिति के सदस्य रहे। उन के संबंध में जो कुछ यहाँ बताया गया है उससे मैं पूर्णतः सहमत हूँ।

जिस आयोग के डा० मलिक मुहम्मद अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं उस में सन् १९६३ से १९६८ तक मैं भी एक सदस्य था। उस समय मैं उस आयोग के कार्यों के महत्व को भलीभांति समझ सका। अच्छे नेतृत्वगुणवाले व्यक्ति दुर्लभ हैं। इस आयोग में विविध भाषाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाले विद्वान और लेखक आते हैं। इन में अकसर इस बात पर विवाद होता है कि उनकी भाषाओं के शब्द हिन्दी के समानार्थक शब्दों से मेल नहीं खाते। इस विवाद के उपरान्त सभी भाषा भाषियों के लिए समान रूप से स्वीकार्य शब्दों को ग्रहण करने में आयोग के अध्यक्ष को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। आदर और स्नेह के सहारे ही यह कार्य सिद्ध किया जा सकता है। जो डा० मलिक मुहम्मद से परिचित हैं उन्हें यह विश्वास है कि ऐसे कार्यों में वे पूर्णरूप से सफल होंगे। सब प्रकार की मंगल कामनाओं के साथ मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

डा० धर्मवीर

इस बात की मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई कि केन्द्र सरकार के शिक्षा तथा संस्कृति मंत्रालय के तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली आयोग के अध्यक्ष हमारे इस केरल से डा० मलिक मुहम्मद चुने गये हैं। जैसे इस आयोग की बात आ जाती है तो वैज्ञानिक और तकनीकी दोनों शब्दों पर ही जोर अधिक आ जाता है। हिन्दी पर जो ज़ोर पड़ती है वह सब से ज्यादा इसी बात पर पड़ती है।

दूसरी दृष्टि से हिन्दी के संबंध में यह मान लिया जाता है, या मनवाया जा रहा है कि हिन्दी समृद्ध भाषा है। जहाँ तक प्रशासनिक भाषा की बात है, सारे उत्तर भारत का प्रशासनिक कार्य हिन्दी में ही हो रहा है। मैं तो यह नहीं मानता कि हिन्दी किसी भी दृष्टि से कमजोर है, वैज्ञानिक दृष्टि से भी।

हाल ही में मैं दिल्ली में अखिल भारतीय आरोग्य विज्ञान संस्थान कैन्टीन में बैठा था। वहाँ दो मेडिकल छात्र खाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय आपस में बातें कर रहे थे । एक पूछ रहा था—आप का भाई अमेरिका में सेटिल होना है या कैनडा में ? उनकी समस्या यह नही कि हिन्दी में दक्षता है कि नहीं । जो वेतन है हमारा, जो सुविधायें हैं हमारी, वैज्ञानिक के नाते, वे विदेश में जितनी अधिक हैं उतनी यहाँ नहीं ।

मैं ने तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली के दो प्रकाशित खंड देखे है । कुछ लोगों की यह मान्यता है कि जब पुस्तक अच्छे आकार में छपती है तभी मानी जाती है । मैंने जो दो खंड देखे हैं वे सस्ते कागज में हैं और मुद्रण भी चमकदार नही है । इस दृष्टि से मैं तो यह प्रार्थना करूँगा कि इस ओर भी आयोग के अध्यक्ष का ध्यान रहे कि इन शब्दावलियों के कुछ चमकदार संस्करण भी निकाले जाये । क्यों कि मैंने कई लोगों को यह कहते सुना है हिन्दी में अब तक कोई ऐसी पुस्तक नहीं निकली है जो अंग्रेजी की पुस्तकों का मुकाबला कर सके । उन का मतलब है देखने में । लोग देखते हैं कि पुस्तक का कैसा आकार है । कैसी छपाई है । वे यह नहीं देखते कि पुस्तक के अन्दर क्या है ? आकार और छपाई का बडा प्रभाव पडता है । अभी एक पुस्तक आयी है, आचार्य क्षेमचन्द सुमन जी की, दिवंगत हिन्दी सेवियों पर । बहुत ही अच्छा काग़ज़ है, और तीन सौ रुपया जब एक पुस्तक का दाम रखा है तो लोग मानने लगे हैं कि हिन्दी में भी कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जो कि अंग्रेजी की पुस्तकों का मुकाबला कर सकती हैं ।

डा० मलिक मुहम्मद की अध्यक्षता में इन शब्दावलियों का प्रसार तो बढेगा ही । मैं प्रार्थना करूँगा छपाई, मुद्रण और जिल्द भी और अच्छी ढंग से हो जाये ।

डा० मुहम्मदकुंजु मेत्तर

यह बडे गौरव की बात है कि अपने गुरुवर की पदोन्नति के अवसर पर उनके अभिनन्दन केलिए आयोजित इस सम्मेलन में बोलने का मुझे अवसर मिल रहा है । डा० मलिक मुहम्मद जी को इस पद केलिए चुन कर भारत सरकार ने निस्संदेह एक अनुयोज्य व्यक्ति को ही नियुक्त किया है ।

डा० मलिक मुहम्मद जी से मेरा संबंध गत पन्द्रह वर्षों से रहा है । जब वे कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष थे तब एक सेमिनार में भाग लेने के लिये मैं वहाँ गया था । बातों के सिलसिले में आपने मुझसे पूछा था कि बडे छोटे हो, अभी अभी कालेज में नियुक्त हुए हो, क्या शोध करने की इच्छा है ? तभी उन्होंने हिन्दी के एक उपेक्षित क्षेत्र 'दखिनी हिन्दी' की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया और कहा कि उसमें जो बातें मिल रही हैं वह नागरी लिपि में नहीं मिल रही है । वह तो अरबी फारसी लिपि में मिलती है । उन्होंने इस तरह मेरी इच्छा जागृत की थी और उस उपेक्षित साहित्य की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। और जैसे मैं शोध करता गया मैं ने पाया कि हज़ारों की तादाद में उस भाषा में साहित्यिक ग्रन्थ मिलते हैं। लेकिन हिन्दीवालों ने उसकी उपेक्षा की है। और आपने मुझे यह सुझाव भी दिया था कि इस कार्य के लिए यह भी ज़रूरी है कि अरबी और फारसी लिपि का भी सही ज्ञान प्राप्त करें। और आप ने इस में मेरी मदद की। तभी मैं ने जान लिया कि आप केवल नागरी लिपि ही नहीं जानते हैं बल्कि आप अरबी, फ़ारसी, उर्दू आदि देशी और विदेशी भाषाओं के भी अच्छे ज्ञाता हैं। उनके निदेशन में मैं चार पाँच वर्षों के अन्तर्गत अपना शोध समाप्त कर सका। कालिकट विश्वविद्यालय से मैं अपनी डिग्री भी पा सका।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष ऐसे व्यक्ति हो जो कई भाषाओं के ज्ञाता हों। निश्चय ही एक सुयोग्य व्यक्ति की नियुक्ति ही हुई है। डा० मलिक मुहम्मद जी भाषा के कार्यों में ही नहीं, सभी कार्यों में बडी लगन और अध्यवसाय के साथ बडी दिलचस्पी लेते हैं और उनका जीवन ही उसी का निदर्शन है। हम जैसे विद्यार्थियों के लिए उनका जीवन ही बडा प्रेरणाप्रद रहा है। उसी का देखादेखी मेहनत करते हुए हम भी जीवन में आगे बढ सके हैं। ऐसी अनेक बातें हैं जो मैं संकोचवश बता नहीं रहा हूँ। ऐसा कौन सा शिष्य होगा जिसको अपने गुरु की उन्नति पर आनन्द का अनुभव नहीं होगा।

मैं अपने गुरुवर को हार्दिक बधाइयाँ देता हूँ और परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी उत्तरोत्तर पदोन्नति होती रहे।

एस. वी कुक्किल्लाया

बडे हर्ष और गौरव के साथ डा० मलिक मुहम्मद का मैं अभिनन्दन करता हूँ। हर्ष इसलिए कि गत कई वर्षों से उनके हिन्दी प्रचार कार्यों से परिचित रहा हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से डा० मलिक मुहम्मद से परिचित हूँ। वे हमारेलिए एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक रहे हैं। हमें उच्च लक्ष्यों की सिद्धि के लिए वे सदा प्रेरणा और प्रोत्साहन देते रहे हैं। गौरव इसलिए कि दक्षिण के एक प्रमुख हिन्दी विद्वान इस उच्च पद पर नियुक्त हो गये हैं।

एक घटना मुझे याद आ रही है। मैं ने उत्तर भारत के एक प्रमुख हिन्दी लेखक से पूछा था आप दक्षिण के हिन्दी विद्वानों को भी हिन्दी में मौलिक रचनायें करने के लिए क्यों प्रोत्साहित नहीं करते? यहाँ तो कई कई ऐसे हिन्दी विद्वान हैं जो हिन्दी में एम. ए. और पी. एच. डी. कर चुके हैं और हिन्दी की परीक्षाओं में हिन्दी भाषियों से भी आगे आ जाते हैं। तब उस विद्वान लेखक ने बडे शांत भाव से कहा —"हम लिखेंगे, आप पढेंगे।" मैं ने उनसे ऐसे बात की प्रतीक्षा नहीं की थी। मैं बहुत निराश हो गया। मेरी प्रतीक्षा थी उनका दृष्टिकोण गंगाजी के समान विस्तृत और पवित्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। आज दक्षिण के एक हिन्दी विद्वान ऐसे एक उच्च पद पर नियुक्त हो गये हैं, जहाँ रहकर उन्हें हिन्दी को एक विशेष दिशा में पोषण और प्रसार करना है। इस नियुक्ति के लिए मैं केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति मंत्रालय का भी अभिनन्दन करता हूँ। उन हिन्दी विद्वानों का भी मैं भी अभिनन्दन करता हूँ जिन्होंने हमारे मित्र दार्शनिक एवं मार्गदर्शक डा० मलिक मुहम्मद को इस उन्नत पद के लिए चुना है।

भाषा पर किसी व्यक्ति का एकाधिकार नहीं है। विद्यार्थी हिन्दी भाषी विद्यार्थियों की अपेक्षा उन्नत स्थान पाते रहे हैं। यदि हिन्दी के माध्यम से हमें देश की भावात्मक एकता को सुदृढ करना है तो दक्षिण के हिन्दी विद्वानों को अधिक संख्या में ऐसे अवसर प्रदान करने होंगे।

डा० मलिक मुहम्मद, मैं पुनः आप का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। आप एक अत्युच्च पद पर प्रतिष्ठित हो गये हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हम सबकी प्रतीक्षा के अनुरूप ही आप अपने नये उत्तरदायित्वों का पालन करेंगे। हमें इस बात का खेद हो रहा है कि हमारे एक अच्छे मित्र का प्रवास हो रहा है। जब कभी आप त्रिवेन्द्रम आयें, कृपया इस महान संस्था में पधारें। यह संस्था सभी हिन्दी प्रेमियों की है, सभी हिन्दी प्रचारकों की है, सभी हिन्दी विद्वानों की है यह एक ऐसी संस्था है जिस से सभी हिन्दी प्रेमी और कार्यकर्ता प्रेरणा प्राप्त कर सकते हैं। हम आप को आशीर्वाद देते हैं।

प्रो० सी. जी. राजगोपाल

हृदय की भाषा में मैं डा० मलिक मुहम्मद का अभिनन्दन कर चुका हूँ। औपचारिक अभिनन्दन-भाषणों में मैं विश्वास नहीं करता।

मैं जिस तिरुवनन्तपुरम यूनिवेर्सिटी कालेज का प्रतिनिधित्व करता हूँ उस की संतान है डा० मलिक मुहम्मद। हमारा प्रथम परिचय जब हुआ तब डा० मलिक मुहम्मद कालिकट विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष थे। तो भी १९५७ में ही अपने संपूज्य गुरुनाथ डा० वी. गोविन्द शेनाय के मुख से मैं ने डा० मलिक मुहम्मद की प्रशंसा सुनी थी। उन दिनों वे एम. ए. के छात्र थे। १९६४ के करीब उन से मेरी मुलाकात हुई। तब डा० शेनाय जी की बात याद आयी।

डा० मलिक मुहम्मद मुझ से अत्यधिक स्नेह करते हैं। उन की नयी स्थान लब्धि पर मुझे बडा संताप हो रहा है। एक दक्षिण भारतीय विद्वान की इस उन्नति पर हम गौरव का अनुभव करते हैं।

डा० मलिक मुहम्मद की योग्यताओं और क्षमताओं पर श्री० वेलायुधन नायर ने काफी प्रकाश डाला। डा० मलिक मुहम्मद ने कर्मों से अपनी प्रज्ञा का व्यंजित किया भी है।

उन्हें अब देखना है कि किस प्रकार मलयालम और दक्षिण की अन्यान्य भाषाओं के सहयोग से हिन्दी को समृद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है। आपने एक बहुत बडा कार्यभार अपने ऊपर ले लिया है। उस वृहदाकार सिन्धु में एक बिन्दु रहने का अवसर मुझे मिला है। आयोग द्वारा तैयार किये जा रहे त्रिभाषा शब्दकोशों में मलयालम-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोश का निर्माण मैंने ही किया। यह काम करते समय मैं अनुभव कर सका कि आयोग का कार्य कितना महत्वपूर्ण है। कितने ही शब्दकोश और शब्दावलियाँ आयोग द्वारा तय्यार की जा रही है।

डा० मलिक मुहम्मद ने इतना महान कार्य अपने ऊपर ले लिया है। निश्चय ही वे अपना अमिट प्रभाव इस क्षेत्र में जमायेंगे। उन का हृदय करुणा कलित है। हर प्रकार की कामनाओं के साथ मैं उनका अभिनन्दन करता हूँ।

एम. पी. अप्पन

डा० मलिक मुहम्मद की नियुक्ति ईश्वर के निर्णय से हुई है। अब तक यह धारणा थी कि केन्द्र सरकार द्वारा और उत्तर भारत द्वारा दक्षिण भारतीयों की उपेक्षा की गयी है। डा० मलिक मुहम्मद की नियुक्ति ने इस धारणा को दूर कर दिया है। सुदूर दक्षिण में स्थित तिरुवितांकोट के तमिल भाषी विद्वान डा० मलिक मुहम्मद की नियुक्ति ईश्वर ने की है। आज भी मेरी यह धारणा है कि तमिलभाषी जनता हिन्दी के अनुकूल नहीं है। तमिलनाट से ही एक बहु भाषा पंडित एवं बहुविध सिद्धियों से संपन्न एक युवसिंह को ही इस उन्नत पद पर नियुक्त करने का विचार ईश्वरेच्छा से ही हुआ है। इस संध्या के समय मैं सविनय यह भविष्यवाणी घोषित करता हूँ कि इस नियुक्ति से तमिल भाषी जनता का हिन्दी विरोध धीरे धीरे मिट जायेगा। मेरा विश्वास है कि अब दखिन के तमिलभाषी और अन्य जनता हिन्दी भाषा और साहित्य में अधिक रुचि लेने लगेंगे।

जैसे कुलपति महोदय ने बताया, वैज्ञानिक प्रगति के लिए भाषा अत्यन्त आवश्यक है। ऐसी भाषा जो जनता द्वारा स्वीकार्य हो। 'बोइलिंग पोइन्ट' केलिए केरल विश्व विद्यालय ने 'क्वथनांक' शब्द बनाया। कई लोगों ने इस की आलोचना की। शब्द शुद्ध होगा। पर सब को ऐसे शब्द स्वीकार्य हों। आशा है कि डा० मलिक के नेतृत्व में कार्यरत विद्वद्-वृन्द समस्त भारतीय भाषाओं का समन्वयन करके ऐसे शब्द चुन कर उन का प्रचार करेगा जो सब के लिए स्वीकार्य होंगे।

डा० मलिक मुहम्मद अभी युवक हैं। जैसे यहाँ कई वक्ताओं ने बताया कि वे और उन्नति करेंगे। इस बात का पूर्ण विश्वास कर सकते हैं कि वे दक्षिण और उत्तर को जोडनेवाली एक सुशक्त स्वर्ण श्रृंखला रहेंगे। पराशक्ति से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सर्वविध मंगल प्रदान करें।

प्रो० एम. के. सुकुमारन नायर

मेरेलिए यह बडे हर्ष की बात है है कि मेरे दिली दोस्त डा० मलिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्द तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दावली आयोग के अध्यक्ष नियुक्त हुए हैं ।

डा० मलिक मुहम्मद अपने हर मित्रों को हर प्रकार की सहायता पहुँचाने में सदा तैयार रहते हैं । इस केलिए मैं ही एक प्रत्यक्ष उदाहरण हूँ ।

यद्यपि डा० मलिक मुहम्मद तमिल भाषी माने जाते हैं तो भी उनका मुख्य कर्मक्षेत्र केरल ही रहा । मैं उन्हें एक केरलीय ही मानता हूँ । स्वतंत्रता के उदयकाल में केरल के अनेक महारथों ने दिल्ली में अपनी पांचजन्य ध्वनि बुलन्द की है । वी. के. कृष्णमेनन, के. पी. एस. मेनन, सरदार के. एम. पणिक्कर आदि । मेरा उत्तम विश्वास है कि उन्हीं की परंपरा में कर्मवीर एवं कर्मधीर डा० मलिक मुहम्मद दिल्ली में ही नहीं, शब्दावली आयोग के अध्यक्ष की हैसियत से विश्व भर में विख्यात हो जायेंगे ।

अपने हृदय के अभिनन्दन कुसुम उन्हें अर्पित करता हूँ ।

के. पी. अलिकुंजु

डा० मलिक मुहम्मद केरल हिन्दी प्रचार सभा के निकटतम बन्धु हैं । वे सदा अपने उपदेशों से सभा का स्नेहपूर्वक लालन पालन करते रहे हैं । अपने अनुग्रह से वे सभा का पोषण करते रहे हैं । उन्हें उन्नत पद प्राप्त हुआ है यह हमारेलिए बडे सन्तोष की बात है । इस अवसर पर हमारे हृदय में अभिनन्दन की जो भावना भरी हुई है उस का एक अंश यहाँ अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करूँगा ।

मलिक मुहम्मद से जब से मेरा परिचय हुआ तब से मैं उन्हें एक हिन्दी प्रेमी के रूप में ही नहीं देश की भावात्मक एकता केलिए दृढ़प्रतिज्ञा और प्रयत्नशील एक उन्नत व्यक्ति के रूप में देखता रहा हूँ । लगता है कि उनकी पृष्ठभूमि ही ऐसी थी कि उन का व्यक्तित्व सहज रूप से इस प्रकार विकसित हो पाया । 'तिरुवितांकोड' तमिलनाड का भाग है । चूँकि तमिलनाड में विरोधी भावना व्यापी हुई है इसलिए 'तिरुवितांकोड' शब्द सुनते ही हमारे मन में यही विचार आता है कि वहाँ जन्मे डा० मलिक मुहम्मद भी हिन्दी का विरोध करते होंगे । बात ऐसी नहीं । छुटपनं से ही तिरुवितांकोड से मेरा संपर्क रहा है । वहाँ के गुरुजन तमिल ग्रन्थों का पारायण करते हैं । वहाँ धर्म के नाम पर कोई भेदभाव नहीं । वहाँ के बुजुर्गों में सभी धर्मों के ग्रंथ पढने समझने और उन के तत्वों पर चर्चा करने की एक विशेष प्रवृत्ति रही है । उस प्रवृत्ति ने डा० मलिक मुहम्मद के चरित्र गठन में अद्भुत योग दिया है ।

डा० मलिक मुहम्मद ने हिन्दी कृष्ण काव्य पर शोध करके पी. एच. डी. की उपाधि पायी है । डी. लिट. की उपाधि आपने वैष्णवभक्ति आन्दोलन पर शोध करके पायी । यद्यपि वे जन्म से मुसलमान हैं और इस्लाम धर्म में दीक्षित हुए हैं तो भी लगता है कि अन्य धर्मों के अध्ययन करने की उनकी अभीप्सा अभी शमित नहीं हुई है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पता लगा कि देश की भावात्मक एकता में सूफी संतों की देन पर आप संप्रति शोध प्रबंध तैयार कर रहे हैं। समय की मांग यही है कि हर धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन हो। धर्म एक ऐसी चीज़ है जिसका अल्पज्ञान खतरनाक हुआ करता है। धर्म की गहराई में पैठने से ऐसा कोई खतरा नहीं होता।

हाल ही में श्री० ए. पी उदयभानु का एक लेख निकला। कहीं हिन्दु मुस्लीम दंगा हुआ। मुसलमानों ने 'अल्लाहु अकबर' का नारा लगाया। हिन्दुओं ने जय जय महादेव का नारा बुलंद किया। दोनों नारे समानार्थक हैं। ज्ञानी इस तत्व को समझ सकते हैं। इस्लाम के सूफी दर्शन में और हिन्दुओं के उच्च दार्शनिक तत्वों में समानता के कई तत्व खोजने पर मिल सकते हैं।

बुद्धिजीवियों में हृदयैक्य स्थापित करके तद्वारा देश की भावात्मक एकता की नींव सुदृढ़ करने के महान यज्ञ में लगे हुए हैं डा० मलिक मुहम्मद। मैं डा० मलिक मुहम्मद का सादर अभिनन्दन करता हूँ।

डा० के पद्मावती

बीस वर्ष पूर्व जब मैं ने हिन्दी अध्यापन आरंभ किया तब कई मित्र मुझ से पूछा करते थे—"क्या हिन्दी भी कोई भाषा है?" उस समय उन से यह प्रति प्रश्न पूछने का साहस मुझ में नहीं था कि वे भाषा से क्या समझते हैं। क्यों कि उस समय हिन्दी का साहित्य उतना संपुष्ट नहीं था। हिन्दी का इतिहास ह्रस्वकाल का ही था। आज वह स्थिति नहीं रही। हिन्दी के प्रतिभावान कवियों, उपन्यासकारों और कहानीकारों ने यह प्रमाणित किया है कि हिन्दी इतर भारतीय भाषाओं के धरातल से काफी ऊँचाई पा चुकी है और आज किसी भी क्षेत्र में वह अन्य विश्वभाषाओं के समशीर्ष है।

पर एक प्रश्न अभी शेष है। तकनीकी क्षेत्र में हमारी शब्दावली कितनी संपुष्ट है? यह बडे गौरव की बात है कि इस समस्या को सुलझाने केलिए हमारे बीच से एक विद्वान चुने गये हैं। डा० मलिक मुहम्मद का दायित्व अत्यंत गंभीर है। उन्हें सभी भारतीय भाषाओं के बीच की कडी का कार्य निबाहना होगा। उन का यह बडा कर्तव्य है कि वे एक ऐसी बृहत् शब्दावली को रूप दें जिस के शब्द भारत के हर एक भाषा भाषी समूह की जनता आसानी से समझ सके। इस संध्यावेला में जब कि केरल के घर घर में मातायें दीप जला कर प्रार्थना करती हैं मैं उन सभी महिलाओं के नाम पर जिन की संख्या हिन्दी क्षेत्र में पुरुषों की संख्या से अधिक है—मैं दीप जला कर डा० मलिक मुहम्मद को आशीर्वचन देता हूँ।

डॉक्टर मलिक मुहम्मद

यहाँ पर भाषा का त्रिवेणी संगम हो गया है। इसलिए अभी सोचना है कि किस भाषा में मैं बोलूं? मुझे बडी प्रसन्नता होगी यदि हिन्दी में भाषण करूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

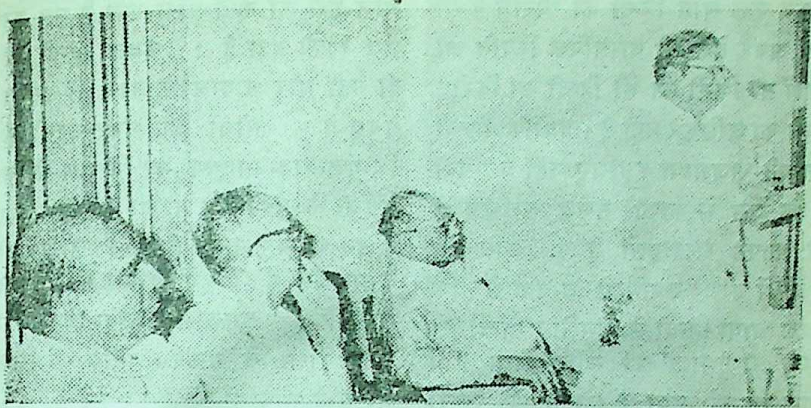

जवाबी भाषण दे रहे हैं डा० मलिक मुहम्मद ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मान्यवर कुलपति महोदय और श्रद्धेय डाक्टर एन. पी. पिल्लै, बन्धुवर, माननीय बहनो

मैं समझ नहीं पाता कि आप लोगों ने मेरे प्रति जो सद्भावना व्यक्त की है, उसके लिए किन शब्दों में मैं उत्तर दूँ ।

मेरे गुरु तुल्य बुजुर्ग सज्जन यहाँ पर विराजमान है । उनके सामने मुझे शब्दों की कमी महसूस हो रही है कि किन शब्दों में उनकी श्रद्धा, भावना और सद्भावना का मैं आभार व्यक्त करूँ । यहाँ पर जिन लोगों ने मेरे संबन्ध में बहुत ही उदारतापूर्ण शब्दों का प्रयोग किया है, उनके प्रति हृदय से मैं आभारी हूँ । अभी मुझे एक नये क्षेत्र में काम करने के लिए मौका मिला है । जैसे मित्रों ने कहा, इसके पहले हिन्दी साहित्य की सेवा में मैं हमेशा केलिए रत रहा । कुछ हद तक नागरी लिपि के प्रचार में भी मैंने सेवा की है । जैसे कि कुछ मित्रों ने कहा है, मेरी मान्यता है कि यदि भारतीय भाषाओं के लिए अपनी-अपनी लिपि के अतिरिक्त एक अतिरिक्त लिपि के रूप में नागरी का प्रयोग हो तो भाषाओं के निकट आने में बडी सुविधा रहेगी । हिन्दी ऐसी एक भाषा है जिस पर सबको गौरव करने का अधिकार है । हिन्दी केवल हिन्दी भाषियों की भाषा नहीं है । आज हिन्दी को जो स्थान मिला है उसका पूरा श्रेय अहिन्दी भाषियों को है ।

गाँधीजी ने हिन्दी का नारा लगाया । गाँधीजी गुजराती भाषी व्यक्ति थे । गाँधीजी ने देखा कि इस देश की जनता को एकता के सूत्र में बाँधने की अगर किसी भाषा में ताकत है, बल है, तो केवल हिन्दी में है । इसलिए उन्होंने हिन्दी का अध्ययन किया और राष्ट्र के रचनात्मक कार्यों में हिन्दी को स्थान दिया । इस तरह हिन्दी का प्रचार-प्रसार हुआ । हिन्दी का विरोध किसी ने पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं किया। आज राजनैतिक दबाव में आकर कुछ लोग हिन्दी का विरोध करते हैं। अगर देश की वास्तविक स्थिति को समझें तो किसी को भी हिन्दी का विरोध करने का अधिकर नहीं है। क्योंकि हिन्दी देश की राजभाषा इसलिए नहीं बन गयी है कि उस में काफी समृद्ध साहित्य है या काफी शब्दावली है। अधिकांश क्षेत्रों में बोली व समझी जानेवाली एक सरल भाषा हिन्दी है, इसलिए हिन्दी को हमने राष्ट्रभाषा का स्थान दिया है। आज सम्पर्क भाषा के रूप में भी हिन्दी का स्थान महत्वपूर्ण है, उसकी भूमिका है और मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी को राजभाषा की गद्दी पर बिठाने में अहिन्दी भाषी जनता का काफी योगदान रहा है। बहुत से लोग इस गलतफहमी में हैं कि हिन्दी किसी एक समाज की, एक धर्म की, या एक संप्रदाय की भाषा है या हिन्दुओं का भाषा है। लोगों को यह मालूम नहीं है कि हिन्दी का नाम ही मुसलमानों का दिया हुआ है। हिन्दी साहित्य को सूफी संतों ने जो महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह काफी विशाल है। पूरे देश में आज घूम कर देखेंगे तो हिन्दी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं पूरे देश में समझी जानेवाली और बोली जानेवाली गैर सांप्रदायिक भाषा है। इसलिए कोई यह समझे कि हिन्दी के माध्यम से किसी सम्प्रदाय का प्रचार होगा यह गलत धारणा है। इसलिए आज हम को इस दृष्टि से हिन्दी का प्रचार प्रसार करना चाहिए कि एक व्यापक जन समुदाय तक अपने भाव पहुँचाने में हिन्दी हमारी मदद करेगी आज मुझे जो कार्य सौंपा गया है उस का क्षेत्र काफी बडा है। केवल हिन्दी से ही नहीं और भाषाओं के साथ भी उसका संबंध है। लोगों की गलतफहमी है कि वैज्ञानिक साहित्य का वितरण केवल अंग्रेजी के माध्यम से ही हो सकता है। वे अब भी यह मानते हैं कि केवल अंग्रेजी के माध्यम से ही हम विज्ञान तक पहुँच सकते हैं। इसकेलिए आवश्यक है कि उच्च शिक्षा के माध्यम बनाने के लिए भारतीय भाषाओं को समृद्ध करें।

हमारा राष्ट्र ३६ वर्ष के पहले स्वतंत्र हो चुका है। आज़ादी के छत्तीस वर्ष बाद अभी यह शर्म की बात है कि हम अंग्रेजी पर निर्भर हैं। भारतीय संविधान में उन्नत शिक्षा के माध्यम के रूप में भारतीय भाषाओं को स्वीकृत करने का प्रस्ताव पारित हो गया है। संविधान में बताया गया है हिन्दी और इतर भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए उन्हें समृद्ध करने की आवश्यकता है। हमारा ध्यान इस तरफ पर्याप्त मात्रा में नहीं गया इसलिए आज यह शोचनीय स्थिति है। यह मानना है कि विज्ञान तक पहुँचना संमृद्ध लोगों केलिए ही संभव है। विज्ञान को सामान्य जनता में पहुँचाना किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र का कर्तव्य है। विज्ञान की जो उपलब्धियाँ हैं उनको सामान्य जनता तक पहुँचाने के लिए आवश्यक प्रयत्न हर एक स्वतंत्र राष्ट्र में होना चाहिए। चीन में देखिए, रूस में

(शेष पृष्ठ 35 पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उसने कहा था' की प्रासंगिकता

डा० मृत्युंजय उपाध्याय

श्री० चंद्रधर शर्मा गुलेरी (जन्म ७ जुलाई, १८८३, निधन १२ सितम्बर, १९२२) हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि के प्रकांड विद्वान और महान साहित्यकार निबंधकार, पत्रकार, कवि समालोचक, संपादक[1] आदि रूपों में अमर हैं। कहानी के क्षेत्र में भी इन्होंने हाथ आजमाया। तीन ही कहानियाँ 'सुखमय जीवन', 'बुद्धू का कांटा' और 'उसने कहा था' प्रकाश में आई हैं परन्तु अंतिम कहानी उसने कहा था हिन्दी साहित्य में सर्व श्रेष्ठ कहानी मानी जाती है। परिमाण का महत्व नहीं गुणवत्ता का महत्व होता है। एक ही चन्द्रमा उजियाला फैला देता है, न कि हजारों तारे। तीन ही कहानियों ने अमरता प्रदान की इन्हें और अंतिम कहानी तो मील का पत्थर बन गई।

श्री० गुलेरी जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में इस पर काफी बहसें चल रही हैं, वाद-विवाद और विचार गोष्ठियाँ हो रही हैं कि क्या वे आज भी प्रासंगिक है? क्या उनका महत्व आज के संदर्भ में भी बना हुआ है? वस्तुतः वे सभी साहित्यकार सदा प्रासंगिक रहेंगे, जिन्होंने मानव जीवन की शाश्वत समस्याओं की मार्मिकता में झाँका है। उन्होंने उनका विशद सांकेतिक विवेचन भर नहीं किया है, पर ऐसा समाधान भी दिया है, जो युग की प्रत्येक अगली लहर के आगे लहराने वाले भावबोध केलिए प्रासंगिक और समीचीन है। गुलेरी जी में ऐसा कुछ जरूर है,

> ध्यातव्य है कि यह कहानी पहली बार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "सरस्वती" में छापने से इनकार कर दिया था।

जो उन्हें चिरकाल तक प्रासंगिक ही नहीं बनाएगा, वरन् आनेवाली पीढ़ी के लिए वे सदा नवीन भी बने रहेंगे। कहानी कहानिकार की औरस संतान होती है, उसकी मौलिक सृष्टि। कहानी के द्वारा कहानीकार का मूल्यांकन आसानी से किया जा सकता है। जरा देखा जाए कि 'उसने कहा था' का मूल्य और महत्व ऐतिहासिक और कहानी कला के विकास-क्रम की दृष्टि से है या अन्य कारणों से वह आज भी प्रासंगिक है कि नहीं।

ध्यातव्य है कि यह कहानी पहली बार महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "सरस्वती" में

१. गुलेरी ग्रंथ—पहला खंड, पहला भाग, काशी-नागरी प्रचारिणी सभा, प्रथम संस्करण २००० वि, अपृ० २–३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छापने से इनकार कर दिया था। इससे कहानी की खामियों की ओर ध्यान नहीं जाता, द्विवेदीजी की प्रवृत्ति और हठवादिता की ओर जाता है। फिर वही कहानी उन्होंने १९१५ ई० की सरस्वती, भाग १६ खंड। पृ० ३१४/में प्रकाशित की[1] और वह जन-जन का कण्ठहार बन गई। कहानी विकास के दौर में काफ़ी आगे बढ़ गई है। सचेतन कहानी, समान्तर कहानी, अकहानी, जनवादी कहानी ऐसे कितने ही आंदोलन हुए लाखों कहानियाँ छपी होंगी। परन्तु 'उसने कहा था' का महत्व आज भी अक्षुण्ण है। कोई आलोचक दावा नहीं कर सकता कि इससे श्रेष्ठ कहानी छपी है।

इस कहानी की चिरयुगीनता के कई कारण हैं। प्रेम, कर्तव्य, युगबोध आदि की जितनी मार्मिक व्यंजना यहाँ हुई है, वैसी अन्यत्र दुर्लभ हैं। इस कहानी के प्रेम में मांसल अंगों की दुर्दमनीय लालसा नहीं है, कच कुच कटाक्ष की वारुणी नहीं है और न हिस्टीरिया के प्रेम जैसा उन्माद ही है। बड़ा निर्दोष प्रेम है, वहाँ सेक्स का नामोनिशान भी नहीं हैं— महज सौन्दर्य का आकर्षण है बाल सुलभ उत्सुकता है, जिसके फलस्वरूप नायक लडकी से पूछ बैठता है—तेरी कुड़माई हो गई और वह 'धत्त'' कहकर भाग खड़ी होती है और एक दिन इसी प्रश्न पर चिढ़ाने की गरज से कह देती है -- हाँ हो गई। कल, देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।[2] इससे बारह वर्ष के उस लड़के की मानसिक अवस्था कितनी अस्त व्यस्त हो जाती है। दूधवाले का दूध उलटाना, स्नान कर आई हुई ब्राह्मणी से टकराकर अंधे होने का उपाधि पाना आदि इसके परिणाम हैं। क्या आज के संदर्भ में यह विश्वसनीय हो सकता है कि वही लड़का कालांतर में उस लड़की के संकेत पर उसके पति-पुत्र की रक्षा में प्राणोत्सर्ग कर दें। प्रेम की बलिवेदी पर कर्तव्य की पुकार को अनसुना करना गुलेरी जी का अभीष्ट नहीं, वरन् प्राण न्योछावर कर भी प्रेमिका के वचन का पालन करना लक्ष्य है इस कहानी की संवेदना प्रेम और कर्तव्य का उज्जवलतम और अनन्य उदाहरण है।

मानवीयचरित्रों की अवतारणा तथा उनमें सहज व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा का अन्यतम एवं सुन्दतम उदाहरण है 'उसने कहा था।' हमारा समाज जिस मौलिकता और मूल्य संकट से गुजर रहा हैं, उसका सबसे विकट नतीजा है मानव के प्रति आस्थाहीनता। मनुष्य मनुष्य के लिए जीता है और मरता है - सारे क्रिया व्यापारों का एक ही मकसद मानवता के उत्थान आदि का दिवाला निकल गया हैं। आदमी इतना स्वार्थी आत्म केन्द्रित और सुविधा जीवी बन गया है कि "आदमी के खून से नहा रहे हैं आदमी, आदमी की लाश को चबा रहा है

१. साहित्य कोश, भाग-२ ज्ञान मंडल, वाराणसी, प्रथम संस्करण, पृ० १६५

२. कहानी नई पुरानी—सं० डॉ० रघुवीर सिंह, राजकमल प्रकाशन, १९५२ "उसने कहा था" कहानी पृ० ३७

केरल ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी।" स्वार्थ और क्षुद्र अहं के पोषण के चलते आए दिन दांपत्य संबंधों में दरार आ रही है, तलाक हो रहे हैं, परिवार बिखर रहा है। मानसिक तनावें व परेशानियों से उत्पन्न स्थितियों के शिकार हैं लोग। वहाँ महज बाल्य संग वह भी कुछ काल के लिए—कभी इस दूकान पर कभी उस दूकान पर—इतनी बड़ी कुर्बानी का कारण बन जाता है। लहनासिंह उसके कहने पर उसके पति, पुत्र की रक्षा ही नहीं करता, वरन् अमृतसर में भी जब वह महज बारह साल का था, उस लड़की की रक्षा की थी—"एक दिन तांगेवाले का घोड़ा दही वाले की दूकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दूकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था—ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है, तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ"।[1] त्याग, बलिदान और मानवता का कैसा जीवन्त दृष्टान्त!

सूबेदारनी और लहना सिंह के माध्यम से जहाँ एक ओर सच्चे प्रेम और उत्सर्ग की भावना मिलती है, वहाँ इन दोनों आदर्श प्रतीकों में यथार्थ मानवीय भावनाओं का आदि से अंत तक सुन्दरतम विकास देखने को मिलता है।[2] जो कुछ स्वाभाविक है सहज है—कृत्रिमता और बनावटीपन का कोई मुखौटा नहीं है। लहना में मानवीय व्यक्तित्व की जो उज्जवल दीप शिखा है, वह निष्कंप और निष्काम जलकर मानवता का पथ प्रशस्त कर रही है। दिशाहारा कुंठित और क्षुब्ध पीढ़ी को बार बार अगाह कर रही है—"सच्चे प्रेम के लिए बलिदान करो, तुम ऊँचे उठोगे। मानव-मानव के मध्य रागात्मक संबंध होंगे।"

कहा जाता है कि मनोवैज्ञानिक विश्लेषण स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य की महान उपलब्धि है। डॉ० देव राज, इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र कुमार[3] प्रभृति साहित्यकारों ने कहानी में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर काफी बल दिया, परन्तु यह कितने हर्ष और आश्चर्य की बात है कि प्रेमचंद युगीन गुलेरी जी १९१० ई० में भी अपनी कहानी में मनोवैज्ञानिकता के लिए पर्याप्त अवकाश और गुंजाइश दे सकते हैं। कथा के पूर्वार्द्ध को उत्तरार्द्ध के साथ महज स्मृति चित्रों के माध्यम से जोड़ना और मृत्यु के समय स्मृति की स्पष्टता का हवाला देकर अतीत की घटनाओं का फ्लैश बैक/अतीतचित्र/शैली में वर्णन जितना मनोवैज्ञानिक है, उतना ही विश्वसनीय और प्रभावक भी है। मृत्यु के समय लहना अतीत की यादों में खो जाए, इसके पूर्व कहानीकार स्थिति स्पष्ट करना नहीं भूलता—"मृत्यु के कुछ समय पहले स्मृति बहुत साफ हो

---

१. वही—पृ० ४८–४९

२. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विन्यास—डॉ० लक्ष्मी नारायण लाल, तृतीय संस्करण, १९६७, साहित्य भवन. प्रा० लि० इलाहाबाद, पृ०-६८

३. साहित्य का श्रेय और प्रेय—जैनेन्द्र कुमार-१९५३ पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा में 'उसने कहा था' परिगणनीय ही नहीं है, आधुनिक युग की मनोविज्ञान प्रधान कहानियों के विकास को गति देने में उसका योगदान भी है ।

जाती है जन्म भर की घटनाएँ एक-एक कर सामने आती हैं । सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुँध बिलकुल उन पर से हट जाती हैं"[1] । स्वप्न चल रहा है—"मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया । एक काम कहती हूँ [2] ।

इस प्रकार यह कहने में कोई आपत्ति नहीं कि मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा में 'उसने कहा था' परिगणनीय ही नहीं है, आधुनिक युग की मनोविज्ञान प्रधान कहानियों के विकास को गति देने में उसका योगदान भी है । इस दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता पर काल प्रवाह का कोई वश नहीं चलता ।

फणीश्वर नाथ रेणु के "मैला आँचल" के साथ आँचलिकता की धूम मच गई और यह प्रवृत्ति उभर कर सामने आई । उसके बाद कितने ही उपन्यास आँचलिकता को लक्ष्य बनाकर लिखे गए । आधुनिक युग की कहानियों में भी स्वाभाविकता और प्रभावात्मकता लाने के लिए पात्रानुकूल, स्थानानुकूल भाषा का प्रयोग मिलता है । कृष्णा सोबती 'जिन्दगीनामा' लिखकर अमर हो गई, पर क्या कभी इस ओर भी ध्यान दिया गया कि उस युग में श्री गुलेरी जी भी कथा प्रवाह की स्वाभाविकता और विश्वसनीयता के लिए आँचलिकता का दामन थामने वाले हैं । यदि कोई बुढ़िया बार-बार चेतावनी देने पर भी लीक से नहीं हटती तो उनकी वचनावली के नमूने द्रष्टव्य हैं—"हट जा जीजे जोगिये हट जा करमा वालिये, हट जा पुत्ता प्यारिये बच जा लंबे वालिए" ।[3] जंग में उठे सिपाहियों के मनोरंजनार्थ एक पंजाबी लोकगीत का भी विधान है—

'दिल्ली शहर में पिशोर नुँ जांदिए,

कर लेना लोंगा दा बपार मँडिए, ..

स्पष्ट है कि गुलेरी जी सभी तत्कालीन प्रवृत्तियों, भावबोधों के लिए तैयार मिलते हैं और यही कारण है कि वे बराबर नए हैं, युगीन हैं, प्रासंगिक हैं ।

उन पर एक आक्षेप है कि इस कहानी का विकास महज संयोगों से हुआ है, जो

अन्य ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाएँ

१. पुरानी हिन्दी—चंद्रधर शर्मा गुलेरी काशी नागरी प्रचारिणी सभा-२००५

२. लोक शिक्षक (जयगुरु) में प्रकाशित श्री० अरविल विनय का लेख एवं समय समय उनके द्वारा प्रकाशित परिपत्र 'गुलेरी शताब्दी कैसे मनाएँ' (केरल ज्योति) ।

३. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा प्रवाह से सहज विकास में बाधा है, परंतु देखना यह है कि इस कहानी के पीछे उनका लक्ष्य क्या है ? इनकी सृष्टि तथा निर्माण में आदर्श लक्ष्य सबसे बड़ी प्रेरणा है और अनुभूतियाँ उनमें साधन तत्व के रूप में आई हैं, प्रेरणा तत्व के रूप में नहीं। वस्तुतः लक्ष्य विहीन साहित्य से मानवता का कोई उपकार नहीं हो पाता। विराट उद्देश्य, व्यापक चित्रफलक और गढ़े हुए कथानक के लिए उन्हें संयोगों का सहारा लेना पड़ा, फिर भी विविध वर्णनों और अनुक्रमों के बीच से कार्य घटनाओं की योजना तथा इन सब के ऊपर स्मृति चित्रों के माध्यम से मानवता का पूर्ण विकास आरंभ भाग तथा व्यक्ति की मनः स्थिति का सुन्दर विश्लेषण आदि सब तत्वों को एक में अपूर्व कलात्मक ढंग से बाँधा गया है। सर्वोपरि है कहानीकार की व्यापक दृष्टि और मानवता की दुहाई, जिसके अंतर्गत कुर्बानी साधारण बात है। युग बदलता रहेगा, उसकी प्रवृत्तियाँ बदलती रहेंगी, पर प्रेम कर्तव्य सभी दिन जीवित रहेंगे---इसीलिए यह कहानी और कहानीकार भी जीवित रहेंगे, प्रासंगिक भी।

बृन्दावन, राजेन्द्र पथ,
धनबाद-८२६००१ बिहार

४. सचेतन कहानी आंदोलन संबंधी लेख डॉ० महीप सिंह

५. स्व० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (निबंध) डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी

६. हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य—अज्ञेय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा में 'उसने कहा था' परिगणनीय ही नहीं है, आधुनिक युग की मनोविज्ञान प्रधान कहानियों के विकास को गति देने में उसका योगदान भी है ।

जाती है जन्म भर की घटनाएँ एक-एक कर सामने आती हैं । सारे दृश्यों के रंग साफ होते हैं, समय की धुँध बिलकुल उन पर से हट जाती हैं"[1] । स्वप्न चल रहा है—"मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया । एक काम कहती हूँ [2] ।

इस प्रकार यह कहने में कोई आपत्ति नहीं कि मनोवैज्ञानिक कहानियों की परंपरा में 'उसने कहा था' परिगणनीय ही नहीं है, आधुनिक युग की मनोविज्ञान प्रधान कहानियों के विकास को गति देने में उसका योगदान भी है । इस दृष्टि से इसकी प्रासंगिकता पर काल प्रवाह का कोई वश नहीं चलता ।

फणीश्वर नाथ रेणु के "मैला आँचल" के साथ आँचलिकता की धूम मच गई और यह प्रवृत्ति उभर कर सामने आई । उसके बाद कितने ही उपन्यास आँचलिकता को लक्ष्य बनाकर लिखे गए । आधुनिक युग की कहानियों में भी स्वाभाविकता और प्रभावात्मकता लाने के लिए पात्रानुकूल, स्थानानुकूल भाषा का प्रयोग मिलता है । कृष्णा सोबती 'जिन्दगीनामा' लिखकर अमर हो गई, पर क्या कभी इस ओर भी ध्यान दिया गया कि उस युग में श्री गुलेरी जी भी कथा प्रवाह की स्वाभाविकता और विश्वसनीयता के लिए आँचलिकता का दामन थामने वाले हैं । यदि कोई बुढ़िया बार-बार चेतावनी देने पर भी लीक से नहीं हटती तो उनकी वचनावली के नमूने द्रष्टव्य हैं—"हट जा जीजे जोगिये हट जा करमा वालिये, हट जा पुत्ता प्यारिये बच जा लंबे वालिए" ।[3] जंग में उठे सिपाहियों के मनोरंजनार्थ एक पंजाबी लोकगीत का भी विधान है—

'दिल्ली शहर में पिशोर नूँ जांदिए,

कर लेना लोंगा दा बपार मँडिए, ..

स्पष्ट है कि गुलेरी जी सभी तत्कालीन प्रवृत्तियों, भावबोधों के लिए तैयार मिलते हैं और यही कारण है कि वे बराबर नए हैं, युगीन हैं, प्रासंगिक हैं ।

उन पर एक आक्षेप है कि इस कहानी का विकास महज संयोगों से हुआ है, जो

अन्य ग्रंथ एवं पत्र-पत्रिकाएँ

१. पुरानी हिन्दी—चंद्रधर शर्मा गुलेरी काशी नागरी प्रचारिणी सभा-२००५

२. लोक शिक्षक (जयपुर) में प्रकाशित श्री० अखिल विनय का लेख एवं समय समय उनके द्वारा प्रकाशित परिपत्र 'गुलेरी शताब्दी कैसे मनाएँ' (केरल ज्योति) ।

३. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य राम चन्द्र शुक्ल, काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा प्रवाह से सहज विकास में बाधा है, परंतु देखना यह है कि इस कहानी के पीछे उनका लक्ष्य क्या है ? इनकी सृष्टि तथा निर्माण में आदर्श लक्ष्य सबसे बड़ी प्रेरणा है और अनुभूतियाँ उनमें साधन तत्व के रूप में आई हैं, प्रेरणा तत्व के रूप में नहीं। वस्तुतः लक्ष्य विहीन साहित्य से मानवता का कोई उपकार नहीं हो पाता। विराट उद्देश्य, व्यापक चित्रफलक और गठे हुए कथानक के लिए उन्हें संयोगों का सहारा लेना पड़ा, फिर भी विविध वर्णनों और अनुक्रमों के बीच से कार्य घटनाओं की योजना तथा इन सब के ऊपर स्मृति चित्रों के माध्यम से मानवता का पूर्ण विकास आरंभ भाग तथा व्यक्ति की मनः स्थिति का सुन्दर विश्लेषण आदि सब तत्वों को एक में अपूर्व कलात्मक ढंग से बाँधा गया है। सर्वोपरि है कहानीकार की व्यापक दृष्टि और मानवता की दुहाई, जिसके अंतर्गत कुर्बानी साधारण बात है। युग बदलता रहेगा, उसकी प्रवृत्तियाँ बदलती रहेंगी, पर प्रेम कर्तव्य सभी दिन जीवित रहेंगे—इसीलिए यह कहानी और कहानीकार भी जीवित रहेंगे, प्रासंगिक भी।

बृन्दावन, राजेन्द्र पथ,
धनबाद-८२६००१ बिहार

४. सचेतन कहानी आंदोलन संबंधी लेख डॉ० महीप सिंह
५. स्व० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (निबंध) डॉ० विद्याधर शर्मा गुलेरी
६. हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य—अज्ञेय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकुर

रामकृष्ण ठाकुर

तुमने मुझे दफना दिया-
माटी की गोद में,
औ' रख दिए तन पर-
माटी के अनगिन ढेले,
समय जाते, अंकुर सा उग आया मैं-
तुमने फिर लगा दी चारों तरफ-
काँटों की पारदर्शी दीवार,
मैं चुप चुप सहता रहा,
तुम्हारे अत्याचार,
तुमने कांट-छाँटकर,
मिटा दिया मेरा स्वरूप-
मैं कटा-छटा,
औ' छितराया खूब,
लगा, जितना भी तुमने मुझे दबाया है
उतना ही उभर आया हूँ,
मैं अब ।

केन्द्रीय विद्यालय, भंडारा
महाराष्ट्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानस का मूल धर्म

डा० कुमारी आशा कपूर

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार — धर्म है ब्रह्म के सत्स्वरूप की व्यक्त प्रवृत्ति, जिसकी असीमता का आभास अखिल विश्व-स्थिति में मिलता है। इस प्रवृत्ति के दर्शन परिवार और समाज से लेकर समग्र संसार के मध्य तक किये जा सकते हैं।

इस धर्म का प्रस्फुटन एवं परिपाक संसार में कार्यरत रहते हुए हो सकता है। इसके लिये सन्यासियों की भाँति जीवन व्यतीत करने अथवा योग साधना के कष्टप्रद मार्ग पर चलने की आवश्यकता नहीं है। अपितु सामान्य जन के लिये भी यह सहज सुलभ है।

इसी तथ्य को यदि सरल शब्दावली में स्पष्ट किया जाये तो भगीरथ मिश्र के शब्दों में कह सकते हैं—समाज तथा व्यक्ति को धारण करने वाले विकासात्मक कर्त्तव्यों को धर्म कहते हैं। इस दृष्टि से धर्म का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो जाता है। मानव-धर्म शास्त्रों एवं स्मृतियों में मनुष्य, जाति एवं समाज का धर्म बताकर व्यक्ति के दैनिक जीवन की व्याख्या का प्रयत्न किया गया है।

धर्मरूपी सत्प्रवृत्ति का साक्षात्कार परिवार तथा समाज की रक्षा में, लोक के परिपालन में, समग्र-रूपेण सम्पूर्ण जगत की स्थिति में होता है। इस प्रवृत्ति का प्रत्यक्षीकरण जितने ही विस्तृत क्षेत्र में किया जाता है भगवत्स्वरूप की और उतनी ही बढ़ी हुई भावना प्राप्त होती है। परिवार के भीतर इस प्रवृत्ति का अनुभव करने पर भावना परिवार के नायक तक ही पहुँचेगी, इसी प्रकार जाति या देश के भीतर अनुभव करने पर जाति या देश के नेता तक पहुँच जायेगी, किन्तु भक्त इसके विराट रूप को प्राप्त करने के लिये उत्कंठित रहता है समग्र संसार के मध्य इस सत्प्रवृत्ति का दर्शन करना चाहता है, इस साक्षात्कार के होने पर भक्त आनन्दानुभव करता है तथा इष्ट-सान्निध्य-लाभ प्राप्त करता है।

"रामचरितमानस धर्म की सभी भूमियों का—गृह-धर्म, कुलधर्म, समाज-धर्म, लोक-धर्म, विश्व-धर्म-स्पर्श करता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इसी कारण धर्म-ग्रन्थ कहलाने का अधिकारी है। इसके मूल में उपर्युक्त विवेचित धर्म-सत्प्रवृत्ति अर्थात् कर्त्तव्य परायणता के रूपों की प्रधानता है। इस प्रकार धर्म का अर्थ हो जाता है—ब्रह्म के सत्स्वरूप को व्यक्त प्रवृत्त जिसे सरल शब्दों में कर्त्तव्य भी कह सकते हैं।

"धर्मोधारयते प्रजा"—धर्म प्रजा को धारण करता है—यह धर्म ही कर्त्तव्य है।

तुलसीदास ने मानस में कर्तव्यों की पूर्ण शृंखला प्रस्तुत की है। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं सार्वभौम कर्त्तव्यों का निरूपण हुआ है। वैयक्तिक कर्त्तव्यों से पारिवारिक कर्त्तव्य श्रेष्ठतर हैं, इस प्रकार से सार्वभौम कर्त्तव्य सर्व-श्रेष्ठ कहे जाएँगे। लक्ष्य की व्यापकता धर्म की उच्चता समझी जाती है। विश्व-धर्म या सार्वभौम धर्म अंगी है, ये सब तदंग हैं। जिसका संबंध विश्वस्थिति-रक्षा से है वह पूर्णपुरुष अथवा पुरुषोत्तम कहलाता है। 'मानस' से इसी पूर्ण-पुरुष अर्थात् पूर्ण धर्म के स्वरूप राम का चित्रण किया गया है। राम के लीला-चरित में धर्म व कर्त्तव्य के सभी रूप समाविष्ट हो गये हैं। राम का अन्तर्बाह्य समरस है। तुलसी ने उनके इस सौन्दर्य एवं तदनुरूप आचरण का चित्रण अनेक बार किया है—

विद्याविनय निपुण गुन सीला।
खेलहिलेल सकलनृप-लीला
X X X X

धरम-नीति-गुण-ग्यान-निधाना।
X X X X
सत्य-संध पालक श्रुति-सेतु।

समाज में सम्पत्ति और विपत्ति के अवसर आते ही रहते हैं। राम चित्रकूट में कैकेयी-सहित अन्य माताओं से कहते हैं—

पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी।
काल करम बिधि सिर धर खोरी।
भेटेरघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष।
अम्ब अधीन ईश जग, काहु न देइअ दोष॥

सम्पदा के संबंध में कहते हैं—

जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं।
जदपि ताहि कामना नहीं॥
तिमि सुख सम्पति बिनहि बुलाये।
धर्मशील पहं जाहि सुभाये॥

ऊपर जिस भवय-चक्र का उल्लेख है नीचे उसी के निर्माता धर्मशील की प्रशंसा है। कर्त्तव्य-पालन पुरुषार्थ का सूचक है और फल उसी पुरुषार्थ के परिणाम-रूप भाग्य का फल। समाज में सात्विक एवं कुटिल दोनों प्रकार के प्राणी हैं, यथोचित व्यवहार अपेक्षित है।

'मानस' के राम की विशेषता थी श्रुति और लोक-धर्म की मर्यादा का पालन एवं रक्षण। राम के समान अन्य कोई धर्म पालन नहीं जानता है—

नीति प्रीति परमारथ स्वारथ।
कोउ न राम सम जान यथारथ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम को लोक एवं वेद-विहित धर्म की मर्यादा के पालन में तत्पर देख मुग्ध-भाव से महामुनि उन्हें साधुवाद देते हुए कहते हैं —

कस न कउ अस रघुकुल केतू ।
तुम्ह पालक संतन्ह श्रुति-सेतू ।।

इसी लोक-धर्म एवं वेदोक्त धर्म के पालनार्थ करुणाकर होनेपर भी राम ने लंका-विजय के पश्चात् प्राप्त हुई पत्नी सीता के प्रति परुषवचन भी कहे थे।

'मानस' के राम स्वयं तो मर्यादा-धर्म का पालन करते ही हैं किन्तु जो इसका उल्लंघन करते हैं उन्हें यथोचित दंड एवं उपदेश देने से विरत नहीं होते । गौ, विप्र, और ऋषि मुनियों पर अत्याचार करने के अपराध में वे राक्षसों पर रोष प्रकट करते हुये भुजा उठाकर प्रण करते हैं कि मैं पृथ्वी को राक्षस विहीन कर दूंगा ।

"निसिचर हीन करउँ महि,
भुज उठाई प्रन कीन्ह" ।

यहाँ पर वैयक्तिक एवं पारिवारिक धर्म की अपेक्षा सामाजिक धर्म के पालन की महत्ता दिखाई पड़ती है ।

इसी समाज-धर्म का अन्यतम उदाहरण हमें तुलसी द्वारा 'मानस' में स्थापित 'राज्यादर्श' से प्राप्त होता है । राज-नीति भी एक प्रकार का धर्म है जिसमें राजा और राज्याधिकारी अथवा सचिव, अमात्य आदि विशेष प्रकार के नियमों का पालन करते हैं । यह राजधर्म हमारे देश में व्यापक धर्म का अगंमात्र रहा है । तुलसी ने जहाँ पर धर्म और समाज की आदर्श व्याख्या की है वहीं पर राज-धर्म की ओर सुन्दर संकेत किये हैं । इन संकेतों द्वारा परवशता के युग में भी उनकी विलक्षण प्रतिभा पर आश्चर्य होता है । गोस्वामीजी ने समाज को जिस रामराज्य का आदर्श प्रदान किया वह शील पर आधारित है । 'रामराज्य' समत्व का राज्य था. इस आदर्श को निरूपित करते हुये तुलसीदास लिखते हैं —

बयरु न कर काहू सन कोई ।
राम प्रताप विषमता खोई ।।

प्रत्येक समाज के लिये आदर्श अतीव उपयोगी है । तदनुरूप आचरण कर कोई भी समाज सुखी एवं सम्पन्न हो सकता है ।

उत्तरकांड की कथा-समग्री में राम का उपदेशक रूप दृष्टव्य है —

परम धरम श्रुति विदित अहिंसा ।
पर-निन्दा सम अध न गरीसा ।।
परहित सरिसा धरम नहिं भाई ।
पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

इस कांड में सन्त असन्त के लक्षण निरूपित किये गये हैं । ज्ञान दीपक का प्रसंग अतीव पाण्डित्यपूर्ण है ।

धर्म ते विरति जोग ते ज्ञाना ।
ज्ञान मोक्षप्रद वेद बखाना ।।
जाते वेगि द्रवहूँ मैं भाई ।
सो मम भगति भगत सुखदाई ।।

धर्म से वैराग्य की उत्पत्ति लिखी गई है, यह धर्म अपने-अपने कर्त्तव्यों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पालन ही है। तुलसी ने विप्र-पूजा को श्रेष्ठ माना है। इसका अर्थ है—ज्ञानी, अहंकार विहीन, प्रकाशपुंज व्यक्ति की पूजा। इस धर्म के पालन का परिणाम है वैराग्य। अतः ज्ञान और कर्त्तव्य-पालन दोनों ही धर्म अन्तर्गत आते है। इस धर्म से वैराग्य और वैराग्य से धर्म में अनुराग उत्पन्न होगा। प्रभु-धर्म है हरिलीला में अनुराग नवधा भक्ति में दृढ़ता, सन्तों से प्रेम, मन, वचन, कर्म में अविचल श्रद्धा।

भारतवर्ष धर्म-भूमि है, धारण करने वाली शक्ति भी है। बाह्य और अन्तरंग दोनों प्रकार की शक्तियों को धारण करना इसका उद्देश्य हैं। बाह्यधारणा अभ्युदय की ओर ले जाती है तो अन्त धारणा निःश्रेयस की सिद्धि की ओर निःश्रेयस की सिद्धि ही मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ है आत्मा का अन्त-बाह्यसंबंधों से छूटना। आत्मा से स्वरूप की स्थिति योगदर्शन के अनुसार चित्त-वृत्तियों के निरोध में है। यह निरोध ज्ञान और कर्म दोनों की अपेक्षा रखता है। ज्ञान और कर्म के समन्वय से आत्मा पर आच्छन्न आवरण विच्छिन्न हो जाते हैं परन्तु इस आवरण का भेद ज्ञान और कर्म के ऊपर प्रतिष्ठित भक्ति के द्वारा होती है। जीवन की पूर्णता ज्ञान, कर्म और भक्ति के समन्वय में है। यह बात अलग है कि कोई ज्ञान को प्रधानता देता है, कोई भक्ति को, तो कोई कर्म को। तुलसी ने भक्तिमार्गी होने के कारण मानस में भक्ति को प्रधानता रखी है। इस भक्ति-भावना में धर्म का योग पूर्णस्वरूपेण किया गया है। मानस में भक्ति का अन्यतम प्रशंसा किये जाने पर भी धर्म के तीनों अंगों का विस्तृत निरूपण किया गया है। अतएव मानस का निर्माण कर्मपक्ष से विरत करने के लिए नहीं, कर्त्तव्य-पारायण करने के लिए हुआ है। तुलसी पुरुषार्थ-वादी है, उनके आराध्य राम धनुर्धर हैं, जो अति कठिन परिस्थिति में भी कर्म विरत नहीं होते। पर तुलसी कोरे कर्मवाद के समर्थक नहीं है। ज्ञान-विहीन कर्म जीवन को उच्च नहीं बनाता न भक्तिविहीन कर्म से साधक सुगति का अधिकारी बनता है। ज्ञानानुकूल कर्म जब भगवान को समर्पित किया जाता है, तभी वह सार्थक बनता है।

"मानस" के नायक राम पूर्णधर्म अर्थात् सार्वभौम धर्म के श्रेष्ठ निदर्शन हैं। इस पूर्णधर्म के अतिरिक्त मानस में धर्म की विविध भूमियों के भी दर्शन होते हैं। सभी सत्पात्र सद्धर्म पालन में रत दृष्टिगत होते हैं। धर्म की विविध भूमियों से तात्पर्य है—वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सार्वभौम धर्म।

अधिकांश आलोचकों ने भरत एवं विभीषण के चरित्रों पर आक्षेप किये हैं। यदि हम धर्म की उपर्युक्त परिधि के अन्तर्गत इन चरित्रों का अवलोकन करें तो ये आक्षेप निर्मूल सिद्ध होंगे।

यह कहा जा चुका है कि मानस के नायक राम पूर्णधर्म-स्वरूप है। भरत जननी कैकेयी द्वारा वैयक्तिक धर्म के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम-वनवास का वर मांगने वाली कैकेयी पर भरत द्वारा प्रदर्शित रोष भरत के पारिवारिक धर्म की अवहेलना नहीं अपितु पूर्णधर्म-स्वरूप राम अर्थात् विश्व-धर्म के पालन के प्रति सजगता समझी जानी चाहिए।

पालन हेतु पूर्णधर्म-स्वरूप राम को वनवास भेजा जाता है। परिणामस्वरूप भरत अपनी माता के इस स्वार्थपूर्ण कृत्य से असंतुष्ट हो उन पर क्रोध करते हैं — आलोचकों ने माता के प्रति भरत के इस रोष की कटु आलोचना की है। यदि धैर्य-सहित इस स्थल पर विचार किया जाये तो इसे भरत-चरित्र का स्खलन न मानकर पूर्णधर्म का पालन समझना चाहिये। दूसरे शब्दों में यह कह सकते है कि राम वनवास का वर मांगने वाली कैकेयी पर भारत द्वारा प्रदर्शित रोष भरत के पारिवारिक धर्म की अवहेलना नहीं अपितु पूर्णधर्म-स्वरूप राम अर्थात् विश्व-धर्म के पालन के प्रति सजगता समझी जानी चाहिए। इस प्रसंग द्वारा ही गोस्वामी जी ने भरत के रामप्रेम अथवा धर्म-प्रेम का परिचय दिया है।

पूर्णधर्म का विरोध राम का विरोध करने के दुष्परिणाम सामने आ जाते हैं। राम सीता तथा लक्ष्मण का वनगमन, प्रजा का शोकार्त्त होना। चरम परिणति दशरथ मरण में होती है। अतएव आचार्य शुक्ल के शब्दों में कह सकते हैं "भरत धर्मस्वरूप भगवान रामचन्द्र के सच्चे प्रेमी और भक्त-रूप में हमारे सामने रखे गये हैं।"

सारांशतः व्यापक लक्ष्य वाले धर्म के पालनार्थ सीमित लक्ष्य वाली मर्यादा का उल्लंघन अनुचित नहीं माना जा सकता।

इसी प्रकार विभीषण की भी समालोचकों ने पर्याप्त निन्दा की है। कारण है उसने भ्रातृद्रोह अर्थात् कुलधर्म का उल्लंघन किया था तुलसीदास ने विभीषण को भक्त-रूप में प्रस्तुत किया है। विभीषण के भी प्रसंग में वही बात दोहराई जा सकती है—कुलधर्म की सीमित परिधि में न रह व्यापक लक्ष्य वाले धर्म को श्रेष्ठतर माना गया है। अतः विभीषण के भ्रातृद्रोह को दोषरूप में न ग्रहण कर उसे लोकरक्षक कहा जाना चाहिए। भाई के अत्याचार से जन-जीवन त्रस्त था। विभीषण ने पूर्ण-धर्म-स्वरूप राम से अनन्य भक्ति प्रकट कर राम का कृपापात्र होकर पीडित समाज की रक्षा की। इस स्थल पर कुल-धर्म की अपेक्षा लोकधर्म की उच्चता प्रदर्शित की गई है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि भक्त की भावना संकुचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलधर्म की सीमित परिधि में न रह व्यापक लक्ष्य-वाले धर्म को श्रेष्ठतर माना गया है। अतः विभीषण के भ्रातृद्रोह को दोषरूप में न ग्रहण कर उसे लोकरक्षक कहा जाना चाहिए।

सीमा में अबद्ध न होकर सम्पूर्ण विश्व के बीच सत् का साक्षात्कार करके ही तृप्त होती है।

गोस्वामी तुलसीदास ने मानस में सभी सत्पात्रों द्वारा धर्म की विविध श्रेणियों की मनोहर झाँकी प्रस्तुत की है। समाविष्ट धर्म-रूप सार्वभौम धर्म का स्वरूप चरितनायक राम के आदर्श एवं उज्जवल चरित्र द्वारा निरूपित किया गया है।

"मानस" के मूल धर्म से तात्पर्य है मर्यादा पालन, कर्त्तव्य-पालन। मर्यादा-पुरुषोत्तम राम को नायक-रूप में प्रस्तुत कर गोस्वामी जी ने प्रत्येक काल एवं समाज के लिए एक अप्रतिम निदर्शन संसार के सामने उपस्थित किया है। मानस का धर्म-निरूपण जिसमें उसके तीनों अंगों— ज्ञान कर्म एवं भक्ति का अपूर्व समन्वय है गोस्वामी जी की विलक्षण प्रतिभा का परिचायक है। मानस के पूर्व वाल्मीकि-रामायण में मर्यादा पुरुषोत्तम, धर्म व कर्तव्य-परायण राम के चित्रण के स्थान पर नरश्रेष्ठ का वर्णन किया गया है। जिसे तुलसी ने यद्यपि आधार वहीं से ग्रहण किया है तदपि मानस के राम पूर्ण का स्वरूप है, सार्वभौम धर्म का साक्षात उनके जीवन चरित्र में संभव है। निस्संदेह तुलसी का रामचरितमानस इस सन्दर्भ में श्रेष्ठतर एवं श्लाघनीय कृति है।

प्रवक्ता, रुड़की विश्वविद्यालय
रुड़की, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शकुन्तला

डा० कृष्णकुमार

[पूर्व प्रकाशित के आगे]

शकुन्तला के जन्म के इस वृत्तान्त को ना कर प्रियंवदा ने पुनः कहा—

आर्य! हमारी प्रिय सखी का यही तान्त है। कुलपति कण्व ने इसका लन किया है तथा उनकी यह पालिता न्या है। इसके प्रति उनका स्नेह औरस न्तान से भी अधिक है। वैसे इसको म देनेवाले तो ऋषि विश्वामित्र और नका हैं।

शकुन्तला को प्रथम दृष्टि में ही देख कर दुष्यन्त उसके प्रति आसक्त हो ये। शकुन्तला का भी कुछ कुछ यही व था। जिस समय प्रियंवदा उसके म का वृत्तान्त कह रही थी, वे दोनों पी दृष्टियाँ एक दूसरे पर डाल लेते। कभी उनकी दृष्टियाँ मिल जाती तो लजा कर और मुस्कुरा कर आँखों को ची कर लेते थे।

शकुन्तला की ये चेष्टायें दुष्यन्त के ति उसकी मनोभावनाओं की अभिव्यक्ति र रही थीं। दुष्यन्त का हृदय उसके न्मादक अप्रतिम सौन्दर्य से तो पहले ही मोहित हो चुका था, इन चेष्टाओं ने उसकी प्रणय की भावना को और भी अधिक सुलगा दिया। उस युग में निम्न वर्ण द्वारा उच्च वर्ण की, विशेष रूप से ब्राह्मण की कन्या के प्रति आसक्ति रखना अति अनुचित और विपत्ति उत्पन्न करने वाला समझा जाता था। दुष्यन्त को पहले आशङ्का थी कि वह शकुन्तला को पा सकेगा भी या नहीं। कुलपति कण्व ब्राह्मण थे और शकुन्तला के ब्राह्मण कन्या होने से वह उसको पा नहीं सकता था। परन्तु अब उसको विश्वामित्र तथा मेनका की कन्या जानकर उसके मन से भय और आशङ्का के भाव दूर हो गये। वह उसे पाने के लिये आशान्वित होने लगा। विश्वामित्र जन्म से क्षत्रिय थे। ऋषि वसिष्ठ के प्रति प्रतिद्वन्द्विता के भाव के कारण ही वे ब्राह्मणत्व को प्राप्त करने के लिये तपस्या करने लगे थे। अतः शकुन्तला क्षत्रिय कन्या ही थी जो उनके लिये प्राप्तव्य थी।

यहाँ दुष्यन्त को पुनः यह शङ्का होने लगी कि कहीं कुलपति कण्व का विचार शकुन्तला को आजन्म ब्रह्मचारिणी रखने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तो नहीं है। वे स्वयं बाल ब्रह्मचारी हैं तथा अपनी पालिता पुत्री से भी यह व्रतपालन कराना चाहते हों। उनकी पुनः प्रियंवदा से वार्ता होने लगी—

दुष्यन्त—भद्रे ! आपने अपनी सखी का जो वृत्तान्त सुनाया है, उसने हमारे हृदय में एक कुतूहल उत्पन्न कर दिया है।

प्रियंवदा—आर्य ! आप उसको भी अवश्य दूर कर लीजिये। न पूछा गया प्रश्न हृदय को दुःखाता रहता है।

दुष्यन्त—हम यह जानना चाहते हैं कि आपकी इस सखी के सम्बन्ध में कुलपति के क्या विचार है ? क्या वे इसको गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने की अनुमति देंगे अथवा वे जीवन भर यहाँ तपोवन के वृक्षों को सींचेंगी ?

प्रियंवदा—आर्य ! इस विषय में हम कन्यायें सर्वथा पराधीन हैं। तथापि कुलपति का यह विचार है कि इस शकुन्तला को अनुरूप वर के लिये प्रदान कर दिया जावे। यदि आज कुलपति यहाँ होते तो.....।

प्रियंवदा दुष्यन्त और शकुन्तला की चेष्टाओं और मनोभावों को ध्यान से लक्षित कर रही थी। उसकी इस बात को सुन कर शकुन्तला का मुख लज्जा से आरक्त हो गया। उसका हृदय आन्दोलित हो उठा। कृत्रिम क्रोध को प्रकट करती हुई वह उठ खड़ी हुई और प्रियंवदा को तिरछी दृष्टि से देखकर अनसूया से बोली—

"अनसूये ! मैं यहाँ से जा रही हूँ।"

अनसूया ने आगे बढती शकुन्तला का हाथ पकड़कर जाने से रोका और पूछा—"क्यों ?"

शकुन्तला ने उत्तर दिया—यह प्रियंवदा असम्बद्ध बातें कह रही है। मैं जाकर आर्या गौतमी से उसकी शिकायत करती हूँ।

अनसूया से हाथ छुड़ा कर जाने का प्रयत्न करती हुई शकुन्तला को रोकने के लिये दुष्यन्त का मन मचलने लगा। किसी प्रकार बड़ी कठिनाई से उसने अपने आपको नियन्त्रित किया। तभी प्रियंवदा ने थोड़ा सा उठकर शकुन्तला का दूसरा हाथ पकड़कर उसे खींचकर अपने पास बिठा लिया और बोली—

प्रियंवदा—शकुन्तले ! तुम इस प्रकार से यहाँ से नहीं जा सकती।

शकुन्तला—(भौंवें टेढी करके) क्यों ? मैं क्यों नहीं जा सकती ?

प्रियंवदा—मैं ने तुम्हारे दो वृक्ष सींचे हैं। इस ऋण को उतार कर ही तुम यहाँ से जा सकती हो।

बेचारी शकुन्तला ने हार मान कर मुख नीचा कर लिया और अंगुलियों से भूमि पर रेखायें बनाने लगी। उस समय शकुन्तला के प्रति मुग्ध दुष्यन्त ने अपनी अंगुलि से राज-नामाङ्कित अंगूठी उतारी और उसको प्रियंवदा की ओर बढ़ाते हुए कहा—

"भद्रे ! यह बेचारी आपकी सखी बहुत थक गयी है। कलश को उठाने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी हथेलियाँ लाल हो गई हैं, मुख पर पसीना भर आया है, कन्धे ढलक गये हैं और केश बिखर गये हैं। यह गहरी लम्बी सांसे ले रही है। दुर्बल शरीर वाली अपनी इस सखी को आज छोड़ दीजिए। तथापि यदि अब भी ऋण को वसूल करना चाहती हैं तो यह अंगूठी ले लीजिये और अपनी सखी को ऋण से मुक्त कर दीजिये।"

अंगूठी को देख कर तीनों सखियाँ विस्मय से भर गईं। यह तो राजकीय मुद्रा थी तथा इस पर दुष्यन्त का नाम अङ्कित था। वह उस देश का सम्राट था जिसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। वे तपस्वि-बालिकायें उसका मुख देखने लगीं। उनके मन के भावों को समझ तब दुष्यन्त ने कहा—

आप सब इस अंगूठी को देख कर मन में शङ्का न कीजिये। यह राजकीय मुद्रा राजा ने प्रसन्न होकर मुझको पारितोषिक के रूप में दी है।

यह सुनकर प्रियंवदा हँसने लगी। उसने कहा—"आर्य! यदि यह अंगूठी आपको पारितोषिक के रूप में मिली है, तो इसको अपने हाथ से अलग मत कीजिये। आपके कहने से ही मैं इसको ऋण से मुक्त कर देती हूँ। तथापि यदि आप इस अंगूठी को देना ही चाहते हैं, तो हमारी इस सखी को दे दीजिये। इसकी कोमल लम्बी सुन्दर अंगुलि में यह बहुत शोभायमान होगी।' तदनन्तर वह शकुन्तला की ओर उन्मुख होकर बोली—

"शकुन्तले! दयालु आर्य ने तुझको ऋण से मुक्त कर दिया है। यदि तू जाना चाहती है, तो जा सकती है। आर्य द्वारा दी गई इस अंगूठी को मैं ने तुझको दे दिया। तू इसको भी लेती जा।"

प्रियंवदा की बात सुनकर कृत्रिम क्रोध प्रकट करती हुई शकुन्तला उठ खड़ी हुई। वह प्रियंवदा से बोली—

"मुझको रोकनेवाली या भेजनेवाली तू कौन होती है। यदि तुझको यह अंगूठी अच्छी लगती है, तो तू ही ले ले। मैं तेरी उन असम्बद्ध बातों को सह नहीं सकती।" यह कहकर शकुन्तला वहाँ से चल पड़ी।

अभी वह कुछ ही कदम चली होगी कि 'सीं' कर के एकदम भूमि पर बैठ गई जैसे उसके पैर में कांटा चुभ गया था। वह कनखियों से राजा की ओर देखती हुई कांटा निकालने लगी। उसकी यह अवस्था देख कर प्रियंवदा और अनसूया भी वहीं पहुँच कर सहायता करने लगी।

इसी समय नदी के पार धूलि उठती हुई दिखाई दी। साथ में घोड़ों की टापों के स्वर और हिनतिनाहटें आश्रम में गूँजते सुनाई देने लगे। यह देख कर दुष्यन्त ने सोचा कि उसको खोजती हुई सेना इधर आश्रम की ओर आ गई है। कहीं ऐसा न हो कि सैनिक उसकी खोज करते हुये यहाँ आश्रम में आ जायें तथा यहाँ की शान्ति में बाधा पहुँचायें, उसने उन सैनिकों को नदी के पार ही रोक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने का निश्चय किया। वह उन तपस्वि-कन्याओं से बोला—

अब मुझ को जाना चाहिये। सायं समय होने ही वाला है। प्रतीत होता है कि मेरे साथ आये सैनिक मुझ को खोजते हुये नदी के पार आ चुके हैं। कहीं ऐसा न हो कि वे आश्रम में भी प्रवेश करें और यहाँ की शान्ति भङ्ग हो। मैं वहीं जाकर उनको रोकता हूँ। कुलपति के दर्शन करने का सौभाग्य मैं प्राप्त नहीं कर सका, इसका मुझको बहुत दुःख है। तथापि उनके दर्शनों के लिये पुनः यहाँ अवश्य आऊँगा।

यह सुन कर शकुन्तला ने उत्तर दिया —आर्य! आपका हम उचित सत्कार न कर पाने के कारण बहुत दुःखी हैं। कुलपति कण्व सम्भवतः कल प्रातःकाल तक आ जायेंगे। सूर्यास्त का समय निकट है, अतः आपका हस्तिनापुर वापिस जाना आज सम्भव नहीं है। एक रात के लिये नदी तट पर ही शिविर लगा कर विश्राम कीजिये। कल मध्याह्न के समय यदि आप आयेंगे तो कुलपति के दर्शन अवश्य कर सकेंगे। कल आश्रम में आने पर आपका यथोचित सत्कार करके हमको भी प्रसन्नता होगी।

नहीं, नहीं, ऐसा न कहिये। आपकी मधुर वाणियों से ही मेरा बहुत अधिक सत्कार हो गया है। तथापि मैं यहाँ ठहरने का प्रयत्न करूँगा। यह कह कर दुष्यन्त आश्रम से बाहर चले गये। तीनों तापस कन्यायें उनको ऐकाग्र दृष्टि से ओझल होने तक देखती रहीं।

❀

हिन्दीतर भाषा-भाषी को ऐसा कभी नहीं समझना चाहिये कि वे हिन्दीवालों से हिन्दी की प्रतियोगिता में हार जायेंगे। यदि हिन्दी के ज्ञान का सार ऊँचा रखा जायेगा तो हिन्दीवाले को उतनी ही दिक्कत होगी जितनी हिन्दीतर भाषा भाषियों को हो सकती है।

श्री० श्रीप्रकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पृष्ठ 18 से आगे)

देखिए, जापान में देखिए, वहाँ भाषा की कोई समस्या नहीं है। वहाँ विज्ञान की उन्नति और विज्ञान की प्रगति उनकी अपनी भाषा में होती है। हमारे देश में भी यह प्रयत्न हो सकता है। सारे विज्ञान की प्रगति केवल अंग्रेजी में नहीं है। फ्रेंच, रूसी जैसी भाषाओं के माध्यम से भी विज्ञान की उन्नति हो रही है। यह दावा कर केवल अंग्रेजी माध्यम से ही वैज्ञानिक साहित्य में पहुँच सकता है यह गलत धारणा है।

शब्दावलियाँ केवल एक तरह से एक माध्यम है। हमारे आयोग ने लगभग छः लाख वैज्ञानिक तकनीकी शब्दों को चुन लिया है और सभी भारतीय भाषाओं में इन छः लाख शब्दों के पर्याय भी स्वीकृत हो चुके हैं। चूँकि भारतीय भाषाओं की जो नींव ही संस्कृत है, उस संस्कृत के आधार पर वैज्ञानिक शब्दों को ढूँढने में कोई दिक्कत नहीं है।

दूसरी योजना के अन्तर्गत आजकल एक सेमिनार पान इंडियन टेर्मिनॉलजी पर संपन्न हुआ। भारतीय भाषाओं के बीच में एक समान शब्दावली को ढूँढने का प्रयत्न आज हो रहा है। उसमें हम काफी सफल हुए हैं। अधिकांश भारतीय भाषाओं में अगर एक ही शब्द प्रयुक्त होता है तो उसे पान इंडियन शब्द के रूप में स्वीकार करने को हमारी अपनी नीति है। यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा कि करीब एक लाख शब्दों को इस प्रकार से चुन लिया है। आयोग का यह कर्तव्य है कि वह इन शब्दों को प्रकाशित करे अलग-अलग भारतीय भाषाओं में उसे प्रकाशित करे और उसे मुफ्त में बाँटने का प्रयत्न करे। इस प्रयत्न से यह लाभ होगा कि सभी वैज्ञानिक साहित्य भारतीय भाषाओं में जब प्रकाशित होगा, तब उसमें समान शब्दावली का प्रयोग होगा। इसलिए एक भाषा में जो वैज्ञानिक साहित्य प्रकाशित हुआ है उसे समझने में दूसरे भाषा-भाषी को आसानी होगी, सुविधा होगी।

इस तरह से भाषाओं के बीच में भी एक तरह से संबन्ध बढेगा। जैसे यहाँ बहुत मित्रों ने कहा राष्ट्रीय एकता के लिए और भावात्मक एकता केलिए भी इस शब्दावली के माध्यम से हम प्रयत्न कर सकते हैं। इस दिशा में काफी जिम्मेदारियाँ हैं। इसके पहले जो कार्य हुआ उसमें मैं भी संतुष्ट नहीं हूँ। शब्दावली को सरल बनाने के लिए जहाँ तक हो सके, अंतर्राष्ट्रीय शब्दावलियों को हम स्वीकार करें। किसी भी भाषा के प्रति हमें कोई घृणा नहीं है। हमको तो केवल ज्ञान प्राप्त करना है। अगर कोई शब्द अंग्रेजी का हो या फ्रेंच का हो, यदि हमारी भाषा में इतना प्रचरित हो गया है तो उसे अपनाने में कोई आपत्ति नहीं है।

वास्तव में लोग हिन्दी की एक तरह से हँसी उडाते थे। शुरू में डाक्टर रघुवीर जैसे हिन्दी के बहुत प्रकांड पंडितों ने शब्दावली बनाना शुरू कर दिया था। आरंभ में लोगों ने मजाक में कहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या है, हिन्दी के पंडितों ने ऐसा शब्द बनाया है जैसे कि 'सिग्नल' शब्द के लिए 'लोह पथ गामिनी गमनागमन अनुसूचक स्तंभ'। यह शब्द कहीं मैंने नहीं देखा है और रूमाल शब्द उर्दू भाषा में है। अन्य कई भाषाओं में भी यह शब्द है। उसके लिए एक नया शब्द "मुख मार्जन वस्त्र खंड" इस प्रकार के नये शब्द बनाने में कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। यह बेवकूफी है। हम आज यही विचार रखते हैं कि जो शब्द सरल हो और अधिक प्रयोग में हो, उसको हमें स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। चाहे उर्दू का शब्द हो, चाहे मलयालम का शब्द हो, अगर वह शब्द अच्छा लगता है तो उसे पान इंडियन शब्द बनाने में हमें कोई आपत्ति नहीं। इस तरह के बहुत से शब्द हम ने चुने हैं जो दूसरी भाषाओं में हैं और हिन्दी में नहीं हैं। हिन्दी में भी उन शब्दों को हम अपनायेंगे। इस तरह का एक दृष्टिकोण रखने से हमारी भारतीय भाषाओं में एक तरह की समन्वय की भावना ला सकते हैं।

नागरी लिपि

"नागरी लिपि अगर हिन्दुस्थान की सब भाषाओं के लिए चले तो हम सब लोग बिल्कुल नजदीक आ जाएँगे। खासकर दक्षिण की भाषाओं को नागरी लिपि का लाभ होगा। वहाँ की चार भाषाएँ अत्यंत नजदीक हैं। उनमें संस्कृत शब्दों के अलावा उनके अपने जो प्रांतीय शब्द हैं, तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम के, उनमें बहुत से शब्द समान हैं। वे शब्द नागरी लिपि में अगर आ जाते हैं तो दक्षिण की चारों भाषाओं के लोग चारों भाषाएँ पन्द्रह दिन में सीख सकते हैं।

— आचार्य विनोबा भावे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँधी - जयन्ति

विलफ्रड तोमस

एक बार फिर आयी है गाँधी-जयन्ति
फैराती हुई हमारी विजय वैजयन्ति ॥

जञ्जीरों में पडकर भारत माई
जब थी पुकार पुकार कर रोयी,
जब थे गान्धीजी सारथी
जब थे नेताजी जैसे महारथी

तब अभिमन्यू जैसे वीर सपूत चक्रव्यूह भेदकर
तलवारों की धारों पर कदम कदम बढाकर
पायी थी हमने भौतिक मुक्ति,
आयी कहीं से अलौकिक शक्ति !

कुरुक्षेत्र तब भी था जागता
परमेश्वर ताण्डव था नाचता ।
तभी सारी दुनियाँ में गूँज उठा एक नव धारा
तृण तृण में कण कण में भर गयी जोश की पीयूष-धारा ।

सुनकर एक बार भी गीता
प्रेम अहिंसा और दया की गाथा ।

हमारी आशा रूपी हिमालय सिर पर
विजय का झण्डा लहराया आखिर !

यह देखकर,
नव ज्योति पा कर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए वे लज्जित
जो थे समझते
इनकलाब की,
मानवप्रेम की

चिनगारी को
गाँधीजी को

अर्द्ध नग्न उन्मत्त,
अहिंसा से अशक्त!

पूज्य राष्ट्र-पिता ने किया इशारा
(हम ने जब पाया शताब्दों का छुटकारा)
सुसज्जित-सुमावृत शीतल मार्ग प्यारा ।

वह है ले जाने को हमें
संस्कृति के नव मन्दिर में
सुख संपत्ति के स्वर्ग में ।

बुद्ध, गाँधी, लेनिन् कोई नहीं लाये
अपनी अम्मा के डर से अमरत्व के दिये!
जैसे सूर्य-सम ज्ञान, प्रेम व सेवा का उजाला
कैसे आस्मान तले फैलाया, कैसे थी जीवन में ज्वाला!

एक बार भी है आयी गाँधी-जयन्ति
फैराती हुई हमारी विजय त्रैजयन्ति ।। ❀

टी. जे. एम. कोटेज
तिरुवनन्तपुरम-695 014

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयदशमी के सन्दर्भ में :-

जय देवि....

[किशन]

जय देवि विद्या दायिनी
जय पाप शोक विनाशिनी

तप्त मानस पाप-तम में
शरण लेने जा रहा
देख उसको हाथ तेरा
ज्ञान-ज्योति दिखा रहा

अंध तम से आ गया मैं
ज्योति-पथ में पावनी

जय देवि विद्या दायिनी
जय पाप शोक विनाशिनी ॥ १ ॥

जब कभी मैं भ्रष्ट-पथ
होता तभी तुम प्यार से
अभय देकर सत्य पथ
दिखला रही उस पार से

पंथ मेरा दीप्तिमय अब
देवि, जय मन रंजनी

जय देवि विद्या दायिनी
जय पाप शोक विनाशिनी ॥ २ ॥ ❀

लक्ष्मी विहार
पेरूरकटा, तिरुवनन्तपुरम-५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया पुरस्कृत

लखनऊ में उ. प्र. हिन्दी संस्थान की ओर से साहित्यकारों के पुरस्कार सम्मान का ऐतिहासिक समारोह सम्पन्न हुआ। जिस में श्रीमती शकुन्तला सिरोठिया को उनकी दीर्घकालीन बाल-साहित्य सेवा के लिए हिन्दी संस्थान का ७०००) का पुरस्कार प्रधान मत्री श्रीमती गाँधी ने प्रदान करके सम्मानित किया।

श्रीमती सिरोठिया का जन्म १९ दिसम्बर १९१५ को कोटा, राजस्थान में हुआ था। आपकी बचपन से ही साहित्य में अनुरक्ति थी जो आयु और शिक्षा के साथ साथ प्रभात की किरणों के समान प्रस्फुटित होती गयी। आप के तीन काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें से एक संग्रह 'सुधि के स्वर' को राज्य सरकार ने १९५६ में ही पुरस्कृत किया था। बाल साहित्य की कई पुस्तकों पर भी आप को पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। १९७९ में पंजाब कला अकादमी द्वारा भूतपूर्व राज्यपाल स्व० जयसुखलाल हाथी ने आप को पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया था, वह सम्मान भी शकुन्तला जी को बाल साहित्य सेवा के निमित्त ही दिया गया था। १९७५ में प्रयाग में भी आप का सारस्वत सम्मान हुआ था।

अभी तक श्रीमती सिरोठिया की दो दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अनेक पाण्डुलिपियाँ प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं।

सम्प्रति आप अखिल विश्व में प्रसारित 'हन्दू विश्व' मासिक पत्रिका की मुख्य सम्पादिका के रूप में साहित्य सेवा में संलग्न हैं

गत ३० वर्षों से आकाश वाणी की आप अनुबंधित कवयित्री हैं। आप के गीत भारत के सभी केन्द्रों से संगीतज्ञों द्वारा गाए जाते हैं।

बालसाहित्य की सभी विधाओं पर आप की कलम समान अधिकार के साथ सफलता से चलती है।

केरल हिन्दी प्रचार सभा की आप बड़ी हितैषी हैं। केरल ज्योति में आप की कवितायें अक्सर प्रकाशित होती हैं।

श्रीमती सिरोठिया जी को केरल ज्योति परिवार की ओर से हार्दिक अभिनन्दन। ★

केरल ज्योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110383

अभिनन्दन की पुष्पमालायें.....

डा० एम. मलिक मुहम्मद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

110383
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. KL/TV(S)/25 **KERAL JYOTI** Vol. XVIII-No.
October 1983 Price : Re. 1.0

A monthly Publication of Kerala Hindi Prachar Sabha

केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में आयोजित अभिनन्दन समारोह
डा० एम. मलिक मुहम्मद का स्वागत कर रहे हैं केरल ज्योति के सह सपाद
श्री० आर. सुकुमारन नायर ।

केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–६९५ ०१४ केलिए श्री० एम. के. वेलायुधन नायर द्वारा प्रका
मुद्रक: राष्ट्रवाणी मुद्रणालय, केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम–१४. सम्पादक: के. जी. बालकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri